कालसर्प योग एवं शाप दोष शान्ति

पार्थिवशिव पूजन एवं विविध विधान सचित्र

विस्तृत विवेचन एवं विधान



पं. रमेश चन्द्र मिश्र

मयूरेश प्रकाशन
मदनगंज-किशनगढ़ (अजमेर-राज.)



कालसर्प योग एवं शाप दोष शान्ति

- शाप दोष योगों का विवेचन।
- कालसर्प योगों का विवेचन।
- कालसर्पयोग कब नहीं होता है। उन्नति कारक कालसर्प योग।
- राहु-केतु मंत्र, यंत्रार्चन, स्तोत्र कवच एवं १०८ नामावलि।
- नागपीठ पूजा, नागपाश यंत्र, नागदिग्रक्षण कवच, सर्पसूक्त
- नागसहस्त्रनामावलि, एवं सर्पविसर्जन की सम्पूर्ण विधि।
- नागबलिकर्म विधान।
- नारायणबलि कर्म, त्रिपिण्डीश्राद्ध, पितरस्तोत्र, तर्पण प्रयोग।
- गोदान विधि, गोपुच्छतर्पण विधि। तुलादान विधि।
- मृत्युञ्जय मंत्र, मृत्युञ्जय सहस्त्रनाम एवं शनि मृत्युञ्जय स्तोत्र।
- सर्वतोभद्र,चतुलिङ्गतोभद्रमण्डल का सम्पूर्ण याज्ञिक विधान।
- पार्थिव शिव पूजन, प्रत्येक वार का विधान रंगीन चित्र सहित।
- धन प्राप्ति हेतु स्वर्णाकर्षण भैरव व श्री सूक्त प्रयोग।
- ज्येष्ठालक्ष्मी एवं धूमावति, कुब्जिका देवी, मनसा देवी,
- गरुड मंत्र एवं नीलकण्ठशिव प्रयोग।



पं. रमेशचन्द्र शर्मा 'मिश्र'

मयूरेश प्रकाशन

मदनगंज—किशनगढ़, जिला—अजमेर (राज.)

फोन – 01463–244198, 9829144050

प्रकाशक :-
पं. रमेशचन्द्र शर्मा
मयूरेश प्रकाशन
छाबड़ा कॉलोनी, मदनगंज
किशनगढ़, जिला - अजमेर
पिन : 305801 (राज.)
© : 01463-244198,
09829144050
09214512223

तृतीय संस्करण

10 दिसम्बर, 2014

मूल्य : २५०/- रुपये

(दो सौ पचास रुपये मात्र)

लेजर टाईप सेटिंग :
माँ दधीमथि कम्प्युटर्स
छाबड़ा कॉलोनी, मदनगंज
किशनगढ़, अजमेर (राज.)
© : 09214511897

❖ मुख्य प्राप्ति स्थल ❖

१. सरस्वती प्रकाशन, अजमेर © 2425505
२. ईश्वरलाल बुकसेलर, जयपुर © 2575532
३. सुधीर एण्ड ब्रदर्स, जयपुर © 2573655
४. किताब घर, जोधपुर © 2637334
५. रत्नेश्वर पुस्तक भण्डार, बीकानेर © 2549712
६. आनन्द प्रकाशन, दिल्ली © 23923021
७. नाथ पुस्तकभण्डार, दिल्ली © 23275344
८. D.P.B पब्लिकेशन, दिल्ली © 23273220
९. K.K. गोयल & कम्पनी, दिल्ली © 23253604
१०. सरदार करमसिह, हरिद्वार © 225619
११. सरदार सोहनसिंह, इन्दौर © 2532344
१२. कुल्लुका ज्योतिप केन्द्र, उज्जैन © 4013150
१३. श्रीबुक डिपो, उज्जैन
१५. प्रसाद बुक एजेन्सी, पटना © 9234797825
१५. खण्डेलवाल एण्ड सन्स, वृन्दावन © 2443101
१६. केशव पुस्तकालय, मथुरा © 2401130
१७. गोवर्धन प्रकाशन मथुरा © 2415311
१८. श्रीकृष्ण पुस्तक भण्डार, गया

कोटा, भीलवाडा, उदयपुर, चित्तोड, सीकर, हैदराबाद अहमदाबाद, होशंगाबाद, नीमच, मन्दसौर, भोपाल, रायपुर, ओंकारेश्वर, बडौदा, लखनऊ, वाराणसी, झाँसी, विलासपुर, वैद्यनाथ, कलकत्ता, अहमदाबाद, गया, रायपुर, C.P. Tank बम्बई।

॥ विषयानुक्रमणिका ॥

ज्ञान खण्ड

शान्ति प्रयोग खण्ड

नाग तन्त्रम्

राहु-केतु तन्त्रम्

श्राद्ध एवं तर्पण खण्ड

वैदिक अनुष्ठान खण्ड

दरिद्रता नाशक एवं धन प्राप्ति प्रयोगाः

॥ प्रस्तावना ॥

लक्ष्मी प्रदान समये नवविद्रूमाभाम्
विद्याप्रदान समये शरदिन्दुशुभ्राम् ।
विद्वेषि वर्ग विजयेऽपि तमालनीलाम्
देवीं त्रिलोक जननीं शरणं प्रपद्ये ॥

आज का युग भौतिक युग है, भौतिक सुख की लालसा में व्यक्ति दिन रात दौड़ता है। इस दौड़ धूप के चक्कर में अपने आध्यात्म को व्यक्ति भूल गया है, इस विषय में सोचने के लिये उसके पास समय नहीं है।

पहले के समय में मनुष्य के पास आत्मचिन्तन के लिये समय था, उसका आध्यात्म शक्ति का तेज (औज) उसको संकटों से बचाता था, वह पीड़ा संकट चाहे ग्रहों के कारण हो या अन्य किसी परिस्थिति के कारण हो।

धैर्य मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र है, यदि धैर्य है तो संकट के समय उसके आत्ममंथन शक्ति, उसकी आत्मा स्वतः ही कोई रास्ता दिखायेगी।

एक दूसरे से आगे बढ़ने व भौतिक सुख की लालसा में हम अपने धेर्य को भूल गये हैं, जरा सी चूक होने पर विफलता का डर रहता है, अरबपति को भी कंगाल होते देखा गया है। विफलता की कमज़ोरी को व्यक्ति अपनी कुण्डली के ग्रह योगों के आधार पर ढूंढने की कोशिश करता है।

अपने जीवन के पतन, अवरोध, आकस्मिक हानि, असीम कष्ट, दारुण दुःख, दुर्भाग्य, दुर्भिक्ष, आतंक आदि का कारण ''कालसर्प योग'' को बता दिया जाता है। प्राचीन समय में ऋषि महर्षियों की आयु हजारों वर्ष की हुआ करती थी। उनके जीवन में भी गोचर ग्रह वशात् ''कालसर्प योग'' हजारों बार आये होंगे उनका पतन क्यों नहीं हुआ?

याद रखें अधिक फसल उगाहने के चक्कर में जमीन एक दिन बंजर हो जाती

है, वही हाल अधिक धन कमाने के चक्कर में आज के मनुष्य का है। धैर्य, आत्मचिन्तन, उपासना, धर्म सम्बन्धि खाद हम शारीरिक भूमि को नहीं दे पा रहें हैं। जिस प्रकार भोजन शरीर की क्षुधा को शान्त करता है उसी प्रकार आध्यात्म जीवाआत्मा की भूख को शान्त करता है।

आज की आर्थिक सोच व प्राचीन आर्थिक सोच में बहुत अन्तर है। प्राचीन सोच के आधार पर कार्य धीरे किन्तु परन्तु सुदृड़ होने की थी।

प्राचीन समय में **लखपति की परिभाषा** इस प्रकार थी –

लाख रूपये का माल स्टॉक, लाख रूपये का ब्याज का काम, लाख रूपये का नगद, आभूषण, जवाहरात, लाख रूपये की जमीन व स्थायी सम्पत्ती।

यदि व्यक्ति का समय विपरीत आता तो नगद, आभूषण अथवा स्थाई सम्पत्ति को बेच कर अपनी लखपति की साख बनाये रखने में सक्षम रहता और अनुकूल समय की प्रतीक्षा करता।

आज मनुष्य अपने पतन का स्वयं जिम्मेदार है। २० रूपये पास में होते हैं और १०० रूपये का काम करता है। व्यापार में समीकरण बदलने पर उसका भयङ्कर रूप से पतन होता है। आज व्यक्ति का आधा वेतन तो लोन की किश्ते चुकाने में चला जाता है। फैशन व उपभोक्तावादी संस्कृति ने उसे कर्जदार बना दिया है।

अपनी उन्नति के अवरोधों को जानने पर किसी अपरिपक्व ज्योतिषी ने दुष्ट ग्रह गोचर के साथ कालसर्प योग बता दिया तो उसका जीवन दुर्धर हो जाता है। अतः कालसर्प योग विषय में कुछ चर्चा जरुरी है।

❖ पाराशर तथा आचार्य महिर ने "कालसर्प" विषय में कोई अलग से परिभाषा नहीं की है। सारावलि, मानसागरी में घातक योगों में सर्पयोग, विषयोग, शकटयोग, केमद्रुम योग, भैरव योग, काल योग, महाकालयोग, वैदूषणयोग इत्यादि का वर्णन है। परन्तु कालसर्प योग का विशिष्ट वर्णन नही है।

  वर्षों पूर्व डॉ बी.वी. रमन ने अपनी पुस्तक "तीन सौ महत्वपूर्ण योग" में इस विषय में कुछ स्पष्टीकरण दिया है।

❖ जैसे सूर्य और चन्द्रमा के दोनों ओर ग्रह हो तो उभयचारी व दुरुधरा योग बनता है। अर्थात् सूर्य या चन्द्रमा दो ग्रहों के बीच में हो तो उपरोक्त योग बनेंगे।

यदि शुभ ग्रहों के बीच में सूर्य चन्द्रमा हो तो योग उन्नति कारक है। पापग्रहों के कारण योग बनता है तो चिन्ता अवरोध कष्ट अधिक तथा लाभ कम होगा।

इसी तरह राहु–केतु की धुरी के मध्य अन्य सभी ग्रह आते हो तो यह योग अन्य ग्रहों का प्रभाव समाप्त कर देता है फलतः कई विघ्न व कष्ट व्यक्ति के जीवन में आयेगें।

कुछ पंचागों व पत्रिकाओं मे इस सम्बन्ध में प्रमाणिक रूप में लिखा है, परन्तु ये श्लोक कहां से लिये उसका प्रमाण नहीं दिया गया है।

अग्रे वा चेत् पृष्ठतो ऽप्येक पार्श्वे ,
भानां षट्के राहुकेतो न खेटः ॥१॥
योग प्रोक्तः कालसर्पश्च यस्मिन् ,
जातो जाता वाऽर्थ पुत्रार्तिमीयात् ॥२॥
राहुतः केतु मध्ये आगच्छन्ति यदाग्रहाः ।
कालसर्पस्तु यागो ऽयं कथितं पूर्व सूरिभिः ॥२॥
अग्रे राहुरथो केतुः सर्वे मध्येगताग्रहाः ।
योगं कालसर्पाख्यं नृपाशस्य विनाशनम् ॥३॥

अर्थात् यह कालसर्प योग राजयोग को नष्ट करता है तथा पुत्रादि विषय मे भी चिन्ता देता है।

❖ कुण्डली में सन्तान चिन्ता व जीवन की समस्याओं का कारण शाप योग होना भी पाया जाता है। शाप योग कई प्रकार के होते हैं जिनका वर्णन पुस्तक में अलग से दिया गया है।

इन योगों के सिद्धान्तों में अधिकतर दोष व शाप योग राहु के कारण बनते हैं।

सूर्य, चन्द्र, गुरु के साथ युति, प्रतियुति तथा षडाष्टक योग राहु, केतु शनि के कारण होने पर शाप योग पाया जाता है। अतः राहु की शान्ति कराना अनिवार्य होता है।

ग्रह शान्ति प्रयोगों में ग्रहों के साथ उनके अधिदेवता तथा प्रत्यधिदेवता का भी होम विधान है। राहु का अधिदेवता ''काल'' तथा प्रत्यधिदेवता

"सर्प" है। अत: यह शान्ति प्रयोग "कालसर्प" दोष शान्ति कर्म कहलाता है।

❖ राहु का जन्म भरणी नक्षत्र में हुआ है जिसका अधिदेवता "काल" है शिरोच्छेदन से केतु की उत्पत्ति हुई उसका जन्म नक्षत्र आश्लेषा है जिसका अधिदेवता "सर्प" है अत: राहु-केतु जनित दोष को "कालसर्प" दोष की संज्ञा दे दी गई है।

❖ राजा बलि के १२ प्रमुख सेनापति थे उनमें विप्रचित्त भी एक था। विप्रचित्त का पुत्र राहु हुआ जो सर्पित आकार का था, राहु की माता का नाम सिंहिका था।

समुद्र मन्थन के समय राहु ने अमृत पान किया तो भी उसका मस्तक कट गया, उसी तरह जिसकी कुण्डली में कालसर्प योग पड़ा हो उसको कुछ समय विशेष कष्ट पाना पड़ेगा चाहे कुण्डली में राजयोग व प्रसिद्धि योग उपस्थित हो।

❖ आंशिक कालसर्प योग - कुछ विद्वानों ने तर्क सहित कहा है कि यदि कोई ग्रह राहु केतु के साथ अधिक अंशों का होकर राहु केतु की धुरी से बाहर होगा तो कालसर्प योग नहीं होगा।

यदि राहु केतु की धुरी से एक भी ग्रह बाहर होगा तो कालसर्प योग नहीं होगा। उनके मत से आंशिक कालसर्प दोष नहीं होता है। यह मिथ्या भ्रम है, यदि होता है तो पूर्ण होता है।

परन्तु हमारे देखने में ऐसे उदाहरण आये हैं जिनमें एक या दो ग्रह कुण्डली से बाहर हैं परन्तु राहु केतु जिस भाव में कालसर्प बनाते हैं उसका फल उसको जीवन में कम या ज्यादा अवश्य भुगतना पड़ता है।

❖ राहु सर्प का मुँह है तो केतु सर्प की पूंछ है, मुँह या पूछ पकड़ने पर सर्प का भय कम हो जाता है। उसी तरह राहु केतु के साथ ग्रह होने से उनका पीड़ा कारक प्रभाव कम हो जाता है। यदि राहु के साथ शुभ भाव का स्वामी बैठा हो तो राहु दशा खराब नहीं जायेगी आंशिक कष्ट प्राप्त होगा। क्योंकि राहु-केतु अपने साथ बैठने वाले ग्रह का फल भी दे देते हैं। अत: कारक ग्रह के साथ होने पर कालसर्प दशा मारक नहीं होती।

कालसर्प योग उन्नतिकार भी होता है

कालसर्पदोष नाम से व्यक्ति को घबराना नहीं चाहिये, कालसर्प योग का सूक्ष्म अध्ययन करना चाहिये।

जिस तरह विशिष्ट सर्पो में मणिधारी सर्प भी होते हैं उसी तरह कालसर्प वाले व्यक्ति विश्व में प्रसिद्धि भी पाते है। आपको सैकड़ों महापुरुषों के उदाहरण मिल जायेगें जिनकी कुण्डलियों में कालसर्प योग मौजूद है।

कालसर्प योग वाला जातक यदि दूसरो के लिये कार्य करता है तो प्रारम्भिक जीवन में भले ही कष्ट पाता है बाद में उसे प्रसिद्धि व यश मिलता है।

कालसर्प के कई जातक ४२-४५ वर्ष तक दु:ख पाते है तो बाद में सुखी जीवन व्यवतीत करते है, और यदि ४२-४५ वर्ष तक सुखी रहते है तो बाद में कष्ट पाते है। अच्छी दशा भी अपना पूर्ण शुभ फल नहीं दे पाती है। ऐसे उदाहरण भी हमने दिये है।

कालसर्प योग कब न्यून होता है एवं कब भारी होता है इसका **अवलोकन भलि-भाँति से करे। कालसर्प योग** किस परिस्थिति में उन्नाति कारक है, यह विषय इस पुस्तक में वर्णित है। अत: ग्रह विवेचन करके कालसर्प का बलाबल देखकर निर्णय करे, जातक को भयभीत नहीं करे।

राहु-केतु आपके कर्मसाक्षी ग्रह है- व्यक्ति का पूर्वजन्म कर्म एवं भावि जन्म कर्म एक अंधकार में छिपा रहस्य है हम केवल वर्तमान को देख सकते है।

शनि न्यायधीश हैं, हमारे पूर्वजन्मों के पापो का दण्ड अपनी दशा, साढेसति व ढैया में देता है। पुण्य यदि बलवान हो तो शन्नि उन्नति देता है।

यदि कुण्डली में १२ वे हो तो केतु को मोक्ष का दाता कहा हैं, अर्थात् केतु भावी जन्मकर्म का कारक भी है। राहु को मोह का कारण माना गया है। अत: भूत व भविष्य कर्म के अंधकार बिन्दुओं पर छाया ग्रह राहु-केतु का भी अधिकार है।

राहु-केतु उच्च के शुभ स्थान में हो तो उन्नति कारक है। **राहु व केतु के राशि स्वामी ग्रह हमारे कर्मो में विशेष महत्व रखते हैं। यदि कालसर्प योग है परन्तु इनके राशि स्वामी आपस में केन्द्र, नवम व पंचम में हो अथवा कुण्डली में शुभ स्थानों में बैठे हो तो एक दिन विशेष उन्नति होगी चाहे कैसे ही कमजोर ग्रह हो।** अत: राहु-केतु के राशि स्वामियों को हमारे **कर्मसाक्षी** ग्रह मानना चाहिये। इनकी उपेक्षा नहीं करें। इनकी स्थिति देखकर कुण्डली में कालसर्प का शुभाशुभ निर्णय करे।

जीवन में कैसी घटनायें घट रही है, किस पक्ष की चिन्ता अधिक है एवं कैसे स्वप्न आते है, स्वप्न में काली चीजे या सर्प दिखाई देता है, जीवन शैली पर किस तरह का प्रभाव है, उक्त बातों को ध्यान में रखकर **कालसर्प** के बलाबल का उचित निर्णय करे

कालसर्प दोष एवं शाप योगों का निर्णय करें। उसी आधार पर शांतिकर्म का निर्णय करें। जैसे संतान चिन्ता में सर्पशाप योग है तो नागबलि कर्म तथा नागदोष शांति के उपाय करे। यदि परिवार के किसी पितर का शाप योग है तो नारायणबलि कर्म, तर्पण, पितर स्तोत्रपाठ, गीता-भागवत पाठ करना शुभ रहें। देवदोष गौहत्या, गुरु ब्राह्मण शाप हेतु गोदान, गायत्री जप, पापघट दान, कराये एवं राहु की शांति भी कराये।

यदि व्यक्ति छली-कपटी है तथा कुण्डली से ऐसा लगता है कि इसने किसी का द्रव्य हरण किया है तो राहु, शनि का जप व दान कराये। सद्बुद्धि के लिये गुरु का उपाय करे। गरीबों का प्रतिनिधि शनि है अत: इसकी स्थिति देखकर विचार करें की इसको किसी गरीब की दुराशीष तो नहीं है, ऐसे जातक से गरीबों की मदद, श्मशान में दान, मछली एवं पक्षियों को दाना डालने हेतु तथा बुजुर्गो की सेवा हेतु अवश्य कहे।

विशेष कष्ट, मारकेश दशा में तुलादान का भी विशेष महत्व है अत: पुस्तक मे वर्णित तुलादान विधि से कर्म कराये। पाप दोष शांति हेतु गोदान कर्म सविधि पुस्तक में दिये अनुसार करे।

राहु में केतु के अन्तर में कालसर्प का पूर्ण योग हानिकारक बनता है। परन्तु केतु राहु के विपरीत कार्य करता है। अत: राहु की दशा केतु के अन्तर में लाभ दे सकती हैं। कुछ विद्वान कहते हैं कि राहु में केतु की अन्तर दशा आने पर पूर्ण कालसर्प योग बनेगा, अत: विशेष हानिकारक रहे। परन्तु उनका स्थान व भाव बल देखकर ही निर्णय सही करें।

कालसर्प का प्रचलन कब व कैसे हुआ यह कोई निश्चित नहीं है। इस संदर्भ में कई वैचारिक मतभेद है। परन्तु सर्पदोष शांति हेतु विद्वानों ने नागपूजा, तर्पण, राहु-केतु शांति, मृत्युञ्जय प्रयोग, भैरव प्रयोग इत्यादि कई विधान ढूंढ निकाले है। वर्तमान में विद्वान पण्डित कालसर्प शांति हेतु छोटी पूजा कराकर सामुहिक कर्म करा देते है, ऐसे में यजमान द्वारा विशेष शांति कर्म पूर्ण नही होता है जिसका फल न्यून ही है। व्यक्ति को केवल संतुष्टि मिलती है, कि मैंने कर्म कराया है परन्तु

पूर्ण निदान नहीं होता है।

कालसर्प योग का व्यक्ति के जीवन पर अलग-अलग अवस्था में अलग-अलग ढ़ंग से प्रभाव पड़ता है। मान लें कि किसी के ५ वें स्थान में कालसर्प है तो उसका क्या प्रभाव होगा?

❖ बाल्यकाल- माता-पिता को चिंता।
❖ विद्या अध्ययन में मनोवांछित सफलता नही मिले। यदि कुण्डली में उच्च के ग्रह, राजयोग या प्रसिद्धि के ग्रह है तो विद्या में अवरोध नही आयेगा।
❖ विवाह में विलम्ब होवे, प्रेम में असफलता मिले।
❖ सन्तान प्राप्ति में विलम्ब, संतान को चिन्ता पीड़ा रहे।
❖ संतान का भविष्य आपकी इच्छानुसार नहीं बने। संतान के शादी विवाह में विलम्ब व उनकी अपनी समस्यायें।
❖ सन्तान के लिये व्यापार में पैसा लगाये और उसमें नुकसान होवे।
❖ व्यापार कार्य में सहयोगी धोखा करे, अपने मित्रों व रिश्तेदारों से ठगा जावे।
❖ बुढापे में सन्तान नजदीक नहीं रहें उनका नौकरी या व्यापार क्षेत्र दूर-दराज होवें।

इस तरह कालसर्प योग अलग-अलग आयु में देशकाल परिस्थिति के अनुसार अलग-अलग फल देता है। इसलिये कालसर्प शांति केवल एक बार कराने से ही उस दोष का पूर्ण क्षय नहीं समझे। आवश्यकतानुसार जैसी बाधा जिस समय हो उसके अनुसार जीवन में शांति प्रयोग कराते रहना चाहिये।

कुण्डली के १२ भावों के अनुसार १२ तरह के कालसर्प योग है उनके द्वारा जैसी समस्या होवे वैसा उपाय करना चाहिये।

मेरे अनुभव के अनुसार ग्रहों के जप व शांति जप विशेष संख्या में कराये तो ही विशेष लाभ मिलेगा अन्यथा नहीं। विशेष विधान में बहुत खर्चा आता है अत: थोडा थोड़ा जैसे बन पड़े वैसे-वैसे खर्च कर पूर्ण कार्य को कराये।

उपाय

❖ राहु-केतु के ४०-४० हजार जप करावे।
❖ सर्पमंत्र के जप- २५ हजार कराये अथवा नागसहस्रनाम के २०० पाठ

करावे।

- शिवलिंग पर रजत या ताम्र का सर्प चढावे एवं रूद्राभिषेक कराये।
- यदि सर्प प्रवाहित करने है तो ८ सर्प चाँदी के बनावे व १ जोडा सर्प स्वर्ण का बनावे। शिव के पास आठों दिशाओं में आठों चाँदी के सर्पजोडो को रखें, शिव के समीप स्वर्ण सर्प को रखे। रुद्राभिषेक व नाग पूजा करके सभी आठों सर्प जोडो को बहते जल में प्रवाहित करा देवें। स्वर्ण के सर्प का दान करें।
- सर्पदोष होने पर नागबलि कर्म कराये।
- नागपाश यंत्र पूजा कर अपने पास रखे।
- पितर दोष होने पर नारायणबलि, पितरस्तोत्र पाठ, गीता भागवत पाठ, पितर तर्पण, गोपुच्छ तर्पण एवं श्राद्धादि कर्म कराये।
- पुष्टि हेतु मृत्युञ्जय मंत्र का जप ४०-५० हजार की संख्या में करावे।
- वंशवृद्धि, देव, ब्राह्मणशाप निवृत्ति हेतु हरिवंशपुराण का पाठ व गोदान कर्म कराये।
- पापक्षय एवं वंशवृद्धि हेतु पार्थिवशिव पूजन प्रयोग करे। नन्दिपुराण के अनुसार प्रत्येक वार के अनुसार पार्थिव शिवों की आकृति व नागों की संख्या को पुस्तक में सचित्र दिया गया है। जो पं० रेवाशंकर शर्मा, पो० जाजन, सूरत (गुजरात) से प्राप्त हुये हैं।
- भैरव उपासना संबधित प्रयोग करे। भैरव-महाकाल को राहु का अधिदेवता कहा है।
- दरिद्रता निवारण हेतु जेष्ठा लक्ष्मी से प्रार्थना करे कि हे दरिद्रे आप हमारे घर से चली जाये तथा शुभलक्ष्मी की प्राप्ति का आशीर्वाद देवे। धूमावती उपासना भी इसी तरह करे।
- ग्रहों का दोष हमारे कर्म के छिद्र है अत: ग्रहों के उपाय के बाद ही धनप्राप्ति हेतु श्रीसूक्त पाठ, स्वर्णाकर्षण भैरव प्रयोग करे।
- मनसा देवी स्तोत्र पाठ, गरुडमंत्र प्रयोग भी सर्पदोष दूर करते है।
- कुब्जिका देवी आठो सर्पो को आभूषण रूप में धारण करती है उनका जप करे।
- संकट के समय तुलादान विधि कही है, जिसका विधान इसी पुस्तक में

वर्णित है।

- ❖ राहु के साथ शनि भी विपरीत है तो शिव के साथ महाकाली का पूजन करे।
- ❖ दुर्गासप्तशती के अनुसार दुर्गा ने वैप्रचित्त दानवों (राहु के कुटुम्बियों) का नाश किया था अतः दुर्गा पाठ भी दोष दूर करता है।

उपरोक्त शांति प्रयोगों के सभी विधान पुस्तक में अच्छी तरह से वर्णित किया गया है।

प्रायः लेखक उपासक व कर्मकाण्डी नहीं होते हैं, इसलिये वास्तविक कर्म एवं अनुभव का अभाव रहता है। मैने अपने अनुभवों के कारण कर्मकाण्ड विषय व तंत्र प्रयोग विधि का उल्लेख परिपूर्ण दृष्टि से प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है अतः विद्वानों को परेशानी नहीं होगी।

अतः विद्वानों से निवेदन है कि कालसर्पशांति प्रयोग अनुष्ठानिक ढंग से सभी दोषों के परिहार युक्त करने में काफी खर्चा व समय जरूरी है जो हर व्यक्ति के सामर्थ्य की बात नही है। इसलिये यजमान की सामर्थ्य के अनुसार थोडा-थोडा कर्म कई हिस्सों में कराकर दोष की पूर्ण शांति करावे।

कालसर्प योग से डरे नहीं यह योग **राजा से रंक बना सकता है तो रंक से राजा भी बना सकता है**। अतः दोषों का सूक्ष्म रूप से निर्णय कर तत्सम्बन्धी प्रयोग कराये।

अधिकांशतया कालसर्प योग की शांति विधान कराने का स्थान विद्वान नासिक या कालहस्ति में ही बताते है परन्तु हमने १७-१८ स्थानों के नाम दिये है जहाँ इस कर्म की शांति हो सकती है।

पुस्तक लेखन में हमारा उद्देश्य यह रहता है कि पाठक को अधिक से अधिक जानकारी मिले, हस्तक्रिया विधान पूर्ण हो, जिसमें अनुभव की झलक होवे। हमारी इस चिर शैली को ध्यान में रखकर पुस्तक में अधिक से अधिक जानकारी एवं विधान दिये गये है जो अन्यत्र उपलब्ध नहीं है।

श्रीदेव्याचरणानुरागी

[पं० रमेश चन्द्र शर्मा 'मिश्र']

ज्ञान खण्ड

॥ अथ कालसर्प योगाः ॥

यह माना जाता है कि राहु व केतु के मध्य में समस्त ग्रह आ जाते हैं तो छाया ग्रहों से पुटित हाने के कारण अन्य ग्रह प्रभाव हीन हो जाते हैं, अतः व्यक्ति जीवन में विशेष संघर्ष करता है।

यह बात सोचना गलत है कि कालसर्प योग वाला व्यक्ति कोई उन्नति नहीं कर सकता। महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरु, अकबर की कुण्डली में भी कालसर्प योग था।

जिस प्रकार सर्पों में मणिधारी सर्प भी होते हैं उसी प्रकार कालसर्प योग में भी कई उन्नति के योग होते हैं।

सामान्य तौर पर यह माने कि एक सर्प की तीन अवस्थायें दैनिक जीवन में होती है।

१. वक्राकार – सर्प जब चलता है तो टेढ़ा-मेढ़ा वक्रगति से चलता है उसी प्रकार कालसर्प योग युक्त व्यक्ति के जीवन में २-३ वर्ष उन्नति पश्चात् २-३ वर्ष पतन के अवसर बार बार आते हैं। वह व्यक्ति एक तरफा तबाह नहीं हो सकता है। ऐसा विश्लेषण जातक की योग कारक दशाओं के आधार पर अधिक किया जा सकता है। उसकी उन्नति भी संषर्ष से होती है।

२. गर्वाकार – जिस प्रकार सर्प अपना फन तान कर खड़ा होता है वैसे ही इस योग वाला जातक एक तरफा उन्नति करता है, जिसकी उसने कल्पना भी नहीं की होती है। उच्च पद, प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। परन्तु अपने गर्व के कारण वह कई गुप्त शत्रु बना लेता है। अतः यदि उसका प्रारंभिक जीवन उच्च का रहा हो तो जीवन का उत्तरार्ध (४२-४९ वर्ष बाद) बहुत कमजोर होता है। अच्छे ग्रहों की दशायें भी पूरा अच्छा फल नहीं दे पाती।

३. निश्चलाकार – जिस प्रकार सर्प अपना फण दबाकर चुपचाप बैठा रहता है या अपने बिल में बैठ जाता है उसी प्रकार इस योग वाले जातक के सभी प्रयास व्यर्थ हो जाते हैं। सभी स्थानों पर अपमानित होना पड़ता है। ऋण, रोग, शत्रु से पीड़ित होता है। यदि जीवन का प्रारम्भकाल दु:खी रहता है तो उत्तरार्ध (४२-४९ वर्ष बाद) सुखमय होता है। यदि ४९ वर्ष बाद के बाद भी दशा अच्छी नहीं आती है तो जातक जीवन भर दु:ख प्राप्त करता है।

कालचक्र (कालसर्प) एवं जीवन–मृत्यु

जीव से ब्रह्म पर्यन्त की सभी गतियाँ कालपुरुष के अधीन है। उसके जीवन की क्रियाशक्ति कालचक्र के आधार पर चलती है।

गरुड पुराण में मृत्यु के पश्चात् जीव के विविध लोकों से गुजरने का वर्णन है। आत्मा जो विभिन्न लोकों से आकर पृथ्वी पर जन्म लेती है। इनमें चन्द्रलोक मध्यस्थल अवश्य आता है। मनुष्य अपने कर्म पृथ्वी पर भोगता है। उस पर पृथ्वी व चन्द्रमा के भ्रमण मार्गों का विशेष प्रभाव पड़ता है। **पृथ्वी व चन्द्रमा के भ्रमण मार्ग जहां टकराते हैं वहां काले छायाँ बिन्दु बनते हैं। उन्हें ही छाया ग्रह राहु व केतु के नाम से जाना जाता है।**

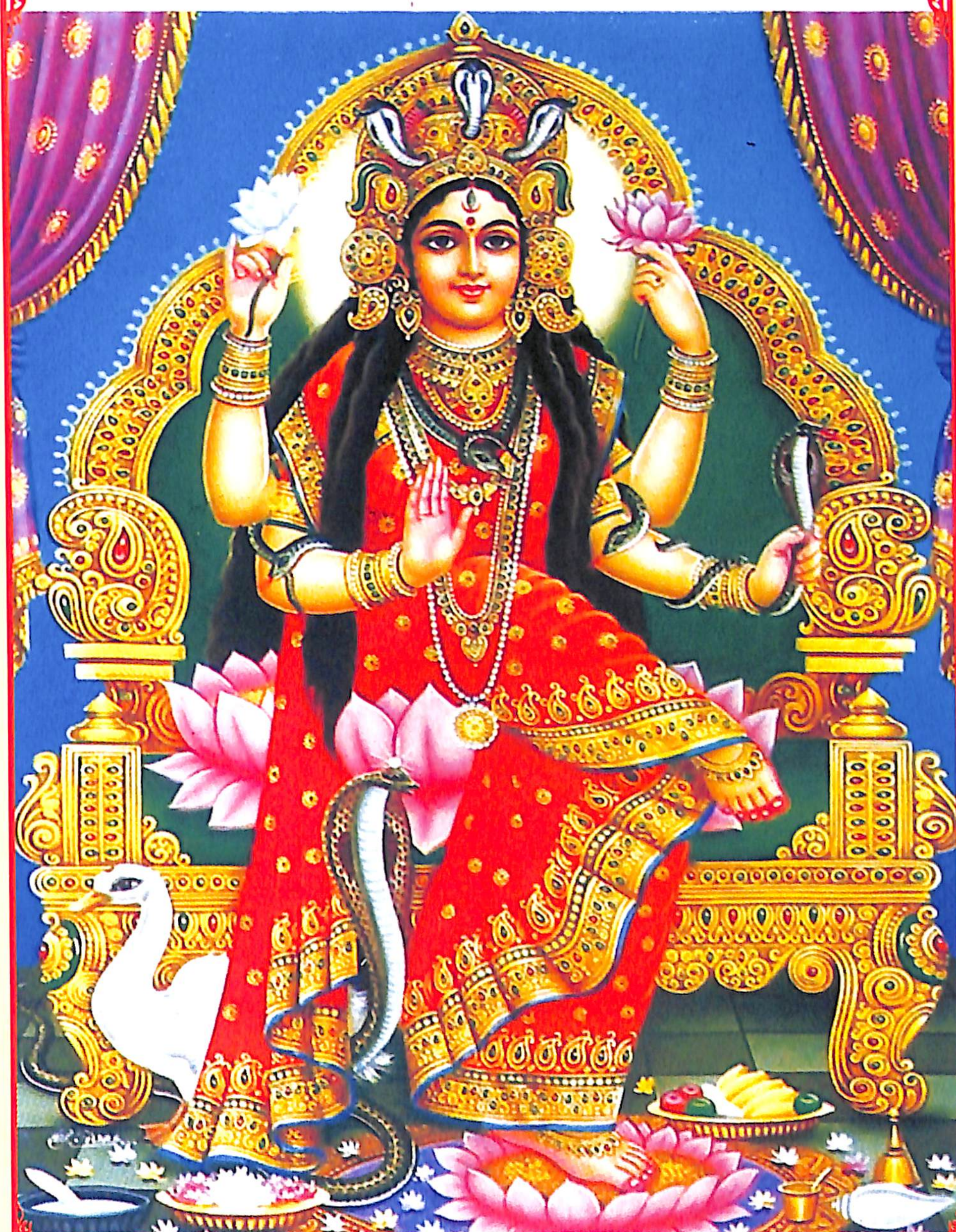
अन्य सातों ग्रहों से जो किरणें पृथ्वी तक आती है वह इन छाया ग्रहों से अवश्य प्रभावित होती है। **यदि सभी ग्रह इन छाया बिन्दुओं के एक ओर होते हैं या इनके मध्य होते हैं तो कालसर्प योग बनता है।** अत: मनुष्य का जीवन-मृत्यु, कर्मफल इन छाया ग्रहों से प्रभावित होता है।

पौराणिक कथाओं के आधार पर समुद्र मन्थन के पश्चात् अमृत पान के समय राहु के शिर का छेदन कर देने पर शिर भाग का नाम "**राहु**" व धड़ भाग का नाम "**केतु**" कहलाया।

ज्योतिष व कर्मकाण्ड के अनुसार राहु का जन्म नक्षत्र भरणी है जिसका प्रत्यधि देवता "**काल**" है तथा केतु का जन्म नक्षत्र आश्लेषा है जिसका प्रत्यधि देवता "**सर्प**" है। अत: राहु-केतु जनित दोष "**कालसर्प**" योग नाम से जाना जाता है।

राहु-केतु जनित कालसर्प विषय में कहा है -

नागमाता श्रीमनसा देवी



इस देवी के स्तोत्र पाठ से नागभय दूर होता है।

श्रीकृष्ण द्वारा कालिया नाग मर्दन



श्रीमद् भागवत दशम् स्कंध सोलहवें अध्याय में वर्णित इनके स्तोत्र का पाठ करने से पापमुक्ति होवे तथा सर्पभय नाश होवें।

श्री शिव श्रृंगार (एकलिङ्ग)



श्री शिव श्रृंङ्गार सोमवार (पंचलिङ्ग)



पार्थिव शिव पूजन प्रयोग
सहस्रलिंग स्थापन विधि नंदिपुराण के अनुसार
(रविवासरे गोलाकार)

प्रथम

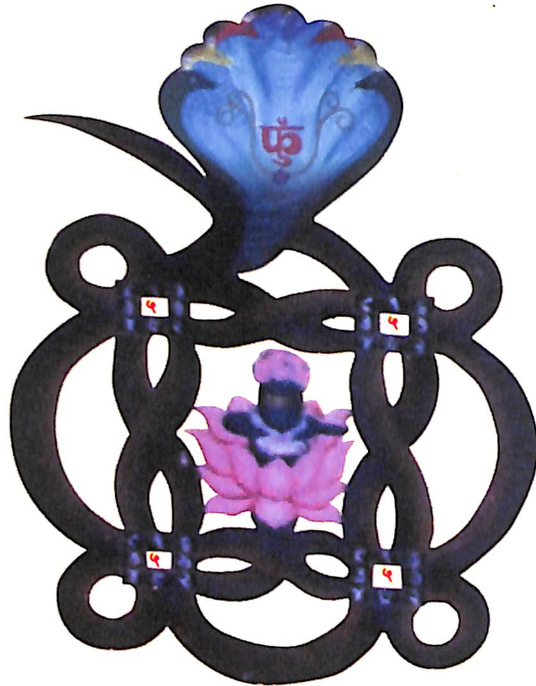


द्वितीय



श्रावण मासे प्रथम सोमवार

(नागपाश आकृति में शिवलिंग स्थापित करें)



श्रावण मासे प्रथम सोमवार

(नागपाश आकृति में शिवलिंग स्थापित करें)



श्रावण मासे द्वितीय सोमवार (तीन शिवलिंग)

(नागपाश आकृति में शिवलिंग स्थापित करें)



श्रावण मासे तृतीय सोमवार (पंच शिवलिंग)

(नागपाश आकृति में शिवलिंग स्थापित करें)



श्रावण मासे अंतिम सोमवार (नव शिवलिंग)

(नागपाश आकृति में शिवलिंग स्थापित करें)



(यदि महिने में पांच सोमवार हो तो चतुर्थ सोमवार को सात शिवलिंग बनायें)

श्रावण मासे भौमवासरे (त्रिकोण आकृति)

प्रथम



श्रावण मासे भौमवासरे (त्रिकोण आकृति)

द्वितीय



श्रावण मासे बुधवासरे (कूर्म आकृति)



श्रावण मासे गुरुवासरे (आयत आकृति)



श्रावण मासे भृगुवासरे (मृत्युंजय यंत्राकारे)

पंचकोण, अष्टदल, द्वादश दल युक्त



श्रावण मासे मंदवासरे (धनुषाकारे)

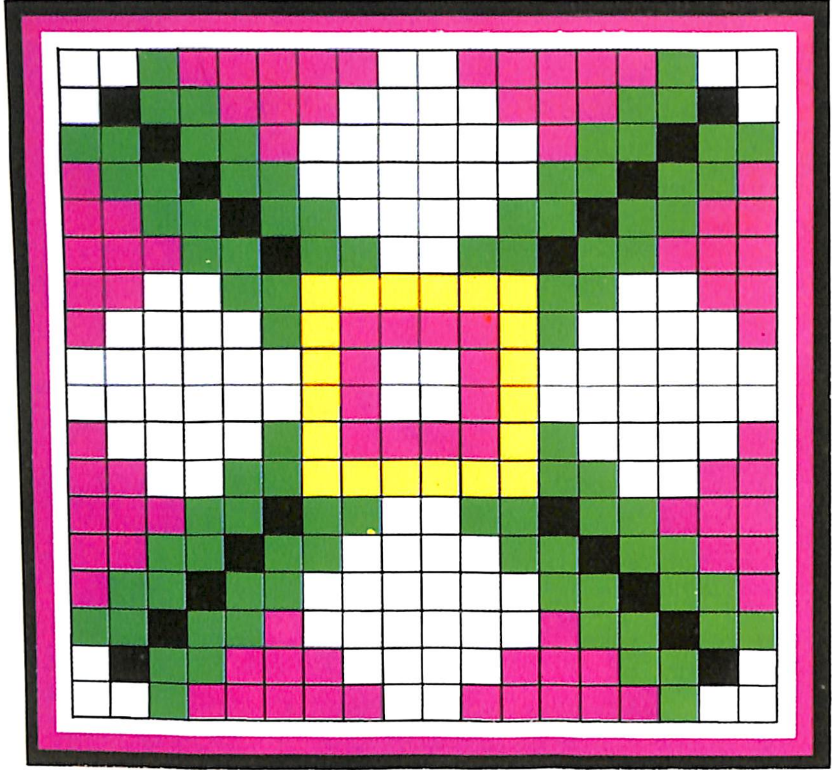


श्रावण मासे अष्टमी तिथौ

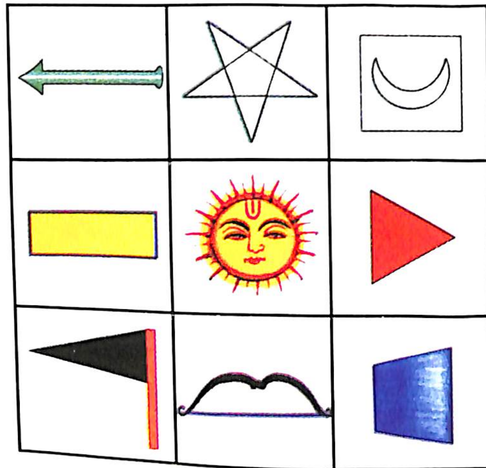
(नागपाश एवं श्रीयंत्र अथवा दुर्गा यंत्र सहित)



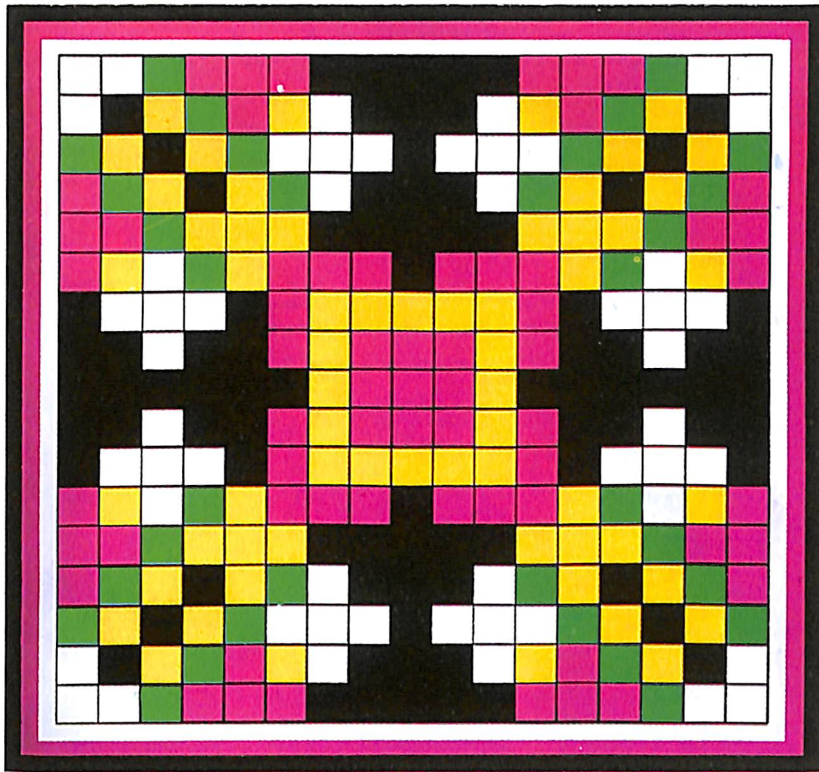
॥ अथ सर्वतोभद्र मंडलम् ॥



॥ नवग्रह मंडलम् ॥

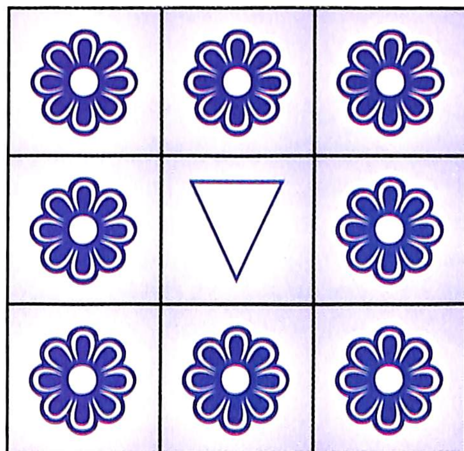


।। अथ चतुर्लिंगतो भद्र मंडलम् ।।



।।चतुष्षष्ठीयोगिनी मण्डलम् ।।

(प्रतिभागे अष्टौदेवता)



॥अथ 81 कोष्ठक वास्तु मण्डलम् ॥

(गृह प्रतिष्ठा हेतु)

७५ ७६ ६८ ६९

६१ ६२ ६४ ५४ ५५

४६ ५० ४७

१ २ ८ धूम्र

३२ ३३ ३ ४ ५ ६ ७ ३७ १०

६७ ३१ ३४ ३५ ३६ ११ ६५

३० १२

७४ ६० ५३ २९ ४४ ४५ ३८ १३ ५१ ५६ ७०

२८ ४५ १४

२७ ४२ ४१ ३९ १५

२६ ४३ ४० १६

२५ २४ २३ २२ २१ २० १९ १८ १७

४९ ५२ ४८

५९ ६६ ५८ ६३ ५७

७३ ७२ ७७ ७१

श्वेत परिधौ - (46) धूम्र, चरक्यै (47) रक्त, विदार्यै (48) पीत, पूतनायै (49) कृष्ण, पापराक्षस्यै (50) रक्त, स्कंदाय (51) कृष्ण, अर्यम्णे (52) रक्त, जृम्भकाय (53) पीत, पिलिपिच्छाय।

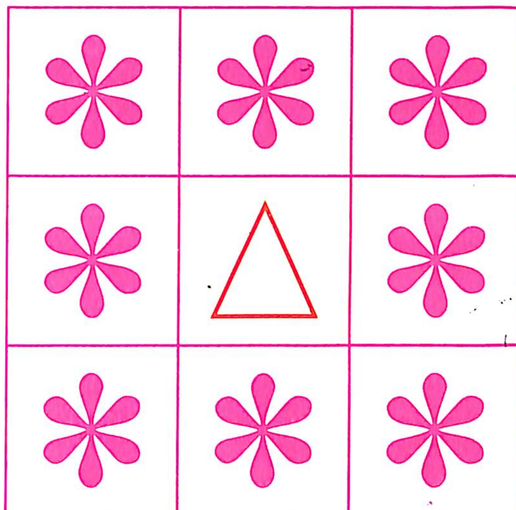
रक्त परिधौ - (54) इन्द्र, पीत। (55) अग्नि, रक्त । (56) यम, कृष्ण। (57) निर्ऋतये, नीला, कृष्ण। (58) वरुण श्वेत। (59) वायव्यां, हरा। (60) कुबेर, श्वेत, हरा । (61) ईशान, श्वेत, कृष्ण। (62) ब्रह्मा, पीत। (63) अनन्त, विचित्र रंग (64) श्वेत, उग्रसेनाय (65) कृष्ण, डामराय (66) कृष्ण, महाकालाय (67) पीत, पिलिपिच्छाय।

कृष्ण परिधौ - (68) कृष्ण, हेतुकाय (69) कृष्ण, त्रिपुरान्तकाय (70) कृष्ण, अग्निवेतालाय (71) पीत, असिवेतालाय (72) कृष्ण, कालाय (73) रक्त, करालाय (74) पीत एकपादाय (75) रक्त, भीमरूपाय (76) पीत, खेचराय (77) नानारंग, तलवासिने नमः।

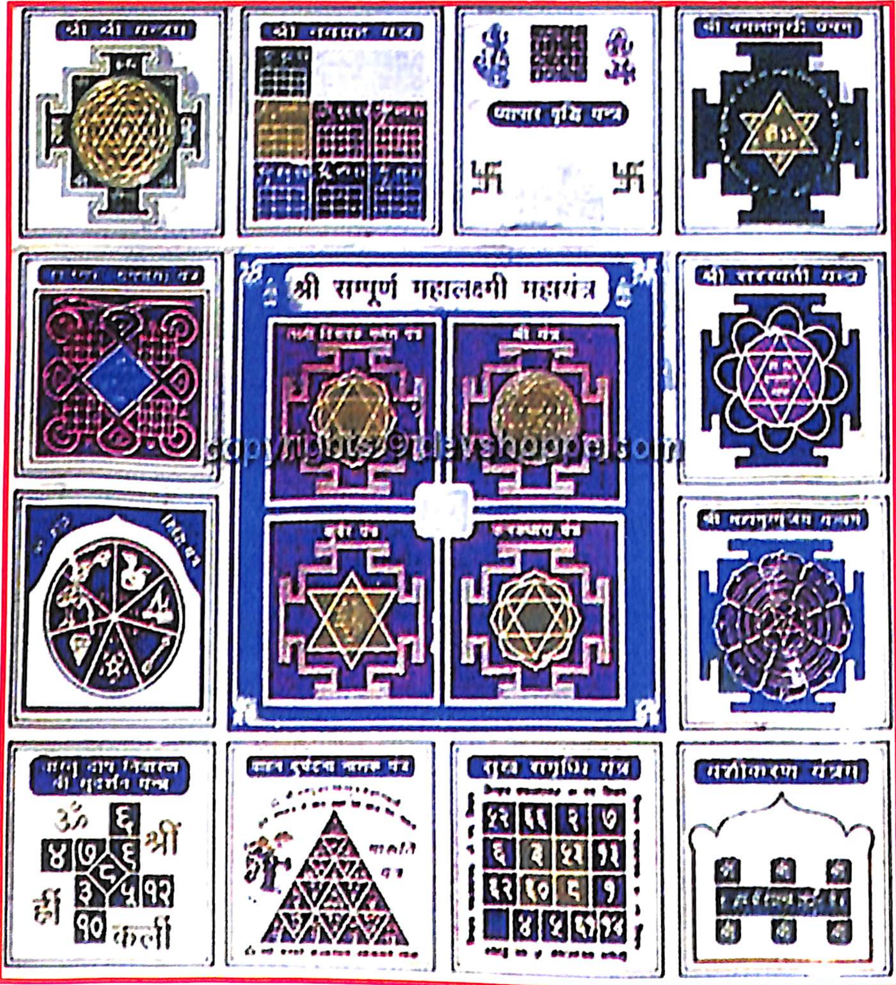


॥ एकोनपञ्चाशतक्षेत्रपाल मण्डलम् ॥

(प्रतिभागे षड्देवता)



श्री सर्वकष्ट निवारण यंत्रराज



अग्रे वा चेत् पृष्ठतोऽप्येक पार्श्वे भानां षट्के राहुकेत्वो न खेटः ।
योग प्रोक्त कालसर्पश्च तास्मिन् जातो जाता वाऽर्थ पुत्रार्त्तिभीयात् ॥

कालसर्प दोष के कारण, रोग, ऋण, पीड़ा, कर्ज, सन्तानहीनता, धोखा, शत्रु, विषयोग व दुर्घटना इत्यादि योग बनते हैं। टोना–टोटका व प्रेतबाधा से ऐसा व्यक्ति शीघ्र प्रभावित होता है।

राहु केतु की स्थिति से पता लग जाता है कि व्यक्ति अपने कर्मों से दुःख प्राप्त कर रहा है या किसी शाप के कारण। अतः उसी के अनुसार रक्षा उपाय व शान्ति प्रयोग करने चाहिये।

राहु–केतु मध्ये सप्तो विघ्ना हा कालसर्प सारिक ।
सुतयासादि सकलादोषा रोगेन प्रवासे चरणं ध्रुवम् ॥

कालसर्पयोगस्थ विषविषाक्त जीवणे भयावह पुनः पुनरापि शोकं च योषने रोगान्ताधिकं पूर्वजन्मकृतं पापं ब्रह्मशापात् सुतक्षयः किंचत् ध्रुवम् प्रेतादिवशं सुखं सौख्यं विनश्यति।

अर्थात् राहु–केतु के मध्य में सात ग्रह आ जाते हैं तो रोग, शत्रु, स्थानहानि, शोक, सन्तान चिन्ता, प्रेतबाधा जनित दोष होते हैं।

ब्रह्महत्या एवं अन्य शापादि योग भी इन ग्रहों की स्थिति के अनुसार जाने जा सकते हैं। क्योंकि व्यक्ति अपने कर्म व शापादि के कारण ही दुःख को प्राप्त करता है।

यदि हम वेद को देखते हैं तो वेद कहते हैं "**श्रीः**" (छः प्रकार के ऐश्वर्य) तथा लक्ष्मी (चञ्चला) दोनों (अहोरात्र - रातदिन) कालपुरुष की पत्नियाँ है।

श्रीश्चते लक्ष्मीश्चते पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनोव्यात्तम् ॥

ज्योतिष में समय राशि गणना अश्विनी नक्षत्र से मानी है। यहां उदयकालीन सूर्य लालिमा की तरह कालपुरुष का प्रकाश रहता है कुछ समय पश्चात् सूर्य पूर्ण दिखाई देता है अतः अश्विनी से आगे भरणी नक्षत्र में कालपुरुष के लक्षण पूर्ण प्रकट होते हैं। उसके पार्श्व में ९० अंश की दूरी (१८० अंश पर सम्मुख होती है) पर आश्लेषा नक्षत्र (मध्यदिन के समय पूर्ण तपता हुआ सूर्य समान) कालपुरुष का पूर्ण तपोबल रहता है। उसके बाद समय का पृष्ठ भाग शुरु हो जाता है। अतः भरणी तथा आश्लेषा नक्षत्र का विशेष महत्व है। उनके प्रत्यधिदेवता **काल तथा सर्प है** अतः परेशानियों के समय इनका पूजन व कालसर्प शान्ति करानी चाहिये।

दुर्गासप्तशती में रहस्य त्रय में लिखा है –

कालमृत्यो च संपूज्यो सर्वारिष्ट प्रशान्तये ।

राहु ने अमृत पान किया था परन्तु उसका शिर काट दिया था। इसी तरह मनुष्य अमृत्व (सुख वैभव) पान कर सकेगा या नहीं यह मनुष्य की कुण्डली में राहु-केतु की स्थिति से विशेष ज्ञान करना चाहिये। राहु-केतु की खराब स्थिति दुःख देगी तथा अच्छी स्थिति सुख प्रदान करेगी।

भारतीय योग दर्शन एवं सर्पिणी शक्ति

राहु को सर्प का मुँह तथ केतु को पुच्छ कहा गया है। राहु राक्षसों के व केतु देवताओं के पक्ष में जाने से दोनों के कार्यों में भी भिन्नता है। राहु का फल केतु के विपरीत माना गया है। जन्म कुण्डली में छठें स्थान में राहु का योग विघ्न व शत्रु का नाशक कहा गया है, जबकि केतु १२ वें स्थान पर मोक्ष फल प्रदान कराने वाला कहा गया है। अत: राहु मोह एवं अज्ञान अन्धकार कारक हुआ। परन्तु शत्रु हो तो उनका नाश करेगा, अत: राहु शत्रु अवश्य उत्पन्न करेगा।

यदि केतु को मोक्ष दाता मानें तो यह मानना पड़ेगा कि हमारे जन्म एवं मरण कारक ग्रहों में इनका सहयोग विशेष है। इसलिये यह माना जा सकता है कि हमारा बहुत कुछ भविष्य इस सर्पिणी शक्ति के अधिकार में है।

जैन संस्कृति में भगवान पार्श्वनाथ के सिर पर सर्प है, भगान विष्णु शेषनाग की शय्या पर विश्राम करते हैं, भगवान शङ्कर सर्पों को गले में धारण करते हैं, वासुदेव जब श्रीकृष्ण को यमुना पार कर मथुरा से गोकुल लाये तब नागदेव ने उनकी रक्षा की, पृथ्वी को भी शेषनाग धारण करते हैं, भगवान श्रीकृष्ण ने कालिया सर्प का मर्दन किया अत: जो सर्पिण शक्ति को अपने वश में कर लेता है वह दिव्य पुरुष हो जाता है।

भारतीय योग दर्शन के अनुसार "अण्डे सो पिण्डे" अर्थात् जो इस ब्रह्माण्ड में स्थित है वह इस स्थूल शरीर में भी स्थित है। मनुष्य शरीर में भुवनलोकों का स्थान सहस्त्रार, आज्ञाचक्र, विशुद्धचक्र, अनाहतचक्र, मणिपूरचक्र, स्वाधिष्ठानचक्र, एवं मूलाधारचक्र में माना गया है।

इसी तरह ब्रह्म की सर्पिणी शक्ति ऊपर सहस्त्रार से नीचें उतर कर भुवन लोकों का निर्माण करती हुई मूलाधार चक्र गुदा के पास आकर स्थित हो जाती है। ब्रह्मा के साथ यह अनन्तशक्ति रूपा है तथा बची हुई शेष शक्ति मूलाधार में **शेषशक्ति** ही है।

यह शेषशक्ति सर्पिणीकार है जिसे योग में कुण्डलिनी शक्ति भी कहते हैं। मूलाधार चक्र में शिवलिङ्ग के साढ़े तीन वलय (आंटे) लगाये हुये सोई रहती है। जब तक यह सोई रहती है व्यक्ति के संस्कार पूर्वभव के अनुसार चलते हैं परन्तु जंब इसे जागृत कर दिया जाता है तो भवबन्धन काट कर मोक्ष के द्वार खोल देती है। योगी इसी की साधना में ध्यानरत रहते हैं।

अत: सर्पिणी शक्ति की साधनाशक्ति से हम अपने कर्मबन्धन पर विजय पा सकते हैं। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि राहु-केतु उपासना भोग व मोक्ष कारक है या समस्त जीवन का सार इन्हीं पर केन्द्रित है। परन्तु यह आशय अवश्य समझना चाहिये कि दोनों छाया बिन्दु आपके पूर्वजन्म के कर्मबन्धन या शाप योग को अवश्य दर्शाते हैं। ये आपके कर्म के प्रतिबिम्ब को दर्शाते हैं, ये आपके **कर्मसाक्षी ग्रह** हैं।

शीशे पर दूषित प्रतिबिम्ब देखें और आप शीशे को ही साफ करें तो इससे मूल तस्वीर साफ नहीं होगी। आवश्यकता है कि राहु-केतु के द्वारा आप यह खोज करें कि मेरा पूर्वजन्म क्यों दूषित रहा? क्या मैनें किसी का धन हरण किया, किसी को पीड़ा पहुंचाई या किसी के शाप का कारण बना। अत: राहु-केतु की शान्ति के साथ जो शाप के कारण ज्ञात हो उनका निवारण करें तो ही उन्नति होगी।

इच्छाधारी नागिन की सत्यता

मध्यप्रदेश में जबलपुर के नजदीक बाजनामठ नामक स्थान पर अघोरी सन्त शुकदेव के जीवन की कथा में एक स्मृति प्रसिद्ध लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अपनी पत्रिका सरस्वती में १८९५-९६ में दी थी।

शुकदेवजी ने महावीर प्रसाद द्विवेदी के सामने आओ-आओ कहा तो एक सर्पिणी उनके पैरों में आकर लौटने लगी। उस नागिन को शुकदेवजी ने कहा नाचो, तो देखते ही देखते उस नागिन ने स्त्री का रूप धारण कर लिया और नृत्य करने लगी।

अत: इच्छाधारी नागों की सत्यता है। कुछ लोग कहते हैं कि ५००-७०० वर्ष की आयु के बाद सर्पों को यह शक्ति प्राप्त होजाती है। यह मान्यता भी है कि जब सर्प ४२२ बार केंचुली बदल लेता है तो वह इच्छाधारी सर्प की शक्ति प्राप्त कर लेता है।

सर्प पूर्व जन्म की आत्मा को पहचानते हैं

सर्प योनि एक तरह से पितृ योनि है, परन्तु स्थूल जीवि प्राणी है। उसकी आध्यात्म शक्ति मनुष्य से बहुत तीव्र होती है। गड़े धन पर आत्मा सर्प बन कर रक्षक का कार्य करती है एवं उस गड़े धन के वंशज व हकदार को अन्य जन्मों बाद भी पहचान कर धन प्रदान करती है।

पूर्व जन्म के शत्रु की आत्मा को भी पहचान कर बदला ले लेती है।

सर्प की आत्मा पूर्व भव की अन्य आत्मा को पहचान लेती है एवं यदि उस पर उपकार करना है तो उपकार करती है। यदि बदला लेना है तो बदला लेती है।

राजस्थान के नागौर जिले में कुचामन सिटी है। जिसका रेल्वे स्टेशन नारायणपुरा नाम से है। स्टेशन से शहर कुछ दूर है, अतः धर्मशाला भी वहां बनी हुई है। सन् १९६० के आसपास की घटना है। वहां कि धर्मशाला में एक वैश्य दम्पत्ति आकर ठहरे। दत्पत्ति अपने काम काज में लग गये। उनका एक वर्ष का बच्चा मिट्टी में खेलने लग गया। कुछ समय बाद एक सर्प आकर बालक के सामने फन फैलाकर बैठ गया। सर्प अपना फन बालक के सामने नीचे करता और बालक उस पर मिट्टी उठाकर डाल देता। इस तरह आधे घण्टे तक यह क्रम चलता रहा। अचानक वैश्य दम्पत्ति की उस पर नजर पड़ी, तो उनके होश उड़ गये। मदद के लिये हाय तौबा करने लगे, परन्तु सर्प के पास कौन जाये?

एक राजपूत भी उसी धर्मशाला में ठहरा हुआ था। उसने कहा कि "मेरे पास बन्दूक है। मैं सर्प को मार सकता हुँ परन्तु गलती से निशाना आपके बेटे पर भी लग सकता है। अतः आप मुझे लिखकर दे दीजिये, कि गलती से बालक को गोली लग जाये तो मैं दोषी नहीं हुँ।" वैश्य ने सोचा कि बालक को सर्प कभी भी डस सकता है, अतः बालक की जान को तो वैसे भी खतरा है। अतः राजपूत को प्रयास करने दिया जाये। यह सोचकर उसने अनापत्ति पत्र लिख कर दे दिया।

राजपूत ने निशाना साधकर सर्प को मार दिया। सर्प को मृत समझ कर उसे झाड़ियों में यूं ही ड़ाल दिया गया। रात्रि में रेगिस्तान की ठण्डी हवा से अर्धमृत सर्प के शरीर में चेतना आई। उसने धर्मशाला में पहुँच कर राजपूत को डस लिया। प्रातः जब राजपूत को मृत पाया गया तो कोहराम मच गया। लोग कहने लगे "कल इसने प्राण बाचाये आज इसके ही प्राण चले गये।"

देव योग से एक सपेरा भी वहाँ आ गया। उस सपेरे के पास मन्त्र शक्ति थी। उसने

मन्त्र शक्ति से उस सर्प को बुला लिया और उससे राजपूत का जहर चूसने हेतु कहा, मगर सर्प ने ऐसा नहीं किया। तब सपेरे ने सर्प की आत्मा को एक छोटे बालक में प्रवेश कराया. फिर उस सर्प ने जो कथा सुनाई वह इस प्रकार है –

"इस जन्म से ५ जन्म पूर्व यह बालक एक सेठ था। मैनें इससे ७०० रुपये उधार लिये थे। परन्तु मैं उसको चुका नहीं सका। इस बालक के व मेरे अन्य जन्म होते रहे। आज मैनें इस बालक के शरीर में सेठ की आत्मा को पहचान लिया। मैं सिर झुकाकर उससे बार बार क्षमा मांगता था और बालक मेरे सिर पर मिट्टी ड़ालकर कह रहा था कि तेरे जीवन को धिक्कार है, जो तु आज तक उधार चुका नहीं पाया। हम दोनों अपने अपने भावों से वार्त्ता कर रहे थे, कि राजपूत ने मुझे गोली मार दी। अतः यदि कोई ७०० रुपये इस बालक के माता पिता को दे देवे, तो मैं इस राजपूत का जहर चूस कर ठीक कर दूंगा।"

भीड़ में से एक व्यक्ति ने साहस कर ७०० रुपये बालक के पिता को दिये। तब सर्प ने जहर वापस चूस लिया। राजपूत जब होश में आया तो यह सारी घटना जानकर हैरान रह गया। उसके मन में विचार आया कि मेरे जीवन को बचाने वाले का मुझे भी कर्ज उतार देना चाहिये। अन्यथा कहीं मेरे साथ भी किसी जन्म में ऐसी घटना नहीं हो जाये। राजपूत ने अपना ऊँट बेचकर ऋण को चुकाया।

यह कथा सिद्ध करती है कि सर्प की आध्यात्मिक व पराशक्ति मनुष्यों से विशेष तीव्र होती है।

सर्प कि आध्यात्म शक्ति

सर्प अपने आध्यात्मिक व पराशक्ति से कई प्रकार के कार्य कर सकते हँ। सर्प शाप व वरदान दोनों देनें में पूर्ण समर्थ होते हैं। अतः सर्प की पूजा करने से व आशीर्वाद प्राप्त करने पर व्यक्ति पूर्ण समर्थ हो जाता है। इसका अन्य उदाहरण इस प्रकार है –

राजस्थान के अजमेर जिले के रुपनगढ़ के पास एक छोटा गांव है। वहाँ जाट जाति में तेजा नामक वीर व्यक्ति का जन्म हुआ। उनका पास में ही पनेर नामक गाँव में सुसराल था। युवावस्था में गौने के समय जब तेजा सुसराल गये तो सुसराल का गौ धन चोरी हो गया। सालियों ने ताने मार कर तेजाजी को चोरों को पकड़ने के लिये उकसाया।

घोड़े पर चढ़कर तेजाजी जा रहे थे। रास्ते में उन्होनें एक सर्प को आँग में जलने हेतु जाते देखा। तेजाजी ने अपने भाले से सर्प को उछालकर झाड़ियों में फेंक दिया।

सर्प ने कहा ''दुष्ट! आज मैं इस आँग में जल कर सर्प योनि से मुक्ति पाने जा रहा था और तुने मुझे झाड़ियों में फेंक दिया। इस अपराध के लिये मैं तुझे डस कर तेरे प्राण लूंगा''

तेजाजी ने कहा ''मैं अभी गौ वंश की रक्षा हेतु जा रहा हुं। कार्य पूरा होने पर मैं तुम्हारे सामने उपस्थित हो जाऊँगा।'' तेजाजी चोरों से संग्राम करके गौ धन को छुड़ाकर वापस ले आये। परन्तु एक बछिया रह गयी। सालियों के कहने पर वह उसे भी छुडा लाये। सभी गायों को सुसराल में सौंप कर, वे सर्प के समक्ष पहुंच गये।

सर्प ने कहा ''तुम्हारे शरीर का हर अङ्ग तो पहले ही घावों से भरा हुआ है। मेरे डसने के लिये तो जगह ही नहीं है। ''

तेजाजी ने कहा ''मेरी जिह्वा अछूती है तुम यहाँ पर डस लो'' सर्प ने तेजाजी की जिह्वा पर डस कर अपनी प्रतिज्ञा पूरी की।

तब सर्प ने तेजाजी को वरदान दिया ''आज के बाद तुम्हारी जातिवंश को कोई सर्प नहीं डसेगा। तुम्हारे नाम से सर्प का जहर उतर जायेगा। तुम्हारी मृत्यु स्थान सुरसुरा गाँव में तुम्हारी धाम पर जो व्यक्ति आयेगा वह बिना उपचार के निर्विष होकर ठीक हो जायेगा''

आज राजस्थान में तेजाजी के नाम से स्थान स्थान पर धाम है जहां सर्पदंश का उपचार होता है।

सर्प की आत्मशान्ति

एक बार मैं अपने कार्यालय में बैठा हुआ था कि मजदूर से दिखने वाले दो व्यक्ति आये। पहला बोला ''पिछले एक महिने से मेरे घर में बच्चे बहुत बिमार रहते हैं, रात को चौंक कर उठ जाते हैं, आर्थिक परेशानी बहुत आ रही है''

''१ से १०८ के बीच कोई संख्या बोलो'' मैनें कहा। उसने जो संख्या बताई उसके अनुसार मैनें प्रश्न कुण्डली बनाई।

''तुम्हारे सर्प दोष आ रहा है। क्या तुमने किसी सर्प को मारा है'' मैनें पूछा।
''मारा तो नहीं पर मुझसे सर्प के निमित्त एक गलती हो गई है'' फिर वह कहने लगा।

''मैं किशनगढ़ की मजदूर कॉलोनी में रहता हुँ, और पावरलूम फैक्ट्री (कपड़ा बनाने की फैक्ट्री) में काम करता हुँ। एक माह पूर्व मेरे घर के सामने से एक सर्पिणी निकली। मै उसके जाने के बाद घर से बाहर निकला। उसके पीछे पीछे एक सर्प भी गया। मैनें दोनों का रास्ता बीच में से काट दिया था। रात की ड्युटी देने के लिये मैं जब फैक्ट्री गया तो मशीन के हत्थे पर मैनें उस सर्प को लिपटा पाया। रात भर मैं बैठा रहा। मशीन नहीं चला सका।

सुबह जब दूसरे मजदूर आये तों मैनें उनसे सारी बात बताई। उन्होनें उस सर्प को घेर का मार ड़ाला, और जला दिया। तब से आज तक वह नागिन मेरे घर व फैक्ट्री के आस पास नजर आती है। और मेरे घर में परेशानी उत्पन्न हो गई है।''

''आपको सर्प के निमित्त शान्ति कार्य करवाना पड़ेगा। तथा चाँदी का सर्प का जोड़ा बनाकर जल में प्रवाहित करना होगा तभी शान्ति होगी।'' मैनें कहा।

सर्प शान्ति करवाने से उस व्यक्ति के घर में पुनः शान्ति प्राप्त हुई।

कालसर्प दोष के आंशिक लक्षण

कालसर्प योग मनुष्य के भाग्य को मन्द करता है फलत: अधिक प्रयत्न करने पर भी असफलता मिलती है। अपनी मेहनत का पूर्ण फल नहीं मिलता। नौकरी में पदोन्नति नहीं होती, जबकि उससे अधिनस्थ व्यक्तियों की उन्नति हो जाती है। व्यवसाय में बार बार हानि उठानी पड़ती है। अथवा बार बार व्यवसाय या कार्य व्यापार का स्थान बदलना पड़ता है। मित्रों व रिश्तेदारों से ठगा जाता है, बार बार धोखा होता है। अकारण कलंकित होना पड़ता है, वृथा मुकद्दमेबाजी भी झेलनी पड़ती है। सन्तान या तो उन्नति नहीं कर पाती या विद्या अधूरी रहती है। सन्तान हेतु व्यवसाय में लगाया धन नष्ट हो जाता है। यदि सन्तान सुशिक्षित हो तो उसके लिये अच्छे वर-वधू मेलापक नहीं हो पाता है। लग्न व सप्तम में कालसर्प योग हो तो स्त्री पक्ष कमजोर होता है, उसे पारीवारिक शान्ति प्राप्त नहीं होती।

अनेक संघर्षों व चिन्ताशील रहने से स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है, दुष्भावनायें उसे घेर लेती है, ऐसा व्यक्ति नकारात्मक भावनाओं से वशीभूत हो जाता है। उसकी सकारात्मक सोच समाप्त हो जाती है। भविष्य को लेकर चिन्तित रहता है, नया कार्य करने का साहस नहीं रहता। बार बार चिकित्सा करने पर भी लाभ नही मिलता। कभी कभी चोट दुर्घटनाओं का शिकार हो जाता है। उसके शत्रु अनायास ही पैदा होते हैं। उसके द्वारा किये गये कार्य का यश दूसरा व्यक्ति प्राप्त कर लेता है।

वह काले रङ्ग के या भयावह स्वप्न अधिक देखता है। स्वप्न में बार बार सर्प दिखाई देते हैं। सर्प रेंगते हुये, पीछा करते हुये दिखाई दें, काटने को दौड़ें तो भी सर्प दोष समझें। स्वप्न में यदि श्वेत सर्प काटे या उसके सिरहाने सर्पफण उठाकर बैठा दिखाई दें तो उसे पूर्वजों के आशीर्वाद से लाभ होगा। अत: ऐसे समय पितृ तर्पण करायें, पितृ प्रसन्नता के लिये दान करें।

किसी विधवा स्त्री को देखें, अथवा खुले बालों वाली स्त्री को रौद्ररूप धारण

करते देखें, काली स्त्री को रुदन करते देखें, किसी स्त्री की गोद में मृत बालक को देखें तो अशुभ समय के आगमन की सूचना समझें, अतः कुण्डली व ग्रहदशा के अनुसार शनि, राहु, केतु की शान्ति अवश्य करायें।

स्वप्न में मृत व्यक्ति यदि कोई वस्तु मांगे तो बुरा है, यदि आप वस्तु दे देवें तो अधिक बुरा है। यदि उसे खाली लौटा देवें तो मुसीबत आकर टल जायेगी। बारात देखना, खुद को सजा-धजा देखना, इत्र व तैल का लेपन करना, निर्जन वन देखना, पृथ्वी को फटी हुई देखना, जल में डूबना, निर्जन पहाड़, रेगिस्तान देखना इत्यादि आपत्ति के सूचक हैं। अपना अंगहीन होना, मुण्डन देखना, भैसे या गधे की सवारी देखना अशुभ फल को दर्शाती है अतः ग्रह दशा देखकर शान्ति प्रयोग करायें।

सन्तान न होना, गर्भपात होना, विकलांग होना भी पूर्वजन्म या वर्तमान जन्म के किसी शाप का कारण बताती है। अतः उसका निवारण अवश्य करें।

धर्म-कर्म में मन नहीं लगता। शरीर शुद्धि, खान-पान पर ध्यान नहीं देवे, आलस्य अधिक आये, पैशाचिक पीड़ा या टोना टोटका से पीड़ित होवे तो कालसर्पादि दोष के पाप ग्रहों की शान्ति करायें।

कालसर्प योग का प्रभाव कब नहीं होगा

साधारणतया राहु-केतु के मध्य सभी ग्रह आ जाने पर कालसर्प योग की संज्ञा दी जाती है तथा उसका दुष्परिणाम बताकर व्यक्ति को भयभीत कर दिया जाता है अतः कालसर्प के साथ यह योग भी देखना चाहिये कि कुण्डली में इस कुयोग का नष्ट करने वाले योग विद्यमान है या नहीं।

ऐसा भी है कि कालसर्प योग वाले व्यक्तियों ने बहुत उन्नति की है। सम्राट अकबर, महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरु, महर्षि महेश योगी, धीरूभाई अम्बानी, सरदार पटेल, मार्गेट थैचर इत्यादि सैंकड़ों व्यक्तियों के उदाहरण आपको मिल जायेंगे। अतः कालसर्प योग वाली कुण्डली का अध्ययन सूक्ष्मता से करना चाहिये।

जिस प्रकार किसी-किसी सर्प के पास नागमणि होती है वैसे ही कुछ कालसर्प योग उन्नति कारक होते हैं। कालसर्प जिन घरों के मध्य हैं उनका फल अवश्य न्यूनाधिक होगा परन्तु अन्य राजयोग हैं तो वह फल भी उसको प्राप्त होगा।

जैसे २, ३, ५, ६ छठें घर में कालसर्प हो तो कुटुम्ब व सन्तान चिन्ता। १, २, ७, १२वां कालसर्प स्त्री चिन्ता देवे। अन्य योगों के कारण उसकी उन्नति होगी। शुभ योगों का अवलोकन अवश्य करें जो कालसर्प योग को कमजोर करते हों।

कालसर्प योग को कमजोर करने वाले योग

- **कुण्डली में गजकेसरी योग हो।**
- **राहु-केतु के मध्य के घरों में ४ या ५ घरों में ग्रह होवे। यह योग मालिका योग कहलाता है। जो उन्नति अवश्य देता है।**
- सूर्य या चन्द्रमा के दोनों ओर शुभग्रह उन्नति देते हैं।
- शनि, सूर्य, मङ्गल, बृहस्पति, चन्द्र, बुध अच्छे घरों के स्वामी होकर स्वराशिस्थ व उच्च के होवे तथा शुभ स्थानों के फल की वृद्धि करते हों तो कालसर्प का अशुभ फल नष्ट होगा।
- जो ग्रह नीचका हो उसका राशि स्वामी उच्च का होवे अथवा अच्छे स्थान

में बैठकर शुभ फल का निर्माण करता हो तो उस ग्रह का **'नीच भङ्ग राजयोग''** बनता है।

- ५, ६, ७ या ६, ७, ८ भाव में लगातार ग्रहों की उपस्थिति भी उन्नति देती है। यह **'कूर्म योग''** उन्नति देता है।
- १, ५, ९वें स्थान पर ग्रह शुभ होकर **विष्णु योग** बनाते हैं।
- २, ६, ८, १२वें स्थान में ग्रह योग हो तो पूर्ण कालसर्प योग नहीं बनेगा।
- चर राशि का लग्न हो, शनि उच्च राशि का हो, बृहस्पति शुक्र केन्द्र में हो तो व्यक्ति भाग्यवान होगा, यह योग **''अंशावतार योग''** कहलाता है।
- जातक का जन्म दिन में हो तथा सूर्य चन्द्रमा विषम राशि में हो तो भाग्यशाली होगा।
- केन्द्र में शुभग्रह अच्छे योग बनाते हैं। चारों केन्द्रों में ग्रह **लक्ष्मी, कमल योग** बनाते हैं।
- भाग्य, दशम तथा लाभ भाव के स्वामियों का लग्न, धन, सुख स्थान एवं पञ्चमेश का सम्बन्ध हो।
- योग कारक ग्रहों का आपस में राशि परिवर्तन हो।

जैसे सिंह राशि के लग्न में भाग्येश मङ्गल दशवें घर में तथा दशमेश शुक्र भाग्य में, धनेश बुध लग्न में तथा लग्नेश सूर्य धन स्थान में होने से राशि परिवर्तन योग भी धनी बनाता है। इस प्रकार के योग अन्य लग्नों से भी **देखे गये हैं।**

- **कोई भी ग्रह राहु-केतु की धूरी से बाहर हो तो कालसर्प योग भङ्ग होता है। चन्द्रमा बाहर हो तो आंशिक सर्प योग रहेगा।**
- **जिस ग्रह के अंश राहु केतु के अंशों से अधिक हो और वह मार्गी हो तो वह राहु-केतु की पहुँच से बाहर हो जायेगा और कालसर्प योग भङ्ग करेगा। जबकि वक्रि होने से वह राहु-केतु की ओर बढ़ने लगता है जिससे वह कालसर्प की पहुँच में आ जायेगा एवं कालसर्प योग बनायेगा।**
- **यदि राहु-केतु के साथ अन्य ग्रह बैठे हों कुफल नष्ट हो जायेगा। राहु को सर्प का मुँह व केतु को पुच्छ मानते हैं परन्तु उनके साथ बैठे ग्रह सर्प के मुँह व पुच्छ को दबा लेते हैं इससे उनका कुफल नष्ट हो जाता है।**

❖ राहु-केतु के साथ कर्मेश भाग्येश आदि शुभ योग कारक ग्रह हो तो कुयोग न्यून होगा। राहु दशा अच्छा फल दे सकती है क्योंकि राहु-केतु अपने साथ बैठने वाले ग्रह का फल देते हैं।

❖ शुभ राशि में राहु-केतु हो या शुभ ग्रह से युत या दृष्ट हो तो कालसर्प दोष में न्यूनता आती है।

❖ यदि कोई ग्रह सम राशि में हो तथा नक्षत्र या अंशात्मक दृष्टि से राहु से दूर हो तो कालसर्प दोष में न्यूनता आती है।

❖ एक सर्प बनायें, उसमें २७ नक्षत्रों के नाम लिखें। २७ नक्षत्रों के ९ भाग करें तो ३-३ नक्षत्र एक भाग में आयेंगे। विलोम क्रम से ३ नक्षत्र राहु (सर्प) के मुँह में अन्तिम ३ नक्षत्र पुच्छ भाग में आयेंगे। शेष नक्षत्र उसके पृष्ठ भाग में रहेंगे। राहु की सर्पाकार गति होने से बीच के तीन-तीन नक्षत्र दाँये-बाँये रहेंगे।

नक्षत्रों के नाम इस तरह लिखें -

मुँह - कृ भ अ। बाँये - रे उभा पूभा। दायें - श ध श्र। बाँये - उषा पूषा मू। दाँये - ज्ये अनु वि। बाँये - स्वा चि ह। दाँये - उफा पूफा म। बाँये - आ पु पुन। पुच्छ आश्लृ, मृ रो।

अतः राहु नक्षत्र से विलोम क्रम से गिनने पर १, २, ३, ७, ८, ९, १३, १४, १५, १९, २०, २१वें नक्षत्र में जो ग्रह होगा वह अधिक पीड़ित होगा।

❖ जो ग्रह राहु-केतु के मध्य (चतुर्थ) में पड़ता है उसकी दशा कष्ट कारक होती है।

जैसे किसी व्यक्ति का वृश्चक लग्न है। लग्न में बृहस्पति तीसरे सूर्य बुध, चौथे शुक्र, छठा राहु, आठवां चन्द्र, नवां शनि, दशवां मङ्गल व १२ वां केतु स्थित है। इस जातक के शनि ग्रह राहु-केतु के मध्य में है। इसकी दशा में धन, जायदाद, व्यापार, सभी में हानि होकर पूरी १९ वर्ष की महादशा में बर्बादी हुई जबकि शनि सुखेश होकर भाग्य में होने से जायदाद बननी चाहिये।

इसी तरह मिथुन लग्न के एक जातक के सूर्य बृहस्पति लग्न में है। राहु चौथा, केतु दशवां है। सूर्य पराक्रमेश होने का अपना शुभ फल राहु-केतु के मध्य में होने से नहीं दे सका। सूर्य दशा में उपद्रव, प्रेतबाधा, मन का उच्चाटन, राजकीय विवाद, विद्या में बाधा रही।

मैनें एक विवेचना दी है कि मनुष्य की देह में मूलाधार चक्र में रहने वाली कुण्डलिनी शक्ति (सर्पिणी शक्ति) उसके अनेक जन्मों के कर्मों को संयमित करती है। वह चैतन्य होने पर दिव्यता, सफलता देती है। अनके जन्मों के शापित बन्धनों को काटकर मोक्ष भी प्रदान करती है। अत: सपिर्णि शक्ति का हमारे साथ गहरा रिश्ता है।

शनि की सर्पाकार (सर्प के समान धीरे धीरे चलने वाला) माना गया है। परन्तु शास्त्रों ने उसे **दण्डाधिकारी व न्यायकर्ता रूप** में भी माना है। पूर्व जन्मों के कर्मों का दण्ड शनि अपनी ढैया, साढेसाती अथवा अपनी महादशा में अवश्य देता है।

राहु-केतु भी सर्पिणी शक्ति के अंश हैं अत: इन्हें **कर्मसाक्षी ग्रह** मानना चाहिये। इनका पूर्वजन्म, इहजन्म व भावीजन्म से गहरा सम्बन्ध है।

अर्थात् राहु-केतु जिन राशियों में स्थित हों उनके राशि स्वामी ही हमारे कर्म के साक्षी ग्रह हैं। अत: इनके राशि स्वामी यदि एक साथ हो या एक दूसरे को देखते हो, एक दूसरे की राशि में स्थान परिवर्तन करते हो, शुभ स्थान में, केन्द्र में हो, उच्च राशियों में हो तो **यहाँ कैसा भी कुयोग कुण्डली में पड़ा हो व्यक्ति अच्छी उन्नति करता है।**

पूर्व में वर्णित वृश्चिक लग्न वाले जातक की कुण्डली में राहु मेष राशि में है जिसका कर्मसाक्षी **मङ्गल** है जो दशवें घर में है। केतु तुला राशि में है जिसका स्वामी **शुक्र** कर्मसाक्षी होकर चौथ स्थान में है। शुक्र मङ्गल दोनों शुभ स्थानों में है तथा एक दूसरे को देखते हैं अत: ये ग्रह विशिष्ट उन्नति योग बनाते हैं। शनि में शुक्रान्तर में आध्यात्मिक उन्नति विशेष तथा शनि की ढैया व साढे साति में हानि रही। शनि महादशा की अपेक्षा सप्तमेश व्ययेश की मारक वाली शुक्र दशा ने धन, ऐश्वर्य, आध्यात्मिक उन्नति दी जिसकी जातक ने कभी कल्पना नहीं की।

अत: **कर्मसाक्षी (राहु-केतु की राशि के स्वामी) ग्रह यदि बलवान है तो एक दिन अच्छी उन्नति अवश्य होगी। चाहे कालसर्प योग भी क्यों नहीं हो।**

अत: **यह सिद्धान्त भी ज्योतिष में एक शोध का विषय हो सकता है।**

इन कर्मसाक्षी ग्रहों में छठा, आठवां, द्विर्द्वादश योग है तो फल कमजोर

होगा। कालसर्प दोष को शान्त नहीं कर सकते हो परन्तु उनकी स्थिति अच्छे स्थानों में है तो कालसर्प दोष आंशिक होगा।

❖ राहु–केतु उच्च के हो तो कालसर्प दोष न्यून हो जाता है।

❖ राहु के साथ शुभ ग्रह उस भाव के फल की वृद्धि करेंगे तथा राहु के साथ अशुभ ग्रह उस भाव के फल को न्यून करेंगे।

❖ राहु–केतु के साथ मङ्गल, शनि हो तो अशुभ फल में वृद्धि होगी।

❖ मिथुन राशि में राहु उच्च का होनें से दोष का निवारण होता है। वृष कर्क व कन्या राशि में राहु हो तो सर्प दोष में कमी आती है।

❖ राहु का फल शनि के समान तथा केतु का फल मङ्गल के समान माना गया है। अत: शनि भी शुभ हो, असुराचार्य शुक्र शुभ हो तो राहु का दोष कम होता है। मङ्गल शुभ कारंक हो तथा देवगुरु बृहस्पति शुभ होतो केतु का अशुभ फल नष्ट होता है।

❖ जिन व्यक्तियों के कालसर्प दोष होता है उसंके परिवार के अन्य व्यक्तियों की कुण्डली में भी यह योग पाया जाता है। अत: परिवार में पूर्वज की असद्गति के कारण या पैशाचिक बाधाओं के कारण भी जातक इससे पीड़ित हो सकता है। इसके लिये नारायणबलि कर्म अथवा नागबलि कर्म कराना चाहिये। पूर्वजों द्वारा किये गये पापों का भुगतान भी उनके वंशजों करना पड़ता है। पूर्वजों द्वारा अन्याय पूर्वक कमाया गय धन आने वाली पीढीयों को बर्बाद कर सकता है। पूर्वजों ने पुण्य कार्य किये हो तो उनके वंशज सुखी रहेंगे।

❖ सत्यवादी, सात्विक तथा सत्कर्म करने वाले पर इसका प्रभाव न्यून होता है। मदिरा, माँस, परस्त्री संग तथा दुराचार का आश्रय लेने वाला व्यक्ति अधिक दु:खी होगा।

❖ कुण्डली में **छत्र योग** का निर्माण हा रहा हो तो कालसर्प दोष न्यून हो जाता है।

❖ द्वितीय या द्वादश भाव में शुक्र, गुरु केन्द्र में हो, दशवां मङ्गल हो, शनि उच्च का हो ता कालसर्प योग भङ्ग हो जाता है।

❖ मजदूर वर्ग शनि, राहु का प्रतीक है, इनको आंशिक कष्ट होता है। इनके पास होता ही क्या है जो पाप ग्रह उनसे छीन लेंगे।

कालसर्प योग के सकारात्मक प्रभाव

ज्योतिष शांस्त्र राहु केतु की धुरी को "कार्मिक धुरी" मानता है और यह हमारे पूर्व जन्मों के कर्मों को दर्शाती है। प्रायः देखा जाता है कि यदि परिवार में किसी एक सदस्य के कालसर्प योग है तो अन्य सदस्यों के भी पूर्ण या आन्शिक कालसर्प योग दोष होगा। यह हमारे पूर्वजों के "ऋणानुबन्धन" के कारण है।

कालसर्प दोष युक्त मनुष्य हमेशा धन, परिवार, सन्तान, चिन्ता से ग्रसित रहता है। जीवन में कई उतार चढ़ाव आते हैं। जिससे या तो वह निढाल होकर बैठ जायेगा "या जीवन के कटु अनुभवों से ज्ञान प्राप्त कर संघर्ष से लड़ने की नई शक्ति प्राप्त करेगा।" जिसके कारण प्रबल आत्मबल प्राप्त कर भाग्य भरोसे नहीं होकर, अपने बाहुबल से उन्नति प्राप्त करता है। उसका जीवन दूसरों की सेवा में समर्पित हो जाता है एवं उसे ख्याति प्राप्त होती है"

यह योग बड़े बड़े राजनेताओं, उद्यमियों की कुण्डली में पाया जाता है। यदि पहले कंगाल स्थिति रहती है तो यह योग बाद में "रंक से राजा" बना देता है। व्यक्ति जीवन में नई ऊँचाईयों को छूता है, जिसकी उसने कल्पना भी नहीं की होती है।

कुण्डली में राजयोग या ग्रहों की उच्च स्थितियाँ हो तो प्रारम्भिक बाधाओं के बाद व्यक्ति नई ऊँचाइयों को छूता है। अभिशिप्त जीवन की बजाय ऐश्वर्य युक्त जीवन जीता है। दुष्ट बाधाओं को पार करनें पर, कालसर्प शान्ति के बाद तथा दशा भोग काल बाद कालसर्प के सकारात्मक प्रभाव भी दिखाई देते हैं। अतः इस योग के नाम से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है।

१. अनन्त कालसर्प योग

लग्न में राहु-केतु के कारण व्यक्ति कष्ट पाता है, वैवाहिक जीवन व गृहस्थ में बाधायें आती है। दोष शान्ति से सकारात्मक फल प्राप्त होते हैं। यदि राहु वृष

मिथुन राशि में हो तो राहु वरदान स्वरूप उच्च राजयोग देता है।

२. कुलिक कालसर्प योग

धन घर से अष्टम भाव में राहु-केतु ग्रह पहले जीवन में धन लाभ देवें तो उत्तरार्ध खराब रहे। यदि पहले दु:ख प्राप्त हो तो मध्यायु बाद सुखी हो। राहु वृष या मिथुन का हो तो धन, कुटुम्ब की वृद्धि करे। गढ़ाधन सट्टा, लॉटरी से भी अचानक धन दिलाता है।

३. वासुकि कालसर्प योग

तृतीय भाव में उच्च स्थानस्थ होकर भाग्येश, पञ्चमेश, राज्येश से युत हो एवं राहु वृष या मिथुन का हो तो साम्राज्य योग प्रदान करता है।

४. शङ्खपाल कालसर्प योग

राहु चतुर्थ भाव में वृष का मिथुन का हो एवं चतुर्थेश बलवान हो तो व्यक्ति कुछ समय कष्ट पायेगा बाद में उन्नति होवे। मानसिक चिन्ता व रोग उसे अवश्य बने रहे।

५. पद्मकालसर्प योग

पञ्चमेश बलवान हो, उच्च राशिस्थ हो, राहु वृष या मिथुन में हो तो विलम्ब से सन्तान होवे। व्यक्ति तन्त्र मन्त्र एवं ज्योतिष तथा गुप्त विद्याओं का जानकार होवे। अपने कुल में उत्पन्न व्यक्ति का दोष हो तो नारायण बलि तथा पितृ श्राद्ध कराने से उन्नति होवे।

६. महापद्म कालसर्प योग

षष्ठेश उच्च राशि में हो बलवान होवे, राहु उच्च का हो तो शत्रुओं पर विजय प्राप्त होवे। नौकरी राजपक्ष ठीक रहे। विदेश यात्रा भी करें।

७. तक्षक कालसर्प योग

सप्तम में राहु लग्न में केतु होने से यह योग बनता है। राहु वृष या मिथुन का हो, सप्तमेश उच्च का हो, भाग्येश धनेश से युत हो तो साझेदारी में लाभ रहे। स्त्री पक्ष ठीक ठीक रहे। अन्तरजातीय विवाह भी हो सकता है।

८. कर्कोटक कालसर्प योग

जातक पहले दु:खी रहे, मध्यायु बाद धनी हो, राहु उच्च का हो, धनेश भाग्येश सम्बन्ध हो तो धनी होवे। अचानक धन लाभ होवे।

९. शङ्खनाद कालसर्प योग

राहु मिथुन या वृष राशि का हो एवं भाग्येश, कर्मेश बलवान हो तो उत्तम धन लाभ हो। भाग्यवृद्धि होवे।

१०. घातक कालसर्प योग

राहु उच्च का या वृष का हो, लग्नेश, भाग्येश, दशमेश, पञ्चमेश का योग हो तो उच्च राजयोग समाजसेवी योग बनाता है।

११. विषाक्त कालसर्प योग

उच्च या वृष का राहु अभीष्ट की पूर्ति करता है। लाभेश के बलवान होने पर आय के अनेक साधन बनते हैं। अधिक लाभ ४२ वर्ष बाद शुरु होता है।

१२. शेषनाग कालसर्प योग

लग्नेश, भाग्येश, राज्येश बलवान योग कारक होवे। राहु वृष या मिथुन में हो तो उच्च पद, प्रतिष्ठा, राजनेता होवे। धनी मानी होवे, विदेश योग बने।

कालसर्प योग का प्रभाव काल

कालसर्प योग का प्रभाव अधिकतर राहु-केतु की महादशा में या अन्तर दशा में होता है। किसी किसी की कुण्डली में ऐसा होता है, कि राहु महादशा उनके जीवन में आती ही नहीं है। अत: राहु-केतु अन्तर-प्रत्यन्तर दशा में ही उनका थोड़ा फल मिलता है। जीवन का पूर्वार्द्ध सुखी हो तो उत्तरार्ध कमजोर होता है।

कई कुण्डलियों में देखा है कि जिनके कालसर्प योग होता है तथा राहु दशा नहीं आ रही है, उनकी कुण्डली में शनि महादशा कमजोर हो जाती है।

कभी-कभी राहु-केतु के मध्य में पड़ने वाले ग्रह की दशा भी कमजोर हो जाती है। जैसे मिथुन लग्न की कुण्डली में सूर्य बृहस्पति लग्न में है, दशवां केतु चौथा राहु है जातक की सूर्य दशा कमजोर रही।

वृश्चिक लग्न में छठा राहु, भाग्य में सुखेश पराक्रमेश शनि, १२ वें केतु स्थित है। शनि भाग्य स्थान में राहु-केतु के मध्य में है, शनि महादशा में जमीन जायदाद संपत्ति की वृद्धि होनी चाहिये। ऐसा नहीं होकर जातक की जमीन जायदाद, व्यापार, सम्पत्ति सब नष्ट हो गया। शनि महादशा के १९ में से १७ वर्ष जातक के खराब रहे।

जब जातक का जन्म शुक्ला एकादशी तिथि के आस पास या कृष्ण पक्ष में पञ्चमी के आस पास हो तो सूर्य चन्द्रमा में नवम-पञ्चम योग होता है। गोचर भ्रमण से जब राहु केतु सूर्य या चन्द्रमा पर आयेंगे तो सूर्य चन्द्रमा दोनों पर उनकी दृष्टि पड़ने से चिन्ता योग बनेगा। ऐसा योग प्रत्येक ९ या १८ वर्ष के अन्तराल में विशेष घटित होगा।

शुभ स्थान में बैठे बृहस्पति, शनि, मङ्गल पर राहु केतु का गोचर भ्रमण बृहस्पति, शनि, मङ्गल से १५० अंश अथवा २१० अंश की दूरी होगी तब पूर्ण षडाष्टक योग बनने से चिन्ता बाधा आये।

यदि सप्तम भाव में राहु, लग्न में केतु शेष ग्रह ८, ९, १०, ११, १२ में स्थित हो तो जातक के २८ वें वर्ष पश्चात् कालसर्प योग का प्रभाव दिखाई देने लगता है। कुछ विद्वान कहते हैं कि कालसर्प का प्रभाव ४२ वे वर्ष या ४९ वें वर्ष तक रहता है। कुछ विद्वान ५६ वर्ष तक प्रभाव मानते हैं परन्तु कुछ कुण्डलियों में मैनें देखा है कि व्यक्ति अपनी ग्रह दशानुसार ७०-७२ वर्ष तक सुखी रहें, इसके बाद उनका पतन शुरु हुआ। इसके पहले कालसर्प योग का कोई प्रभाव नहीं दिखा। अतः दशाफल का विवेचन नहीं करना चाहिये।

यदि कुण्डली में ४, ८, १२ वें राहु-केतु हो, उनके साथ सूर्य-चन्द्र, मङ्गल, शनि या बुध हो तो भी उसे कालसर्प के समान कष्ट प्राप्त होता है।

राहु-केतु के साथ मङ्गल शनि वक्री होकर बैठे हैं, तो अशुभ फल में वृद्धि होगी। कुछ विद्वानों के अनुसार राहु-केतु के साथ बैठे ग्रह की अंशात्मक दूरी के अनुपात के वर्षों में जातक को कष्ट होगा। जैसे राहु ७ अंश का सूर्य २० अंशों का तो दोनों का अन्तर १३ हुआ। अतः १३, २६, ३९, ५२, ६५, ७८ वें वर्ष में जातक को कष्ट प्राप्त होगा।

कालसर्प योग कब अधिक भारी होता है

कालसर्प योग पूर्व जन्म के कर्मो के अनुसार अच्छा या बुरा होता है। यदि कुण्डली में राजयोग है तो जातक उन्नति अवश्य करेगा परन्तु जिस घर में कालसर्प योग बना है, उस भाव के सम्बन्ध में चिन्ता अवश्य देगा।

❖ कालसर्प योग वाला व्यक्ति माँसाहारी, दुर्व्यसनी, दुराचारी तथा परधन को अपहृत करने वाला होवे अथवा चोरी, डाका करने वाला होवे तो वह कुछ समय ही सुखी रह सकता है एक दिन उसे बहुत पछताना पड़ता है।

❖ मन कर्म वचन से दूसरों का बुरा चाहने वाला, दूसरों की दु:खी आत्माओं की दुराशीष के कारण दु:ख अवश्य भोगेगा।

❖ यदि ग्रहण के समय जन्म हो, तो ग्रहण शान्ति अवश्य करायें।

सूर्य-राहु, बृहस्पति-राहु, शनि-सूर्य, शनि-चन्द्र, शनि-मङ्गल तथा सूर्य-चन्द्र मङ्गल का राहु, शनि, केतु से योग होतो भी व्यक्ति दु:खी रहेगा।

❖ राहु-केतु का सूर्य, चन्द्र या बृहस्पति से षडाष्टक योग हो तो व्यक्ति दु:खी होगा। राहु-शनि षडाष्टक में भी अशुभफल की वृद्धि होगी।

❖ अशुभ भावों में अशुभ युतियाँ भी परेशानी बढाती है।

❖ कालसर्प योग हो तथा सर्पयोनि (रोहिणी, मृगशिरा नक्षत्र) में जन्म हो तो कालसर्प दोष बढ़ जाता है।

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र की योनि नकुल है अत: वर-वधू मेलापक में इसका त्याग करें। यदि कालसर्प दोष भी है तो वैवाहिक जीवन विशेष कष्ट कारक होगा।

❖ राहु-केतु वक्र गति से चलते हैं अत: सभी ग्रह केतु से राहु के बीच स्थित हो, तो गोचर ग्रह वशात् सभी ग्रह राहु के मुख में आते जायेंगे अत: यह

कालसर्प योग अधिक भारी रहेगा।

❖ यदि राहु-केतु के साथ स्थित ग्रहों के अंश कम होवे तथा राहु-केतु के अंश ज्यादा हो। यदि अधिक अंश वाले ग्रह वक्री हो तो सर्प दोष में वृद्धि होगी।

❖ यदि जन्मकुण्डली में चन्द्रमा के आगे-पीछे अथवा साथ में कोई ग्रह नहीं हो तो "केमद्रुम" (दरिद्री) योग होने से कालसर्प का प्रभाव बढ़ेगा। इसी प्रकार कुण्डली में "शकट योग" या दरिद्री योग हो तो भी कालसर्प का विष बढकर व्यक्ति को समस्या व संघर्ष अधिक प्रदान करेगा।

❖ अधिकतर ग्रह नीच राशि या शत्रुराशि में होवे।

❖ अमावस्या का जन्म हो तथा चन्द्रमा कमजोर हो।

❖ कालसर्प योग हो तथा व्यक्ति का जन्म भरणी, आर्द्रा, आश्लेषा,मघा, जेष्ठा, मूल, विशाखा नक्षत्र में हुआ हो। अतः ग्रह शान्ति अवश्य करायें।

❖ जातक के जन्म के दिन ज्वालामुखी योग हो - प्रतिपदा को मूल नक्षत्र, पञ्चमी को भरणी, अष्टमी को कृत्तिका, नवमी को रोहिणी नक्षत्र में जन्म हो तथा कालसर्प योग हो तो व्यक्ति के जीवन में ग्रहों का दुष्प्रभाव अधिक होगा। ग्रह शान्ति व मृत्युञ्जय प्रयोग अथवा पार्थिव शिव पूजन करायें।

❖ राहु में केतु का अन्तर या केतु में राहु का अन्तर चल रहा हो तो ग्रह बल देखकर ही फलादेश जानें, क्यों कि इस समय कालसर्प योग पूर्ण बनेगा। यदि इस समय शनि का प्रत्यन्तर आ जाये तो समय अधिक कष्ट कारक होगा।

❖ यदि व्यक्ति अधिक लाभ कमा रहा है एवं दोनों हाथों से धन लुटा रहा है, मित्रों बन्धु, रिश्तेदारों की सहायता कर रहा है तो उसे सावधान होना चाहिये एक दिन वे सभी व्यक्ति उसके शत्रु होकर उसको नुकसान पहुँचा देंगे अतः अर्थ का आदान प्रदान समुचित मात्रा में करें। भविष्य का ध्यान रखते हुये कुछ धन अपने लिये सुरक्षित रखें।

❖ यदि कुण्डली में शाप योग भी स्थित होवे तो कालसर्प दोष में वृद्धि होगी।

- राहु का सूर्य चन्द्र से योग "ग्रहण योग" राहु मङ्गल युति "अङ्गारक योग" राहु-बुध "जडत्व योग", राहु-बृहस्पति "चाण्डाल योग" राहु-शुक्र "अभोत्वक योग" राहु-शनि "नन्दी योग" बनाते हैं। ये योग यदि अशुभ स्थानों में बनते हैं तो विशेष हानिकारक हैं।
- मङ्गल-राहु, राहु-सूर्य, राहु-चन्द्र, राहु-शनि का आठवें, १२ वें घर में योग अशुभ फल की वृद्धि करता है।
- जातक अभिचार कर्म, टोना-टोटका व पैशाचिक प्रवृत्ति से प्रभवित रहता है।
- पञ्चम भाव (इह जन्म) नवम भाव (पूर्वजन्म) दूषित होवे।
- व्यक्ति आलसी होवे, खान-पान व शरीर शुद्धि का ध्यान नहीं रखें।
- निवास स्थान में वास्तु दोष होवे, स्वच्छता का ध्यान नहीं रखें।
- पूर्वजों का अपमान करें, उनके निमित्त श्राद्ध या पैतृक कर्म नहीं करें।
- अधिक रात्रि तक जगे, प्रात: जल्दी नहीं उठे तो वह जातक अपने आत्मबल को कमजोर कर लेता है। वर्तमान जीवन शैली में व्यक्ति अधिक रात्रि तक कार्य करते हैं और प्रात: देर से उठते हैं जिससे एक दिन "ओवर कोन्फीडेन्स" एवं अधिक धन कमाने की चाह में परिवार से दूर हो जाते हैं तथा कमाया हुआ धन एक दिन अचानक नष्ट हो जाता है। क्योंकि कि सात्विक समय की कमाई धन लक्ष्मी ही स्थिर रहती है।

॥ कालसर्प योग के विविध प्रकार ॥

जब सभी ग्रह राहु-केतु की धूरी के एक ओर आ जाते हैं अथवा दूसरी भाषा में कहें कि राहु-केतु के मध्य आ जाते हैं तो कालसर्प योग बनता है।

१२ लग्नों के आधार पर १२ तरह के कालसर्प योग माने गये हैं। अलग-अलग राशि में इनके फल में कुछ परिवर्तन हो जाता है अत: १२ × १२ = १४४ प्रकार के कालसर्प योग बनते हैं। इनमें से कभी ग्रह राहु से केतु के मध्य होते हैं, तो कभी केतु से राहु के मध्य इससे उनका फल अलग अलग हो जाता है। इससे १४४ × २ = २८८ प्रकार के कालसर्प योग मुख्य जानने चाहिये। यदि एक-एक ग्रह राहु-केतु की पहुँच से बाहर चला जाता है आंशिक कालसर्प योग बनता है अत: कुल २८८ × १२ = ३४५६ प्रकार के कालसर्प योग होंगे।

१२ भावों के आधार पर १२ कालसर्प योग इस प्रकार है -

१. अनन्त	**२. कुलिक**	**३. वासुकि**
४. शङ्खपाल	**५. पद्म**	**६. महापद्म**
७. तक्षक	**८. कर्कोटक**	**९. शङ्खचूड़**
१०. घातक	**११. विषाक्त**	**१२. शेषनाग**

दृश्य गोलार्द्ध एवं अदृश्य गोलार्द्ध कालसर्प योग

दृष्य गोलार्द्ध कालसर्प योग

१. द्वादश भाव में राहु तथा छठे भाव में केतु, शेष ग्रह छठे भावसे १२ वें भाव के मध्य हो या सप्तम भाव से एकादश भाव के मध्य हो अर्थात् केतु से राहु के मध्य स्थिर हो तो यह महापद्म कालसर्प योग है। इसमें योग अधिकतर ग्रह भाग्य, कर्म व लाभ स्थान में होने से नौकरी व्यवसाय में उन्नति कारक है। यदा कदा ऋण रोग चोट परेशानी योग बन सकता है। जीवन के पूर्वार्द्ध में धन कमाये तो उत्तरार्ध में शुभ कार्यों में खर्च अधिक करें।

२. लग्न स्थान में राहु तथा सप्तम में केतु हो शेष ग्रह राहु केतु के मध्य में हो

तो यह भी दृश्य गोलार्द्ध कालसर्प योग बनता है। यदि मध्य के भावों में लगातार ग्रह हो तो व्यक्ति अच्छी उन्नति करता है। अर्थात् **''माला योग''** बने तो शुभ रहे। ऐसा व्यक्ति प्रारंभ में धन कमाये तो उत्तरार्ध में यश हानि, धन हानि, स्वास्थ्य कमजोर रहे। क्योंकि गोचर ग्रह पश्चात् सभी ग्रह राहु के मुँह में जायेंगे इसलिये यह योग अधिक कष्ट कारक रहे।

अदृश्य गोलार्द्ध योग

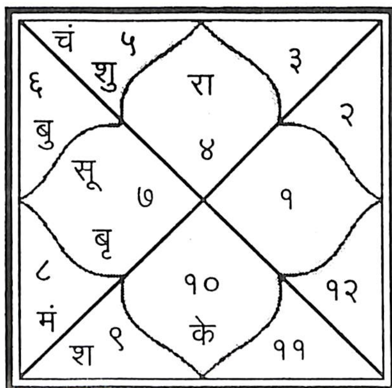
१. इस योग में ६ ठें स्थान पर केतु १२ स्थान राहु होता है। शेष ग्रह ५, ४, ३, २, १ भावों में होने से गोचर भ्रमणमें ग्रह राहु के मुखमें नहीं जायेंगे।अत:विशेष कष्ट कारक नहीं होता है।

२. पञ्चम भाव में केतु एकादश भाव में राहु शेष ग्रह १२, १,२, ३, ४, भाव मेंहो तो गोचर भ्रमण वशात् ग्रह राहु के मुख में नहीं जाने से योग विशेष कष्ट कारक नहीं रहे।

॥ अथ द्वादश कालसर्प योग फलम् ॥

१. अनन्त कालसर्प योग

लग्न स्थान में राहु सप्तम स्थान में केतु अथवा लग्न में केतु सातवें राहु हो एवं सभी ग्रह उनके मध्य में होतो अनन्त नामक कालसर्प योग बनता है। यह व्यक्ति स्वार्थी व कूटनीतिज्ञ होवे। राहु के साथ सूर्य, चन्द्र, मङ्गल हो तो क्रोधी होवे स्वास्थ्य मध्यम रहे, चोट दुर्घटना योग भी बने तथा अनकानेक कारणों से चिन्तित रहे। उसे मान हीं मिले गुप्त शत्रु बढ़े। राहु के साथ बुध हो तो बड़बोला हो, शुक्र राहु शनि योग कुछ ऐसी घटनायें घटित करते हैं, जिससे व्यक्ति उदासीन होकर एकान्त पसन्द करते हैं। यदि कुण्डली में अन्य शुभ योग हो तो व्यक्ति आध्यात्म की ओर बढ़ता है क्योंकि उसका वैवाहिक जीवन सुखद नहीं होता। सम्बन्ध विच्छेद या दोनों में वैमन्यस्ता पैदा करता है। यदि शुभ ग्रह स्त्री पक्ष को सुधारते हैं तो पत्नि रोगी रहे।



१. अनन्त कालसर्प योग

यदि लग्नेश सप्तमेश का आपस में केन्द्र, त्रिकोण, राशि परिवर्तन अथवा दृष्टि योग बनता है तो जीवन अधिक समय कष्टमय नहीं रहेगा।

इस कुण्डली में प्रत्येक घर में ग्रह होने से ''माला योग'' बनता है जो राजयोग देता है, अतः कालसर्प दोष अति न्यून रहेगा।

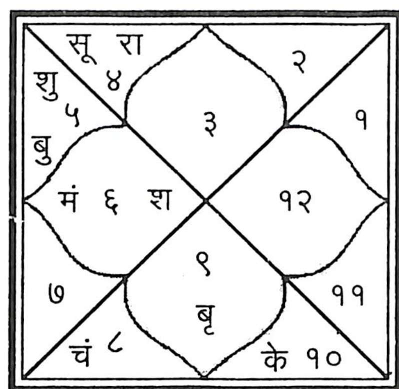
सन्तान घर पर राहु कीदृष्टि होने से सन्तान की चिन्ता भी प्राप्त होती है।

यदि लग्न में केतु सातवें राहु हो तो गोचर भ्रमण से राहु वक्री होकर ग्रहों को अपना ग्रास बनायेगा, दूसरे ग्रह मार्गी होकर आगे बढेंगे तो राहु के मुख में जायेंगे यह योग अधिक कमजोर होता है। अर्थात् दुष्परिणाम अधिक होंगे, जीवन संघर्षमय रहेगा।

२. कुलिक कालसर्प योग

दूसरे भाव में राहु हो तथा केतु अष्टम भाव में हो, शेष सात ग्रह उनके मध्य में हो तो कुलिक नामक कालसर्प योग बनता है। यह जातक धन की तंगी अधिकतर महसूस करेगा, धन के लिये कठिन संघर्ष करना पड़ेगा। ऐसा व्यक्ति रिश्तेदारों से धन का लेन देन नहीं करें, उनसे सम्बन्ध खराब होंगे।

स्वास्थ्य भी ऐसे व्यक्ति का जल्दी खराब होगा। टोना-टोटका, प्रेतदोष उस पर शीघ्र लागू होंगे। व्यापार में अधिक मेहनत करें तो भी नौकरी जितना ही धन प्राप्त होगा।



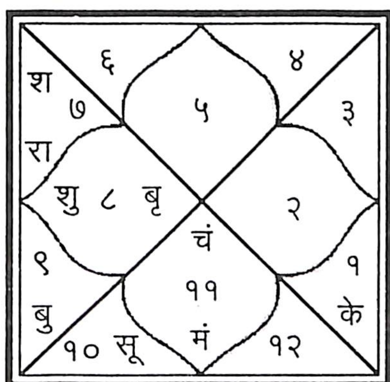
२. कुलिक कालसर्प योग

यदि दूसरे भाव में राहु या केतु हो तथा उनके साथ सूर्य या चन्द्रमा हो तो स्त्री की आयु कम होगी क्योंकि द्वितीय भाव स्त्रीघर से आठवां पत्नि की आयु का घर, है उसमें ग्रहण योग स्त्री की हानि करता है। कुटुम्ब चिंता व धन चिन्ता देता है।

कोई भी कालसर्प योग होवे उस कुण्डली में सूर्य चन्द्रमा एक दूसरे से नवम-पञ्चम होंगे तो जब भी राहु गोचर में सूर्य या चन्द्र पर आयेगाउस समय वह सूर्य चन्द्र दोनों को देखेगा अतः वह समय कष्ट कारक होगा। प्रस्तुत कुण्डली में ऐसा ही योग है।

३. वासुकी कालसर्प योग

तृतीय भाव में राहु तथा नवम भाव में केतु हो तो **वासुकी कालसर्प योग** बनता है। ऐसा व्यक्ति अपने भाईयों व कुटुम्बियों से दु:खी रहता है। उसे घर का पड़ौस भी अच्छा नहीं मिलता। आत्मीयजन उससे जलन करते हैं। भाग्य मन्द गति से चलता है। कन्धों में दर्द रहेगा। सफलता के किनारे आकर रुक जाये। प्रतिस्पर्धा में मेरिट में कुछ नम्बरों से रह जाये। एजेन्सी, ठेका, तेजी-मन्दी, शेयर्स में नुकसान रहे। डरावने स्वप्न, काले स्वप्न आये या स्वप्न में सर्प अधिक दिखाई दे। छोटे बच्चे रात को बिस्तर गीला कर देवे। कुटुम्ब में कोई अकाल मृत्यु होवे, उसकी आत्मा परेशान करे।



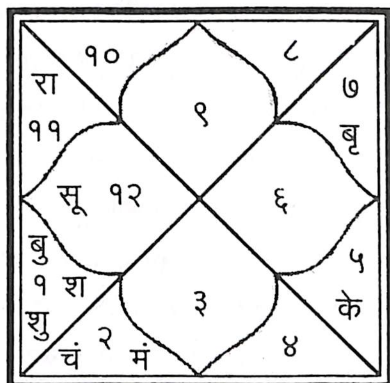
३.१ वासुकी कालसर्प योग

यदि शुभ ग्रह राहु के साथ होवे तो उसे घटना का पूर्वाभास हो जाये। कुण्डली में अच्छे योग होवे, तृतीयेश नवमेश बलवान होवे तो व्यक्ति भविष्यवक्ता भी हो सकता है।

इस जातक को हनुमान, भैरव या कार्तिकस्वामी की उपासना करनी चाहिये। मनोवाञ्छित फल नहीं मिलने से जातक कभी कभी नास्तिक भी हो जाता है। यदि तीसरे स्थान में केतु या नवें राहु हो तो व्यक्ति छल कपट करे, तन्त्र मन्त्र प्रयोग करे।

ऐसा व्यक्ति झूठे किस्से आसानी से गढ़ लेता है। जातक वकील, एक्साईज इंस्पेक्टर, नर्सिंगकार्य, तस्करी कार्य भी करता है। परिस्थितों से झूझते हुये कुछ जातक अदम्य साहसी भी होते हैं।

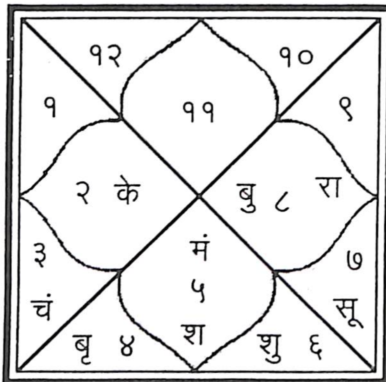
सातवें घर पर राहु की दृष्टि होने से एवं पञ्चम स्थान कमजोर होने पर विवाह में विघ्न कारक है। कुण्डली नं० ३.२ में पञ्चमेश मंगल शून्य अन्श का है एवं पञ्चम में नीच का शनि है, इससे जातक की ३९ वर्ष तक शादी नहीं हुई। बृहस्पति राहु-केतु से बाहर होने से आंशिक कालसर्प योग है।



३.२ आंशिक वासुकी कालसर्प योग

४. शङ्खपाल कालसर्प योग

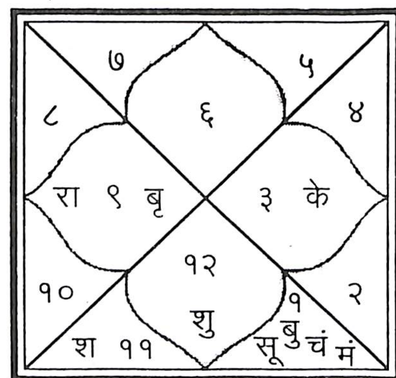
चतुर्थ भाव में राहु तथा दशम भाव में केतु हो तथा सभी ग्रह राहु-केतु के मध्य हो अथवा दशवे राहु चौथा केतु हो तो भी **शङ्खपाल नामक कालसर्प योग** बनता है। चतुर्थ भाव सुख, सम्पत्ति, जायदाद, निद्रा, हृदय तथा शयन सुख का एवं माता का होता है। यह योग इनमें से किसी एक पक्ष को विशिष्ट हानि देगा। यदि जीवन में अच्छा धन कमा लिया हो तो जीवन के उत्तरार्ध में सब कुछ लुट जायेगा। इसके लिये ग्रहों की दशा का अवश्य अवलोकन करें। किसी की जायदाद हानि करे, किसी को गृह कलह, तलाक, पत्नि वियोग देवे तो किसी के माता पिता की शीघ्र मृत्यु होवे। दूसरों से धोखा मिलेगा, जातक चिन्ताशील रहे। पति-पत्नि में किसी का चरित्र संदिग्ध हो सकता है।



४.१ शङ्खपाल कालसर्प योग

कुण्डली नं ४.१ सीताराम केसरी की है। राहु का राशि नाथ मङ्गल लग्नेश शनि के साथ है। केतु का राशि राशिनाथ (कर्मसाक्षी ग्रह) धन घर को उच्च क दृष्टि से देखता है, शुक्र का राशि नाथ बुध दशवें नीच राजभङ्ग योग बनाता है अतः जीवन में उन्नति हुयी परन्तु अन्त कमजोर रहा।

कुण्डली नं० ४.२ ऐसे व्यक्ति की है जिसके कभी ब्याज का काम था और उसके यहाँ तराजू में सोने का लेन देन होता था। उसे कमजोर समय में २-२ किलो आटा खरीद कर खाना पड़ा। नीच का राहु भूमी दोष, वास्तु दोष भी प्रकट करता है। उस व्यक्ति के मकान में पहली मंजिल ११ फुट, दूसरी मजिल १३ फुट व तीसरी मंजिल १५ फुट ऊँची थी। अतः मैनें उसे वह स्थान छोड़कर अन्यत्र रहने की सलाह दी। ऐसा करने पर उसकी पुनः उन्नति हुई। इस जातक की कुण्डली में राहु ने बृहस्पति का फल दिया। अतः राहु दशा, अन्तरदशा अच्छा रही,बृहस्पति का फल राहु ने दे दिया इसलिये बृहस्पति की दशा,

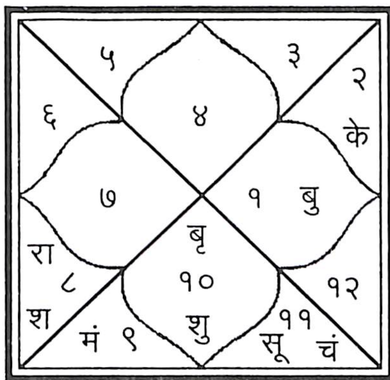


४.२ शङ्खपाल कालसर्प योग

अन्तरदशा कमजोर रही।

५. पद्मकाल‍सर्प योग

पञ्चम भाव में राहु ११ वें भाव में केतु हो तो यह **पद्म नामक कालसर्प योग** होता है। यों तो कहते हैं पाँचवा राहु विदेश विद्या, अंग्रेजी तथा गणित में अच्छा होता है अर्थात् विद्या में सहायक है परन्तु कालसर्प योग बनने पर यह विद्या में अवरोध देता है। पाँचवे राहु-केतु का सूर्य चन्द्र मङ्गल के साथ योग हो तो विद्या में अवरोध, सन्तान चिन्ता, गर्भपात होवे। ऐसे जातक की वाणी असंयमित रहती है, क्रोधी होता है। जादू, टोना, अभिचार कर्म से पीड़ित होकर तरह तरह के दु:ख प्राप्त करता है।



५. पद्म कालसर्प योग

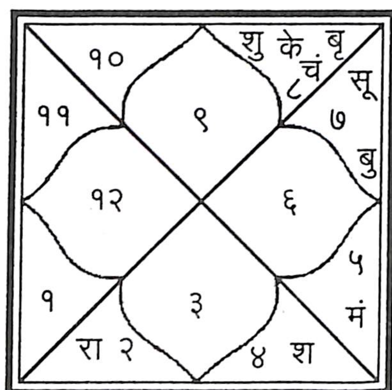
सन्तान सुख में कमी रहती है, सन्तान जीवित कम रहती है, पुत्रियाँ अधिक हो या सन्तान की दिनचर्या ठीक नहीं होवे। सन्तान के व्यापार, विवाहादि की चिन्ता विशेष रहे। सन्तान सुख में बाधा निवारण के लिये १४ तरह के शाप योगों का अवलोकन अवश्य करें।

जातक तन्त्र-मन्त्र, पैशाचिक साधना की ओर अग्रसर हो सकता है जो आगे जाकर उसका भविष्य बिगाड़ देगी। इस प्रकार के व्यक्ति के मित्र धोखा देने वाले होंगे। पूजा-अनुष्ठान कर्म अक्सर अधूरा रहेगा। मन में उत्साह कम रहेगा। मङ्गल कार्यों में अधिकांशत: विलम्ब होगा या विघ्न आयेंगे। लड़कियों को सुसराल में परेशानी रहे, बहुयें सेवाभावी नहीं होगी।

व्यक्ति की सोसायटी गलत होगी। गलत खान-पान व नशे की लत होगी। जुआ सट्टे में धन गंवायेगा। प्रेम के क्षेत्र में धोखा होगा। पञ्चम भाव प्रभावित होने से, पञ्चमेश शून्य अंश का हो तो भी सन्तान की चिन्ता रहे। बृहस्पति-शुक्र की अंशात्मक युति हो या इनमें षडाष्टक योग हो तो स्त्री के गर्भाशय में खराबी, मासिक धर्म बन्द होना या रुकावट आवे। यदि स्त्री का स्वास्थ्य ठीक हो तो पुरुष के शुक्राणु कमजोर होंगे।

६. महापद्म कालसर्प योग

षष्टम भाव में राहु तथा १२ वें भाव में केतु हो तो यह योग **महापद्म कालसर्प योग** होता है। यह योग रोग वं शत्रु की वृद्धि करता है, अन्त में विजय दिलाता है। वृथा वादविवाद मुकद्दमेबाजी कराता है। चोरी, डकेती, से धन हानि होवे। आर्थिक परेशानी तथा वृथाभ्रमण एवं वृथा खर्चे रहे। बिमारियाँ परिवार में लम्बी चले। किसी न किसी की बिमारी पर परिवार में खर्चा होता रहे। व्यापार की अपेक्षा नौकरी ठीक रहे। नौकरी में भी विवाद चलता रहे, उन्नति समय पर नहीं होवे। प्रत्येक कार्य में रुकावट रहे, क्योंकि यह भाव भाग्य स्थान से दशवां है, अत: भाग्य को कमजोर करता है।



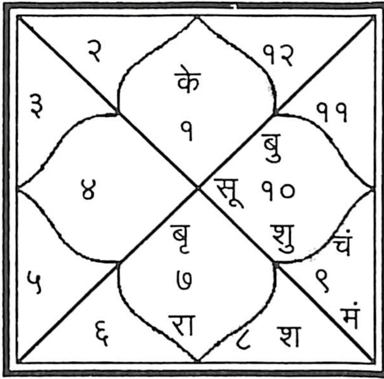
६. महापद्म कालसर्प योग

सन्तान घर से आठवां घर अर्थात् १२ वें घर में केतु सन्तान के लिये कमजोर होता है, अत: सन्तान सुख हेतु केतु का उपाय करें, दो रंग का कुत्ता पालें। पार्थिव शिव व गणपति की पूजा करें।

इस कुण्डली में सन्तान घर का स्वामी मङ्गल भाग्य में, भाग्येश सूर्य सन्तान घर को उच्च की दृष्टि से देखता है फिर भी सन्तान नहीं हुई। केतु शून्य अंश १७ कला का है बृहस्पति ११ अंश, शुक्र १७ अंश के हैं जो केतु से अधिक अंशों में है। अत: अंशो के आधार पर आंशिक कालसर्प योग होने पर भी सन्तान नहीं हुई।

इस कुण्डली में केतु १२ वां सन्तान अवरोध कारक है। यदि गोचर भ्रमण में राहु आयेगा तो ५वां राहु, ११ वां केतु होगा जो सन्तान अवरोध कारक होंगे। पुन: सन्तान योग के साथ मैनें बृहस्पति-शुक्र युति, प्रतियुति या षडाष्टक याग देखने को भी कहा था यहां बृहस्पति शुक्र युति योग के कारण स्त्री के गर्भाशय में विकार से सन्तान योग नहीं बना।

१२ वां भाव सन्तान से आठवां अर्थात् सन्तान का आयु घर है इसमें पापग्रहों व शुभ ग्रहों की स्थिति देखकर सन्तान सुख जाने।



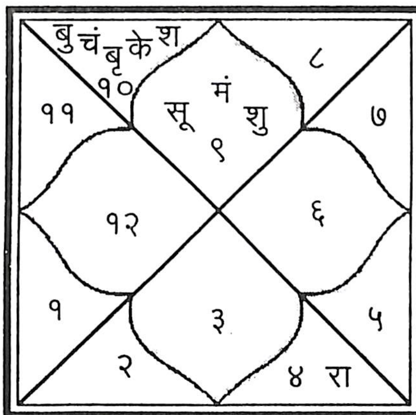
७. तक्षक कालसर्प योग

७. तक्षक कालसर्प योग

सप्तम भाव से लग्न तक राहु-केतु के मध्य ग्रह होने से **तक्षक नामक कालसर्प** योग बनता है। यह योग जीवन साथी तथा व्यापारिक साझेदार पर प्रभाव ड़ालता है। व्यापार में साझेदार से धोखा होता है। विवाह में विलंब होता है, स्त्री से विचार कम मिले, अत: गुप्त प्रेम प्रसंग बढें। प्रेम के क्षेत्र में असफलता मिले। स्त्रियों के कारण आर्थिक व सामाजिक हानि उठानी पड़े। ऐसे जातक की मित्रता शीघ्र टूटती है, सबको संकोच की दृष्टि से देखता है। व्यक्ति भावुक भी अधिक होता है। उसकी पैतृक सत्पत्ति नष्ट हो जाती है या दान में दे देता है। गुप्तरोग व गुप्त शत्रुओं से वेदनाशील रहता है। आरोप-प्रत्यारोप का शिकार होता रहता है। वैवाहिक जीवन कमजोर रहे, स्त्री रोगी रहे।

इस जातक के सूर्य बुध शुक्र मङ्गल शुभ होने से उन्नति रही। राहु ने भाग्येश गुरु का फल दिया इसलिये राहु दशा में उन्नति हुई। राहु में शनि ही कमजोर रहा। अत: ग्रह देखकर कालसर्प में राहु का फल जानें। अन्य ग्रह शुभ होने से पति पक्ष में कोई परेशानी नहीं आयी, विवाह भी समय पर हुआ, सन्तान ने भी उन्नति की।

८. कर्कोटक कालसर्प योग

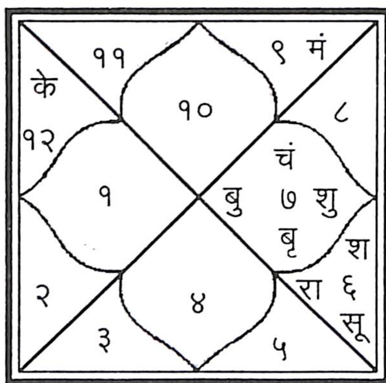


८. कर्कोटक कालसर्प योग

अष्टम भाव में राहु तथा धन घर में केतु तथा शेष ग्रह इनके मध्य मे हो तो **कर्कोटक कालसर्प योग** बनता है। यह योग आयु, स्वास्थ्य, व धन पर प्रभाव डालता है। कभी ऋणी करेगा, तो कभी धनी बनायेगा। कभी रोगी, कभी निरोगी करे। जीवन में अस्थिरता अधिक रहे। वैसे आठवां शनि एवं आठवां राहु आयु बढ़ाता है, परन्तु अन्य योग देखकर फलित करें। आठवें राहु के साथ मङ्गल या शनि

व्यक्ति को रुग्णता देते हैं। भूतप्रेत बाधा से व्यक्ति पीड़ित रहे तथा भैरव उपासना उसको अधिक अनुकूल रहे। बात बात पर धन हानि आरोप-प्रत्यारोप रहे। मुकद्दमेबाजी में धन हानि होवे, धोखा होवे, दूसरों को दिया पैसा नहीं आये। वाणी पर नियन्त्रण कम रहे, शत्रु बढ़े। नौकरी, व्यापार में स्थान परिवर्तन होवे। यदि कुण्डली में अच्छे योग हों तो विदेश यात्रा करे, धन कमाये, परन्तु वहधन स्थिर नहीं रहेगा। परिवार में कलह रहे, कुटुम्ब चिन्ता रहे। यदि दूसरे घर में पाप ग्रह हों, सूर्य चन्द्र हो तो पति या पत्नि को कष्ट रहे। शनि मङ्गल साथ हो या उनमें षडाष्टक योग हो तो दुर्घटना योग भी बनता है। इस जातिका का स्वास्थ्य अधिकांशतः कमजोर रहता है।

९. शङ्खचूड़ कालसर्प योग



९.१ शङ्खचूड़ कालसर्प योग

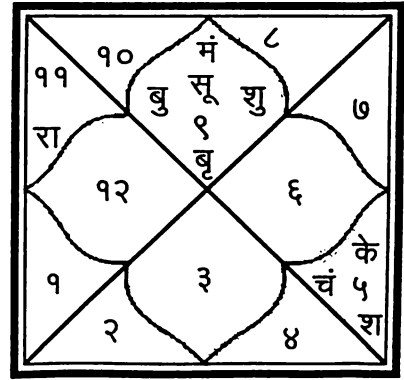
नवम भाव में राहु तथा तृतीय भाव में केतु तथा अन्य ग्रह इनके मध्य में हो तो **शङ्खचूड़ नामक कालसर्प योग** बनता है।

इस योग वाले जातक के भाग्य में रुकावटें आती है। धर्म कर्म में रुचि बनें एवं विघ्न आते हैं। नौकरी में मातहत को उन्नति मिल जाती है, पर उस व्यक्ति की पदोन्नति रुक जाती है। मङ्गल कार्यों में विघ्न आते हैं। विघ्नों के कारण धर्म में श्रद्धा-अश्रद्धा पैदा होती है। परिवार के बड़े बुजुर्ग की आत्मा परेशान करे, यदि बृहस्पति भी कमजोर है तो यह योग प्रबल होगा। व्यक्ति तन्त्र मन्त्र के चक्कर में पड़ता है एवं अधिकांशतः ठगा जाता है। जीवन में उन्नति करता है तो वृद्धावस्था में सन्तान व स्त्री के कारण चिन्ता परेशानी रहे। धन हानि होवे, वैमनस्यता बढ़े। इस योग में पिता का सुख भी कम हो जाता है। या तो पिता का सुख कम रहे अथवा माता-पिता, परिवार में वैमनस्यता के कारण पिता से दूर रहे। जातक की मृत्यु अकस्मात हावे।

कुण्डली नं० ९.१ के जातक ने युवावस्था में नाम तथा धन दोनों कमाया। ७० वर्ष की वृद्धावस्था में पुत्रों को लेकर पति पत्नि में विवाद हो गया। पत्नि ने एक पुत्र तथा स्वयं ने दूसरे पुत्र का पक्ष लिया। दोनों में वैमनस्यता बढ़ी। दोनों अगल

अलग रहने लगे। धन की हानि हुई तथा स्वास्थ्य कमजोर रहा। जादू टोने से भी परिवार प्रभावित रहा।

कुण्डली नं० ९.२ के जातक के माता पिता में दूरियाँ जातक के जन्म के बाद ही बढ़ गई। उसकी माता पति से अलग होकर मायके में रहने लगी। मैंनें इसका उपाय बताया की २१ दिन तक उल्टा स्वास्तिक बनाकर गणेश पूजन कर आरती करें। इस प्रयोग के ३० दिन पश्चात् ही जातक का पिता आकर उनको अपने घर ले गया।

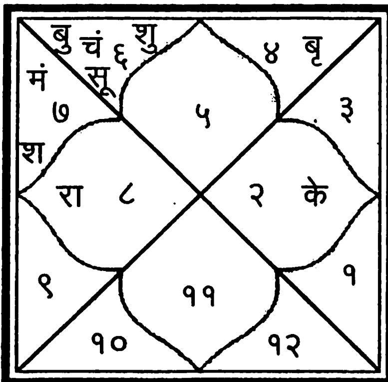


९.२ शङ्खचूड़ कालसर्प योग

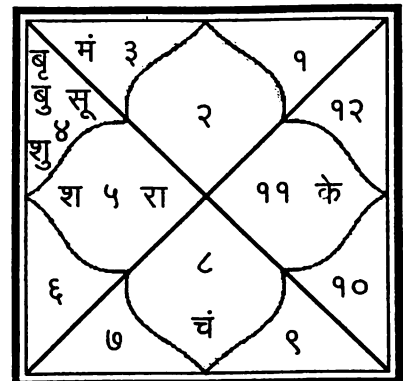
१०. घातक कालसर्प योग

दशम भाव में राहु तथा चतुर्थ भाव में केतु तथा अन्य ग्रह इनके मध्य में हो तो **घातक कालसर्प योग** बनता है। इस योग से माता पिता से सुख सहयोग कम होता है। नौकरी में बार बार आरोप प्रत्यारोप लगते हैं। नौकरी छूटे या व्यापार में स्थान परिवर्तन हो। कुछ उन्नति के बाद पुनः हानि हो जाती है। उसके सहयोगी उसको गलत सलाह देते हैं। पैतृक सम्पत्ति हेतु वाद-विवाद बनते हैं। व्यवसाय में सहयोगी धोखा देते हैं। इस योग में यदि सप्तम स्थान में सूर्य, चन्द्र हो बृहस्पति शुक्र की पूर्ण युति हो अथवा बृहस्पति शुक्र में षडाष्टक योग हो या बृहस्पति राहु में षडाष्टक योग हो तो स्त्री सुख में हानि या तलाक हो।

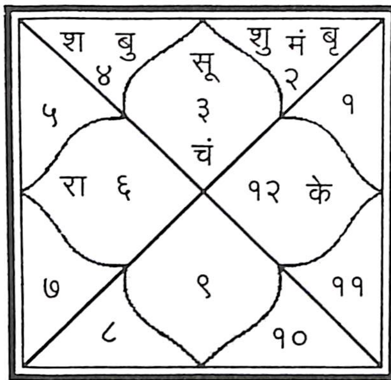
कुण्डली नं० १०.१ के जातक के व्यवसाय में उतार चढ़ाव रहा। ३५ वर्ष की



१०.१ घातक कालसर्प योग



१०.२ घातक कालसर्प योग



१०.३ घातक कालसर्प योग

आयु में स्त्री सुख की हानि हुई, ५२ वर्ष में दूसरा विवाह हुआ।

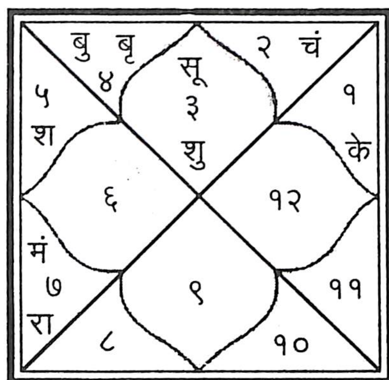
कुण्डली नं० १०.२ में चन्द्रमा राहु-केतु से बाहर है परन्तु यह दोनों के मध्य भाव में पड़ने से पापाक्रान्त हुआ जिससे स्त्री से तलाक हुआ। इसमें आंशिक कालसर्प योग है।

कुण्डली नं० १०.३ में बृहस्पति शुक्र युति एक दूसरे के विचारों में टकराव देती है, मङ्गली योग भी है, अतः तलाक हुआ।

इस योग का दूषित प्रभाव चतुर्थ भाव पर भी पड़ता है, जिससे शय्या सुख भी कहते हैं। अतः यदि अन्य कुयोग भी स्त्री पक्ष को कमजोर करते हैं तो स्त्री सुख की हानि होगी।

११. विषाक्त (विषधर) कालसर्प योग

एकादश भाव में राहु तथा पञ्चम भाव में केतु तथा अन्य ग्रह इनके मध्य में हो तो **विषाक्त कालसर्प योग** होता है। इस योग से व्यक्ति की स्मरण शक्ति पर असर पड़ता है, विद्या में बाधा आती है। धन तो कमाये परन्तु उसका सदुपयोग नहीं हो पाता है। सन्तान विषय में चिन्ता पीड़ा रहे, सन्तान का भविष्य बनाने में बहुत संघर्ष करना पड़ता है। परिवार में सम्बन्ध मधुर नहीं रहे। लाभ के योग बहुत आये परन्तु अल्प लाभ ही प्राप्त हो। त्रुटिपूर्ण निर्णय से जीवन दुःखी हो जाता है। सौदा, सट्टा, शेयर्स में धन नहीं लगायें यदि पहले लाभ हो भी जाये तो बाद में बर्बाद हो जाता है। व्यक्ति के गुप्त सम्बन्ध बनते हैं। स्वभाव चिड़चिडा भी हो जाता है। प्रेतादि बाधा से व्यक्ति ग्रसित भी हो सकता है। व्यक्ति धोखे से नुकसान उठाता है।

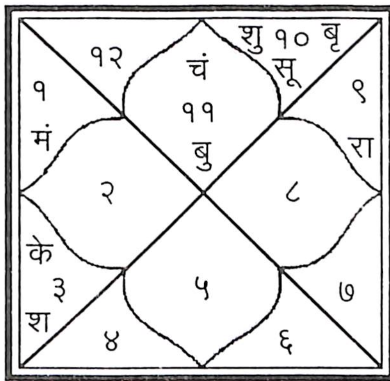


११.१ विषाक्त कालसर्प योग

कुण्डली नं० ११.१ इस व्यक्ति के पिता

ने गौशाला, धर्मशालायें निर्माण करवायी, कई जगह संपत्ति बनायी। परन्तु उसके साथ धोखा हुआ, किरायेदारों से मुकद्दमेबाजी रही, सस्ते में फैसले करने पड़े। व्यवसाय में पुरखों जैसा नाम नहीं रहा, अन्य दूसरे व्यवसाय करने पड़े।

इस कुण्डली में राहु का राशि स्वामी (कर्मसाक्षी ग्रह) शुक्र लग्न में तथा केतु का कर्मसाक्षी मङ्गल पांचवे होने से सन्तान सम्बन्ध में कोई चिन्ता नहीं रही। स्वयं धनी मानी सामाजिक व धार्मिक कार्यकर्त्ता रहे। कुण्डली में जो बुध, बृहस्पति संपत्ति वर्धक दिखाई देते हैं वैसा नहीं हुआ, संपत्ति जायदाद पक्ष में कमी हुई। एक दो बार टोटके से भी प्रभावित रहें। सन्तान पास में रही, आज्ञाकारी रही, ऐसा शुक्र मङ्गल (राहु केतु के राशि स्वामी) के शुभ स्थान व त्रिकोण में होने से हुआ।



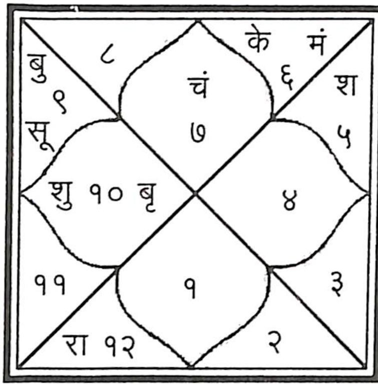
११.२ विषाक्त कालसर्प योग

कुण्डली नं० ११.२ जातिका को सन्तान नहीं हुई। कालसर्प योग तथा बृहस्पति शुक्र युति के कारण स्त्री के गर्भाशय में खराबी हुई। **मैनें पूर्व में लिखा है कि बृहस्पति शुक्र पूर्ण युति तथा सन्तान घर को ग्रह प्रभावित करते हो तो सन्तान चिन्ता बाधा रहे।** ऐसे योग में बहस्पति शुक्र षडाष्टक भी बाधा देता है। यह सिद्धान्त भी है की शनि जिस घर में होता है, उसकी वृद्धि करता है। परन्तु यहां शनि ने कोई सन्तान नहीं दी।

१२. शेषनाग कालसर्प योग

द्वादश भाव में राहु तथा षष्टम भाव में केतु तथा अन्य ग्रह इनके मध्य में हो तो **शेषनाग कालसर्प योग** बनता है।

इस योग वाले को आचानक खर्च, नुकसान, चोरी, डकैती का सामना करना पड़ता है। व्यर्थ खर्चे, भ्रमण, कार्यस्थल परिवर्तन या स्थान परिवर्तन बार बार करना पड़ता है। १२ वें घर में शुभ ग्रह हो तो जीवन भर संघर्ष करता है तथा मरणोपरान्त प्रसिद्धि प्राप्त होती है। शुभ योग से विदेश यात्रा भी प्राप्त होती है परन्तु खर्च अधिक लाभ कम प्राप्त होता है। अपव्यय के कारण आर्थिक स्थिति कमजोर हो जाती है। राजदण्ड व मुकद्दमों के कारण धन हानि भी होती है। १२ वें शुक्र,



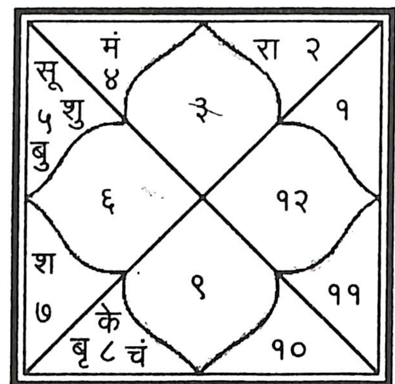
१२.१ शेषनाग कालसर्प योग

मङ्गल, शनि हो तो जानवर से चोट या विषैले जानवर द्वारा अथवा कुत्ते के काटने से पीड़ा होवे। किसी दवा का कुप्रभाव भी हो सकता है। नेत्रपीड़ा, उदरपीड़ा अथवा स्नायु मण्डल में कम्पन व विकार पैदा हो जाता है। गुप्त शत्रु होते हैं,पैशाचिक बाधा भी परेशानी दे सकती हैं।

सन्तान घर से यह घर आठवां होता है अतः इस घर में पाप योग हो तो सन्तान सुख में अभाव पैदा करता है।

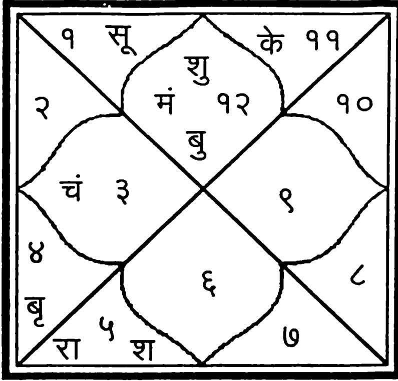
कुण्डली नं० १ में शनि राहु-केतु से बाहर है। किसी के मत से कालसर्प योग बिल्कुल नहीं बनता, किसी के मत से आंशिक कालसर्प योग है। सन्तान घर से आठवें मङ्गल केतु सन्तान में बाधा देते हैं। इसके अलावा मेरा शोध यह है कि सन्तान प्रतिबन्धक ग्रहों के साथ बृहस्पति शुक्र में षडाष्टक योग, युति एवं प्रतियुति होने पर स्त्री के गर्भाशय में खराबी या पुरुषत्व में कमी होगी। जातक प्रसिद्ध वकील है। पञ्चमेश शनि लाभ में है परन्तु उपरोक्त योगों के कारण सन्तान नहीं हुई।

कुण्डली नं० २ में विद्या व सन्तान घर में उच्च का शनि है, तथा लग्नेश पञ्चमेश योग भी है। अतः विद्या व सन्तान पक्ष उत्तम होना चाहिये। परन्तु विद्या योग कमजोर रहा, गजकेसरी योग ने भी साथ नहीं दिया। प्रथमतः यह योग पञ्चम भाव से आठवें भाव में बनता है, अतः अतः विद्या या सन्तान पर अवश्य प्रभाव डालता है।



१२.२ शेषनाग कालसर्प योग

राहु-केतु के राशि स्वामी को उसके ''कर्म के साक्षी ग्रह'' मानना चाहिये उनके बलवान होने व शुभ स्थान में होने से कालसर्प योग न्यून हो जाता है तथा ग्रह नीचराजभङ्ग योग बना देते है। यहाँ राहु का राशि नाथ एवं पञ्चमेश शुक्र अस्त है तथा केतु का राशि नाथ मङ्गल नीच का है। मङ्गल का राशि स्वामि चन्द्रमा भी



१२.३ शेषनाग कालसर्प योग

नीच का केतु के साथ है अतः मङ्गल को कोई बल प्राप्त नहीं हो सका। राशिनाथ मङ्गल शुक्र में द्विर्द्वादश योग भी है अतः कालसर्प दोष में न्यूनता नहीं हो सकी इससे पञ्चम भाव प्रभावित हुआ जिससे जातक का विद्या एवं सन्तान पक्ष कमजोर रहा।

कुण्डली नं० ३ में सन्तान घर में उच्च का बृहस्पति है, कुटुम्ब घर में सूर्य उच्च का है, पञ्चमेश चन्द्रमा केन्द्र में है अतः सन्तान सुख होना चाहिये परन्तु विवाह के ८-१० भी वर्ष बाद एक सन्तान नहीं हुई। केतु का राशिनाथ शनि छठे राहु के साथ कमजोर है, शनि से आठवां मङ्गल भी शनि को दूषित करता है। पञ्चमस्थ बृहस्पति से आठवां केतु भी सन्तान सुख में बाधा देता है। यहाँ राहु का राशिनाथ सूर्य उच्च का है जिसका केतु के राशिनाथ शनि से नवम पञ्चम योग है अतः सन्तान अवश्य होनी चाहिये। अन्य कुयोगों के कारण सन्तान सुख में विलम्ब हो रहा है।

लग्नानुसार कालसर्प योग का फल
(१४४ योग)

१२ राशियों के लग्न में १२ भावों में राहु का फल - १२ × १२ = १४४। राहु के फल का विपरीत केतु भी फल देता है अतः केतु के भी १४४ योग हुये। तथा दोनों का कुल योग २८८ हुआ। केतु की स्थिति राहु के स्थान पर हो तो मङ्गल के समान केतु का फल जानें तथा राहु का शनि के समान फल जानें।

१. मेष लग्न के अनुसार कालसर्प योग का फल

मेष लग्न में राहु, सातवां केतु हो तो व्यक्ति आडम्बर युक्त, कूटनीतिज्ञ, स्वार्थी होवे। मान, अपमान, कलंक, वृथा विवाद में उलझा रहे। विवाह अचानक अनचाही जगह होवे। पैसा होते हुये भी मानसिक चिन्ता रहे। शारीरिक कष्ट भी रहे।

द्वितीय भाव में राहु हो तो कुटुम्ब व धन चिन्ता रहे। कठिनाई से धन प्राप्त करे, उसे कुटुम्ब का सहयोग नहीं मिले, पैतृक सम्पत्ति के विवाद हो। धन कमाने के सही गलत तरीके ढूंढता है। जातक सौदा, सट्टा, लॉटरी आदि बिना मेहनत का धन कमाना चाहता है, जो उसके पास स्थिर नहीं रहेगा।

तृतीय भाव में राहु हो तो छोटे भाइयों का सहयोग मिलेगा, अपनी हिम्मत से भाग्य आगे बढायेगा। अक्सर ४२ वर्ष बाद सफलता मिले। कान या भुजा में तकलीफ होवे। स्वप्न अधिक देखे, दूरदर्शी होवे, कल्पना अधिक करे, स्त्री सुख सहयोग मध्यम रहे। व्यक्ति साहसी होवे।

कर्क राशि का राहु चतुर्थ भाव में हो तो माता सुख व गृहस्थ सुख मध्यम रहे। सम्पत्ति बनायेगा परन्तु बीच में कई बाधायें आयेगी। राजनीतिज्ञ होवे, समाज में उच्च पद प्राप्त करे। वाहन बार बार बदले या स्थान परिवर्तन करे। भूमि क्रय विक्रय कार्य भी ठीक रहे।

सिंह राशि का राहु पांचवे सन्तान चिन्ता व विद्या में अवरोध दता है। व्यक्ति क्रोधी हो, व्यवहार कुशल नहीं होवे। सन्तान विलम्ब से हो या गर्भपात होवे। यश

कम मिले, मित्र व रिश्तेदार स्वार्थी होवे। धर्म कर्म कार्य में विघ्न आये।

षष्टम भाव में राहु शत्रु अधिक देता है। नौकर व पशुधन से लाभ नहीं होवे। राजपक्ष में तथा पिता से विराध रहे। नींद में बड़बड़ाये, मस्तिष्क में कमजोरी रहे। शिक्षा में अवरोध आये, नौकरी में उन्नति धीमी गति से हावे।

तुला राशि का राहु सातवें स्थान में रहकर विवाह में विलम्ब करता है, स्त्री की प्रवृत्ति मलीन व स्वार्थी हो। स्त्रियों द्वारा ठगा जाये, जादू, टोना का शीघ्र प्रभाव पड़े। संसार में सुख प्राप्त करे, परन्तु गृहस्थ जीवन कमजोर रहे।

वृश्चिक राशि का राहु अचानक विपत्ति, चोट, दुर्घटना, अनायास धनहानि करता है। प्रेत बाधा से ग्रसित हो, उसका दिया गया धन आसानी से वापस नहीं आये। व्यक्ति स्वभाव में चिड़चिड़ा हो। गुप्त रोगी होवे। ससुराल से प्रेम कम रहे।

नवम घर में धनु राशि का राहु नीच का होता है अतः प्रत्येक कार्य में रुकावट हो। धनु राशि में केतु उच्च का भाग्य वृद्धि करे। जातक का भाग्योदय अचानक हो तथा नुकसान भी अचानक होवे। तन्त्र मन्त्र में रुचि बने। बड़े प्रयत्न से उच्च पद प्राप्त करे, परन्तु अपने व्यवहार से कई शत्रु बना लेवें। ४१ से ४८ वर्ष का समय उन्नति या पतन के लिये मुख्य रहे।

दशम भाव में मकर का राहु माता पिता व स्वस्थान से दूर जगह से उन्नति कराता है। यह जातक पुराना मकान नहीं खरीदे तो ठीक रहे। माता पिता की स्थिति उसके जीवन के प्रारम्भ काल में कमजोर रहे, जो उच्च शिक्ष में बाधा देवे। व्यक्ति अपने बल पर ही उन्नति करे। माता पिता सुखसहयोग मध्यम रहे। उत्तरार्ध में उच्च पद प्राप्त करता है।

एकादश भाव में राहु उन्नति कराये, परन्तु मित्रों व रिश्तेदारों से धोखा होवे। सन्तान पक्ष में चिन्ता रहे, पेट व पीठ में तकलीफ रहे। अकस्मात् लाभ नहीं मिले, मेहनत का ही प्रतिफल मिले। धन व सम्पत्ति कमाये, परन्तु कुटुम्ब चिन्ता रहे।

द्वादश भाव में राहु होने से अपव्यय बढे, यश कम मिले। गुप्त शत्रु होवे परन्तु विजय होवे। पितृ दोष परिवार में बने, उसकी शान्ति करानी चाहिये। तीर्थाटन व धर्म में व्यय करे। विशेष धन सम्पत्ति कमाये, परन्तु धन का अपव्यय होवे, माता से प्रेम कम रहे। सन्तान भी सेवा कम करे।

२. वृषभ लग्न के अनुसार कालसर्प योग का फल

वृष लग्न में राहु हो तो मध्यम कद, सन्तान कई होवे। छल कपट में माहिर व

कामुक होवे। समाज सेवा की ओर भी अग्रसर होता है। अपने जीवन साथी से छल करने वाला, बिना सोचे समझे कार्य करने वाला, साहसी होवे।

द्वितीय भाव में राहु धन देवे, परन्तु कुटुम्ब सहयोग नहीं मिले। अचानक अच्छा लाभ मिले, परन्तु उत्तरार्ध में धन नष्ट हो जावे। चोट, एक्सीडेन्ट की सम्भावना रहे। स्त्री का स्वभाव झगड़ालु होवे। यौन सुख मध्यम रहे।

तृतीय भाव में राहु हो तो उसके भाई उसका सहयोग नहीं करके विवाद करे। दुष्स्वप्न देखे, भयभीत रहे, आपत्ति के समय कोई ठोस निर्णय नहीं ले सके। नकारात्मक विचारों के कारण व्यक्ति कायर बन जाता है। राहु के साथ चन्द्रमा हो तो पराक्रमी होवे। धर्म में रुचि भी स्वार्थवश होती है।

चतुर्थ भाव में राहु हो तो प्रारम्भिक जीवन कमजोर तथा ४२ से ४९ वर्ष के बीच व्यवस्थित हो जाता है। गोद जाने के योग बने। अन्य ग्रह अच्छे हो तो विद्या अध्ययन हेतु बाहर जाये। उत्तरार्ध में राजयोग बनता है। सम्पत्ति बनाये, परन्तु अन्यत्र स्थान पर निवास या व्यापार रहे। केतु के साथ शनि हो तो गृहस्थ जीवन कमजोर होता है।

पञ्चम भाव में सन्तान सुख, विद्या पक्ष बडे भाई से सहयोग पक्ष कमजोर रहे। विद्या में अवरोध आये तो सन्तान को शुभ रहे। कार्य व्यवसाय में बार बार हानि उठानी पड़े। व्यवसाय व नौकरी परिवर्तन करे। मित्र स्वार्थी होवे।

छठे भाव में राहु होवे साथ में शनि मङ्गल हो तो विपरीत राजयोग बनता है। छठे राहु से नींद कम आना, तनाव आना, मृगी जैसी बिमारी भी देता है। जादू टोना से प्रभावित होकर धन हानि होवे। पैतृक सम्पत्ति में विवाद बने, बार बार अपमानित होवे।

सातवां राहु गृहस्थ पक्ष को कमजोर करता है। सिर में चोट लगना, पागलपन, ब्रेनहेमरेज शनि मङ्गल के साथ या षडाष्टक योग के कारण होवे। उसका स्वभाव क्रोधी, निर्दयी, हो जावे। प्रसिद्धि व कलंक दोनों ही प्राप्त होवे। साझेदारी में कार्य करना शुभ नहीं रहे।

अष्टम भाव में नीच का राहु विशेष संकट देता है। स्त्री की कुण्डली में राहु उसके जीवन को नरक बना देता है। रोगी व कुटुम्ब कलह, धन हानि बार बार होने से गृहस्थ जीवन कष्टमय होता है। ऋण से उभर पाना मुश्किल होता है। अत: पैसे का लेन देन सोच समझ कर ही करें।

नवम भाव मे मकर राशि का राहु कष्ट देता है, तो व्यक्ति को धार्मिक भी बना

देता है। उग्र देवताओं की उपासना में रुचि रहे। व्यक्ति साहसी होवे, भाग्योदय धीरे धीरे होवे। माता पिता से प्रेम कम रहे। परोपकार का उसे फल नहीं मिलता।

दशम भाव में स्थिर राशि का राहु राज्य पक्ष में ठीक रहे। ऐसे व्यक्ति को पुराना मकान व वाहन नहीं खरीदना चाहिये। मकान में वास्तु दोष रहने की सम्भावना रहती है। जीवन में संघर्ष झेलते हुये वह साहसी हो जाता है। तथा अच्छी सफलता प्राप्त करता है। माता पिता की सेवा का अवसर कम मिले।

एकादश भाव में राहु प्रणय सम्बन्ध अधूरे रखता है। ५ वां केतु गर्भपात योग भी बनता है। सन्तान रोगी रहे, माता को कष्ट रहे। स्वयं को पेट दर्द, अपेन्डिसाइटिस, अल्सर आदि का भय रहता है। मित्र व कुटुम्बी उसका साथ नहीं देते। उसकी उन्नति देखकर उसके शत्रु हो जाते है। प्रारम्भिक संघर्ष से उन्नति की ओर बढ़ता है।

द्वादश भाव में मेष राशि का राहु अपव्यय कराता है। स्थान परिवर्तन या व्यवसाय पविर्तन करे। विदेश यात्रा व अन्यत्र स्थान से धन लाभ कमाये। राजनीति में जोड़ तोड़ से धन कमाये। धन को लापरवाही से खर्च करने पर व्यक्ति कंगाल हो जाता है। सगाई सम्बन्ध छूट कर अन्य जगह भी योग बन सकता है।

३. मिथुन लग्न के अनुसार कालसर्प योग का फल

मिथुन लग्न में राहु उच्च का साहसी बना देता है। षडयन्त्र पूर्वक अपने शत्रुओं को पराजित करता है। उच्चपद व धनी योग बनाता है। अपने सामने दूसरो की उन्नति नहीं देखना चाहता है, अतः छल कपट से कार्य करता है। जिनका कभी स्वयं भी शिकार हो जाता है, इससे तनाव पूर्ण रहता है एवं वृद्धावस्था में रोगी रहता है।

धन घर से कर्क राशि का राहु पैसा लावे, परन्तु रुके नहीं। स्त्री का स्वास्थ्य कमजोर रहे, कुटुम्ब विवाद रहे। व्यापार में उत्थान, पतन दोनों ही योग आते हैं। पैतृक धन में रुकावट आये या शनैः शनैः नष्ट हो जाये। मुख में पीड़ा, दाँत दर्द, पायरिया आदि बिमारी हो। दूसरों से कटु वचन बोलने वाला होवे।

तृतीय भाव में राहु साहसी बनाये। परिवार से मित्रता कम रहे। निम्न जाति के व्यक्तियों से सम्पर्क अधिक रहे। राजकीय विवादों में उलझा रहे। तेजी मन्दी माफिक नहीं रहे। अपने भाग्य का स्वयं निर्माण करे।

चतुर्थ भाव में राहु माता पक्ष, वाहन, जायदाद में साधारण है, परन्तु [illegible] जीवन में श्रेष्ठ उपलब्धि कराता है। अपनी संपत्ति दान भी कर सकता है। उसके

जीवन में स्त्री, सन्तान व माता पिता का सहयोग नाम मात्र का होता है। जोखिम भरे कार्य करके यश प्राप्त करे।

पञ्चम भाव में राहु विद्या या सन्तान किसी एक पक्ष में चिन्ताबाधा देता है। प्रणय में असफल हो। कवि, कलाकार हो। लोकसेवा भी करे। यश कम मिले, अपनों का सहयोग कम प्राप्त हो।

छठे भाव में राहु शत्रु बढाये, परन्तु विजयी होवे। चर्म रोग, गुदा रोग, एलर्जी आदि का शिकार होता है। बुध के साथ यह व्याधि अधिक बढे, शनि के साथ हो तो पैरों में कमजोरी, शून्यता बढे, वायु विकार बढे। नौकरी बार बार बदलनी पड़े, नौकर क्रोधी व स्वार्थी होवे।

सप्तम भाव में राहु बुद्धि भ्रमित करता है, जीवन साथी से तर्क वितर्क रहे। साझेदारी कार्य व सटटा लाटरी माफिक नहीं रहे। राजनीति में उसके मित्र ही उसका बुरा चाहे। तन्त्र मन्त्र का उस पर बुरा असर पड़े।

अष्टम भाव में राहु वाणी कर्कश व कटु वचन वाली हो। गुप्त शत्रुओं का नाश करे, परन्तु रोग ग्रस्त रहे। अकारण विवाद व मुकद्दमा योग बने। प्रेतादि उपद्रव से बाधा हानि व रोग, चिन्ता रहे। स्त्री को तलाक, वैधव्य योग भी बनता है।

नवम भाव में राहु विलम्ब से भाग्योदय करता है। भाग्योदय के लिये तन्त्र मन्त्र का सहारा लेता है। खेल व साहित्य जगत में प्रगति करे। व्यक्ति जीवन के कार्य हेतु आर या पार हो, ऐसे कठोर निर्णय भी लेता है। जिससे उसकी प्रसिद्धि बढ़े। सन्तान के प्रति लापरवाही करे।

दशम भाव में राहु व्यापार में उन्नति, पद, प्रतिष्ठा देता है परन्तु वास्तविक सुख का अनुभव कम कर पाता है। धर्म पर विश्वास कम, अपने कर्म पर आस्था अधिक रखता है। माता पिता पक्ष मध्यम रहे।

एकादश भाव में राहु हो तो व्यक्ति साम, दाम, दण्ड, भेद, येन-केन प्रकारेण से धनी होना चाहता है। परिवार में प्रेम कम होता है। अथवा अपने कार्य सिद्धि में परिवार को भूल जाता है। मध्यायु के बाद उसे सन्तान सम्बन्ध में चिन्ता अधिक रहती है।

१२ वां राहु समाज में प्रतिष्ठा देता है परन्तु उसका आन्तरिक जीवन, आचरण कलंकित रहता है। घरेलु साधनों की कमी रहे। धन कमाये, देशाटन करे, परन्तु अपव्यय अधिक होगा। गुप्त रोग, एलर्जी, बवासीर आदि से पीड़ा रहे। अनिद्रा रहे, मानसिक चिन्ता बनी रहे ।

४. कर्क लग्न के अनुसार कालसर्प योग का फल

लग्न में राहु धनी बनाये, परन्तु सुख पूर्वक धन का उपयोग नहीं कर सकता है। कार्यों में व्यस्तता के कारण भाग दौड़ हमेशा बनी रहे, एक बार प्रयत्न में उसके कार्य सफल नहीं होवे। मानसिक चिन्ता बनी रहे। बाहर प्रसन्नचित्त दिखाई दे। पत्नि का सुख सहयोग पूर्ण नहीं मिले।

धन घर में राहु न तो अर्थ का संचय अधिक होने नहीं देता, कुटुम्ब का सुख कम देवे। स्त्री बीमार रहे, पिता से मैत्री मध्यम रहे। मुख रोग या पक्षाघात की संभावना रहती है। पैतृक सम्पत्ति का विवाद रहे।

तृतीय भाव में राहु छोटे भाई बहनों का सहयोग दिलाता है। स्वप्न अधिक देखे, कान में पीड़ा हो। दाहिने हाथ में चोट या अन्य पीड़ा योग रहे। मित्रों से धोखा हो तथा सन्तान के गर्भपात का योग रहता है। मध्यायु तक अधिक संघर्ष करना पड़ता है, बाद में उन्नति होवे।

चतुर्थ भाव में राहु घर में धन, जायदाद व भौतिक सुख देता है। व्यक्ति को उत्साही व कर्मयोगी बनाता है। लाभ, हानि, यश, अपयश बारी बारी से भोगता है, परन्तु वह उसकी परवाह नहीं करता। परायी सम्पत्ति का भी उपभोग करता है। कुटुम्ब सुख सामान्य रहे।

पञ्चम भाव में राहु हो तो जातक का बचपन संघर्षमय रहे, विद्या में अवरोध रहे, विषय परिवर्तन करे। सन्तान चिन्ता या गर्भपात योग होंगे। पेट की बीमारि हो, स्वभाव तेज हो। मित्र व बन्धु स्वार्थी हो, अतः दूसरों पर भरोसा कम करना चाहिये। आर्थिक स्थिति अच्छी, बुंरी रहती है।

छठे घर में राहु शत्रुनाश करता है परन्तु यदि शत्रु होंगे ही नही तो नाश किसका करेगा, अतः शत्रु होते है परन्तु उन पर विजय प्राप्त होती है। रोग, व्याधि, शत्रुओं के कारण धन व समय नष्ट होता है। नौकरी व्यवसाय में मनोवाञ्छित सफलता नहीं मिलती, कई बार ऋण योग बनता है।

सातवें भाव में राहु दाम्पत्य जीवन में कटुता देता है, स्त्री झूठ बोलने वाली व कलुषित विचारों की होवे। गुप्त शत्रु टोना टोटका करते है। व्यक्ति जिद्दी स्वभाव का होवे तो कभी कभी अपने निर्णय से विशेष हानि उठानि पड़े। दैनिक कार्य समय पर नहीं होवे।

अष्टम भाव में राहु ऋण व विवाद से संकट ग्रस्त रहता है। परिवार में बिमारियों

पर अधिक व्यय होता है। बाहरी व्यक्ति के हस्तक्षेप से घर में फूट पड़ती है। पति पत्नि में से एक का स्वास्थ्य खराब रहे, उनके सम्बन्ध मधुर नहीं रहे।

नवम भाव में राहु हो तो साहसी हो, कई जोखिम के कार्य करे। धर्म में कट्टरपंथी भी हो सकता है। भाई बहिनों का सुख प्राप्त होता है। जीवन में कभी कभी चमत्कारी लाभ प्राप्त करता है। पिता या परिवार से दूर रहे। गलत निर्णय लेने पर उसे हानि होगी, हमेशा उसकी जिद कामयाब नहीं होगी।

दशम भाव में राहु उच्च पद प्रतिष्ठा देवे। व्यवसाय में लाभ देवे, उद्योग की स्थापना करे। धातु सम्बन्धी कार्य में लाभ रहे। सार्वजनिक रूप से प्रसिद्धि प्राप्तकरे। संघर्ष से बार बार जूझने के कारण उसका आत्मबल शक्ति बढ़ जाती है। केवल धोखे से ही नुकसान उठा सकता है।

एकादश भाव में राहु मित्रों व बन्धुओं से ठगा जाता है या मित्र व भाइयों को धोखा देकर धन कमाता है। समाज में धनी होने के कारण प्रतिष्ठा पाये परन्तु अन्दरुनी तौर पर लोग उसकी बुराई करे। शुभ ग्रह साथ हो तो सात्विक तरीके से धन प्राप्त कराता है। सन्तान के भाग्य के विषय में चिन्ता रहें।

द्वादश भाव में राहु हो शुभग्रह साथ हो तो जल्दी ही प्रसिद्धि मिलती है। यदि अशुभ ग्रह साथ हो तो पुनः प्रतिष्ठा को धूमिल कर सकता है। अतः अपने आचरण को संयमित रखें। सोच समझ कर खर्च करें। कमाये धन को सञ्चित रखने की कोशिश करें।

५. सिंह लग्न के अनुसार कालसर्प योग का फल

लग्न में राहु हो तो जातक को धीर व गंभीर तथा बलवान बनाता है। अपने जोश में बिना सोचे समझे कार्य कर लेता है। दाम्पत्य जीवन मध्यम रहता है। अनेकानेक संकट परेशानी आने से, धनी होते हुये भी शान्ति पूर्वक धन का भोग नहीं कर सकता। राज में सम्मान, समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करे। राजनैतिक जीवन में सफलता रहे।

द्वितीय भाव में राहु हो तो कुटुम्ब भले ही बड़ा होवे, परन्तु उसका सुख उसे नहीं मिलता। कुटुम्ब पर खर्च करते हुये भी प्रेम व यश नहीं मिलता। मानसिक विकारों से ग्रस्त रहता है। गुप्त रोग उसे प्राप्त होते हैं। यदि आध्यात्म की ओर बढे तो सफलता प्राप्त होती है।

तृतीय भाव में राहु हो तो भाग्य कभी अच्छा, कभी बुरा होता है। जीवन में

उतार चढाव अधिक आते हैं। साहस व धैर्य से कठिन परिस्थितियों पर विजय पाता है। बायें हाथ या दाहिने पैर में चोट पीड़ा रहे। सन्तान पक्ष मध्यम रहे। समाज में स्वयं को अकेला महसूस करे।

चतुर्थ स्थान में राहु जीवन स्तर को कमजोर करता है। कठिन संघर्ष के बाद ४१-४९ वर्ष की आयु में सफलता प्राप्त करे। अपने संसाधनों का पूर्ण लाभ नहीं उठा सकता। घरेलु समस्यायें हमेशा बनी रहे। स्त्री से प्रेम व्यवहार कमजोर रहे। अपने जोश खरोश में लापरवाही से धन खर्च करता है।

पञ्चम भाव में नीच का राहु सन्तान चिन्ता देता है। यदि केतु हो तो गर्भपात हो। शिक्षा के कार्य में कुछ रुकावट आये। मित्रों पर धन अधिक व्यय करे। तन्त्र मन्त्र उपासना के चक्कर में भी पड़े। कुटुम्ब तथा साझेदारी में धोखा मिले। आय अनियमित होती है। अचानक धन लाभ की कामना करता रहता है।

छठे भाव में राहु वायु विकार बढाता है। हर क्षेत्र में शत्रु, निन्दक उत्पन्न होवे। अकस्मात् भय की कल्पना करता रहे। नीद्रा कम आये। व्यर्थ व्यय के कारणधन संचय में कमी रहती है। व्यर्थ के झंझटों का सामना करना पड़ता है। नौकरों पर विश्वास कम करें।

सप्तम भाव में राहु हो तो स्वयं या स्त्री स्वार्थी हो। बार बार स्वभाव बदलता रहे। महत्वकांक्षी हो परन्तु सफलता कम मिले। पारिवारिक झंझटों के कारण व्यवसाय में समय कम दे पाये। परेशानी में आत्मग्लानि हो तथा आत्महत्या के विचार भी उसको आने लगे।

अष्टम भाव में राहु हो तो रोग पीड़ा घर में व्याप्त रहे। कुटुम्ब चिन्ता रहे। जानवर या कुत्ते के काटने से पीड़ा होवे। पेट की बिमारी हो। अशुभ योग से जलघात भी हो सकती है। वैवाहिक जीवन मध्यम रहे। राहु मङ्गल या राहु शनि साथ हो तो तन्त्र मन्त्र अभिचार से व्यक्ति पीड़ित हो।

राहु नवम भाव में हो तथा मङ्गल कमजोर हो या नवें भाव में शनि हो तो पूर्व जन्म के शाप योगों के कारण व्यक्ति पीड़ा पाता है। परिवार में किसी की अकाल मृत्यु हुई हो तो उसकी नारायण बलिकर्म कराने पर घर में शान्ति होवे। धर्म कर्म अनुष्ठान उसके पूरे नहीं हो। उसके कर्म केवल आडम्बर दिखे। प्रेम सम्बन्ध मध्यम रहे। व्यक्ति अपने गुरु की भी उपेक्षा करे।

दशम भाव में राहु हो तो अपने परिवार की अपेक्षा सामाजिक कार्यों पर अधिक ध्यान देवे। उसे यश, धन व प्रतिष्ठा प्राप्त हो। राजनैतिक भविष्य अच्छा हो,

व्यापार में सफलता मिले। माता रोगी रहे, पिता पक्ष साधारण है। मातृभूमि से अन्यत्र स्थान पर लाभ अधिक रहे। अधिक व्यस्तशील जीवन रहे।

एकादश भाव में राहु उसे धनी बनाता है, परन्तु उसे अपनों से दूर करता है। यह व्यक्ति अपने जीवन स्तर को उच्चतम बनाने का प्रयास करता है, उसे सफलता भी मिलती है। यदि बृहस्पति शुभ फल प्रदान करता हो तो अपनी बुद्धि कौशल से चमत्कारिक लाभ प्राप्त करे। सन्तान विलम्ब से प्राप्त हो, पेट में पीड़ा रहे।

द्वादश भाव में राहु अनिद्रा, मानसिक चिन्ता देता है। बाहर व्यर्थ भ्रमण करे। कार्य व्यापार व स्थान परिवर्तन करे, एक जगह स्थायित्व प्राप्त नहीं हो। जातक की स्वयं की लापरवाही एवं अपव्यय के कारण ही अक्सर ऋण योग बने। चोट एक्सीडेन्ट की संभावनायें भी बनी रहती है।

६. कन्या लग्न के अनुसार कालसर्प योग का फल

कन्या लग्न में राहु हो तो जातक अपने बुद्धिबल के सहारे अच्छी उन्नति प्राप्त करता है। व्यक्ति कूटनीतिज्ञ हो, स्वार्थी हो। उसके गुप्त शत्रु अधिक होते हैं, अतः उसको संघर्ष अधिक करना पड़ता है।

द्वितीय भाव में राहु कुटुम्ब विवाद पैदा करता है। पैतृक संपदा का उपयोग जातक कम कर पाता है। नेत्र या कान में पीड़ा रहे, गुप्त रोग से प्रभावित रहे। व्यवसाय या नौकरी में उसके परिश्रम का पूर्ण लाभ नहीं मिलता। मध्य आयु तक संघर्ष करे तो बाद में उत्तम धन लाभ प्राप्त करे। स्वास्थ्य मध्यम रहे।

तृतीय भाव में राहु साहसी बनाता है। भाई बहिनों से मैत्री कम रहे। अधिक उत्साही होकर कार्य करने पर अत्यधिक आत्मविश्वास में मात खाता है। हर ओर बाधायें आती है, बाद में अपने परिश्रम से विजय पाता है। ठेकेदारी, क्रय विक्रय कार्य से लाभ कमाता है।

चतुर्थ भाव में नीच का राहु अधिक संघर्षरत रखता है। बृहस्पति का उच्च राशि में होने पर अच्छी उन्नति, धन संपदा प्राप्त करता है। उसका व्यक्तिगत जीवन कमजोर होता है। वह दूसरों के लिये अधिक कार्य करता है। अतः प्रारम्भ में यदि उसे असफलता मिले तो भी उत्तरार्ध में यश व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है।

पञ्चम भाव में राहु बड़े भाई या पुत्र वधू के अनुचित व्यवहार से पारिवाकि चिन्ता रहे। रोजगार अनियन्त्रित रहें। सन्तान की उन्नति में रुकावट रहे। शिक्षा में अवरोध आये। मित्रों से व साझेदारों से धोखा मिले। उग्रदेवता की उपासना करे।

षष्टम भाव में राहु गुप्त शत्रु बढाता है। शनि अच्छा हो तो नौकरी में उन्नति हो। अन्यथा कठिन संघर्ष करना पड़े। जहरीले जन्तु के काटने का योग बने या त्वचा की एलर्जी रहे। शत्रुबाधा या चोरी से नुकसान होवे।

सप्तम भाव में राहु बुद्धि विवेक बढाता है। कला कौशल उत्तम रहे। व्यक्ति भावुकता में कार्य करे तो नुकसान उठाना पड़े। जीवन साथी का उसे सहयोग नहीं मिले। पत्नि अपने आदर्शों को ही अधिक महत्व देवे। कभी कभी नकारात्मक सोच उभरने लगे। विवेक से काम लेने पर ही उन्नति की ओर अग्रसर होगा।

अष्टम भाव में राहु प्रेतादि बाधा देता है या परेशानियाँ देकर उसके मनोबल को गिरा देता है। पत्नि से सम्बन्ध मधुर नहीं रहे। चोट, एक्सीडेन्ट या ऑपरेशन योग बने। अग्नि से नुकसान भय रहे। गड़े धन की चाहना में या खदान सम्बन्धी व्यापार में नुकसान उठाये।

नवम भाव में शुक्र की राशि का राहु तन्त्र मन्त्र साधना कराता है। ४२ वर्ष तक संघर्ष करना पड़ता है बाद में उन्नति होवे। भाग्य से ज्यादा पराक्रम पर भरेसा करना चाहिये। यह योग कभी राजा, तो कभी रंक बनाता है।

दशम भाव में उच्च का राहु आर्थिक उन्नति करता है। अच्छी प्रतिष्ठा व पद देता है। उसकी प्रतिष्ठा से जल कर लोग शत्रु बन जाते हैं। राज पक्ष उसके अनुकूल रहता है। राजनीति में सफल होता है। संघर्ष से उन्नति करता हुआ हर प्रकार के अनुभव प्राप्त करता है।

एकादश भाव में राहु भले ही शिक्षा में अवरोध आये परन्तु अच्छा धनी योग प्राप्त होता है। मित्रता अस्थिर रहे, अपने आलस्य के कारण ही उसका भाग्य सोया रहता है। मेहनत करने पर उत्तम धन लाभ प्राप्त करता है।

द्वादश भाव में राहु मानसिक चिन्ता तनाव देता है। राजकीय प्रकोप का सामना करना पड़ता है। जनता की सेवा करता है। धर्म कर्म में धन खर्च करे। अच्छे भाग्य के लिये बड़े बुजुर्गों की सेवा करनी चाहिये।

७. तुला लग्न के अनुसार कालसर्प योग का फल

तुला लग्न में राहु हो तो व्यक्ति स्वार्थ सिद्धि में चतुर होता है। धन व ऐश्वर्य प्राप्त करने हेतु हर तरफ से प्रयत्न करता है। व्यक्ति भोगी एवं विलासी प्रकृति का होता है। गुप्त रोग व गुप्त चिन्ता से प्रभावित रहता है। लोग प्रत्यक्ष में सम्मान देते हैं, परन्तु परोक्ष में निन्दा करे।

द्वितीय भाव में राहु परिवार में विरोध पैदा करता है। आर्थिक स्थिति अनियमित रहे। उसके मुँह व पैरों में बिमारी हो। पैतृक संपत्ति में विवाद रहे। व्यक्ति अपने परिवार से दूर रहे। अपने साहस से ही धन कमाये।

तृतीय भाव में राहु नीच राशि का होता है। उसकी संगत, नीच प्रकृति के लोगों से होती है। व्यवहार में व्यक्ति कमजोर होता है। बुरे स्वप्न दिखाई दें, अथवा स्वप्न में सर्प दिखाई देवें। भाई बहन का प्रेम व सहयोग उसे नहीं मिले।

चतुर्थ भाव में राहु हो तो सामाजिक सम्मान पाने के लिये कड़ी मेहनत करनी पड़े। यदि राहु के साथ मङ्गल शनि हो तो पद प्रतिष्ठा पर दाग लगे, ऐसे में घर में वास्तु दोष हो तो उसका निदान करना चाहिये। पैशाचिक बाधा से भी परिवार दु:खी रहे।

पञ्चम भाव में राहु व्यक्ति को जगह जगह अपमानित करा देता है। कभी कभी स्वयं के कारण, कभी सन्तान के कारण अपयश व नुकसान उठाना पड़े। तन्त्र मन्त्र साधना में अनुभव बढ़ता है। किसी से अच्छी मित्रता स्थापित नहीं कर सकता।

षष्ठम भाव में राहु मीन राशि का होने से बुद्धिजीवि लोग ही उसके शत्रु बने। देवताओं एवं ब्राह्मणों का अपमान करने पर उसका भाग्य मन्दा होगा। धार्मिक कार्यों में आडम्बर का प्रदर्शन करेगा। कभी मित्र, कभी शत्रु बनते रहेंगे।

सप्तम भाव में राहु हो तो विवाह में अड़चनें आवे। पाप ग्रहों के योग होने पर तलाक होना सम्भव है। राहु के साथ शनि या मङ्गल हो तो दाम्पत्य जीवन खराब, तलाक होवे अथवा स्त्री हानि होकर जातक का दूसरा विवाह हो। दैनिक रोजगार में बाधायें रहे।

अष्टम भाव में राहु जुआ, सट्टा, लॉटरी, शेयर्स से धन कमाने की लालसा रखता है। गड़ा धन का लालच भी उसे खींचता है। खदान या भूमिगत कार्य व्यापार से उसे लाभ होवे। यदि जीवन में पहले धन कमाये तो उत्तरार्ध में धन गंवा बैठेगा।

नवम भाव में राहु धन कमाने के अच्छे अवसर देता है। व्यक्ति अच्छा तान्त्रिक हो। मान सम्मान पद प्रतिष्ठा को कढाता है। अचानक सफलता प्राप्त करता है। अपने दु:साहस व परिश्रम से असंभव कार्य भी कर दिखाता है।

दशम भाव में राहु कर्क राशि का कार्य व व्यापार को अस्थिर करता है उसमें उसका पारिवारिक जीवन सुखमय नहीं होता। व्यापार डांवाडोल रहने से चित्त भ्रमित रहे।

लाभ भाव में राहु पहले मित्रों से लाभ कमाता है, बाद में उन्हीं से धोखा खाता है। यह जातक दूसरों को धोखा देने में माहिर होता है, परन्तु स्वयं भी धोखा खाता है। सन्तान व पुत्रवधू से विचार नहीं मिलेंगे।

द्वादश भाव में कन्याराशि का राहु बाहर से धन प्राप्त करता है। झूठी शान शौकत दिखाने में धन खर्च करता है। परिवार में गलतफहमी बढने से स्त्री से तलाक हो सकता है। पैर व पसलियों में दर्द पीड़ा रहे। चौपाये जानवरों से लाभ रहे। अन्य लोगों के कारण कभी कभी स्वयं को भी व्यक्ति मुसीबत में ड़ाल देता है। ऋण की परवाह नहीं करता है।

८. वृश्चिक लग्न के अनुसार कालसर्प योग का फल

लग्न स्थान में राहु क्रोधी व स्वार्थी बना देता है। छल कपट नीति में माहिर होता है, प्रतिद्वन्दि का दमन करने की चेष्टा करता है। बाहर उच्चस्तरीय वर्चस्व हो, लेकिन दुर्व्यसनी होवे। धनी होते हुये भी सुख पूर्वक उसका उपभोग नहीं कर सके। वैवाहिक सम्बन्ध मधुर नहीं रहे।

द्वितीय भाव में राहु मुख रोग व पैरों में पीड़ा देता है। गुप्त रोग देवे। पारीवारिक कलह, पैतृक सम्पत्ति का विवाद रहे। स्त्री को पीड़ा, पुत्र के कार्यों हेतु चिन्ता रहे। शारीरिक अङ्गों में सुन्नता व कमजोरी महसूस करे। अर्थोपार्जन के लिये कई उपाय करे परन्तु सन्तुष्टि नहीं मिलती।

तृतीय भाव में राहु पराक्रम बढ़ाता है, भाई बहन में सुख सहयोग ठीक रहे। अपना भाग्य स्वयं बनाये, पुरुषार्थ पर अधिक विश्वास करे, अतः अभिमान में आकर नास्तिक भी बन जाता है। परन्तु जीवन के उत्तरार्ध में आस्तिक भी बन जाता है, क्योंकि उसके जीवन में कुछ असंभव घटनायें घटती है जो उसे आस्तिक बना देती है।

चतुर्थ भाव में राहु होने से अधिक समय तक व्यक्ति के जीवन में अस्थिरता रहती है। पुराने वाहन, मकान खरीदने में अधिक रुचि रहती है। दशम घर में बलवान ग्रह हो तो राजनीति में सफलता प्राप्त करता है। शय्या सुख मध्यम रहे, माता पिता में तनाव रहे। नूतन निर्माण कार्य में अवरोध रहे।

पञ्चम भाव में राहु विलम्ब से सन्तान हो। अल्प सन्तान हो परन्तु आज्ञाकारी हो। दूसरों की बहकावे में ही घर फूटता है। मित्र अल्प हो जो उसका साथ देवे। शिव उपासना भैरव उपासना शुभ रहे। धन के साथ प्रसिद्धि भी प्राप्त करता है।

उच्च शिक्षा में कुछ रुकावटें आये, सरस्वती उपासना करें।

छठे भाव में राहु शत्रु नाश करता है। सातवें घर में शुक्र या चन्द्रमा हो तो स्त्रियों से लाभ होता है। कभी कभी आचानक भयभीत हो जाये। जानवर से चोट पीड़ा भय रहे। धन वाहन संसाधन विलम्ब से प्राप्त हो। नौकरी में शुभ रहे, व्यवसाय में साधारण रहे।

सातवें भाव में राहु, चञ्चल उतावला तथा भावुक बनाता है। सातवें चन्द्र शुक्र हो तो भोगी, विलासी भी बनाता है। डरावने स्वप्न आये, मानसिक रूप से शंकालु रहे। दयावान व परिश्रमी होवे परन्तु उपद्रवी कार्यों में अधिक भाग लेवे। बीच बीच में उसके साथ धोखा अक्सर होये।

आठवें भाव में राहु गैस, रक्त चाप, हृदय, मधुमेह जैसी लम्बी चलने वाली बिमारियाँ देवे। धनी होवे, साहसी हो, मृत्यु से भय नहीं खाये बीमा सम्बन्धी कार्य से लाभ हो। दीर्घायु हो, परन्तु चिन्ता तनाव रहे। मङ्गल शनि साथ हो तो प्रेतादि उपद्रव से परेशान रहे। यदि दूसरे घर में बृहस्पति हो तो विशेष धनी होवे।

नवम घर में राहु पहले परेशानी देता है बाद में लाभ देवे। तप, भजन खूब करे परन्तु सद्यफल नहीं मिले, विलम्ब से लाभ हो, विद्वान हो। यदि केतु के साथ तीसरे घर में शनि हो तो जातक निर्दयी एवं क्रूर होवे। नैतिक बल कमजोर हो, ३६ वर्ष बाद धनी होवे।

दशम भाव में राहु सिंह राशि का राजनीति में प्रवेश कराता है, उसके शत्रु अधिक हो तो भी सफलता प्राप्त करता है। पिता पक्ष मध्यम रहे। जातक जहां रहे उसके आस पास बड़ पीपल का पेड़ या सर्प का स्थल हो तो शिव उपासना करने से भाग्य के विघ्न दूर होवे। २, ५, ९ भाव में बृहस्पति चन्द्र योग हो तो यशस्वी हो। मध्यायु में धनी हो।

लाभ भाव में राहु व्यक्ति को संघर्ष से उन्नति कराता है। मित्रों से प्रेम सम्बन्ध मध्यम रहे। पुत्र सेवा कम करे, परन्तु पुत्रवधू अनुकूल रहे। आहार विहार का ध्यान नहीं रखने से रोगी होवे। परिश्रम का उचित लाभ नहीं मिलता। सन्तान सुख हेतु बृहस्पति का उपाय करें। छठे, सातवें, आठवें भाव में लगातार ग्रह हो तो धनी हो, भले ही अधिक संघर्ष करना पड़े।

द्वादश भाव में राहु सार्वजनिक जीवन में प्रतिष्ठा प्राप्त करे, लेकिन आन्तरिक तौर पर दु:खी रहता है। पैसे का आवागमन बनता है, परन्तु धनी नहीं होता। १२ वां शुक्र हो तो धनी हो, सन्तान की चिन्ता पीड़ा रहे। सप्तम भाव कमजोर हो तो

द्विभार्या योग भी बनता है। राहु केतु के साथ अधिक ग्रह हो तो प्रसिद्धि बढे परन्तु मानसिक असन्तोष रहे।

९. धनु लग्न के अनुसार कालसर्प योग का फल

धनु लग्न में राहु नीच का अनेक चिन्ता भी देता है। पत्नि एवं सन्तान पक्ष से भी चिन्तित रहे। जादू, टोना, भूत प्रेत उपद्रव से व्यक्ति प्रभावित होकर दुःखी होता है। यदि अन्य ग्रह योगों से धनी हो जाये तो भी उसे सन्तोष प्राप्त नहीं होता। व्यवहार से कमजोर होने से उसके शत्रु अधिक हो। छठे आठवें सूर्य मङ्गल तथा २, १२ शनि चन्द्र हो तो अपमृत्यु भय रहता है।

द्वितीय भाव में शनि की राशि का राहु होने से पारिवार स्वार्थी हो, उसे धोखा दे, भले ही वह उन पर अपना धन व्यय करे। ६, ८, १२ भावों में ग्रह हो तो लोक में नाम कमाये। केतु के साथ शुक्र शनि हो तो वैवाहिक जीवन कमजोर रहे। सौदा, सट्टा से कभी कभी धन प्राप्त करे।

तृतीय भाव में राहु परिवार में मैत्री रखता है। जतक अपने पराक्रम से सफलता की ओर बढता है। ४२-४९ वर्ष तक भाईयों का सहयोग मिले तो बाद में कम हो जाये। उसका जीवन आराम प्रिय हो, भाग दौड़ अधिक करे तथा नाम एवं धन कमाये।

चतुर्थ भाव में राहु बृहस्पति की राशि का धार्मिक बनाता है। भूमि भवन का सुख देता है। परन्तु उसे पितृ, पूर्वजों की तथा बड़ों की सेवा करनी चाहिये। जिस समय देवता व ब्राह्मणों का अपमान करेगा, उसका पतन शुरु हो जायेगा। केतु के साथ यदि बुध हो तो हो तो लक्ष्मी की कृपा रहती है। बहुत जल्दी धनी बन जाता है।

पञ्चम भाव में राहु होने से स्वयं व सन्तान जिद्दी स्वभाव की हो। गर्भपात की संभावना रहे। शिक्षा में कुछ अवरोध रहे। १८-३२ वर्ष के मध्य कोई पीड़ा, ऑपरेशन हो। विद्या में कुछ समय अवरोध रहे। अन्य कार्य अनियमित रहे फिर भी धन संग्रह करे परन्तु आवश्यकता का धन उसे समय पर नहीं मिले।

षष्ठम भाव में राहु शत्रु देता है, उन पर विजय भी प्राप्त करे। भूमिगत व्यापार, खदान आदि के कार्य में लाभ हो। बचपन में गरीब हो तो बाद मं धनी होता है। परन्तु मानसिक चिन्ता तनाव से व्याधिग्रस्त हो जाता है। परिवार में प्रेम कम रहे, छोटे छोटे एक्सीडेन्ट योग भी बने।

सप्तम भाव में राहु व्यक्ति को भावुक व उतावला बना देता है। भावुकता में

गलत निर्णय भी ले सकता है। जातक धीर, गंभीर तथा वीर होता है। अपने स्वार्थ के लिये दूसरों को मुसीबत में ड़ाल सकता है। स्त्री पक्ष ठीक होवे तो व्यक्ति दुर्व्यसनी हो। यह योग उच्च के राहु के कारण धनी बनाता है।

अष्टम भाव मे राहु पेट की बिमारीयाँ तथा अनिद्रा योग देता है। जातक बुरे स्वप्न देखे तथा भयभीत रहे। परिवार के लागों को उसकी गतिविधियों पर संदेह रहे। राजकीय विवाद परेशानी बढ़े। बिमारी पर अक्सर धन खर्च होता रहे। पैतृक संपत्ति का उपभोग कम करे। गुप्त रोग, रक्त चाप तथा मधुमेह की बिमारी रहे।

नवम भाव में राहु उत्थान व पतन दोनों योग देता है। जिनका निर्णय दशा महादशा के अनुसार जाने। धर्म में रुचि अस्थिर रहे। अपनी मेहनत के बल पर उन्नति करे, पिता व राजपक्ष में अक्सर विरोध रहे। अपनी लापरवाही से कई बार हानि उठाये। समाज में उसे सम्मान प्राप्त होवे।

दशम भाव में राहु जातक को धन, वाहन, आवास सुख दिलाता है परन्तु जातक को इस बात से सावधान रहना चाहिये कि कहीं घर में वास्तु दोष तो नहीं है। गजकेसरी योग होवे तथा शुक्र शनि की शुभ स्थिति हो तो जातक बहुत उन्नति करे। वटवृक्ष, पीपल में जल ड़ालें तथा शिव पूजन करें तो शुभ रहे।

एकादश भाव में राहु धन देता है, उसके मित्र उसे धोखा देते हैं तो भी उन्हें क्षमा करता है। शिक्षा में अवरोध आये परन्तु बृहस्पति, मङ्गल, शुक्र के शुभ होने पर उन्नति करता है। सन्तान पास में कम रहे, वह उन्नति करे। मध्यायु तक रुकावटें रहे तो ४२-४८ के बाद अच्छी उन्नति करे।

द्वादश भाव में राहु अपव्यय अधिक कराता है। कार्य या व्यवसाय में परिवर्तन कराता है। व्यर्थ भ्रमण अधिक हो। बाहरी सम्बन्ध मधुर नहीं रहे, चिन्ता, तनाव से अनिद्रा रहे। लापरवाही से खर्च करने से ऋणी योग भी हो जाता है। घरेलु कार्य, साज सामान की ओर जातक का ध्यान कम रहता है।

१०. मकर लग्न के अनुसार कालसर्प योग का फल

मकर लग्न का राहु उसे स्वार्थी बनाता है। छल कपट व कूटनीति में माहिर होवे। कभी कभी दयालु व सेवाभावी भी हो सकता है। गरीबों का हित चाहता है। मजदूरों का नेता हो। धनवान हो। परन्तु स्त्री की उपेक्षा करे। केतु चन्द्र योग सातवें कमजोर होता है। यदि दाम्पत्य जीवन कुछ ठीक रहे, तो स्त्री रोगी रह सकती है।

राहु द्वितीय भाव में हो तो परिवार बड़ा हो, परन्तु उनका सहयोग कम मिले,

आपसी खींचातान रहे। यदि शनि दशवें हो तो जातक ३२ वें वर्ष बाद विशेष उन्नति करे। केतु चन्द्र या केतु मङ्गल योग में पीड़ा आपरेशन योग रहे। धन प्राप्त करे, परन्तु सुख की अनुभूति नहीं होवे।

तृतीय भाव में राहु रक्षा की जिम्मेदारी समझता है। भाग्य जल्दी साथ देवे। उन्नति के साथ साथ कभी कभी मृत्युतुल्य कष्ट भी प्राप्त करता है। कभी कभी विघ्नों के कारण मनोबल जल्दी टूट जाये, परन्तु संघर्ष से ही उन्नति करता है।

चतुर्थ भाव में राहु धन, वाहन, जायदाद पक्ष में रोड़े, अड़चने आये। वास्तुत्रुटि युक्त मकान बनाये। भौतिक साधन उसे आसानी से उपब्ध नहीं होवे। परिवार में उपेक्षा का शिकार रहे। संघर्ष करता हुआ २८-३२ वर्ष के बाद उन्नति करने लगे।

पञ्चम भाव में राहु सन्तान सुख देता है। सन्तान अच्छी उन्नति करे तो बाहर काम करे, पास में नहीं रहे, अथवा सन्तान विलम्ब से होये। कवि, वकील या आर्टिस्ट हो। कम्प्युटर कार्य से भी लाभ हो। बड़े भाई से प्रेम कम रहे। उसके प्रारंभ में चिन्ता बाधा आये परन्तु उत्तरार्ध में कीर्ति प्राप्त करे।

षष्टम भाव में राहु उच्चाभिलाषी एवं महत्वाकांक्षी होवे। व्यक्ति अपने उद्देश्य में सफल होवे। रोग व शत्रु हो परन्तु विजय हो। नौकरी में अधिक उन्नति प्राप्त हो। साहसी हो, सेना व पुलिस में अधिकारी हो। ननिहाल से पहले सुख सहयोग मिले तो बाद में विरोध भी बने। व्यवसाय में उतार चढाव रहे। धन संग्रह पर ध्यान नहीं देवे।

सप्तम भाव में राहु हो तो स्त्री चञ्चला होवे। स्वयं के विचार अस्थिर हो, शंकालु हो। टोने टोटके का असर जल्दी हो। किसी से मित्रता हो तो अस्थाई रहे। साझेदारी में कार्य कमजोर व अस्थिर रहे। अच्छे पुरुषों से सम्पर्क नहीं रहे। गलत सलाह से उचित अनुचित का ध्यान न रखते हुये कार्य कर लेवें।

अष्टम भव में राहु जहरीले जानवर से पीड़ा अथवा बिजली से नुकसान, पीड़ा हो। उद्योग मशीनरी में बिजली के फाल्ट से नुकसान हो। खदान सम्बन्धी कार्य में नुकसान। राजपक्ष से लाभ नहीं, व्यक्ति अधितकर विवादों में उलझा रहे। अनायास धन हानि हो। प्रेतादि दोष उसके परिवार में हो।

नवम भाव में राहु अकस्मात उन्नति व पतन दोनों योग बनाता है। धर्मभीरू व सामाजिक कार्यकर्ता हो, आडम्बर अधिक करे। जातक जीवन के अनेक उतार चढ़ाव से रूबरू होकर निखरता है। समाज में आदर प्राप्त करता है, अपना भाग्य स्वयं बनाता है।

दशम भाव में राहु व्यापार में उन्नति देता है, राजनीति में सफल होता है। अपने परिवार, माता पिता से दूरी बढ़ जाती है। यदि उसको घर में सर्प दिखाई दें तो शिव पूजन तथा पितृ के निमित्त कुछ कर्म करना चाहिये। बार बार असफलता मिले, सर्प दिखे तो नारायणबलि व नागबलि पूजा कराये तथा कालसर्प दोष शान्ति करायें।

एकादश भाव में राहु सन्तान सुख में विलम्ब करता है। सन्तान का भाग्य बनाने में जातक को बहुत मेहनत करनी पड़ती है। उसके परिवार में अन्य लोगों के भी कालसर्प दोष है, तो पितृ शान्ति प्रयोग अवश्य कराना चाहिये। केतु के साथ शुक्र हो तो उन्नति देता है। व्यक्ति कवि, कलाकार, वकील बने। चतुर्थ भाव में मङ्गल, तीसरा शुक्र, दशवां शनि हो तो उन्नति कारक है।

द्वादश भाव में राहु नीच का अपयश दिलाता है। चोरभय, राजभय रहता है। अपने शत्रु स्वयं पैदा करता है। अनियमित व्यय से स्वयं ऋणी होता है। बार बारस्थान या कार्य परिवर्तन करता है। इस व्यक्ति को राहु शान्ति व सर्पशान्ति प्रयोग अवश्य कराना चाहिये।

११. कुम्भ लग्न के अनुसार कालसर्प योग का फल

कुम्भ लग्न में राहु हो तो वह किसी का उपकार नहीं मानता, लोग उसका सहयोग करने से कतराते हैं। शनि, शुक्र उच्च के होवे तो जातक धनी अवश्य हो। उसे प्रसिद्धि बहुत मिले, परन्तु उसका पारिवारिक जीवन कमजोर होता है। राजनीति कूटनीति में व्यक्ति सफल होवे।

धन स्थान में राहु होने पर व्यक्ति अपनी मान मर्यादाओं में चलने वाला हो। वाणी संयत हो, परिवार के लिये सदा भला सोचता है परन्तु यश कम मिलता है। उसके उपकार को भुलाकर लोग उसे अपमानित करते हैं। धन का पूर्ण सदुपयोग नहीं हो पाता।

तृतीय भाव में राहु हो तो बड़े भाई से सुख सहयोग कम मिले, छोटों का सहयोग ठीक रहे। व्यक्ति मेहनती व साहसी होवे। उसे अचानक लाभ व यश मिले तो अकस्मात् हानि व अपयश भी प्राप्त हो। कठिन परिश्रम से धन संग्रह करता है।

चतुर्थ भाव में राहु हो तो धन, वाहन, जायदाद, वैभव की प्राप्ति अपने पुरुषार्थ से करेगा। पैतृक सम्पत्ति का लाभ कम मिले। व्यक्ति के मकान में वास्तु दोष नहीं हो तभी अच्छी उन्नति करेगा। माता व स्त्री सुख मध्यम रहे। परिवार में अधिक

उन्नति करने की चाहत रहे, परन्तु बाधायें आती रहे।

पञ्चम भाव में राहु हो तो विद्या योग ठीक, सन्तान सुख हो परन्तु दूर रहे। बड़े भाई का सहयोग मिले। परिवार में पितृ दोष की सम्भावना रहे। उसे रुक रुक कर धन लाभ प्राप्त होवे। तकनीकि क्षेत्र की ओर उसकी रुचि बने। तन्त्र मन्त्र मार्ग में भी व्यक्ति भ्रमित रहे परन्तु बाद में उसे सफलता मिले। मित्रों से सावधान रहना चाहिये।

षष्टम भाव में राहु हो तो सन्तान के कारण या स्त्रियों कारण ऋणि बने। नेत्र पीड़ा या अनिद्रा योग रहे। बाहर उसे प्रसिद्धि मिले, लेकिन घर में आदर कम होता है। मोक्ष उपासना कर्म में रुचि रहे। वैसे उसके किये उपकारों को लोग भूल जाये।

सप्तम भाव में राहु प्रेतादि बाधा से जल्दी ग्रसित होवे। हर कार्य में रुकावट रहे। कार्य व्यवसाय में अक्सर बाधायें आये। ऐसे जातक दूसरों के बहकावे में शीघ्र आ जावे तो नुकसान उठाये। पारिवारिक जीवन मध्यम रहे।

अष्टम भाव में राहु पराविद्या में रुचि देता है, व्यक्ति दार्शनिक व मनमौजी होता है। अपव्यय अधिक होवे, रोग व शत्रु बने रहे। दूसरे घर में बृहस्पति हो तो अच्छा वक्ता व धनी हो। सम्पत्ति पक्ष को लेकर विवाद बने। कभी कभी अकस्मात् धन लाभ प्राप्त करे। उपहार में भी कुछ धन प्राप्त हो सकता है।

नवम भाव में राहु हो तो साहसी हो, सब कुछ प्राप्त करने की आकांक्षा बनी रहे। धर्म का पालन दूसरों को दिखाने व स्वार्थ सिद्धि हेतु करता है। सामाजिक कार्य करे तो उसका प्रतिफल अवश्य चाहता है। कभी कभी उसको समाज सेवा का जुनून चढता है। व्यक्ति धन व सम्मान भी प्राप्त करता है।

दशम भाव में राहु हो तो धन, वाहन, मकान देता है, परन्तु पुराने मकान, वाहन नहीं खरीदें तो ठीक रहे। नौकरी, व्यवसाय के लिये अधिक भाग दौड़ करनी पड़ती है तथा उच्च पद भी प्राप्त करता है। राजनीति में गरिमा बनी रहे। उग्र प्रदर्शनों व हिंसा में विश्वास रखता है। धन सम्पदा कमाये परन्तु मानसिक शान्ति नहीं मिलती है। पारिवरिक वातावरण अनुकूल कम रहता है।

लाभ स्थान में नीच का राहु हो तो स्त्रियों व बड़े भाई से धोखा होता है। इसके बावजूद वह व्यक्ति परिवार का साथ देना चाहता है। सन्तान सुख में विलम्ब या गर्भपात हो। शिक्षा में बाधायें आये। दूसरों के द्वारा अभिचार, जादू टोने के कारण भी पीड़ा पाता है। सन्तान के भविष्य के लिये चिन्तित रहता है।

राहु यदि द्वादश भाव में मकर राशि का हो तो यात्रायें कराता है। धन का संग्रह नहीं होने देवे, परन्तु देर सवेर उसे प्रसिद्धि अवश्य प्राप्त होती है। सातवें मङ्गल या दूसरे १२ वें शनि हो तो चोट, दुर्घटना का भय रहता है।

१२. मीन लग्न के अनुसार कालसर्प योग का फल

मीन लग्न का राहु हो तो व्यक्ति धार्मिक प्रवृत्ति का होवे। स्वार्थ सिद्धि में माहिर हो, उसके लिये छलबल कपट नीति काम में ले सकता है। धनवान होने पर भी अन्दरूनी तौर पर सुखी नहीं है। उसकी महत्वाकांक्षा बहुत होती है। भाग्य को अपने पक्ष में करने के लिये उसे मेहनत करनी पड़ती है।

धन भाव में राहु पैसा लाये, परन्तु रुके नहीं। परिवार का सुख सहयोग मध्यम रहे। वाणी दोष हो या कटु वचन कहने वाला हो। अकस्मात् चोट दुर्घटना योग बने। पैतृक संपदा संचित नहीं रहे। कभी अचानक विशेष धन लाभ प्राप्त होता है। स्त्री को वायु विकार व अन्य पीड़ा रहे।

तृतीय भाव में राहु हो तो उच्चाभिलाषी व मेहनती होये। भले ही उसका प्रतिफल उसे शीघ्र नहीं मिले। परिवार में कभी मित्रता, कभी शत्रुता रहे। ट्राँसपोर्ट, ठेका, किराया, ऐजेन्सी कार्य से भी धन प्राप्त करता है। शुक्र बलवान हो तो दलाली कार्य शुभ रहे। केतु मङ्गल साथ हो तो भी धनी व पराक्रमी हो।

चतुर्थ भाव में राहु मान सम्मान की परवाह किये बिना व्यक्ति धन की लालसा में सभी तरह के प्रयत्न करता है। ऐसा व्यक्ति जीवन में लाभ, हानि दोनों प्राप्त करता है, परन्तु धनी होता है। धर्म में रुचि सामान्य रूप से होती है। स्त्री सुख ठीक है, बुध शुक्र कमजोर हो तो द्विभार्या योग बनता है।

पञ्चम भाव में राहु हो तो सन्तान चिन्ता रहे। पढाई में विषय बदले। टोना टोटका से प्रभावित रहे। पितृ शाप भी जातक को हो सकता है। मानसिक तनाव रहे। जातक मध्यायु बाद धनी होवे। पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहे। सन्तान का सहयोग रहे।

षष्टम भाव में राहु शत्रु बढाता है। राजकीय कार्यों में शीघ्र सफलता नहीं मिले। नौकर उसे नुकसान देते हैं। मङ्गल के बलवान होने पर उच्च पद प्राप्त करे, धनी होवे। घर व मातृभूमि की अपेक्षा उसे अन्यत्र स्थान से लाभ अधिक प्राप्त होता है। भाग्य में जब बाधायें आती है, तब धर्म कर्म का सहारा भी लेता है।

सप्तम भाव में राहु स्त्री की आयु तों बढ़ाता है, परन्तु सम्बन्ध सामान्य रखता है। स्त्री के वायुविकार रहे या गुप्त रोग होवे। वह सन्तान की भी उपेक्षा करता है। धन का संचय अनियन्त्रित रहता है। साझेदारी कार्य अस्थिर होवे। यदि स्त्री की कुण्डली अच्छी हो तो स्त्री के नाम पर कार्य व्यापार करने से लाभ प्राप्त हो।

अष्टम भाव में राहु भोगी विलासी बनाता है। बिना सोचे समझे निर्णय से ऋणि भी हो जाता है। आँख, कान में पीड़ा हो या गुप्त रोग हो। कठिन परिश्रम के बाद जीवन में धन लाभ हो। यदि मङ्गल व शुक्र अच्छे हो तो धनी होवे।

नवम भाव में राहु व्यक्ति को जिद्दी बनाता है। व्यक्ति तन्त्रिक हो। अपनी जिद से नुकसान उठाये परन्तु सतत प्रयत्नशील होने से मध्यायु के बाद धनी होवे। उसे कभी भी बड़े बुजुर्गों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। जब व्यवसाय चोपट होने लगे तो भैरव या हनुमान का प्रयोग कराये।

दशम भाव में राहु राजनीति में गुप्त शत्रु पैदा करता है। व्यापार मे बार बार हानि उठानी पड़ती है। पितृ के निमित्त कार्य करने से लाभ होवे। हानि, लाभ जीवन में चलते ही रहते हैं। व्यक्ति को अपना विवेक नही खोना चाहिये, बार बार प्रयत्न करने पर सफलता मिलेगी।

लाभ भाव में राहु निम्नवर्ग के साथ काम करने से धन देगा। मित्र अस्थाई रहे। धातु सम्बन्धी कार्य करने पर लाभ होवे। जातक दूसरों को धोखा देकर तथा अन्याय पूर्वक धन कमाता है। यदि पहले धनी हो तो बाद में अपनी सम्पदा खो देगा पुत्र व सन्तान की चिन्ता रहेगी।

व्यय भाव में राहु हो तो अपनी शान शौकत में फालतू धन व्यय करता है। गलत व्यसन में भी व्यक्ति पड़ जाता है। जुआ, सट्टा, लॉटरी शेयर्स में नुकसान होगा। धन का अपव्यय हो। वृथा भ्रमण व देशाटन करता रहे। जीवन में स्थायित्व ठहर कर आता है।

आंशिक कालसर्प योग

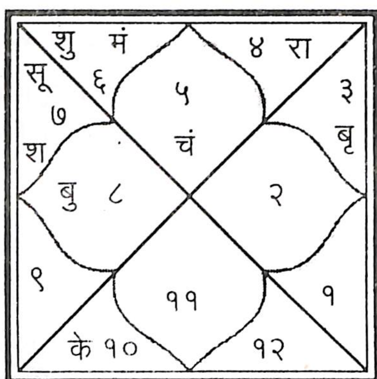
कुछ विद्वानों का मत है कि राहु-केतु से कोई भी ग्रह अधिक अंश का होकर उनकी धूरी से बाहर होगा तो कालसर्प योग को भङ्ग करता है। कुछ विद्वानों का कथन है कि आंशिक कालसर्प योग रहता है।

कुछ विद्वानों का मत है राहु-केतु से कोई भी एक ग्रह चाहे चन्द्रमा ही क्यों न हो बाहर हो तो कालसर्प योग भङ्ग हो जाता है। कुछ विद्वानों का मत है कि कालसर्प का प्रभाव आन्शिक रहेगा।

परन्तु मेरे अनुभव में भी यह देखने में आया कि यदि कोई बड़ा ग्रह बृहस्पति, शनि, मङ्गल राहु-केतु से बाहर है तो कालसर्प के प्रभाव को बहुत कम करता है। सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र आंशिक कम करते हैं।

यह तथ्य सत्य है कि आंशिक कालसर्प वाला उन्नति अवश्य करेगा, परन्तु कुछ समय उसे किसी एक भाव के विशेष कष्ट को भुगतना पड़ेगा। जहाँ आंशिक कालसर्प का दुष्प्रभाव अधिक है, उस भाव का फल कमजोर होगा।

उदाहरण नं ०१ -

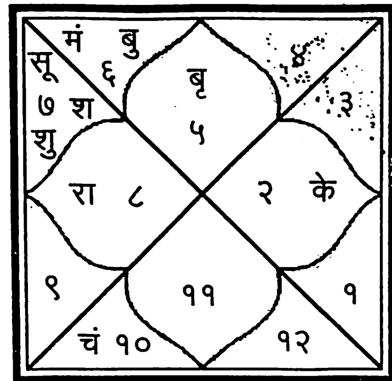


राहु केतु से बृहस्पति इस कुण्डली में बाहर है। जातिका का विवाह १५ वर्ष की आयु में हुआ। अच्छे घर में पली लड़की को विवाह के २० वर्ष पश्चात् तक विशेष कष्ट उठाने पड़े। जिसकी उसने कल्पना नहीं की थी।

राहु का राशि स्वामी चन्द्रमा लग्न में शुभ स्थान पर है। केतु का राशि स्वामी शनि उच्च का है। अत: **कर्मसाक्षी ग्रह** चन्द्र व शनि के शुभ होने पर उन्नति अवश्य होनी चाहिये। जातिका को ४५ वर्ष की उम्र में राहु की महादशा लगी तभी से वैभव की प्राप्ति होने लगी। कालसर्प जैसा

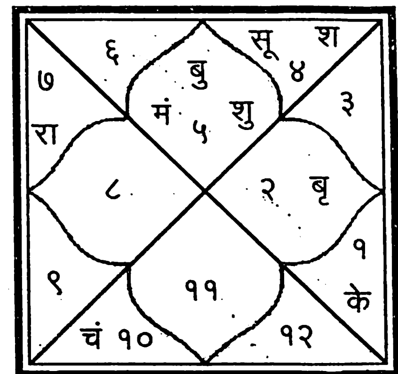
प्रभाव राहु दशा में नहीं हुआ। जो कष्ट पाने थे मध्यायु तक प्राप्त कर लिये।

उदाहरण नं ०२ -

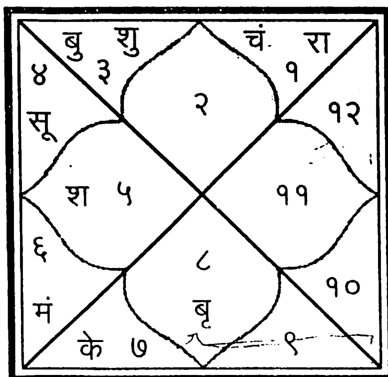


जातक की कुण्डली में चन्द्रमा राहु-केतु से बाहर है। आंशिक कालसर्प योग बनता है। सूर्य शनि तुला राशि में कमर की तकलीफ देते हैं, इसलिये जातक का विवाह नहीं हुआ। केतु का राशिनाथ शुक्र अस्त है तथा राहु का राशि स्वामी मङ्गल शत्रु क्षेत्री है। मङ्गल शुक्र में २ × १२ योग होने से जातक बेरोजगार रहा। राहु केतु के योग के कारण जातक हिन्दु होकर भी मुस्लिम उपासक रहा। राहु महादशा में कोई हानि नहीं पहुँची। क्योंकि बृहस्पति राहु केतु के मध्य में है अतः बृहस्पति दशा खराब रही। मृत्यु के समय दूषित आत्माओं ने उसे कष्ट दिया।

उदाहरण नं ०३ -



जातिका का सम्बन्ध तय होने के बाद माहौल कुछ गलत होने लगा। शादी से ८ दिन पहले तक माता पिता का मानस लड़के से सम्बन्ध विच्छेद करने का बन गया था। परन्तु कुम्भ विवाह कराते ही सब कुछ ठीक हो गया। कुण्डली में चन्द्रमा के अलावा सभी ग्रह राहु केतु के मध्य में है, आंशिक कालसर्प योग बनाते हैं। राहु केतु के राशि स्वामी (कर्मसाक्षी ग्रह) लग्न में एक साथ हैं अतः उन्नति योग है। २८ वर्ष बाद जातिका की उन्नति होने लगी।

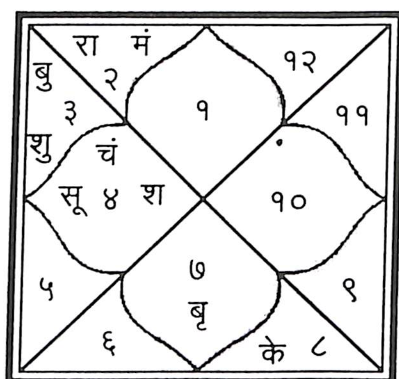


उदाहरण नं ०४ -

सभी ग्रह राहु केतु के मध्य में हैं, बृहस्पति बाहर है। यह व्यक्ति कम्पाउण्डर था। अच्छे डॉक्टर्स से भी उसकी प्रसिद्धि ज्यादा थी। राहु, चन्द्र, शनि, मङ्गल के कारण शराब

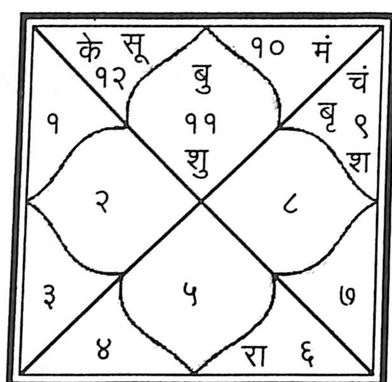
की लत पड़ गई। स्त्री छोड़ कर चली गई। अन्त समय में दर दर की ठोकरें खाने को मिली।

उदाहरण नं ०५ -



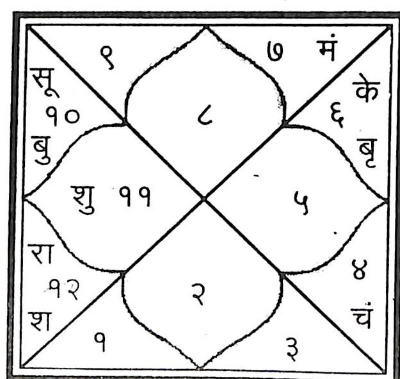
मङ्गल के अंश राहु से अधिक होने के कारण आंशिक कालसर्प कह सकते हैं। व्यक्ति जीरे का प्रमुख व्यापारी है। दूसरे भाव से आठवें भाव में ग्रह स्वास्थ्य कमजोर करते हैं। सूर्य चन्द्र शनि के कारण हाथ पैरों में कम्पन रहता है। मधुमेह की बिमारी रही। सन्तान ने भी बड़ा किया परन्तु काम के अनुसार लाभ नहीं कमाया।

उदाहरण नं ०६ -



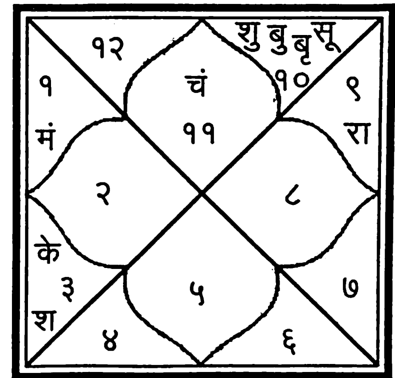
कुण्डली में अष्टम भाव तक राहु केतु मध्य ग्रह होने से कालसर्प योग है। गजकेसरी योग, कर्मेश मङ्गल उच्च का, लग्न में पञ्चमेश सुखेश भाग्येश- बुध शुक्र युति के कारण राजयोग कर प्रबलता के कारण इसे आंशिक कालसर्प योग कहसकते हैं। व्यक्ति प्रसिद्धि वकील था। कालसर्प योग आयु घर से प्रारम्भ होता है। जो आयु पर प्रभाव ड़ालता है। दूसरे घर से मुँह के विषय में भी जाना जाता है। ४५ वर्ष की आयु में केतु सूर्य के कारण दाँत में दर्द हुआ। डॉक्टर ने दाँत निकाल दिया। परन्तु मुँह में विशेष पीड़ा हो गई जिससे ५-७ दिन में ही मृत्यु हो गई।

उदाहरण नं ०७ -



प्रस्तुत कुण्डली में चन्द्रमा के अलावा सभी ग्रह राहु केतु के मध्य में हैं। अन्य ग्रह लाभ भाव से पञ्चम भाव तक आंशिक कालसर्प योग बनाते हैं। अतः पञ्चम भाव, विद्या, बुद्धि व सन्तान भाव प्रभावित रहा।

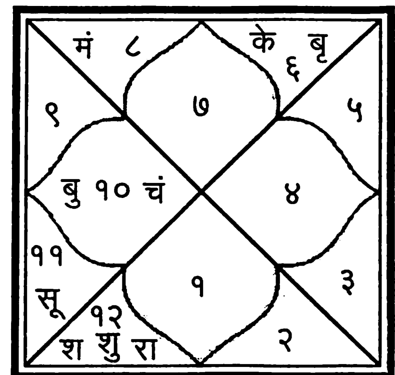
जातक की स्त्री का मासिक धर्म बन्द हो गया। शादी के ७ वर्ष तक सभी प्रकार के उपाय कर लिये। उनका कालसर्प योग का उपाय करवाया। पश्चात् इलाज करवाने से २ पुत्रियाँ व १ पुत्र का योग बना। शनि मङ्गल षडाष्टक के कारण सड़क दुर्घटना हुई जिससे जातक की ६ महीने तक याद्दाश्त प्रभावित रही। मध्यायु में विशेष धनी योग बना।



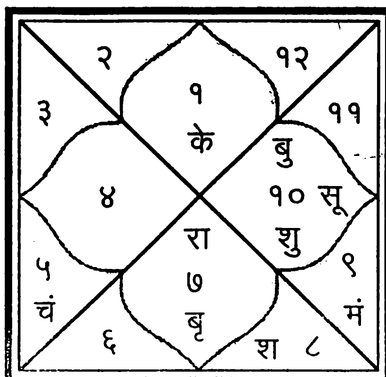
उदाहरण नं ०८ -

जातक की कुण्डली में लाभ से पञ्चम भाव तक ग्रह राहु केतु के मध्य हैं। अतः कालसर्प योग सन्तान पर प्रभाव ड़ालता है। शनि के अंश केतु से अधिक हैं। इसलिये आंशिक कालसर्प कह सकते है। परन्तु आंशिक दोष हो तो क्या मुख्य दोष तो रहता ही है। शनि ५ वां वंशवर्धक माना जाता है चाहे ३ पुत्रियाँ १ पुत्र हो। परन्तु इस कुण्डली में बुध, बृहस्पति, शुक्र तीनों ही अस्त हैं। तथा मेरा मानना है कि बृहस्पति शुक्र युति, प्रतियुति या षडाष्टक गर्भाशय में भी परेशानी दे सकते हैं। जातिका के कोई सन्तान नहीं हुई।

उदाहरण नं ०९ -



जातक की कुण्डली में १२ वें से छठे घर में कालसर्प योग है। शुक्र व शनि के अंश राहु से अधिक होने से आंशिक कालसर्प कह सकते हैं। राहु की महादशा में शुक्र शनि के साथ राहु योगसे राहु ने लग्नेश शुक्र तथा सुखेश शनि का फल दिया जिससे अच्छी उन्नती हुई।

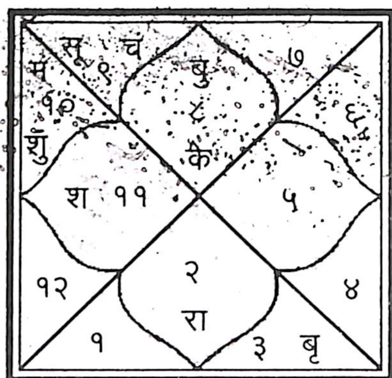


उदाहरण नं १० -

जातिका के सप्तम से लग्न में कालसर्प है। चन्द्रमा बाहर होने के कारण आंशिक

है। धनेश, पञ्चमेश, लग्नेश, भाग्येश की शुभ स्थिति के कारण राहु दशा में भी उन्नति हुई। क्योंकि कालसर्प लग्न को भी प्रभावित करता है। अत: जातिका के ५-७ ऑपरेशन हुये। स्वास्थ्य मध्यम रहता है।

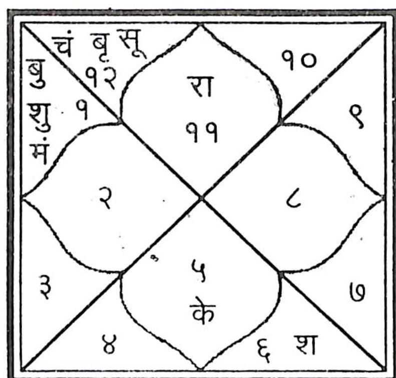
उदाहरण नं ११ -

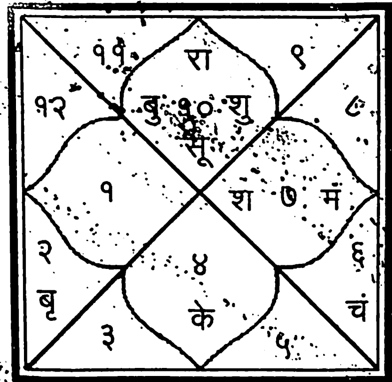


जातक की कुण्डली में लग्न से सप्तम तक ग्रह कालसर्प बनाते हैं। बृहस्पति इस योग से बाहर होने से आंशिक कालसर्प है। चतुर्थ में पाप ग्रह शनि है, कालसर्प पत्नि भाव को भी प्रभावित करता है। अत: पत्नि प्रेत बाधा के कारण शरीर से पीड़ित रहे। पञ्चमेश बृहस्पति आठवें सन्तान पक्ष को कमजोर करता है। जातक के चार लड़कियाँ, एक पुत्र है। हर सन्तान ५-७ वर्ष की आयु तक विशेष बिमार रही। पुत्र के पैर में भी कुछ विकलांगता है। जातक के जीवन में हर २-३ वर्ष बाद बार-बार व्यवसाय में झटका लगता है। अत: आन्शिक कालसर्प योग भी मुख्य भाव को प्रभावित करता है।

उदाहरण नं १२ -

जातक की कुण्डली में सभी ग्रह राहु-केतु के मध्य में हैं। केवल शनि बाहर है। अत: आंशिक कालसर्प योग बनता है। जातक का कालसर्प लग्न व स्त्री भाव को प्रभावित करता है। कृष्ण वर्ण के जातक का स्वास्थ्य मध्यम रहता है। स्त्री रूपवती है व गौरवर्ण की है। परन्तु दोनों में मैत्री कमजोर है। राहु-शनि की स्थिति टोने टोटके से भी प्रभावित करती है। जिसके कारण शादी के १० वर्ष बाद तक सन्तान नहीं हुई। टोटका निवारण के बाद लड़का-लड़की जुड़वाँ सन्तान उत्पन्न हुई। मङ्गल, बुध, शुक्र का योग पञ्चमेश, भाग्येश, कर्मेश योग तथा गजकेसरी योग से करोड़पति योग बना। जैन धर्म के अनुसार पार्श्वनाथ, पद्मावती की उपासना से कालसर्प दोष नहीं लगाता। जातक का इष्ट पद्मावती देवी है, जिसके कृपा से सामान्य स्तर से उठकर बहुधनी योग प्राप्त हुआ। परन्तु राहु केतु के मुख्य घर





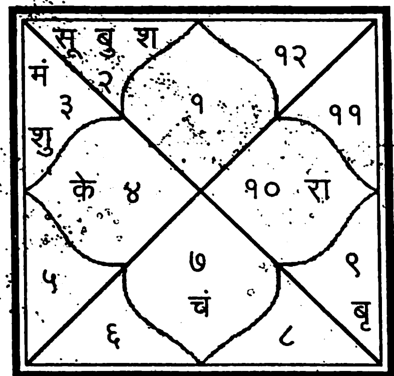
लग्न व सप्तम भाव के सुख न्यून हैं।

उदाहरण नं १३ -

जातक की कुण्डली में सप्तम से लग्न स्थित केतु राहु के मध्य में सभी ग्रह हैं। मात्र बृहस्पति बाहर है अतः आंशिक कालसर्प योग है।

बुध शुक्र, शनि मङ्गल राजयोग बना रहे हैं। कुण्डली में धनी योग है परन्तु कालसर्प योग एक बार अपना प्रभाव अवश्य दिखाता है। राहु की दशा में राहु ने कर्मेश का फल बुध शुक्र के साथ होने के कारण दिया। राहु महादशा ने एकतरफा उन्नति दी। राहु में सूर्य एवं चन्द्रमा के अन्तर में स्थिति बहुत ही दयनीय हो गई। मेरे परामर्शानुसार व्यक्ति ने कार्य किये बहुत जबरदस्त उन्नति की। आज मार्बल क्षेत्र में सर्वाधिक उत्पादन हेतु "गिनीज बुक" में नाम दर्ज है।

कालसर्प योग लग्न को भी प्रभावित करता है अतः ५-७ बार चोट दुर्घटना योग बने।

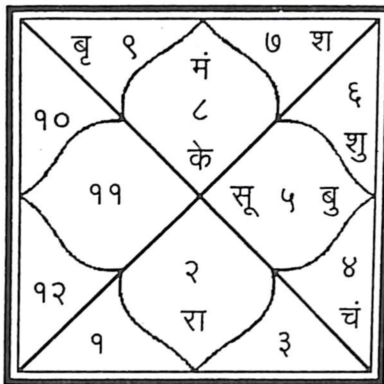


उदाहरण नं १४ -

जातक की कुण्डली में चन्द्र बृहस्पति के अलावा सभी ग्रह राहु केतु के मध्य में स्थित हैं। अतः आंशिक कालसर्प योग, कर्म घर से सुख घर के बीच है। चतुर्थ भाव से शय्या सुख भी देखा जाता है, अतः पत्नि भाव पर भी इस योग का प्रभाव पड़ता है। जातक के लग्नेश सप्तमेश मङ्गल शुक्र के साथ होने तथा चन्द्रमा सातवें होने से, जल्दी विवाह होना चाहिये। परन्तु यहां चन्द्रमा राहु केतु के ठीक मध्य में होने से दूषित हो गया कालसर्प योग, शय्या सुख की हानि करता है, अतः जातक का ३७ वर्ष की आयु तक विवाह नहीं हुआ।

उदाहरण नं १५ -

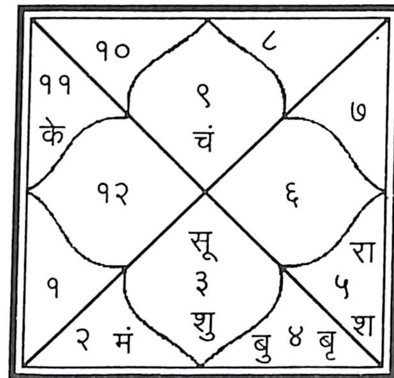
इस कुण्डली में बृहस्पति बाहर है तथा अन्य ग्रह राहु-केतु के मध्य में है। आंशिक कालसर्प पति घर से लग्न तक है। कुण्डली में मङ्गल, शनि, राहु "दोहरा



मंगली योग'' पति सुख में बाधा कारक बनाता है। परन्तु साथ में सप्तम भाव से लग्न का कालसर्प योग भी पति भाव को प्रभावित करता है। अत: पति को किसी केस में जेल हुई हत्या का मुकद्दमा चला एवं लड़की ने तलाक ले लिया।

उदाहरण नं १६ -

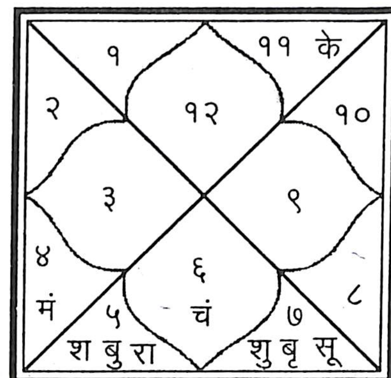
इस स्त्री की कुण्डली में तीसरे घर से नवम भाव तक चन्द्रमा के अलावा सभीग्रह राहु-केतु के मध्य में है अत: आन्शिक कालसर्प योग है। यह योग भाग्य में अनेक बाधायें प्रदान करता है। इस स्त्री के पति की शादी के ३-४ वर्ष बाद ही मृत्यु हो गई। पति की किडनी खराब हो गई थी। वह २८ वर्ष की आयु में विधवा हो गई। कुण्डली में बुध, बृहस्पति (सप्तमेश, लग्नेश) आठवें होने से द्विविवाह योग बनाते हैं। सूर्य पर



केतु की दृष्टि भी पति सुख में हानि पहँचाती है। बृहस्पति के पीछे उसके शत्रु ग्रह शुक्र, तथा बुध बृहस्पति के आगे पाप ग्रह राहु, शनि, बृहस्पति से केतु का षडाष्टक योग है। इससे आध्यात्म योग के अनुसार कुण्डली में शाप योग बनता है। तथा कालसर्प योग भी अमङ्गल कारक है।

उदाहरण नं १७ -

इस कुण्डली में मङ्गल के अलावा सभी ग्रह राहु-केतु के मध्य में होने से आन्शिक कालसर्प योग है। विद्या घर में नीच का मङ्गल विद्या में अवरोध कारक है। परन्तु पञ्चमेश चन्द्रमा केन्द्र में है। ५, ६, ७, ८ में लगातार ग्रह योग राजयोग देता है। अत: जातिका विद्या अध्ययन हेतु विदेश गई। ''कालसर्प योग'' विवाह में विलम्ब कारक है। अत: ३१ वर्ष तक विवाह संभव नहीं है।



कालसर्प एवं शाप योग

कालसर्प योग वाले व्यक्ति की जन्मकुण्डली में शुभग्रह बलवान हो तो वह व्यक्ति दूसरों के भले के लिये कष्ट उठाता है उसके प्रतिफल में वह जीवन में एक उच्च स्तर पर अवश्य पहुंचता है। महात्मा गाँधी एवं पं० जवाहर लाल नेहरु की कुण्डली में भी कालसर्प योग था। शुभग्रहों के कारण उन्होनें देशहित में आन्दोलन किये। कालसर्प येग के कारण जेल, यातनायें भोगनी पड़ी परन्तु दूसरों के हित में कार्य करने से शुभ फल प्राप्त हुआ। महात्मा गाँधी राष्ट्रपिता कहलाये, नेहरुजी ने प्रधानमन्त्री पद प्राप्त किया।

जन्मकुण्डली में कालसर्प योग है। राहु केतु की कुण्डली में स्थिति किस राशि में है, कौनसे ग्रह साथ हैं एवं कौनसे ग्रहों की दृष्टि है, इस आधार पर व्यक्ति के चरित्र के बारे में जान सकते हैं कि यह व्यक्ति दुष्ट स्वभाव का है या नहीं। पूर्वजन्म में भी इसने अच्छे कर्म किये होंगे या नहीं। पूर्वकर्म अच्छे हों परन्तु वर्तमान जीवन में भी किसी का अहित किया होतो उसे उनका फल वर्तमान में भी भोगना पड़ सकता है।

अत: यदि कालसर्प योग नहीं है तो अन्य योगों से इसका अध्ययन करें। कई कुण्डलियों में ग्रहयोग बहुत अच्छे होते हैं फिर भी जातक दु:ख पाता है, उनका सूक्ष्मता से विश्लेषण करें तो कुछ शाप योग नजर आयेंगे।

जन्मकुण्डली के अलावा सूर्य, चन्द एवं गुरु से भी उनका आंकलन करें।

सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति के साथ पाप ग्रह होवें या इनसे षडाष्टक योग हो अथवा इनसे केन्द्र में राहु, केतु, शनि, मङ्गल, आदि पाप ग्रह हो तो ऐसा व्यक्ति या तो पूर्वजन्म से शापित होगा या टोना टोटका, पिशाच बाधा से पीड़ित होकर दु:ख प्राप्त करेगा।

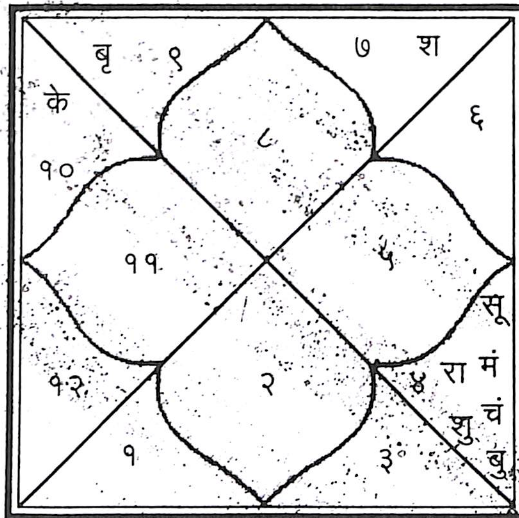
चन्द्र-सूर्य से शनि, राहु का षडाष्टक या युति प्रतियोग अथवा बृहस्पति से शनि, राहु, शुक्र का युति प्रतियुति अथवा षडाष्टक योग १५०×२१० अंश की दूरी

तथा प्रतियुति १८० अंश की दूरी बहुत अशुभ होती है।

राहु-केतु के मध्य से १-२ ग्रह बाहर हो तो आंशिक कालसर्प कहलाता है परन्तु शापित ग्रहों का अध्ययन अवश्य करें।

उदाहरण के लिये कुछ कुण्डलियाँ इस प्रकार है -

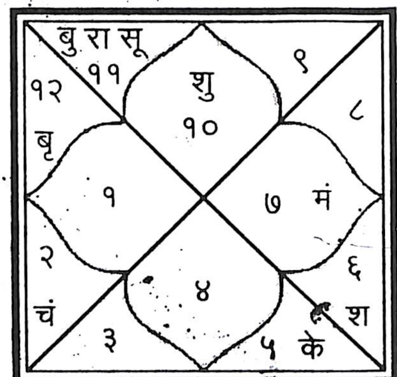
उदाहरण नं ०१ -



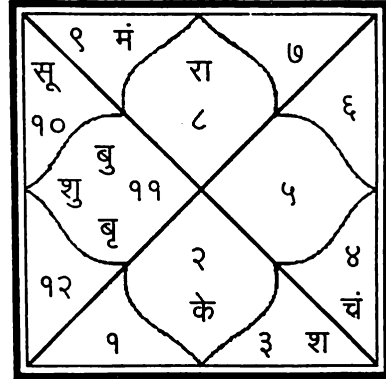
जातिका के भाग्य स्थान में छः ग्रह हैं परन्तु गुरु से आठवें हैं जीवन में प्रेतबाधा, रोग ग्रस्त रही। यहाँ गुरु शापित है, अतः ब्रह्मशाप, गुरुशाप या देवदोष का शाप है।

उदाहरण नं ० - २

इस व्यक्ति ने जीवन में कई व्यवसाय किये परन्तु हानि उठानी पड़ी। सूर्य-राहु युति एवं सूर्य से आठवां शनि होने से यह शापित कुण्डली है। अतः सूर्य कमजोर होने से सूर्य का उपाय करें; पितृ शाप का उपाय करें।

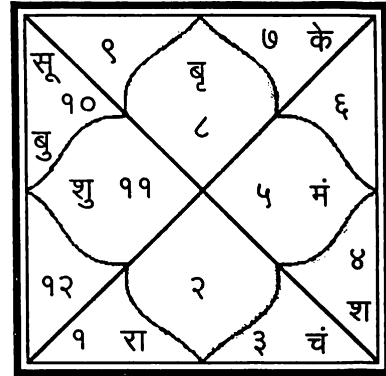


उदाहरण नं ०३ -



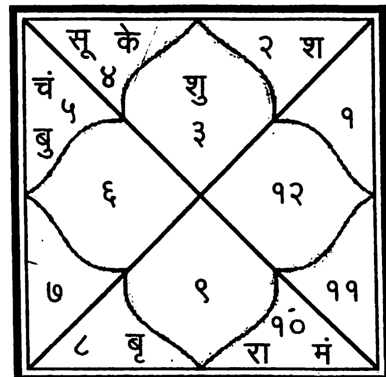
सूर्य-शनि का षडाष्टक योग, मङ्गल-शनि की प्रतियुति चन्द्रमा से ६ मङ्गल १२ शनि, लग्नेश मङ्गल का केतु से षडाष्टक योग बृहस्पति-शुक्र युति से प्रेत बाधा के कारण शारीरिक पीड़ा योग विशेष रहा। सूर्य पर केतु व चन्द्र पर राहु की दृष्टि भी अशुभ है। जो शापित योग दर्शाता है। शनि के कुयोगों के कारण किसी गरीब की दुराशीष भी हो सकती है।

उदाहरण नं ०४ -



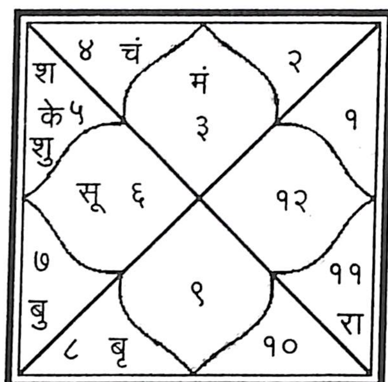
विद्वता में अग्रणी परन्तु सूर्य से कन्द्र में राहु, शनि केतु। बृहस्पति चन्द्र षडाष्टक, बृहस्पति राहु षडाष्टक योग के कारण परिवार पर अभिचार व प्रेतबाधा जन्य दोष के कारण संघर्ष रहा। परिवार में पूर्वज की अभिचार से मृत्यु हुई, उनकी अतृप्त आत्मा व अभिचार कर्म भी दुःख प्रदान कर रहा है।

उदाहरण नं ०५ -



सूर्य केतु युति, शुक्र बृहस्पति षडाष्टक तथा लग्न से ८ वें मङ्गल राहु प्रेतबाधा के कारण शारीरिक व आर्थिक दबाव काफी रहा। मङ्गल राहु प्रेतबाधा तथा अन्य योग पितृ शाप को दर्शाते हैं।

उदाहरण नं ०६ -



५.१०.२००७ में जन्मा यह जातक जन्मान्ध है। गर्दन नहीं झुका सकता, सिर के पीछे का दिमाग विकसित नहीं हुआ।

बुद्धि का मालिक चन्द्रमा स्वगृही, तीसरे शनि शुक्र केतु। राहु भाग्य स्थान में, सूर्य चौथा, बुध पाँचवें भाव में अच्छे हैं। कोई कुयोग दिखाई नहीं देता, परन्तु बृहस्पति से ८ वां मङ्गल है। बृहस्पति-राहु, केतु-शनि के मध्य में है अतः पूर्वजन्म का देवदोष व शापदोष बनता है। अतः जातक के लिए बृहस्पति (ब्रह्मशाप दोष) व देवदोष का उपाय करना चाहिये।

शाप योग का विवेचन

शाप योग किसी भी आत्मा या जीव को हानि पहँचाने के कारण व्यक्ति को प्राप्त हो सकता है। ज्योतिषीय आधार पर उसकी कल्पना की जा सकती है कि यह किस श्रेणी का शाप है। कालसर्प योग स्वयं एक अभिशाप है, जो पूर्वजन्म के किसी कुफल के कारण प्राप्त होता है। परन्तु कालसर्प योग कब नहींलगता या उसमें कब न्यूनता आती है इसका विवेचन किया जा चुका है।

वृहत्पाराशर होरा शास्त्र में १४ तरह के शाप योग दिये गये हैं। अन्य और भी कारण हो सकते हैं। जैसे –

१. किसी का धन हरण किया हो।

२. चोरी, डकैती की हो।

३. किसी विधवा की आत्मा को सताया हो

४. किसी गरीब की दुराशीष लगी हो।

५. किसी साधु सन्त का अपमान किया हो।

६. किसी के जीवन का हरण किया हो।

७. किसी सन्तानहीन की सम्पदा ली हो एवं उसके निमित्त कुछ धर्म-कर्म नहीं किया हो।

पितामह भीष्म ने बाल्यकाल में खेल खेल में एक भँवरे को पकड़ लिया और उसके शरीर को शूलों से वेध दिया। उस भँवरे ने उनको श्राप दिया कि जिस प्रकार मेरी मृत्यु शूलों से वेधने के कारण हो रही है उसी प्रकार तुम्हारी मृत्यु भी शूलों की शय्या पर होगी।

एक गरीब औरत किसी बनिये से राशन का सामान लेती थी। उसके एवज में वह जब-तब थोड़ा थोड़ा जमा करा देती थी। पूरा हिसाब करने के समय पर बनिये ने जमा करायी रकम के लिये मना कर दिया। उस औरत ने उसके पूरे पैसे देते हुये श्राप दिया कि तेरे सात लड़कियाँ होगी। उस समय उसके एक ही लड़की थी। उसके बाद उसकी सभी सन्तानें लड़कियाँ हुई। हर लड़की के जन्म पर वह

औरत आकर कहती कि तेरे पूरी सात लड़कियाँ ही होगी। उसके सात लड़कियाँ ही हुई, पुत्र प्राप्त नहीं हुआ।

तुलसीदास जी ने भी कहा है –

तुलसी हाय गरीब की, कबहुं न निष्फल जाय ।
मरे बैल की चाम सों लोह भस्म हो जाय ॥

इस प्रकार कभी कभी इस जन्म के पापों का फल भी इसी जन्म में भोगना पड़ता है। पूर्व जन्म के पापों का फलित तो कुण्डली से जाना जा सकता है परन्तु इस जन्म के पापों का फल कुण्डली से आसानी से नहीं जना जा सकता है।

ज्योतिष में नवम भाव से पूर्वजन्म कृत कर्म देखे जाते हैं, पञ्चम भाव से इस जन्म के कर्म एवं १२ वें भाव से अगले जन्म के फल जाने जाते हैं।

इस जन्म के फल के लिये प्रथम तो यह देखें कि व्यक्ति की कुण्डली में दुर्जन, दुराचारी, परधनहर्ता, गुण्डागर्दी, छली, कपटी योग तो नहीं है, जिसके कारण उसने किसी पर अत्याचार किया हो या किसी की दुराशीष या हाय तो नहीं लगी। उसकी कुण्डली में जादू टोना या प्रेत बाधा से ग्रसित होने के ग्रह तो नहीं है।

बृहत्पाराशर होरा शास्त्र में वर्णित योगों के अलावा अन्य योग भी मोटे तौर पर देखने चाहिये। जैसे –

लग्न, सूर्य, चन्द्रमा एवं बहस्पति से केन्द्र में या चतुर्थ, अष्टम, द्वादश भाव में कोई पाप ग्रह तो नहीं है। अथवा इन ग्रहों का राहु, केतु, शनि से युति, प्रतियुति व षडाष्टक योग तो नहीं है। बृहस्पति, शुक्र षडाष्टक भी कमजोर होता है। इन योगों में व्यक्ति जादू टोने से प्रभावित होता है, पूर्वजन्म के कर्म से दूषित होता है।

बृहत्पाराशर होरा शास्त्र में पञ्चम भाव को प्रधान मानकर सन्तान, प्रतिबन्धक ग्रहों के आधार पर ही शाप योग माने हैं। परन्तु जैसे पूर्व में कहा है कि पञ्चम भाव इस जन्म के कर्म का अवलोकन कराता है। अतः इस आधार पर शाप योग का अध्ययन करना चाहिये।

आवश्यक नहीं की इन शाप योगों का प्रभाव सन्तान पर ही हो, जातक के कार्य व्यापार पर भी उसका दुष्प्रभाव पड़ सकता है।

१. मातृशाप योग

❖ पञ्चम एवं चतुर्थ भाव में पाप ग्रह तथा पञ्चमेश निर्बल या नीच राशिगत हो तो मातृशाप योग से कष्ट व सन्तान हानि जाने।

❖ पञ्चमेश, चन्द्रमा और शनि "राहु या मङ्गल" के साथ तथा नवम पञ्चम में गुरु हो तो माता की उपेक्षा से शाप को प्राप्त हो।

❖ सन्तान भाव में सूर्य चन्द्र हो तथा चतुर्थेश मङ्गल हो जो राहु या शनि के साथ हो तो मातृ शाप जाने।

❖ चन्द्रमा नीच या निर्बल होवे, पञ्चमेश छठे, आठवें, १२ वें हो, लग्न व पञ्चम में पापग्रह हो तो मातृशाप से सन्तान बाधा जाने।

❖ एकादश भाव में शनि, पञ्चम स्थान में नीच का कोई ग्रह हो तथा चन्द्रमा भी नीच का हो तो मातृशाप से सन्तान कष्ट जाने।

❖ आठवें भाव में चतुर्थेश पञ्चमेश हो तथा लग्नेश छठे हो तो मातृशाप से सन्तान चिन्ता जाने। इस योग से सम्पत्ति हानि भी होती है।

❖ लग्नेश अपनी नीच राशि में हो, पञचमेश छठे, आठवें, बारहवें हो, चन्द्रमा पाप ग्रहों से दृष्ट या युत हो तो माता शाप से सन्तान बाधा होवे। इस योग के कारण उसकी संगत सोसायटी भी गलत हो जाती है; इससे भी उसकी सम्पदा नष्ट हो जाती है।

❖ लग्न, पञ्चम, अष्टम, द्वादश में पापग्रह शनि, सूर्य, मंगल, राहु हो एवं चतुर्थेश छठे, आठवें, बारहवें हो तो धन हानि व सन्तान हानि मातृशाप से होवे।

❖ आठवें मङ्गल, राहु, बृहस्पति हो तथा शनि चन्द्र पांचवे हो तो माता के शाप या प्रेत पिशाच पीड़ा से सन्तान चिन्ता होवे।

❖ सातवें चन्द्र पापग्रह युत या दृष्ट हो, चतुर्थ, पञ्चम में शनि राहु हो तो माता के शाप से सन्तान चिन्ता होवे।

❖ छठे, आठवें स्थान का स्वामी लग्न में, चतुर्थेश निर्बल हो या बारहवें हो, चन्द्र बृहस्पति नीच के पांचवे हो तो मातृशाप से कष्ट पाये।

❖ शनि पांचवे हो, लग्नेश तथा चन्द्र के साथ पञ्चमेश लग्न में हो तो मातृ शाप से सन्तान को कष्ट होवे।

शाप निवारण

❖ सवा लक्ष गायत्री जप करें। अपनी कुलदेवी या सती की आराधना करें। रामेश्वर सेतु में स्नान, दान, पुण्य ब्राह्मण भोजन करायें। सन्तानगोपाल के

मन्त्र से दुर्गा सप्तशती का पाठ करायें। हरिवंश पुराण का पाठ करे।

२. पितृशाप योग

❖ सूर्य से केन्द्र में पाप ग्रह हो या पाप ग्रहों से षडाष्टक योग हो तो पितृशाप से कष्ट पाये।

❖ पञ्चम स्थान में सूर्य नीच राशि का हो तथा शनि के नवमांश में (१० अँश से १६ अन्श ४० कला) हो, सूर्य के आगे पीछे पापग्रह हो तो व्यक्ति आजीवन कष्ट पाता है, सन्तान चिन्ता भी रहे।

❖ पञ्चम भाव में एवं लग्न में पाप ग्रह हो, सिंह राशि में बृहस्पति हो, पञ्चमेश सूर्य के साथ अस्त हो, तो पितृशाप से सन्तान बाधा देवे।

❖ पञ्चम स्थान में सूर्य हो, पञ्चमेश के साथ पाप ग्रह हो, त्रिकोण में पाप ग्रहों का योग हो तो पितृशाप से सन्तान चिन्ता रहे।

❖ पञ्चमेश पाप ग्रहों के साथ बारहवें या दशम में हो, पांचवे सूर्य हो, उसके आगे-पीछे पाप ग्रह हो तो पितृशाप से सन्तान को कष्ट होवे।

❖ छठे, आठवें, १२ वें भाव के स्वामी सूर्य या दशमेश के साथ पञ्चम भाव में हो तो पितृशाप से सन्तान बाधा रहे।

❖ बारहवें भाव का स्वामी लग्न में, अष्टमेश पञ्चम भाव या दशम में, दशमेश पञ्चम में हो तो व्यक्ति धनी तो हो लेकिन सन्तान सुख व सहयोग मध्यम रहे।

❖ दशमेश मंगल पञ्चमेश के साथ लग्न, पञ्चम या दशम में पाप ग्रहों से युत हो, सन्तान तो हो परन्तु उसका सुख नहीं मिले।

❖ पञ्चम भाव में बृहस्पति पाप ग्रहों के साथ तथा दशमेश पञ्चमेश योग छठे, आठवें, १२ वें हो तो पितृशाप से अथवा गुरु या ब्राह्मण के शाप से सन्तान बाधा रहे।

❖ पञ्चमेश षष्ठेश योग हो तथा पांचवे बृहस्पति राहु हो तो पितृशाप से सन्तान द्वेषी होवे।

❖ लग्न में पाप ग्रह हो, लग्न और पञ्चम में सूर्य, मङ्गल, शनि हो, तो पितृशाप से सन्तान हानि जाने।

- आठवें सूर्य, पाँचवे शनि, राहु पञ्चमेश के साथ हो, तो कन्या सन्तान होवे। पुत्र का अभाव रहे।
- दशमेश पञ्चमेश का आपस में षडाष्टक हो, पापग्रहों के केन्द्र में योग हो, तो सन्तान सुख कमजोर जाने।
- लग्नेश कमजोर हो, पञ्चमेश, दशमेश पापग्रहों से दूषित हो तो पितृशाप से सन्तान चिन्ता जाने।
- पञ्चमेश, अष्टमेश, दशमेश का योग अशुभ स्थानों में हो, बारहवें पाप ग्रह हो, १२ वें स्थान का स्वामी लग्न में हो तो पितृशाप से सन्तान को अरिष्ट जाने।

शाप निवारण

- पितरों के निमित्त कर्म करें, गया श्राद्ध या नारायण बलि करायें। गोदान करें, कन्यादान का फल प्राप्त करे।

३. भ्रातृशाप योग

- पाँचवे भाव में तृतीयेश मङ्गल राहु के साथ हो, पञ्चमेश, लग्नेश अष्टम भाव में हो, तो भ्रातृशाप से सन्तान बाधा जाने।
- तृतीय स्थान में नीच का बृहस्पति (वृश्चिक लग्न में) शनि पाँचवे हो या आठवे शनि चन्द्र हो तो भ्रातृशाप से सन्तान सुख नहीं होवे।
- लग्नेश तृतीय भाव में, तृतीयेश पाप ग्रहों के साथ पाँचवे हो, तो भ्रातृशाप से सन्तान हानि जाने।
- पाँचवे मङ्गल, दशमेश पाप ग्रहों के साथ तीसरे हो तो भ्रातृशाप जानें।
- दूसरे, बारहवें तथा चौथे, छठे भाव में पापग्रह, लग्नेश पञ्चमेश छठे, आठवें, बारहवें हो तो भ्रातृशाप से सुख की हानि करे।
- पञ्चमेश अष्टम भाव में, मंगल पञ्चम भाव में, लग्नेश बारहवें हो, तो भ्रातृशाप से सन्तान चिन्ता रहे, धन हानि होवे।
- लग्न या पञ्चम भाव में मङ्गल शनि हो, पञ्चमेश अष्टम भाव में तथा तृतीयेश नवम भाव में हो तो भ्रातृशाप से सन्तान हानि हो।
- तृतीयेश राहु के साथ पांचवे तथा पञ्चमेश आठवें होतो भ्रातृशाप से सन्तान चिन्ता रहे।

❖ पाँचवे मिथुन या कन्या के शनि राहु हो, बारहवें बुध, मङ्गल हो तो भाई के शाप से सन्तान चिन्ता होवे।

❖ लग्न, तीसरे, पाँचवे घर पापग्रह हो, लग्नेश तीसरे हो तथा तृतीयेश पाँचवे हो तो भ्रातृशाप से सन्तान चिन्ता रहे।

शाप निवारण

❖ हरिवंश पुराण श्रवण, पार्थिवशिव पूजन तथा षष्ठी देवी की उपासना तथा शालिग्राम पूजन से भ्रातृ शाप दूर होवे।

४. स्त्रीशाप योग

❖ सप्तमेश छठे, आठवें, बारहवें हो, नवम भाव में शुक्र हो, सप्तम भाव या सप्तमेश का सम्बन्ध बृहस्पति से नहीं हो तो स्त्री के शाप से सन्तान बाधा योग बने।

❖ पञ्चम स्थान में शुक्र, सप्तमेश आठवें, बृहस्पति पाप ग्रह के साथ हो, सन्तान सम्बन्ध में कष्ट होता है।

❖ दूसरे, पाँचवे भाव में पाप ग्रह हो, सप्तमेश आठवें हो तो स्त्रीशाप से सन्तान चिन्ता होवे।

❖ लग्न में पापग्रह, पञ्चमेश आठवें, नवम में शुक्र, स्त्री दोष कारक है।

❖ सप्तमेश शनि के नवांश में पाँचवे, पञ्चमेश आठवें हो तो सन्तान को अरिष्ट प्राप्त होवे।

❖ सप्तमेश आठवें, कर्मेश पाँचवे तथा शुक्र पाप युक्त हो तो स्त्री के शाप से सन्तान चिन्ता रहे।

❖ पञ्चम भाव में वृष या तुला राशि में राहु चन्द्र हो, बारहवें, लग्न व द्वितीय में पापग्रह हो, तो स्त्रीशाप से सन्तान का अभाव होता है।

❖ लग्न में सूर्य राहु, सातवें शुक्र या शनि, अष्टमेश पञ्चम भाव में हो तो पत्नि के शाप से सन्तान का अभाव रहे।

❖ पाँचवे शुक्र राहु, दूसरे मङ्गल, बारहवें बृहस्पति हो तो स्त्री के शाप से सन्तान चिन्ता रहे।

❖ बृहस्पति शुक्र की पूर्ण युति हो, बृहस्पति शुक्र में षडाष्टक योग हो, दोनों

में १८० अन्श की दूरी हो तो गर्भाशय में खराबी होवे।

❖ लग्न, पञ्चम, नवम में राहु, शनि, मङ्गल तथा पञ्चमेश सप्तमेश आठवें हो तो स्त्रीशाप से सन्तान चिन्ता रहे।

शाप निवारण

❖ कन्यादान करें। भगवान विष्णु के लिये सुखशय्या, आभूषण वस्त्रादि दान करें। बछड़े सहित गाय का दान करें।

५. मातुल (मामा) शाप योग

❖ पाँचवे बुध, बृहस्पति, चन्द्र, राहु हो तथा लग्न में शनि हो तो मामा के शाप से सन्तान को कष्ट होवे।

❖ लग्नेश और पञ्चमेश शनि, मङ्गल, बुध के साथ हो तो मामा के शाप से सन्तान को अरिष्ट होवे।

❖ सातवें भाव में तथा अस्त लग्नेश बुध के साथ लग्न में, मामा के शाप से सन्तान बाधा देवे। यह योग नपुंसक योग भी बनाता है।

❖ छठे भाव का स्वामी और पञ्चमेश लग्न में पाप ग्रह के साथ हो तो मातुल शाप योग बनता है।

❖ सुखेश, व्ययेश लग्न में हो और चन्द्र, बुध, मङ्गल पञ्चम भाव में हो तो गर्भपात योग बनता है।

शाप निवारण

❖ जल मन्दिर, प्याऊ लगवायें या कुआ, तालाब बनवायें, पुल का निर्माण करवायें। बुध, मङ्गल, राहु का उपाय करें।

६. गुरु ब्राह्मण (ब्राह्मण व देव शाप) शाप योग

❖ इस योग में पितृ दोष भी माना जाता है।

❖ राहु लग्न या पञ्चम में, पञ्चमेश ६, ८, १२ भाव में हो तथा बृहस्पति नीच राशि में, बृहस्पति राहु, बृहस्पति शनि योग हो तो ब्रह्मशाप योग बनता है।

❖ बृहस्पति मङ्गल युति हो, पञ्चमेश १२ वें, शनि स्वगृही हो तो ब्रह्मशाप योग बनता है।

❖ बृहस्पति का शनि, राहु, केतु से षडाष्टक योग हो तथा बृहस्पति पर मङ्गल

की दृष्टि हो तो ब्रह्मशाप योग बनता है। सन्तान को पीड़ा होवे।

❖ पञ्चमेश, सूर्य-चन्द्र पाप ग्रहों के साथ आठवें ब्रह्मशाप योग बनाते है।

❖ शनि बृहस्पति की युति लग्न में तथा राहु नवम स्थान में हो, पञ्चमेश छठे, आठवें, बारहवें भाव में ब्रह्मशाप योग बनाता है।

❖ नवमेश नीच राशि में राहु से युत या दृष्ट हो तो ब्रह्मशाप होता है।

❖ धनु-मीन राशि का राहु, बृहस्पति नीच राशि में, पाँचवे सूर्य मङ्गल हो तो ब्रह्मशाप से सन्तान पीड़ा योग बने।

❖ लग्न में अष्टमेश हो, पञ्चमेश अष्टम में हो, भाग्येश पञ्चम में हो तो देव ब्राह्मण शाप से गर्भपात होवे।

शाप निवारण

❖ गौदान, मन्दिर प्रतिष्ठा, ब्राह्मण भोजन करायें। गायत्री मन्त्र का जप करें।

७. व्यन्तर शाप योग

नीचे लिखे योगों में यदि बृहस्पति की युति दृष्टि भी बनती है तो पितृ दोष, देवदोष आदि दोष प्राप्त होता है, यदि पाप योग अधिक बलि है तो प्रेतादि दोष व क्षेत्रपालादि व्यन्तर देव का दोष जानें।

❖ बारहवें सूर्य, ५ वें मङ्गल, शनि, बुध होवे, लग्न में पाप ग्रह हो तथा पञ्चमेश निर्बल आठवें हो तो व्यन्तर बाधा जाने।

❖ पञ्चमेश शनि आठवें, मङ्गल लग्न या तीसरे भाव में हो तो व्यन्तर दोष जाने।

❖ सातवें चन्द्र, बारहवें राहु, बृहस्पति पञ्चम भाव में सूर्य शनि के साथ हो तो व्यन्तर बाधा के कारण कई कष्ट उठाने पड़ेंगे।

❖ अष्टमेश शनि या शुक्र के साथ पञ्चम में तथा बृहस्पति आठवां सन्तान हेतु कमजोर रहे।

❖ अष्टमेश शनि या शुक्र के साथ बारहवें तथा पञ्चमेश अष्टम में हो तो व्यन्तर देवताओं के कारण सन्तान बाधा होवे।

❖ लग्न में शनि, पाँचवे राहु, आठवे सूर्य, बारहवें मङ्गल हो तो व्यन्तर बाधाओं के कारण सभी तरह के कष्ट होवे।

- ❖ पञ्चमेश व बृहस्पति नीच के हों, पापग्रह पञ्चम को देखे तो व्यन्तर बाधा होती है।
- ❖ लग्न में राहु, पाँचवे शनि तथा लग्नेश आठवें हो तो व्यन्तर शाप योग होता है।
- ❖ लग्नेश आठवें भाव में, चन्द्र शनि या राहु के साथ लग्न में, पञ्चम भाव कमजोर हो तो व्यन्तर दोष होता है।

शाप निवारण

- ❖ पितृ तर्पण, श्राद्ध व नारायण बलि कर्म करायें। अन्य उपद्रव हो तो दुर्गासप्तशती के पाठ करायें, भैरव, हनुमान की उपासना करें।

८. प्रेत बाधा दोष

- ❖ लग्न में राहु केतु के साथ बुध हो, आठवें, बारहवें में पापग्रह हो।
- ❖ चन्द्रमा की राहु केतु से युति हो तथा आठवां बुध, बारहवां बृहस्पति हो।
- ❖ चन्द्र शनि या सूर्य शनि लग्न, द्वितीय या छठे घर में हो।
- ❖ चन्द्र राहु युति हो तथा लग्न पर शनि की निगाह होवे।
- ❖ अष्टम भाव में चन्द्रमा निर्बल हो, लग्न व लग्नेश पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो।
- ❖ सप्तम भाव में बुध की राहु, केतु, शनि से युति हो, अष्टमेश व लग्नेश निर्बल हो।
- ❖ लग्न, चन्द्र या सूर्य से केन्द्र स्थानों में पाप ग्रह हो।
- ❖ मङ्गल राहु, शनि राहु आठवें हो, लग्नेश निर्बल हो।
- ❖ बारहवां बुध राहु, शनि-मङ्गल के साथ हो।
- ❖ ऐसे ग्रहों के कारण व्यक्ति जादू टोना या प्रेत बाधा के कारण परेशानी पाता है।

९. प्रेत शाप दोष

पितृ योग किसी परिवार में होवे, उनके निमित्त कर्म, श्राद्धादि नहीं होने से वे क्षुब्ध हो जाते हैं। उनकी योनि की पूर्णता नहीं होकर वे पिशाचवत् हो जाते हैं। अत: परिवार की वंशवृद्धि तथा मङ्गल कार्यों में अवरोध देते हैं।

- ❖ पाँचवे शनि सूर्य, सातवें क्षीण चन्द्र, लग्न और बारहवें भाव में राहु तथा बृहस्पति हो तो प्रेत शाप होता है।

❖ पञ्चमेश शनि आठवें, लग्न में मङ्गल, बृहस्पति, सूर्य या चन्द्रमा आठवें प्रेतबाधा योग बनाते है।

❖ पाँचवें शनि मङ्गल, बारहवां सूर्य लग्न में पाप ग्रह हो, पञ्चमेश आठवें हो तो प्रेतदोष मानते है।

❖ लग्नेश आठवे, लग्न में राहु बृहस्पति शुक्र हो, सूर्य शनि या चन्द्र शनि योग हो तो प्रेत शाप योग बने।

❖ आठवें, बारहवें राहु बुध, लग्न में पाप ग्रह हो।

❖ बृहस्पति व पञ्चमेश अपनी नीच राशियों में हो।

❖ अष्टमेश शनि शुक्र के साथ पाँचवें भाव में तथा कारक ग्रह आठवें होवे।

❖ लग्न में शनि, पाँचवें चन्द्रमा तथा सप्तमेश छठे, आठवे, बारहावें भाव में हो।

१०. सर्प शाप योग

सर्पशाप योग का अर्थ सर्प को मारने, प्रताडित करने से है। यदि किसी सर्प के जोड़े का बिछोह करा दें, तो भी सर्प शाप योग बनता है।

गड़े धन पर मृत आत्मा सर्प के रूप में रहती है, अत: यदि जबरन धन निकाला हो या धन प्राप्त करने के बाद उसआत्मा के लिये कोई पुण्य कर्म नहीं किया हो तो भी आत्मा शाप देती है।

एक ड्राईवर ट्रक जल्दी चलाते हुये अपने घर जा रहा था, क्योंकि उसकी पत्नि के सन्तान होने वाली थी। जल्दबाजी में उसने सड़क पर चल रहे साँप के जोड़े को कुचल दिया। घर पहुँच कर उसने देखा कि उसके पुत्र हुआ है। परन्तु उसके पूरे शरीर पर सर्प के समान त्वचा व निशान बने हुये थे। उसके बाद उसके जितनी भी सन्तानें उत्पन्न हुई, सबकी त्वचा सर्प के समान व पूरे शरीर पर सर्प के समान धारियाँ थी। वर्ष पर्यन्त उनकी त्वचा केंचुली के समान उतरने लगती थी। इस प्रकार सर्प की आत्मा इस जन्म में भी कर्मों का फल तत्काल दे सकती है।

धोखा, चोरी, डकैती से धन हरण किया हो, तो उस व्यक्ति की आत्मा सर्प के साये की तरह पीछा करती है। अत: नाग शान्ति प्रयोग करना चाहिये।

❖ पञ्चम भाव में राहु, उस पर मङ्गल की दृष्टि हो तो सर्पशाप से सन्तान नहीं होवे।

❖ पञ्चमेश राहु से युत हो, पञ्चम में शनि चन्द्र हो तो शाप योग होवे।

❖ लग्नेश मङ्गल से युत हो, पञ्चमेश निर्बल हो, पाँचवे राहु हो तो सर्प शाप से सन्तान चिन्ता रहे।

❖ पञ्चमेश छठे, आठवें, बारहवें हो, लग्न में राहु हो तथा बृहस्पति मङ्गल योग हो तो सर्प योग बनता है।

❖ पञ्चमेश बुध मङ्गल के नवांश मे या मङ्गल से युत हो तथा लग्न में राहु हो सर्प शाप बनाते हों।

❖ पञ्चमेश व लग्नेश निर्बल हो, पञ्चम स्थान में बैठे सूर्य चन्द्र मङ्गल, बृहस्पति, शनि पर राहु या केतु की दृष्टि हो।

❖ लग्नेश राहु के साथ हो तथा मंगल के साथ पञ्चमेश हो एवं बृहस्पति राहु योग हो तो सर्पशाप योग बनता है।

❖ पञ्चम भाव में राहु के साथ लग्नेश तथा पञ्चमेश छठे, आठवें, बारहवें में स्थित हो।

❖ पञ्चम में राहु या पञ्चमेश के साथ राहु एवं पञ्चम भाव पर लग्नेश की दृष्टि हो।

❖ पञ्चम भाव में शनि एवं पञ्चमेश के साथ राहु हो। चन्द्रमा भी निर्बल हो तो यह योग बनता है।

❖ पञ्चमेश आठवें भाव में तथा राहु सूर्य शनि के साथ हो तो भी सर्पशाप योग बने।

११. सर्पदंश योग

मनुष्य का विष से सम्बन्धित मृत्यु योग ३ तरह का होता है।

❖ कोई दवा या औषध का गलत प्रभाव होकर वह विष की तरह फैलकर मृत्युतुल्य कष्ट बना देती है।

❖ किसी शत्रु द्वारा उसको विष, जहरीली औषधी खिलाकर हानि पहुँचाने या मारने की कोशिश करना।

पुराने जमाने में विष कन्या भेजकर राजाओं को मारने की साजिस रची जाती थी।

❖ सर्प को यदि हानि पहुँचाई जाती है, जोड़े में से किसी को मार दिया जाता है तो सर्प अपना बदला अवश्य चुकाता है।

हानि पहुँचाने वाले की आकृति छाया मरने वाले सर्प के नेत्रों में रह जाती है। उसका दूसरा साथी आकृति को पहचान कर बदला लेता है। सर्प की आयु बहुत लम्बी मानी गई है एवं आत्मा को दूसरे जन्म में भी पहचानने की शक्ति रहती है। वह अपना बदला उस प्राणी से अगले जन्म में मुलाकात होने पर भी ले लेता है।

इस प्रकार की एक कहानी पूर्व में बतायी गई है। सर्पदंश या औषधि के विष प्रभाव के कुछ योग इस प्रकार है। जहरीले जानवर या पागल कुत्ते से काटे जाने के योग भी निम्न ग्रह योगों से बनते है।

- ❖ आठवें राहु हो एवं उस पर सूर्य, मङ्गल, शनि की दृष्टि हो।
- ❖ लग्न में या लग्नेश के साथ राहु शनि हो तथा शुभ ग्रह निर्बल हो।
- ❖ राहु चन्द्र लग्न में हो तथा लग्नेश आठवें हो।
- ❖ चन्द्रमा ६, ८, १२ में हो, राहु लग्न में या लग्नेश के साथ हो।
- ❖ जिस भाव में राहु हो उस भाव का स्वामी तृतीयेश के साथ हो।
- ❖ तृतीयेश राहु के साथ लग्न में तथा चन्द्रमा ६, ८, १२ में हो।
- ❖ कालसर्प योग हो, सूर्य शनि साथ हो।
- ❖ छठे भाव में मङ्गल उसके साथ शनि, राहु, केतु हो।
- ❖ छठे भाव में राहु हो तथा षष्ठेश के साथ शनि मङ्गल हो तो विष प्रभाव से मृत्यु हो।
- ❖ राहु लग्न में तथा छठें, सातावें, आठवें, पाप ग्रह हो।

१२. दुर्मरण योग

जलघात, चोट, दुर्घटना, फाँसी, जल जाने, अकस्मात् उपजे रोग से, हत्या या आत्महत्या, ऊँचाई से गिरने, भीषण प्रहार से, भारी वस्तु के नीच दबने से इत्यादि कारणों से अचानक मृत्यु हो जाती है। ऐसे लोगों की कुण्डली में खराब योग होते हैं तथा दशा अन्तरदशा भी उस समय मारकेश होती है।

- ❖ चन्द्रमा के दोनों ओर पाप ग्रह हो तो आत्मग्लानि से आत्महत्या की कोशिश करे।
- ❖ लग्न के दोनों ओर पाप ग्रह हो, आठवें चन्द्र हो, अष्टमेश कमजोर हो।

- ६, ७, ८ भाव में पाप ग्रह, चन्द्रमा १२ वें हो।
- सूर्य-शनि, राहु-केतु चतुर्थ दशम में हो।
- लग्नेश निर्बल हो, उसके साथ या आगे पीछे पाप ग्रह हो।
- लग्न और लग्नेश पर अष्टमेश एवं पाप ग्रहों की दृष्टि हो।
- दुर्बल चन्द्र पाप ग्रह युक्त ६, ८, १२ में हो।
- केन्द्र में शुभ ग्रह नहीं हो तथा २, ६, ८, १२ में पाप ग्रह हो। परन्तु यह योग धनी भी बनाता है।
- सूर्य मङ्गल शनि लग्न व लग्नेश पर कुप्रभाव ड़ालते हों।

विषकन्या योग

विषकन्या योग में जन्मी लड़की क्रोधी, चिड़चिडी होती है। यदि यह लड़की किसी से वैर कर लेवें तो उसका सर्वनाश कर देती है। पति का जीवन भी कष्टमय होता है।

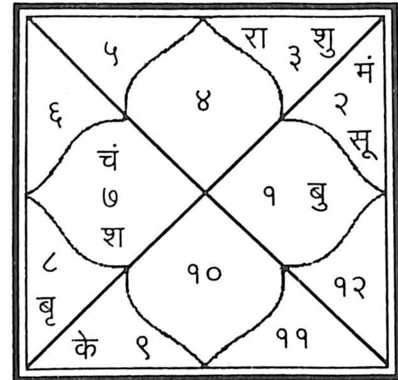
नवम, पञ्चम व सप्तम में क्रूर ग्रह ऐसे कुयोग का निर्माण करते हों जो सौभाग्य की हानि करते हों। इसके अलावा कुछ योग वार, तिथि, नक्षत्र के आधार पर भी हैं। यथा -

- राहुनक्षत्र शतभिषा, द्वितीया तिथि एवं रविवार हो।
- शतभिषा नक्षत्र, सप्तमी तिथि एवं रविवार हो।
- आश्लेषा नक्षत्र, द्वितीया तिथि एवं मङ्गलवार हो।
- आश्लेषा नक्षत्र, सप्तमी तिथि एवं मङ्गलवार हो।
- आश्लेषा नक्षत्र, द्वादशी तिथि एवं मङ्गलवार हो।
- लग्न में शनि, पञ्चम में सूर्य, नवम में मङ्गल हो।
- लग्न में शनि सूर्य, पाँचवे चन्द्र मङ्गल, नवम भाव में राहु हो।
- लग्न में शनि सूर्य, सातवें चन्द्र राहु, पञ्चम में मङ्गल हो।
- पाँचवे मङ्गल राहु, लग्न में शनि, सातवें सूर्य हो।

शापित कुण्डलियाँ

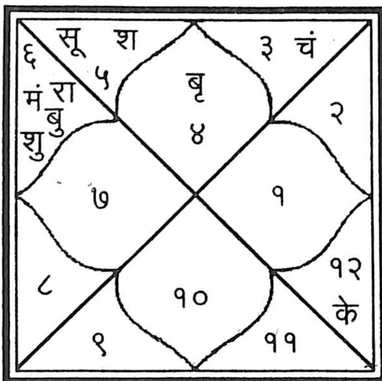
जैसा कि शाप योग के विषय में लिखा है कि लग्न, सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति से केन्द्र, ६, ८, १२ में पाप ग्रह हो तो पाप योग प्रभावित होता है। जो किसी शाप योग को दर्शाता है अथवा जादू टोना प्रेतबाधा से व्यक्ति प्रभावित रहता है। बृहस्पति शुक्र की पूर्ण युति, प्रतियुति व षडाष्टक योग भी सन्तान व गृहस्थ पक्ष को प्रभावित करती है। स्त्री के गर्भाशय में विकार देती है। धन, भाग्य, दशम, लाभ भाव, पञ्चम भाव में स्थित ग्रह से भी जो योग बनते हो वे उस भाव के फल को प्रभावित करते हैं।

उदाहरण नं १ -



इस स्त्री के जन्म से ही बच्चेदानी नहीं है। इस कुण्डली में कालसर्प योग नहीं है। पञ्चम भाव में बैठा बृहस्पति अपने से १२ वें शनि, सातवें सूर्य मङ्गल आठवें राहु होने से शापित है।

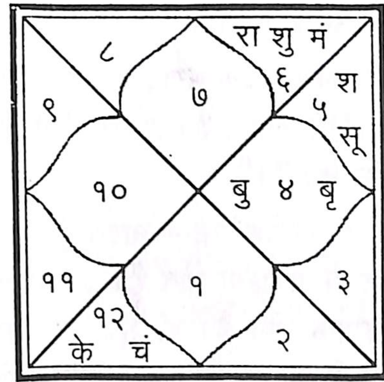
इसके साथ ही बृहस्पति शुक्र षडाष्टक योग गर्भाशय का विकार देता है। पञ्चमेश मङ्गल लाभ में, भाग्येश बृहस्पति ५ वें भाव में सन्तान सुख बनाते हैं अतः इसका विवाह एक विदूर से हुआ जिसके सन्तान थी।



उदाहरण नं २ -

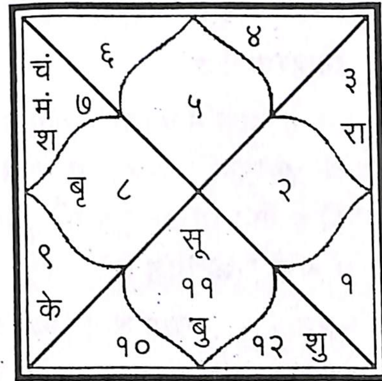
इस कुण्डली में कालसर्प योग, राहु की दृष्टि के कारण सप्तम को प्रभावित करता है। सप्तम पर बृहस्पति की नीच की दृष्टि एवं सप्तमेश शनि पूर्णास्त विवाह प्रतिबन्धक योग बना रहा है।

उदाहरण नं ३ -



इस स्त्री की कुण्डली में कालसर्प योग है। जो पति व सन्तान पक्ष को प्रभावित करता है। कुण्डली मङ्गली है, सप्तमेश मङ्गल से सातवें ग्रहण योग है। यहाँ मङ्गल शापित है। अत: अधिक आयु तक विवाह में बाधक है। मङ्गल का उपाय एवं कालसर्प दोष शान्ति करके पति प्राप्ति का प्रयोग करें।

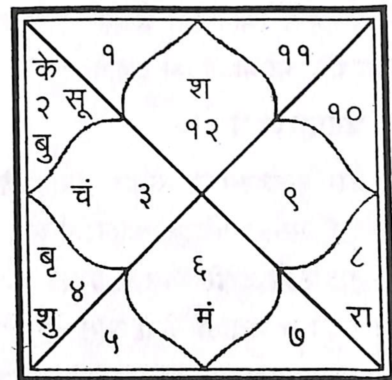
उदाहरण नं ४ -

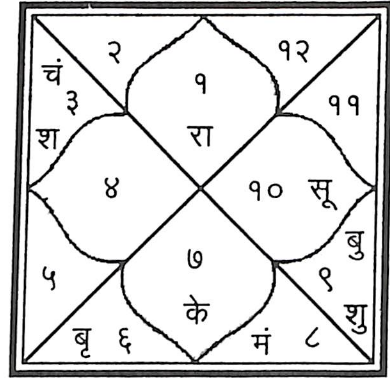


इस कुण्डली में सप्तमेश शनि उच्च का है, लग्नेश सूर्य सप्तम में है फिर भी विवाह में विलम्ब हो रहा है। पञ्चमेश से सन्तान, मङ्गल कार्य प्रेम तथा विवाहादि योग भी देखते हैं। यहाँ पञ्चमेश बृहस्पति के दोनों ओर पाप ग्रह हैं। बृहस्पति राहु का षडाष्टक योग होने से बृहस्पति शापित है, इसलिये विवाह में विलम्ब हो रहा है।

उदाहरण नं ५ -

इस कुण्डली में तृतीय भाव से नवम तक ग्रह राहु केतु के मध्य में है। लग्न में शनि है जो राहु केतु से बाहर है। अत: आन्शिक कालसर्प योग है। इस लड़के पर प्रेतादि बाधा है। यह बहुत बोलता है, भारी भरकम कार्य बिना रुके बहुत समय तक कर लेता है। जबकि शरीर दुबला पतला है। तृतीय, नवम भाव से पूर्वजों के बारे में भी जाना जाता है। अत: यहां उनसे सम्बन्धित दोष हैं। जातक के पूर्वज जादू टोना, झाड़ फूंक का कार्य करते थे। अत: उनकी किसी प्रेतात्मा का असर या शाप है। लड़के का विवाह भी नहीं हुआ, तथा आसार भी कम नजर आते हैं।



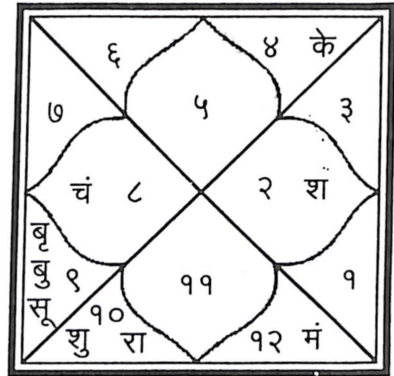


उदाहरण नं ६ –

इस कुण्डली में षडाष्टक योग अधिक हैं इसलिये शापित है। इस बच्ची के हृदय में तीन छेद हैं।

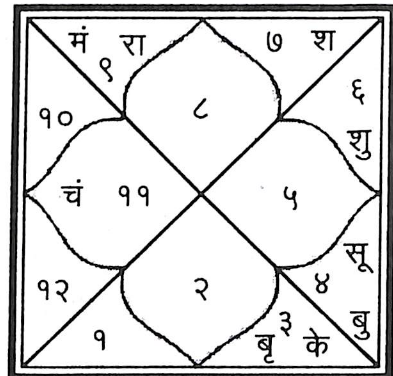
१. लग्नेश मङ्गल आठवें है। २. मंगल राहु में षडाष्टंक योग है। ३. मंगल शनि षडाष्टक योग है। ४. सूर्य शनि षडाष्टक योग है। ५. बृहस्पति राहु षडाष्टक योग है। ६. बृहस्पति मङ्गल सूर्य से सम्बन्धित षडाष्टक योग पूर्वजों अर्थात् पितृशाप योग बनाता है।

उदाहरण नं ७ –



इस कुण्डली में कालसर्प योग नहीं है। पञ्चमेश बृहस्पति, लाभेश, लग्नेश के साथ स्वगृही है फिर भी ३६ वर्ष की आयु हाने पर भी बच्चे जैसी बुद्धि है।

कारण – १. चन्द्रमा शून्य अन्श का है। २. शुक्र शून्य अन्श का है। ३. लग्नेश सूर्य से शनि का षडाष्टक योग है। ४. लग्नेश सूर्य का केतु से षडाष्टक योग है। ५. बुद्धि स्थान से केतु व शनि के षडाष्टक योग, पञ्चम भाव को प्रभावित करते है। अत: बौद्धिक विकास नहीं हुआ। बृहस्पति सूर्य को षडाष्टक योगों से प्रताडना मिल रही है अत: पितृशाप योग बनता है। क्योंकि सूर्य पूर्वज तथा बृहस्पति आत्माओं को दर्शाता है।



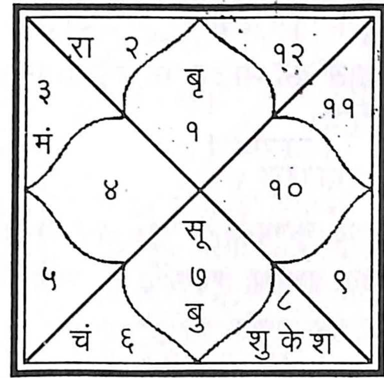
उदाहरण नं ८ –

इस कुण्डली में चन्द्रमा, राहु-केतु से बाहर है अत: आन्शिक कालसर्प योग बनता है। अष्टम से दूसरे भाव तक का यह योग धन प्राप्ति व बर्बादी दोनों योग देता है।

१. बृहस्पति आठवें केतु के साथ है। २.

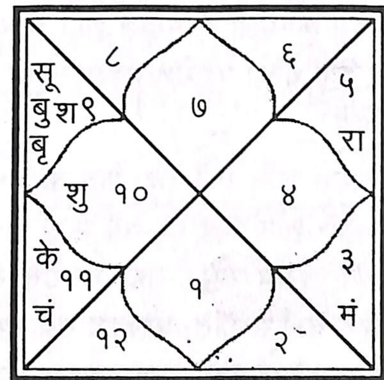
बृहस्पति से केन्द्र व त्रिकोण में मङ्गल राहु एवं शनि है जो दुरात्माओं का असर जादू टोना से प्रभावित करता है। कालसर्प योग के कारण पहले धन घर का फल दिया तो देश में बड़ा नाम कमाया। मध्यायु बाद कालसर्प के अष्टम भाव का फल प्राप्त होने लगा। बुध में केतु-शुक्र अन्तर में बर्बादी से सड़क पर आ गया। टोनों टोटके निवारण हेतु बगलामुखी, प्रत्यङ्गिरा, शरभराज, भैरव इत्यादि के बहुत लम्बे समय प्रयोग कराये, तो भी सफलता प्राप्त नहीं हुई। इस कुण्डली में बृहस्पति कमजोर होने से ब्रह्मशाप योग बनता है।

उदाहरण नं ९ -



इस कुण्डली में धन भाव से अष्टम भाव तक ग्रह राहु केतु के मध्य में हैं। मात्र बृहस्पति बाहर है। अत: आन्शिक कालसर्प योग बनता है। धन भाव से यह योग प्रारंभ होता है। अत: पहले धन प्राप्ति होवे, तो उत्तरार्ध जीवन में अष्टम भाव का फल मिलने से बर्बादी होगी। केन्द्र में नीच का सूर्य। बृहस्पति से आठवें शनि केतु। मङ्गल शनि षडाष्टक योग से, बृहस्पति शनि योग से शापित हुई। जातक बांग्लादेश से राजस्थान नोट बोरों में भर कर लाया था। परन्तु मध्यायु बाद सहयोगियों व संबन्धियों ने धोखा दिया। टोने टोटके से जातक का अस्तित्त्व समाप्त हो गया।

उदाहरण नं १० -



इस कुण्डली में मङ्गल के अलावा सभी ग्रह राहु केतु के मध्य में हैं। अत: आन्शिक कालसर्प योग बनता है। कुण्डली में तृतीय, पञ्चम, नवम घर पाप योग व पाप दृष्टि से प्रभावित हैं। पञ्चम व नवम भाव तन्त्र मन्त्र के होते हैं। इस पर शनि कीदृष्टि होने से व्यक्ति जादू टोना प्रेतबाधा से ग्रसित होता है। पूर्व जन्म के शाप योग भी हैं। चन्द्र केतु, सूर्य शनि योग से वाणी से कर्कश, परिवार से निष्कासित होवे। रोजगार विहीन व नशीली वस्तुओं का सेवन करने से व्यक्ति का विवाह नहींहो सका। कुछ विजातीय गुप्त सम्बन्ध हैं।

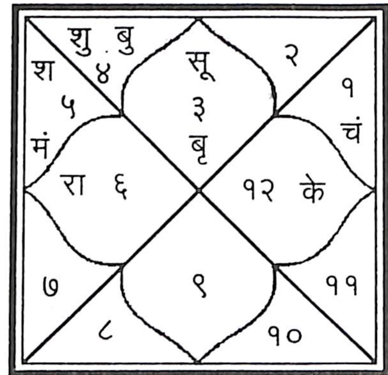
राहु केतु के मध्य में स्थित ग्रह का दुष्प्रभाव

कोई ग्रह अच्छे स्थान में स्थित हो या अच्छे स्थान का स्वामी हो परन्तु वह राहु केतु के मध्य स्थित हो, तो उसकी दशा खराब जायेगी। **वह मेरा अनुभव है, अन्य विद्वानों को भी इस पर अनुसन्धान करना चाहिये।**

उदाहरण १ -

इस कुण्डली में सूर्य लग्न में तृतीयेश होकर दशमेश बृहस्पति के साथ बैठकर शुभ योग बनाता है।

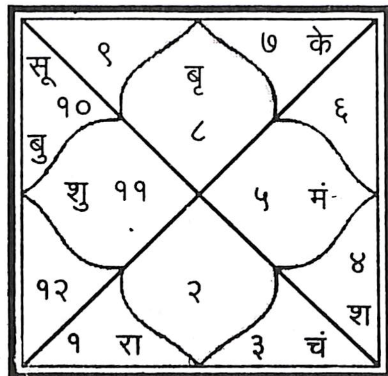
सूर्य राहु-केतु के मध्य में हैं। सूर्य महादशा में मानसिक अशान्ति, राजकीय विवाद तथा प्रेत बाधा का प्रकोप रहा।



उदाहरण २ -

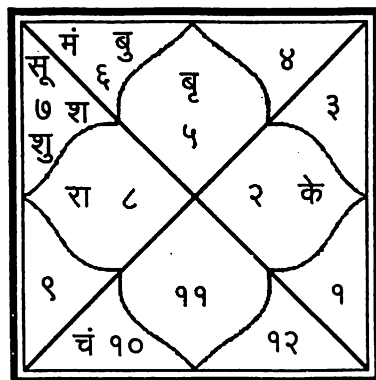
इस कुण्डली में सुखेश शनि भाग्य स्थान में है। उस पर कर्मेश सूर्य, लाभेश बुध तथा धनेश पञ्चमेश बृहस्पति की उच्च की दृष्टि है अतः शनि दशा श्रेष्ठ जानी चाहिये।

परन्तु शनि यहाँ राहु-केतु के मध्य में है, अतः शनि दशा १९ वर्ष में से १७ वर्ष विशेष खराब रही। जहाँ सम्पत्ति बननी चाहिये वहाँ सम्पत्ति, जायदाद सब नष्ट हुई, व्यापार चौपट रहा, कर्जा, कलह, विवाद मुकद्दमेबाजी, धोखा सभी कुफल रहे। प्रेतबाधा के कारण भी स्वयं व माता को कष्ट उठाने पड़े।



इस कुण्डली में राहु व केतु के राशि स्वामी (कर्मसाक्षी ग्रह) मङ्गल शुक्र केन्द्र में शुभ स्थान में है, आपस में एक दूसरे को देखते हैं। ये ग्रह इस कुण्डली में राजयोग बनाते हैं। शुक्र दशा सप्तमेश व्ययेश होने से कष्ट कारक रहनी चाहिये, उसके स्थान पर शुक्र दशा में गाड़ी, बंगला, धन, ऐशवर्य एवं प्रसिद्धि प्राप्त हुई।

उदाहरण ३ -

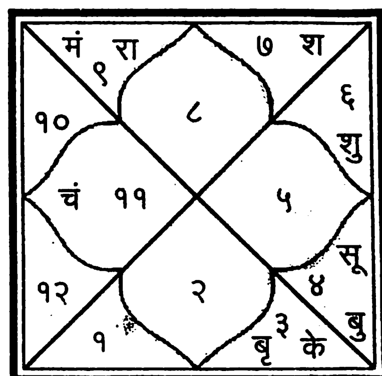


इस जातक के आन्शिक कालसर्प योग है। कमर में विकार होने से विवाह नहीं हुआ। राहु महादशा में कोई कष्ट विवाद नहीं हुआ। बृहस्पति राहु-केतु के मध्य में स्थित हैं इसलिये बृहस्पति की महादशा में मान सम्मान व धन की हानि हुई। जातक डरा हुआ रहता, अकेले बाहर नहीं निकलता। प्रेत बाधा के करण भी कष्ट रहा। अन्तिम दिनों में शरीर बिल्कुल कृष्ण वर्ण व कमजोर हो गया जैसे कोई ऊपरी बाधा उसके प्राणों का हरण करना चाहती हो। जबकि लग्न में बृहस्पति के कारण प्रेतात्मा द्वारा मृत्यु नहीं होनी चाहिये।

उदाहरण ४ -

जातक के आन्शिक कालसर्प योग है। यदि धन भाव का फल पहले प्राप्त हो जाये तो अष्टम भाव जनित कुफल बाद में भोगना पड़ेगा।

जातक का कार्य व्यववसाय देश में अच्छी तरक्की पर था। मान सम्मान भी विशेष बना। मध्यायु से धोखा व नुकसान होने लगा।

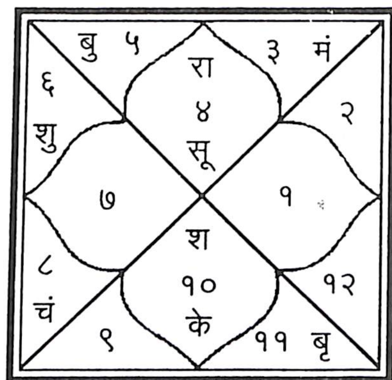


बुध की महादशा में शुक्र का अन्तर (अष्टमेश में व्ययेश का अन्तर) वैसे खराब रहना चाहिये, कुछ राहत मिलनी भी चाहिये। यहाँ शुक्र राहु-केतु के मध्य में है, जो भयङ्कर खराब गया। सब सम्पत्ति नष्ट हुई, धोखा हुआ, मुकद्दमेबाजी बिना वजह बढ़ी। सुप्रीम कोर्ट तक जाने पर भी विजय नहीं हुयी।

जबकि बुध में केतु में नीचे के कोर्ट से विजय हुई। शुक्रान्तर में हाईकोर्ट, सुप्रीम कोर्ट ने जातक के अनुकूल फैंसला नहीं दिया। इस दौरान इस व्यक्ति पर टोने टोटके आदि का दुष्प्रभाव भी रहा।

अपने बचाव व विजय प्रापति के लिये १ वर्ष तक ब्राह्मणों से अनुष्ठान करवाये। ७ लाख बगलामुखी, ३ लाख प्रत्यङ्गिरा मन्त्र, २५००० पक्षिराज स्तोत्र पाठ, ११००० कालभैरव के स्तोत्र पाठ, २ लक्ष कालरात्रि जप, ५०० दुर्गासप्तशती के संपुटित पाठ कराने पर भी लाभ प्राप्त नहीं हुआ। इसके अलावा लक्ष्मी प्राप्ति के भी कई प्रयोग कराये। शुक्र दशा का ऐसा दुष्प्रभाव रहा कि अनुष्ठानों का कोई शुभ परिणाम सामने नहीं आया।

उदाहरण ५ -

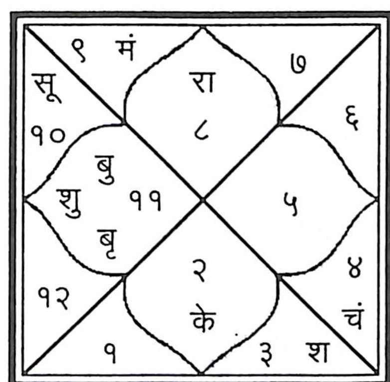


इस जातक की कुण्डली में कालसर्प योग नहीं है। धनेश सूर्य राहु के साथ है व शनि से दृष्ट है। धनेश की दशा कष्ट कारक होती है। परन्तु सूर्य दशा में धन, वैभव, जायदाद, सम्मान प्राप्त किया। सूर्य के आगे पिछे ग्रह हैं अतः सूर्य ने उन्नति प्रदान की। चन्द्रमा, राहु-केतु के मध्य में न होकर थोड़ा आगे बढ़ गया है। चन्द्रमा राहु-केतु के मध्यस्थान से पीड़ित न होकर, राहु की दृष्टि से पीड़ित है। इन दोनों योगों का फल एक ही है। इधर चन्द्रमा नीच का है, चन्द्रमा की राशि में ग्रहण योग है। अतः चन्द्रमा की स्थिति कमजोर है। चन्द्रमहादशा अपने लग्नेश होने का शुभ फल नहीं दे सकी, उसके स्थान पर चन्द्र महादशा से स्थिति विशेष कमजोर होनी शुरु हो गई।

उदाहरण ६ -

राहु केतु के मध्य में बुध, बृहस्पति, शुक्र है। शुक्र के साथ अष्टमेश बुध, द्वितीयेश, बृहस्पति होने से तथा शुक्र सप्तमेश व्ययेश होने से, यह दशा कष्ट कारक रहनी चाहिये। परन्तु लाभेश बुध, पञ्चमेश बृहस्पति का शुभ फल भी मिलना चाहिये। शुक्र विशेष रूप से राहु-केतु के मध्य में है अतः शुक्र की महादशा प्रारम्भ से बहुत ही खराब फलदेने लगी। टोना टोटका बाधा, चलने फिरने व हाथ

से काम नहीं करने की स्थिति पैदा हो गई। लाखों रुपया खर्च करने पर भी लाभ नहीं हो सका। आँखों में विशेष विकार आने से नेत्र ज्योति समाप्ति की ओर बढ़ने लगी। डॉक्टरी जाँच में कोई खराबी पकड़ में नहीं आती। विवाह की कल्पना करना व्यर्थ था। देवआराधना से शान्ति मिली। शुक्र में राहु में मकान, जायदाद, विवाह योग बने। यहाँ राहु ने लग्नेश का फल दिया। शुक्र में बृहस्पति में पुत्र प्राप्ति भी हुई।



कालसर्प शान्ति प्रयोग कब करवायें

कुण्डली में कालसर्प योग होता है, परन्तु कभी अशुभ, तो कभी शुभ फल भी यह योग देता है। यदि यह योग प्रारम्भ में धनी बनाता है, तो मध्यायु बाद बर्बादी करने लग जाता है। अत: बर्बादी के लक्षण प्रकट होने पर शीघ्र ही शान्ति उपाय करायें। यह नहीं सोचे कि मुझे तो पहले बहुत लाभ मिला है, कालसर्प की चर्चा भ्रान्ति एवं मिथ्या है।

राहु शनि षडाष्टक हों, शनि राहु युति, प्रतियुति हो तो राहु की महादशा में कुफल मिलने लग जाता है। राहु में शनि या शनि में राहु दशा में व्यक्ति जादू टोने, प्रेतबाधा से भी दु:ख पाता है, या उसके साथ धोखा होता है। अत: राहु शान्ति अवश्य करायें।

स्वप्न फल के अनुसार स्वप्न में सर्प दिखे, काली वस्तुऐं दिखे, डरावने स्वप्न दिखे, रात्रि में बिस्तर गीला होता हो, उन दिनों कालसर्पदोष शान्ति अवश्य करायें।

कालसर्प दोष शान्ति हेतु शुभ योगों का विचार करें। यथा -

- ❖ रवि, मङ्गल को छोड़कर अन्य वारों में करें। बृहस्पतिवार साधारण है। "**राहु दोषं बुधो हन्यात्**" के अनुसार बुधवार श्रेष्ठ है। शनि, शुक्र, राहु के मित्र होने से शुभ है।

  पुराणों के अनुसार बुध के पौत्र का विवाह राहु की कन्या से हुआ। बाद में बुध के वंशजों में से ययाति का विवाह शुक्र की कन्या से हुआ। अत: बुध, शुक्र, राहु आपस में समधि है। इसलिये राहु की शान्ति में बुधवार, शुक्रवार शुभ माना गया है।
- ❖ बुधवारी या शनिवारी अमावस्या श्रेष्ठ है।
- ❖ भद्रा, वैधृति योग, व्यतिपात योग, क्षयतिथी, वृद्धि तिथि में पहली तिथि, मलमास, अधिकमास व क्षयमास का त्याग करें।
- ❖ प्रतिपदा, पञ्चमी, सप्तमी, नवमी, पूर्णिमा व अमावस्या तिथि शुभ है।
- ❖ कुछ आचार्यों ने ग्रहण का दिन भी शुभ माना है। परन्तु इसमें सिर्फ नागपूजा, विसर्जन शुभ है।
- ❖ धनिष्ठा नक्षत्र सहित द्विपुष्कर योग मना है।

- पञ्चक, पुनर्वसु, कृत्तिका, उत्तराषाढा, पूर्वाषाढा नक्षत्र शुभ नहीं है।
- भरणी, आश्लेषा, ज्येष्ठा, अश्विनी, मघा, मूल, आर्द्रा, स्वाति शतभिषा एवं पुष्य नक्षत्र शुभ है।
- जिन दिनों गोचर में कालसर्प योग चल रहा हो उन दिनों राहु जिस नक्षत्र में हो, वह नक्षत्र भी शुभ रहता है।
- नाग पञ्चमी का दिन शुभ रहे।
- नाग पञ्चमी या अमावस को आश्लेषा, आर्द्रा, शतभिषा या स्वाति नक्षत्र योग हो तो श्रेष्ठ योग बनता है।
- अमावस बुधवार के साथ आश्लेषा नक्षत्र उत्तम रहे।
- व्यक्ति का चन्द्रबल देखना चाहिये, कृष्णपक्ष में चन्द्रबल नही मिले तो ताराबल अवश्य शुद्ध देखें।
- सामूहिक पूजन सङ्कल्प हो, तीर्थ प्रसङ्ग हो तो चन्द्रबल देखने की आश्यकता नहीं है।
- पत्नि गर्भवती हो तो ५ वें मास तक शान्ति प्रयोग करा सकते हैं, बाद में नहीं करायें।
- विवाहादि मङ्गल कार्य घर में होने पर एक वर्ष तक नारायणबलि, नागबलि, कालसर्प शान्ति नहीं करें। यदि विवाह बाद संवत् बदलता हो तो ६ महिने पश्चात् भी करा सकते हैं।
- सर्प को बहते जल में छोड़ने का विधान कहा गश है। यदि वहां नजदीक नदी नहीं है, व्यक्ति गरीब है तो किसी कृषी फार्म पर बहते जल में भी विसर्जन कर सकता है।
- आजकल पुष्कर जैसे स्थिर जल तीर्थ में भी विसर्जन कराने का कार्य विद्वान करने लग गये हैं।
- अन्य मत से जिस दिन शिव पर ताम्बे का सर्प चढ़ायें उस दिन प्रदोष या शिव वास मिले तो उत्तम रहे। उसी दिन शिव की पूजा अभिषेक करें।
- एक मत यह है कि सूर्योदय से पूर्व सर्प को सपेरे के बन्धन से मुक्त कराये तो भी सर्प योग दोष दूर होता है।

कालसर्प दोष शान्ति कराने के मुख्य स्थान

शिव सानिध्य में कालसर्प दोष शान्ति कर्म शीघ्र सफल होता है। शिवार्चन, रुद्राभिषेक, पार्थिवशिव पूजा से शिव कृपा द्वारा ग्रह दोष शान्त होता है।

इस कर्म की शान्ति हेतु भारतवर्ष में कुछ प्रधान सिद्ध स्थान है जहाँ इस दोष की शान्ति शीघ्र होती है। परन्तु अक्सर लोग एक बार प्रयोग कराने पर जिन्दगी भर दोष मुक्ति की कल्पना कर लेते हैं। जब जब राहु-केतु की महादशा हो, उनके अन्तर प्रत्यन्तर कष्ट कारक हो, उस समय कुछ न कुछ शान्ति कर्म अवश्य कराना चाहिये।

कालसर्प दोष का अलग अलग समय पर अलग अलग ढंग से प्रभाव पड़ता है। जैसे किसी के पाँचवे घर से कालसर्प योग है।

१. बचपन में पढ़ाई में अवरोध देगा।

२. युवावस्था में मङ्गल कार्य, यानि विवाह में विलम्ब करेगा।

३. विवाह के बाद में सन्तान पक्ष में चिन्ता पीड़ा देगा

४. व्यापार में मित्रता, व्यवहार, स्वामी मैत्री नहीं रहने देवें।

अत: अगल अलग परिस्थितियों के अनुसार समय समय पर शान्ति कर्म कराना चाहिये।

भारत में कालसर्प दोष शान्ति कर्म के मुख्य स्थान निम्न है -

इन स्थानों पर पूजा थोड़ी देर की ही होती है। परन्तु स्थान का महत्व विशेष है।

१. श्रीलूत कालहस्तीश्वर

दक्षिण भारत में तिरुपति बालाजी स्थान से ५० किमी पर कालहस्ती शिव मन्दिर है। यहाँ शिव के एकादश रुद्रावतारों में से स्वम्भू शिवलिङ्ग स्थित है। कालसर्प दोष शान्ति की सामग्री यहीं मिल जाती है। पूजा करीब एक घण्टे की ही होती है। परन्तु स्थान का महत्व अधिक है।

२. त्र्यम्बकेश्वर (नासिक)

त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग पर अभिषेक, पूजा, अर्चना से कालसर्प दोष की शान्ति होती है। नाग नागिन का जोड़ा चाँदी के बनाकर उन्हें जल मे प्रवाहित करें तो पितृदोषादि की भी शान्ति होती है।

३. प्रयाग सङ्गम

इलाहाबाद सङ्गम पर कालसर्प, पितृदोष शान्ति कर्म हेतु नाग नागिन पूजा प्रतिष्ठा कर, दूध के साथ जल में प्रवाहित करें।

४. त्रियुगी नारायण मन्दिर

उत्तराञ्चल में केदारनाथ से १५ किमी दूर यह मन्दिर है। यहाँ स्वर्ण, चाँदी या ताम्बे के अष्टनाग जोड़े अर्पित करने से कालसर्प दोष दूर होता है।

यहाँ के लिये कहावत है कि शिव पार्वति विवाह इसी स्थान पर हुआ था। विवाहादि की धूनी आज भी जल रही है, उसमें चन्दन की लकड़ी, गूलर, बेल और पीपल की लकड़ी डालने से कालसर्प दोष दूर होता है।

५. त्रिनागेश्वर

दक्षिण भारत में तंजोर जिले में त्रिनागेश्वर वासुकिनाथ मन्दिर में राहु काल में राहु का अभिषेक करने का विधान है। यहाँ प्रतिदिन राहुकाल में अभिषेक किया जाता है। इससे भी कालसर्प दोष दूर होता है।

६. बद्रीनाथ धाम

यहाँ भी कालसर्प व पितृदोष शान्ति हेतु विधि विधान से पूजा की जाती है। यहाँ ब्रह्मकपाल नामक स्थान पर शिवजी द्वारा ब्रह्मा का पाँचवां मस्तक गिराया गया था। शिवजी ने ब्रह्म कपाल को गले में धारण कर लिया था। इसी स्थान पर उस ब्रह्ममुण्ड से मुक्ति पाई थी। इस कारण यह स्थान ब्रह्महत्या, ब्रह्मशाप, कालसर्पादि दोषों से मुक्ति दिलाता है।

७. उज्जैन

उज्जैन में क्षिप्रा नदी के किनारे नवग्रह मन्दिर है, यहां ग्रह पूजा कराकर शिव पूजन करने से दोष से मुक्ति मिलती है। पार्थिवशिव पूजा कराते हैं। महाकालेश्वर की कृपा प्राप्त होती है।

८. ओंकारेश्वर

यहाँ भी शिव का सिद्ध पीठ स्थान है। नर्मदा नदी बहतीहै। यहाँ के पण्डित अधिकांशतः १००० पार्थिव शिवलिङ्ग पूजन, अभिषेक कराते हैं, उससे भी कालसर्प दोष की शान्ति प्राप्त होती है।

९. नाग पट्टनम्

दक्षिण भारत के नागपट्टनम् जिले में एलनगुढ़ी नामक स्थान पर भगवान शिव व बृहस्पति ग्रह का मन्दिर है।

प्राचीन मान्यता है कि समुद्र मन्थन से निकले हलाहल विष का पान इसी स्थान पर भगवान शिव ने किया था। इस क्षेत्र के एक किमी तक विष का कोई प्रभाव नहीं होता है। यहाँ पर कोई भी व्यक्ति कितना ही तीखा जहर पीले तो वह मरता नहीं है।

इस मन्दिर की २४ परिक्रमा करते समय प्रत्येक परिक्रमा में एक दीपक अर्थात् २४ दीपक जलाने से राहु एवं बृहस्पति की कृपा से व्यक्ति दोषमुक्त होकर सुखी हो जाता है।

१०. नाग लिङ्गेश्वर

उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर में प्राचीन नागलिङ्गेश्वर शिव मन्दिर में लगभग एक हजार छोटे बड़े प्राकृतिक शिवलिङ्ग हैं।

यहाँ पर ऐसी मान्यता है कि लिङ्गेश्वर महादेव पर स्वर्ण, चाँदी, ताम्बा या अष्ट धातु के नाग चढाने से कामना अवश्य पूर्ण होती है। इस मन्दिर का जीर्णोद्धार भगवान परशुराम ने करवाया था।

११. वरसिद्धि विनयाक

दक्षिण भारत के चित्तूर जिले में कानिपाकम् ग्राम में गणेश मन्दिर है। यहाँ मणिकण्ठेश्वर स्वामी नाम से एक प्राचीन स्वयम्भू शिवलिङ्ग है, जिसे सती के समय का माना जाता है। यहाँ एक मणिधारी सर्प है जो समय समय पर भक्तों को दिखाई भी देता है।

१२. नीलकण्ठ मन्दिर

उत्तर प्रदेश के इटावा शहर की दक्षिणी पूर्वी सीमा पर सौ वर्ष से अधिक का प्राचीन शिव मन्दिर है। दीपावली से एक दिन पहले (नरक चौदस) के दिन जब भगवान नीलकण्ठ का शृङ्गार किया जाता है तो एक सर्प आकर शिवलिङ्ग के

पास विराजमान हो जाता है। श्रावण में सोमवार पर विशेष पूजा व भीड़ होती है। यहाँ पास में टीले पर **अमुनिया** नाम का वृक्ष है। जो दुर्लभ है, तथा सौ वर्ष प्राचीन है। इस पेड़ पर एक विशेष प्रकार का फूल खिलता है। जिसकी आकृति ठीक शिवलिङ्ग के ऊपर चढ़े हुये सर्प की होती है।

१३. यमुना तट

यमुना को यम की बहन बताया है। अतः उसकी प्रसन्नता से कालसर्प से मुक्ति मिलती है। वासुदेवजी कृष्ण को लकर गोकुल आये, तब यमुना में श्रीकृष्ण के ऊपर सर्प ने अपना फन फैलाकर रक्षा की थी। अतः नरक चतुर्दशी व यम द्वितीया को नाग पूजा व दीपदान करने से सङ्कट मुक्ति होती है। कालीदह में नाग पूजा करायें, इससे कालसर्प दोष दूर होता है।

१४. नर्मदा तट

नर्मदा नदी के अशीर्वाद से सर्प भय नहीं रहता। यहाँ नाग पूजा कर सर्प जल मे प्रवाहित करें। दीपदान करें। पश्चात् नर्मदा से प्रार्थना करें -

नर्मदायै नमः प्रातर्नर्मदायै नमो निशि ।
नमोऽस्तु नर्मदे तुभ्यं त्राहिमां विष सर्पतः ॥

१५. वैदहीश्वरम् कॉइल

दक्षिण भारत के नागपट्टनम्जिले में नागगणेश मन्दिर है। प्रतिदिन राहुकाल में विशेष पूजा होती है। यहां से १५ किमी दूर **कुन्दनकुड़ी** में नागों की विशेष पूजा होती है। वहां कई जहरीले सर्प विचरण करते हैं। परन्तु वे किसी को काटते नहीं।

१६. नागदा

मध्यप्रदेश के नागदा शहर में महाराज जनमेजय ने सर्प नाश हेतु यज्ञ किया था। इसलिये यहाँ कालसर्प मुक्ति हेतु कार्य किया जा सकता है। इसी कारण इस स्थान का मूल नाम ''नागदाह'' है।

१७. पञ्चतत्त्व शिवलिङ्ग

द्वादश शिवलिङ्गों की भाँति दक्षिण भारत में पञ्चतत्त्व शिवलिङ्गों का विशेष महत्व है। यहाँ भी कालसर्प दोष की शान्ति की जा सकती है।

१. पृथ्वीतत्त्व शिवलिङ्ग – काञ्चिकाम कोट्टि के निकट एक आम के पेड़ के नीचे अवतरित होने के कारण इस शिवलिङ्ग का नाम एकाम्रनाथ पड़ा। यह आम का पेड़ हजारों वर्ष पुराना है। इस पेड़ की विशेषता यह है कि इस पेड़ से स्वतः चारों दिशाओं में गिरने वाले आम्रफलों का स्वाद अलग अलग होता है।

२. जलतत्त्व शिवलिङ्ग – तिरुच्चि के निकट स्थित यह शिवमन्दिर **जम्बुकेश्वर** के नाम से प्रसिद्ध है। यहां पार्वतीजी ने कठोर तपस्या करके शिव को प्राप्त किया था। जलक्षेत्र में श्वेत जामुन के पेड़ के नीचे अवतरित होने से **जम्बूकेश्वर शिव** नाम प्रसिद्ध हुआ। मन्दिर के शिखर की ऊँचाई २१७ फुट है। यहां विश्वामित्र, पतञ्जलि, अगस्त्य तथा रमण महर्षि ने तपस्या की थी। देवी रूप में पुजारी, स्त्री का रूप धारण कर मध्याह्न में पूजा करते हैं।

३. वायुतत्त्व शिवलिङ्ग – श्रीलूता कालहस्तीश्वर जो तिरुपति बालाजी से ५० किमी दूरी पर है। यहाँ वायुतत्त्व प्रधान शिवलिङ्ग का प्रादुर्भाव हुआ। जहाँ शिव ने लूता (मकड़ी) काल (सर्प) हस्ती (हाथी) को मुक्ति प्रदान की थी।

लिङ्ग का सूक्ष्म निरीक्षण करने पर पीछे निचले भाग में मकड़ी, बीच में सर्प, व निचले भाग पर हाथी दाँत का आकार स्पष्ट रूप से दिखाई देते है।

इस शिवलिङ्ग का स्पर्श नहीं करते हैं, पुजारी भी बिना स्पर्श के ही पूजा करते हैं। स्पर्श करने पर अनिष्ट की सम्भावना रहती है।

यहाँ राहु दोष, पितृ दोष, कालसर्प दोष की शान्ति हेतु अभिषेक किया जाता है। निःसन्तान को सन्तान प्राप्ति होती है। यहाँ सूर्य, चन्द्र, लक्ष्मी, विष्णु, सुदर्शनचक्र, अगस्त्य,रावण, राजा नहुष एवं अनेक देव दानवों ने तपस्या की। भगवान राम ने शिव के कहने पर मङ्गल की प्रसन्नता हेतु कार्तिकेय की आराधना की थी।

४. आकाशतत्त्व शिवलिङ्ग – चैन्नई से २०० किमी दूर चिदम्बरम् स्थान पर भगवान शिव आकाश तत्त्व शिवलिङ्ग के रूप में प्रकट हुये। शेषनाग तथा शेषनाग अवतार पतञ्जलि की जन्मभूमि भी यही स्थान है।

५. अग्नितत्त्व शिवलिङ्ग – इस बारे में जानकारी लुप्त प्रायः है।

लाल किताब एवं कालसर्प दोष का समाधान

भारतीय संस्कृति में कहा गया है कि पूर्वजों के ऋण का भुगतान उनके वंशज करते हैं। उसी तरह पूर्वजों द्वारा अन्याय पूर्वक अर्जित धन, शाप, दुराशीष का फल भी अगली पीढी को भुगतना पड़ता है।

अधिकांशतः ऐसा देखा गया है कि परिवार में मुखिया के कालसर्प योग होने पर उसकी सन्तानों में भी यह योग पाया जाता है। अतः पूरा परिवार ही पूर्व शापदोष से शापित होता है। उसकी शान्ति के लिये श्राद्ध, तर्पण, नागबलि, नारायणबलि कर्म, पार्थिवशिव पूजन इत्यादि कई कर्म कराये जाते हैं।

पितृशाप, सर्पशाप व अन्य शाप योग को देखकर उनका निवारण करें। कई पीढ़ीयों में कन्या अधिक होती है तथा पुत्र एक ही होता है यह भी एक वंशानुगत शाप है।

अकाल मृत्यु, एकाएक व्यापार मे हानि, असंभसव बिमारियाँ, जादू टोने का प्रभाव किसी शाप योग के कारण या कुण्डली में पड़े कुयागों के कारण होता है।

पूर्वेजों ने शुभ कर्म किये हो तो तीन पीढी तक उनके पुण्य का फल अवश्य मिलता है। जैसे श्वांस, दमा, मधुमेह, रक्तचाप, हदयरोग इत्यादि वंशानुगत हैं, वैसे ही पाप पुण्य का फल वंशजों को भी प्राप्त होता है। सूर्य, बृहपति वंश पुरुष जनित दोष बताते हैं एवं शुक्र, शनि, चन्द्र स्त्री जनित दोष बताते हैं। मङ्गल केतु कुटुम्बिक बन्धुजन एवं पड़ौस की आत्मा का दोष बताते हैं। बुध ऊपरी बाधा, वायु विकार को दर्शाता है।

बृहस्पति, सूर्य के निर्बल होन पर देवदोष, ब्रह्मशाप, पितर सम्बन्धी परेशानी प्राप्त होती है। हृदय, मधुमेह, रक्तचाप अन्य व्याधि इनके कमजोर होने पर होती है।

शनि के कमजोर होने पर पैर, रीढ की हड्डी, कमरदर्द, पैरों में सुन्नता आदि परेशानी रहती है। मङ्गल कमजोर होने पर ऋण, रोग, शत्रुबाधा, अपमान, बन्धु विरोध, हाथ की पीड़ा एवं चोट दुर्घटना योग बनते हैं।

चन्द्र शुक्र कमजोर होने पर स्त्री शाप, उदर विकार, सर्दी जुकाम, गुप्तरोग, सिरदर्द, इत्यादि बाधायें रहे।

बुध के कमजोर होने पर मानसिक तनाव, बारीक मांसपेशियों में कमजोरी, कंपन, सुन्नता, पेट, गुर्दा, प्रेतबाधा, बुद्धि की कमजोरी, वाक्‌दोष आदि बाधायें देता है।

राहु केतु के दूषित होने पर, शनि के दूषित होने पर पूर्वजन्म में अन्याय पूर्वक किये गये कर्मों से हानि परेशानी होवे। प्रेत बाधा, अचानक धन हानि व चोट दुर्घटना, वायु दोष, इत्यादि दोष योग बनते हैं। जिन ग्रहों के साथ राहु केतु बैठे हैं उनके विकार में वृद्धि होती है। तत् ग्रहजनित दोष होने से उस ग्रह की व्याधियाँ प्राप्त होती है।

अत: जब जैसी परेशानी हो उसके अनुरूप ग्रह का उपाय करना चाहिये।

प्रत्येक भावगत कालसर्प के उपाय

लाल किताब में कालसर्प योग नाम से कोई शान्ति उपाय पृथक् से नहीं दिये गये हैं। राहु-केतु के द्वादशगत योगों की शान्ति के उपाय बताये गये हैं, उसी के अनुसरण में निम्न प्रयोग दिये जा रहे हैं।

हाथी भी राहु का प्रतीक माना गया है अत: हाथीदाँत की चूड़ी, खिलौने कब कैसे धारण करें, हाथी के पैर की मिट्टी का उपयोग, हाथीदाँत का हाथी, चाँदी का हाथी कब कैसे उपयोग करें, इत्यादि कई बातों का खुलासा है।

सर्व साधारण उपाय

- रात्रि में सोते समय एक, तीन, पाँच, सात मुट्ठी जौ पोटली में बाँधकर रखें, सुबह वह दाना कबूतरों को ड़ालें।
- गौमूत्र में जौ भिगोकर सिरहाने रखें, सुबह दाना पक्षियों को ड़ालें।
- यदि पति पत्नि का वैवाहिक जीवन बाधा युक्त है तो शुभ योग में पुनर्विवाह करें। यह ध्यान रखें कि कन्या का पिता तो पहले कन्यादान कर चुका है अत:यह विवाह पति पत्नि ही प्रतिज्ञा संकल्प करके अपने मन का समर्पण करते हैं।

  विधान का अवलोकन हमारी पुस्तक "साङ्गोपाङ्ग वैवाहिक पद्धति" में पूनर्भू विवाह प्रकरण में करें।

- ❖ राहु के लिये मसूर एवं पैसे हरिजन को दान करें।
- ❖ मूली का दान बुधवार को करने से राहु का तथा बृहस्पतिवार को करने से केतु का प्रभाव कम होता है।
- ❖ अपने वजन के तौल के (तुलादान करके) बराबर कोयले नदी में बहायें। अथवा सर्दी में तपने के लिये गरीबों को देवे। तुलादान का मतलब तराजू के एक पलड़े में स्वयं बैठें, दूसरे में कोयले रखकर तोलें, यह नहीं कि अपना वजन ८० किलो है तो ८० किलो कोयले सीधे दुकान से खरीद लाये।
- ❖ काले तिल व तेल का तुलादान करना भी शुभ रहे। राहु के लिये सरसों का तैल भी लेते हैं।
- ❖ अपने प्रवेश द्वार के ऊपर चाँदी के दो नाग लगायें उनके बीच में स्वास्तिक को एलफी या एरोलाइट से चिपका देवें।
- ❖ रसोईघर में बैठकर याना खाने से भी राहु का दोष दूर होता है।
- ❖ ४३ दिन तक प्रतिदिन एक नारियल जटा सहित नदी के जल में प्रवाहित करें।
- ❖ नागपञ्चमी के दिन सर्प की पूजाकरें, पितरों का ध्यान करें, पश्चात् सामग्री को जल में प्रवाहित कर दें।
- ❖ कार्तिक संवत्सर के अनुसार भाद्रपद में, चैत्र संवत्सर के अनुसार आश्विन में सोलह श्राद्ध करें।
- ❖ गौमूत्र से दाँत साफ करें।
- ❖ १८ अलसी के बीज गौमूत्र में भिगोकर सिरहाने रखें, सुबह जल में बहा दें।
- ❖ स्त्री की कुण्डली में राहु खराब हो तो चाँदी के बरतन में गङ्गाजल सदैव रखें। जल सूख जाये तो दुबारा भरें।
- ❖ लड़की की कुण्डली में कालसर्प हो तो पिता कन्यादान में २० ग्राम शुद्ध पाट की चाँदी (९९ टंच शुद्ध) चौकोर टुकड़ा देवें। जिसे कन्या अपने पास रखें।
- ❖ राहु मन्त्र का जप करें, नीले या काले पुष्प चढ़ावें।
- ❖ शिवजी के अर्कपुष्प या धत्तूर चढ़ायें।

- ❖ श्रीकृष्ण का कालिया दमन का चित्र या शेषनाग की शय्या पर लेटे हुये भगवान विष्णु का चित्र लगायें।
- ❖ राहु नीच का हो ६, ८, १२ स्थान में हो तो हाथी व हाथीदाँत की वस्तुऐं घर में नहीं रखें।
- ❖ राहु शुभ स्थान में हो, उच्च का हो तो चाँदी का हाथी, खिलौना, हाथीदाँत की वस्तुऐं घर में रखें।
- ❖ राहु कमजोर होने पर हाथी के पैर की मिट्टी से स्नान करें।

प्रत्येक भावानुसार उपाय

१. प्रथम भाव में राहु सातवें केतु हो तो अनन्त कालसर्प नाम से उपाय करें।

- ❖ लोहे की गोली लाल रङ्ग में रङ्गकर अपने पास रखें।
- ❖ काले व नीले रङ्ग के कपड़े नहीं पहने। विशेषकर बुधवार और शनिवार को।
- ❖ बिल्ली की जेर का गले में ताबीज बनाकर बाँधे या गल्ले में रखें।
- ❖ बिमारी या परेशानी में ४०० ग्रा० राङ्गा जल में प्रवाहित करें।

२. राहु दूसरे भाव व केतु आठवें भाव में होने पर कुलिक नामक कालसर्प का परिहार करें।

- ❖ हाथीदाँत की वस्तुऐं घर में नहीं रखें।
- ❖ हाथी के पाँव की मिट्टी ४२ दिन तक कुए में ड़ालें।
- ❖ दो या अधिक रङ्गों का कम्बल गरीबों को दान में देवे अथवा मन्दिर में देवें।
- ❖ चाँदी की ठोस गोली अपने पास रखें।
- ❖ ससुराल की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं हो, द्वितीयेश तृतीयेश कमजोर हो तो सुसराल से बिजली का सामान व राहु से संबंधित वस्तुऐं नहीं लायें।
- ❖ बृहस्पति की वस्तुओं का प्रयोग करें।

- छत पर वायव्य कोण में पानी का पात्र रखें। अथवा चाँदी की वस्तुऐं वायव्य कोंण में रखें।
- केसर या पीला चन्दन का तिलक करें।
- माता की आशीष प्राप्त करें।

३. तृतीय भाव राहु से दूषित हो या वासुकि नामक कालसर्प योग हो तो निम्न उपाय करें।

- तृतीय भाव का कारक मङ्गल है अतः चन्द्रमा तथा बृहस्पति का उपाय करना चाहिये। भाग्य अवरोधक केतु का भी गुरु मित्र है अतः गुरु के उपाय से केतु शुभ हो जायेगा।
- सरसों तथा सरसों के तैल के दान से राहु शुभ होवे।
- आत्मबल के स्वामी मङ्गल का उपाय करें।
- पक्षियों को जौ या बाजरा ड़ालें।
- एकता में शक्ति है, अतः परिवार से अलग नहीं रहे।
- भोजन के समय झूठन नहीं छोडें।
- घर में भैंस नहीं पालें। गौ सेवा करें।
- हाथी दाँत की वस्तुओं का प्रयोग नहीं करें।
- झूठी गवाही नहीं देवें, झूठ नहीं बोलें।

४. चतुर्थ भाव में शङ्खनाद नामक कालसर्प योग हो तो राहु बृहस्पति, राहु चन्द्र, राहु सूर्य से भाव दूषित हो तो राहु के उपाय करें। केतु के उपाय करके कर्मेश को जागृत करें।

- सीढ़ीयों के नीचे रसोई नहीं बनाये।
- मकान में शौचालय ईशान या पूर्व में नहीं होवे।
- पानी में गंगाजल ड़ाल कर स्नान करें।
- मोती की अंगूठी चान्दी में धारण करें।
- कोई भी कार्य अधूरा न छोड़ें अन्यथा विलम्ब से कार्य सिद्ध होवे।
- मकान की छतदूषित नहीं करे। छत पर कोयले नहीं रखें। राहु छत का

कारक होता है। अतः छत का ढलान सही होना चाहिये, दरारें हो तो ठीक करायें।

- ❖ घर में प्रकाश की उचित व्यवस्था करें।
- ❖ गन्दे पानी को खुला नहीं रहने दें, समुचित निकास करें।
- ❖ बिमारी अधिक होने पर ४०० ग्रा० साबुत बादाम बहते जल में प्रवाहित करें।
- ❖ चान्दी की डिबिया में शहद भर कर घर के बाहर दबाने से केतु शुभ फल देता है।

५. पञ्चम भाव राहु से दूषित होने पर अथवा पद्म नामक कालसर्प योग होने पर राहु का उपाय करे।

- ❖ सरस्वती की उपासना करें।
- ❖ दुर्व्यसनों का त्याग करें।
- ❖ अन्धों की सेवा करें।
- ❖ दुकान मकान की चौखट में चाँदी का टुकड़ा गाड़ देवें।
- ❖ ठोस चाँदी का हाथी बनायें, उसमें तेजाब या टाँके का प्रयोग नहीं करें, उसे घर में रखें।
- ❖ पत्नि के सिरहाने ५ मूली रखें एवं उन्हें सुबह मन्दिर में चढायें।
- ❖ पति पत्नि पुनर्भूविवाह पद्धति से पुनः विवाह करें। इसमें पिता कन्यादान नहीं करें। वह तो पहले ही दान कर चुके हैं। अतः पति पत्नि आपस में एक दूसरे को समर्पण करते हैं।

६. छठे भाव में महापद्म नामक कालसर्प योग हो तथा राहुके कारण रोग, ऋण शत्रु बाधा हो तो राहु व बुध का उपाय करने से शुभ होवे।

- ❖ बहन, बुआ, मौसी की सेवा तथा कन्या भोजन कराने से बुध अनुकूल होगा।
- ❖ घर या ऑफिस में काले रंग के कांच या पर्दे लगायें।

- ❖ काला चश्मा प्रयोग में लेवें।
- ❖ नीले पुष्पों से सरस्वती का पूजन करें।
- ❖ सूर्य को बलवान करें। कोई भी पुष्प अपने पास रखें।

७. सप्तम भाव में राहु तक्षक नामक कालसर्प योग बनता है। राहु केतु के साथ मङ्गल शुक्र का भी उपाय करना चाहये।

- ❖ घर में कुत्ता नहीं पालें।
- ❖ बहते जल में ४२ दिन तक नारियल प्रवाहित करें।
- ❖ शुद्ध चान्दी का टुकड़ा अपने पास रखें या घर में रखें।
- ❖ विवाह के समय शुद्ध चाँदी का चौकोर टुकड्ा पत्नि को देवें, जिसे पत्नि अपने पास रखें।
- ❖ सरस्वती की उपासना करें।
- ❖ २१ वर्ष पहले पुत्र या पुत्री का विवाह नहीं करें। यदि २१ वर्ष से कम हो तो चाँदी की दो कटोरी में गङ्गाजल लेवें। एक में चाँदी का टुकड़ा ड़ालकर पुत्री को देवें। दूसरी अपने पास पूजागृह में रखें।
- ❖ मङ्गल को बलवान करने के लिये लोहे गोली की लाल रङ्ग लागकर अपने पास रखें।

८. अष्टम भाव में राहु, दूसरे भाव में केतु कर्कोटक कालसर्प योग बनता हो तो निम्न उपाय करें।

- ❖ भैरव उपासना करें। अन्य देवताओं की उपासना का फल कम मिलेगा ऐसा हमारा अनुभव है।
- ❖ चाँदी का चौकोर टुकड़ा अपने पास रखें।
- ❖ वर्ष में जब आठवां महिना लगे तब से जन्म तिथि तक ८ बादाम मन्दिर में चढ़ायें, उनमें से ४ बादाम वापस घर लाकर रख देवें। जन्म दिन नूतन वर्ष के दिन घर वाले बादाम को पानी में बहा देवें।
- ❖ भड़भूजे की भटटी में ताम्बे का सिक्का ४२ दिन डाले। यदि वाद विवाद की सम्भावना हो तो ऐसा नहीं करें।

❖ ताम्बे के पुराने या खोटे सिक्के ४३ दिन तक बहते जल में ड़ालें।

❖ श्मशान में दान करे या सिक्का डाल कर आयें। ४२ बुधवार करें तो उत्तम रहेगा।

❖ चाँदी के बर्त्तन में सूखे मेवे रख कर दान करें।

❖ छल कपट बेईमानी का त्याग करें।

❖ आठ बुधवार १००-१०० ग्राम सीसे के टुकड़े बहते जल में ड़ालें।

❖ काले या नीले कपड़े में नारियल लपेट कर बहायें।

९. नवम भाव में राहु केतु तृतीय भाव में शङ्खचूड नामक कालसर्प योग बनाता है, तो राहु का दान केतु का उपाय करें।

❖ बार बार गर्भपात हो तो राहु का उपाय करने से शुभ रहे। दो रंग का कुत्ता पालने से केतु का उपाय होगा जिससे सन्तान को शुभ रहे। यदि कुत्ता मर जाये तो ४३ दिन में दूसरा कुत्ता पालें।

❖ राहु दूषित हो तो सुसराल से मनमुटाव रहे। सिर पर चोटी रखना शुभ रहे।

❖ चने की दाल ३ दिन तक बहते पानी में प्रवाहित करें।

❖ सरसों एवं तम्बाकू का दान करें।

❖ माथे पर पीला टीका या केसर का तिलक लगायें।

❖ पक्षियों को मक्का, जौ, बाजरा डालें।

❖ कन्या का दान करें।

❖ स्वर्ण की चेन पहनना शुभ रहे।

❖ दुर्व्यसन, छल, कपट से दूर रहें।

❖ ससुराल से मनमुटाव हो तो उसे दूर करें।

❖ यदि राहु उच्च का हो तो राहु की वस्तुओं का दान नहीं करें। क्योंकि राहु गुरु की राशि को नीच की निगाह से देखेगा, अत: बृहस्पति को बलवान करें। इससे परिवार का सुख प्राप्त होगा।

१०. राहु दशम भाव में, केतु चतुर्थ भाव में हो तो घातक नामक

कालसर्प योग होता है।

भोगोलिक राशि मण्डल में चतुर्थ भाव चन्द्रमा का तथा दशम राहु का है। यहाँ चतुर्थ कारक शत्रु राशि का बनता है जिससे केतु का अशुभ प्रभाव बनता है। राहु माता को पीड़ा कारक है अत: चतुर्थ भाव को बलवान करें।

❖ सिरहाने शक्कर, चाँवल रखें। सुबह मन्दिर में दान करें।
❖ मङ्गल के लिये लाल वस्तुऐं दान करें।
❖ लाल मसूर की दालं जल में प्रवाहित करें।
❖ सरकारी इमारत की जहाँ छायाँ पड़ती हो वहां जौ या अनाज दबायें।
❖ सिर पर काले रंग के अलावा अन्य रंग की टोपी या पगड़ी पहनें।
❖ काल पुरुष का चतुर्थ भाव कर्क राशि में बृहस्पति उच्च का होता है अत: पीतल के पात्र में बहता जल लाकर रखें बृहस्पति, चन्द्र शुभ होंगे तो केतु का दुष्प्रभाव कम होगा।
❖ गणेश, छिन्नमस्ता देवी व सरस्वती की उपासना करें। सरस्वती के नीले पुष्प चढायें।
❖ शुद्ध चान्दी का चौकोर टुकड़ा अपने पास में रखें।

११. राहु एकादश भाव में तथा केतु पाँचवे होकर विषाक्त कालसर्प योग बनाते हैं तो निम्न बाधायें अक्सर रहती है -

❖ घर में अपव्यय हो, सम्पत्ति का नाश हो तथा रोग एवं शत्रु बने रहे, पिता से या राज्यपक्ष से अनबन रहे। उपाय -
❖ हरिजन को दान करते रहें।
❖ सरसों, काले तिल, उड़द का दान करें।
❖ मन्दिर में दान करें।
❖ बिजली के संसाधन वास्तु अनुरूप ठीक स्थान पर रखें।
❖ गले में स्वर्ण की चेन धारण करें।
❖ अस्त्र शस्त्र कम रखें।

❖ चाकू, झाड़ू का मुँह ऊपर की आरे करके नहीं रखें।

❖ ४०० ग्राम सीसा (राङ्गा) के ११ टुकड़े करके ११ बुधवार जल मे प्रवाहित करें।

❖ यदि कुण्डली में तीसरे या एकादश भाव में बृहस्पति हो तो स्वर्ण के स्थान पर स्टील की चेन पहनें।

❖ वर्ष भर में चार नारियल जल में प्रवाहित करें।

❖ चाँदी का उपयोग अधिक करें। चाँदी के गिलास में पानी पियें।

१२. राहु १२ वें भाव में तथा केतु छठे भाव में बैठकर शेषनाग नामक कालसर्प योग बनाते हो तो राहु केतु दोनों ग्रहों का उपाय करें।

इस योग से निद्रा नहीं आती, अपव्यय होवे, वाद विवाद मुकद्दमे बने, स्थाान परिवर्तन हो।

❖ आय का कुछ भाग बहन, बेटी को देते रहें।

❖ सिरहाने शक्कर रखकर सोऐं, सुबह मन्दिर में दान करें।

❖ मङ्गल का दान करने से वाद विवाद कम होवे।

❖ लाल कपड़े में सौंफ बाँधकर सिरहाने रखें।

❖ घर में चाँदी की वस्तुऐं रखें। चाँदी का ठोस हाथी घर में रखें। चाँदी का चौकोर टुकड़ा पास में रखें।

❖ सरस्वती को नीले पुष्प चढायें।

❖ जमीन पर बैठकर भोजन करें।

❖ बृहस्पति का उपाय करें तो केतु शुभ हो जायेगा।

कालसर्प दोष शान्ति उपाय

कालसर्प दोष शान्ति हेतु रुद्राभिषेक, शिव पूजन, पार्थिवशिव पूजन, मत्युञ्जय प्रयोग, नाग पूजा, नागविसर्जन, नागवलि, नारायणबलि, त्रिपिण्डी श्राद्ध, तर्पण, राहु पूजा, तुलादान इत्यादि कई प्रयोग प्रचलित हैं। इसके अलावा भी कई साधारण उपाय हैं।

- चन्दन की लकड़ी के ५-७ मनके प्रत्येक बुधवार, शुक्रवार, शनिवार को राहु काल में शिव मन्दिर में चढ़ायें।
- राहु काल में चन्दन का इत्र भगवान शिव को चढ़ायें।
- प्रतिदिन राहुकाल में मूली गन्दे पानी, नदी, तालाब में ड़ालें।
- घोड़े की सेवा करें, चनादाल खिलायें, पैर में नाल ठुकायें।
- जौ और अनार दूध में मिलाकर पानी में बहायें।
- गूलर की लकड़ी, चन्दन की लकड़ी के नाग शिव मन्दिर में चढ़ायें।
- नागपञ्चमी को दूध, जल, शहद, फलों का रस, चन्दन इत्र से रुद्राभिषेक करें।
- नाग पञ्चमी को शिव मन्दिर में सफाई, मरम्मत, रङ्ग, पुताई का कार्य करायें।
- प्रत्येक शनिवार को कुत्ते को दूध रोटी खिलायें।
- गाय, कौआ को तैल के छीटें देकर रसोई की प्रथम रोटी खिलायें।
- अपने घर में शुद्ध जगह पर मोरपंख रखें।
- बारह महिनों में प्रत्येक संक्रान्ति को घर में गङ्गाजल व गौमूत्र का छिड़काव करें।
- बुधवार, शनिवार को राहुकाल में राहु मन्त्र का जप करें अथवा रात्रि में मन्त्र जप करें।

- राहु के हवन हेतु दूर्वा (दूब की सूखी घास) का प्रयोग करें।
- नागेन्द्रहाराय ॐ नमः शिवाय का जाप करें।
- सूखे नारियल व बादाम को शिव मन्दिर में चढ़ायें।
- शिवलिङ्ग पर प्रतिदिन मिश्री या शक्कर का भोग तथा दूध चढ़ायें।
- नारियल के गोले में गुड़, सप्तधान्य, उड़द की दाल, सरसों भर कर बहते जल में या गन्दे नाले में राहुकाल के समय बुधवार या शनिवार को डालें।
- अमावस्या की रात्रि में ५ नारियल के गोले तथा १-२ किलो कोयले बहते पानी में ड़ालें। तीन अमावस्या तक करें।
- शिवताण्डव स्तोत्र का पाठ करें।
- घर में अशान्ति राजभय हो तो मङ्गलवार को किसी बर्त्तन में कोयले जलाकर लोबान की धूप करें। ॐ नमः शिवाय का जाप करें।
- यदि कीड़ मकोड़े चीटीं की बहुलता हो तो बाँये पैर का जूता बिल पर रखें।
- गुप्तशत्रु का भय हो तो ताम्बे या चान्दी के ५ सर्प बनायें उनकी आँखों में सुरमा ड़ालकर शिव मन्दिर में चढ़ायें।
- श्रावण मास में रुद्राभिषेक अवश्य करायें।
- श्रीमद्भागवत के दशवें स्कन्ध के षोडश अध्याय के १०८ पाठ करें।
- घर में मोर मुकुट बंशी वाले कृष्ण की पूजा करें।
- कालिया नाग के दमन समय नाचते हुये कृष्ण का चित्र लगायें।
- पलाश के फूल, गौमूत्र में भिगोकर सुखायें, उनका चूर्ण करें। उस चूर्ण में थोड़ा चूर्ण चन्दन का, साँप की बांबी की मिटटी मिलाकर पानी में डालकर स्नान करें।
- शिवलिङ्ग पर आक, धत्तूर, दूध, दही, शहद, चन्दन का इत्र चढाने से लाभ मिले।
- यदि जैन मत से कर्म करना है तो राहु के लिये पद्मावती, पार्श्वनाथ की पूजा तथा केतु के लिये नेमिनाथ का शान्ति विधान करें।

❖ **विशेष शान्ति हेतु २७ बृहस्पतिवार तक यह प्रयोग करें।**

परिवार के प्रत्येक सदस्य के हाथ से ३-३ रुपये, ३ हल्दी की गांठे, थोड़ी-थोड़ी केसर, ३० ग्राम चना दाल, १०० ग्राम गुड़ एकत्रित करें। हल्दी व केसर का चूर्ण बना लेवें। उसमें गाय का दूध व गङ्गाजल मिलाकर शिवलिङ्ग के लेपन करें। चना दाल व गुड़ गाय या बैल को खिलायें तथा रुपये मन्दिरमें दान करें। हर बृहस्पतिवार अलग अलग शिवलिङ्गों पर परिवार के सभी सदस्य पूजा करें। यदि किसी गाँव में २७ शिवलिङ्ग नहीं मिले तो उनकी पुनरावृत्ति से पूजन करें।

❖ **पितृदोष शान्ति हेतु विशेष प्रयोग -**

४१ दिन तक लगातार ५ कोडियों को रातभर आँग में तपाकर भस्म बना लेवें। प्रातः काल किसी शिवमन्दिर में जाकर दूध व जल चढ़ाकर उस भस्म से त्रिपुण्ड करें।

❖ **डिप्रेशन की भावना होने पर** गाय का दूध, दही, घृत, गोबर, गौमूत्र, शङ्खभस्म, मुक्ताभस्म, चन्दनचूर्ण, गुलाब जल, सादे जल में डालकर स्नान करें। पितरों को शान्ति मिलने से आत्मबल में वृद्धि होगी। यह प्रयोग ९ सोमवार करें। श्वेत वस्त्र, चावल, शक्कर, दूध, दही, घृत, श्वेत पुष्प शिव मन्दिर में अर्पण करें।

❖ **राजभय होने पर** लालचन्दन, लालपुष्प, बेल वृक्ष की छाल, जटामांशी एवं हींग का काढ़ा बनायें। इसमें मालकांगणी तेल मिलायें। नित्य इन द्रव्यों को पानी में डालकर स्नान करें तो ग्रह पीड़ा दूर होवे।

❖ **भूमि विवाद एवं त्वचा रोग में मङ्गल का उपाय करें -**

मङ्गलवार को राहुकाल में लालवस्त्र, लालमसूर, गुड़, गेहूँ, चन्दन का इत्र, लालकनेर के पुष्प शिव मन्दिर में कार्तिकेय को अर्पण करें।

❖ **अविवाहित योग के कारण चिन्ता हो तो** प्रवालभस्म, चन्दनइत्र, गुलाब के फूलों का रस या इत्र मिलाकर शिवलिङ्ग पर त्रिपुण्ड करें। ९० दिन तक यह प्रयोग करें। २७ या ५४ बार निम्न मन्त्र का जप करें -

मन्त्र - ॐ गङ्गाधराय भूमिसुताय नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय।

❖ **समृद्धि हेतु** २० शुक्रवार को पूरे शरीर में मक्खन की मालिश कर जल

में मिश्री ड़ालकर स्नान करें। पान के पत्ते पर २० ग्राम मक्खन व १० ग्राम मिश्री शिवजी के अर्पण करें।

- ❖ राहु-बुध योग में २३ बुधवार शिवलिङ्ग पर भाङ्ग चढ़ायें।
- ❖ राहु-बृहस्पति योग में ब्राह्मणों को दान करें।
- ❖ राहु-मङ्गल योग में गरीबों को दवा हेतु दान करें।
- ❖ शयन कक्ष के पर्दे, चादर, तकिये लाल रङ्ग के प्रयोग में लेवें।
- ❖ रात्रि को सोते समय बाजरा लाल वस्त्र में लपेट कर सिरहाने रखें। सुबह पक्षियों को डाल देवें।
- ❖ राहुकाल में एक नारियल ४३ दिन तक नदी में बहायें।
- ❖ स्त्री के कालसर्प हो तो १ वर्ष तक वटवृक्ष की १०८ परिक्रमा करें।
- ❖ पति-पत्नि में कलह हो तो सात शुक्रवार देवी मन्दिर में ७ परिक्रमा करें। पान के पत्ते पर मिश्री व मक्खन का प्रसाद चढायें।
- ❖ सोना, सीसा, कालेतिल, नीले वस्त्र का दान करें।
- ❖ गोमेद मध्यमा अंगुली में धारण करें।
- ❖ यदि सूर्य चन्द्र राहु केतु के साथ हो तो लहसुनियाँ मध्यमा अङ्गुली में पहनें।
- ❖ नाग प्रतिमा की अङ्गूठी मध्यमा अङ्गूली में पहने।
- ❖ चन्दन की लकड़ी पर चाँदी के पत्र पर नाग जोड़ा बनवाकर चिपका लेवें उसको ताबीज की तरह धारण करें।
- ❖ दूसरे घर में राहु हो तो रङ्ग बिरङ्गा कंबल मङ्गलवार में दान करें।
- ❖ १२ वें राहु हो तो लाल कपड़े की थैली में सौंफ भरकर कमरे में रखें। मूली का रस, शहद शिव के चढ़ायें।
- ❖ परिवार में स्त्री, माँ, बहन, बुआ के कोई भी बिमारी हो तो अशोक के ५ पत्ते रोज ४५ दिन तक शिवलिङ्ग पर चढ़ायें।
- ❖ घर में बच्चे बूढे किसी को भी पेट सम्बन्धि बिमारी हो तो प्रत्येक बुधवार को पुराने शिव मन्दिर में खजूर की झाड़ छोड़ आयें।

दुर्गासप्तशती के पाठ से राहु के दोष का शमन

राजा बलि ने तीनों लोकों पर अपना अधिकार कर लिया था। उसके मुख्य १२ सेनापति थे। इनमें से **विप्रचिति** नामक सेनापति राहु के पिता माने जाते हैं।

दुर्गासप्तशती में माँ दुर्गा ने कहा है कि ''मैं **वैप्रचित्त** नाम के राक्षसों का भक्षण करुंगी, उनके रक्त से मेरे दाँत दाडिम के पुष्प की तरह लाल हो जायेंगे।'' अत: राहु के वंशजों का नाश करने वाली दुर्गा के स्तोत्र का पठन करने से राहु का दोष शमन होता है।

राजा बलि के अन्य सेनापतियों के नाम इस प्रकार से है -

शिवि, शङ्कु, अयःशङ्कु, अयःशिरा, अश्वशिरा, भङ्गकारी, महाहनु, प्रताप, प्रधस, शुंभ तथा कुकुर आदि हैं।

सर्वदोषनाशक नागेश्वर जड़ी

नागेश्वर या जिसे नागकेसर भी कहते हैं एक आयुर्वेदिक औषधि है। यह रोग शमन करती है। तथा घर का पितृदोष व वास्तुदोष दूर कर समृद्धि देती है।

मेहन्दी के फूलों की भाँति नागकेसर के गुच्छे एवं दाने पूजा पाठ में पवित्र माने गये हैं। आयुर्वेद के अनुसार यह कीटाणुनाशक, पोषक एवं सौन्दर्य वर्धक है। यह औषधी शिव को बहुत प्रिय है अत: इससे पूजा करने पर शिव की प्रसन्नता से सुखसमृद्धि बढती है।

नागकेसर पोटली - नवीन पीले वस्त्र में नागकेशर, साबुत हल्दी की ४ गाठें, ९ साबुत सुपारी, एक सिक्का (ताम्बे का हो तो उत्तम) ताम्बे का टुकड़ा, साबुत चावल की एक पोटली बना लेवें। बृहस्पतिवार या शुक्रवार को रुद्राभिषेक करके शिव के अर्पण करें। पश्चात् उसे घर लाकर आलमारी, तिजोरी अथवा गल्ले में रखें। १०८ बार ''नम: शिवाय'' का जप करें। इस क्रिया से पितृदोष शान्त होते हैं। वास्तुदोष का प्रभाव भी कम हो जात है। एक वर्ष पश्चात् इसे नदी में बहा देवें तथा नई पोटली तैयार करें।

सर्प विष नाशक मन्त्र

१. **धरप्रटकि। धसनि धसीन सार। ऊपरे धसानि। विष नीचे जाये। कोहे विष तू इतना रिसाये। क्रोध तो तोर नहीं पानी, हमरे थापड़ तोर नाहीं ठिकानी। आज्ञा देवी मनसा माता की। विषहरी माई की दुहाई।**

यह मन्त्र पढ़कर रोगी को थप्पड़ मारे तो विष का स्तम्भन हो जाता है।

२. **विष उतारने का मन्त्र**

थाला पड़ि धूल पड़ि। धां धीं चलिये अमुकेर (रोगी का नाम) अंगेर (अङ्ग पर) विष पाला उड़िये। थाला पड़ि धूल पडि। धां धीं स्वाहा।

अमुकेर (रोगी का नाम) अंगे विष लागे तलगै थरुंगा। कार आज्ञा कंसासुर नृ पितर आज्ञै। धमपति स्वाहा।

कांसी की स्वच्छ थाली पर यह मन्त्र नौ बार पढ़कर फूंक मारे। फिर थाली रोगी की पीठ पर चिपक जायेगी। फिर मन्त्र पढ़कर कंकर मारते जायें। जब विष उतर जायेगा तो थाली उतर जायेगी।

नाग भयनाशक यन्त्र

घर में सर्प का निवास हो या उस स्थान पर सर्प का भय हो तो मालकांगणी रस या गुलाबइत्र, केसर से मङ्गलवार को यह यन्त्र लिखकर दरवाज़े पर लगा देवे सर्प भय नहीं रहेगा।

३०	३७	२	८
७	३	३४	३३
३६	३१	९	१
४	६	३२	३५

नाग एवं ग्रह

शिवजी के आदेशानुसार ब्रह्माजी ने अनेक नागों की रचना की। अथर्ववेद में ५०० प्रकार के नागों के नाम हैं। नाग एवं सूर्यादि ग्रहों का आपस में सम्बन्ध है। प्रत्येक मास में २-२ नाग सूर्य के साथ चलते हैं।

अनन्त नाग सूर्य रूप में, वासुकि चन्द्रमा, तक्षक मङ्गल, कर्कोटक बुध, पद्म बृहस्पति, महापद्म शुक्र, कुलिक एवं शङ्खपाल शनि तथा शेषनाग राहु के प्रतीक हैं।

अनन्त सामने, वासुकी बाँयी ओर, तक्षक दाहिनी ओर देखता है तथा कर्कोटक की दृष्टि पीछे की ओर होती है। अष्टनाग आठों दिशाओं में रक्षा करते हैं।

अष्टनागों के आयुध - पद्म, उप्पल, स्वस्तिक, त्रिशूल, महापद्म, शूल, क्षत्र और अर्धचन्द्र ये अनन्तादि अष्टनागों के क्रमशः आयुध हैं।

नागों के फन पर चिह्न

तन्त्रानुसार नाग के कुल -

श्वेतनाग - ब्राह्मण। रक्तिमनाग - क्षत्रिय।

पीतनाग - वैश्य। कृष्णनाग - शूद्र जाति के हैं।

उनके कुल के अनुसार अष्टनागों के फन पर निम्न चिह्न हैं -

१. अनन्त नाग के शिर व पृष्ठ भाग पर श्वेत कमल का चिह्न होता है।

२. कुलिक नाग के शिर पर कमल का चिह्न होता है।

३. वासुकि नाग के पृष्ठ भाग पर कमल का चिह्न होता है।

४. कर्कोटक नाग के वक्ष पर त्रिनेत्र का चिह्न होता है।

५. तक्षक नाग के शिरीर पर खरगोश की आकृति होती है।

६. शङ्खपाल के सिर पर त्रिशूल व अर्धचन्द्र की आकृति होती है।

७. पद्म नाग के पृष्ठ भाग पर पाँच लाल रंग के बिन्दु होते हैं।

८. महापद्म के पृष्ठ भाग पर श्वेत बिन्दु का चिह्न होता है।

सूर्य एवं नाग

सूर्य मण्डल के चारों ओर हजारें कि. मी. लम्बी सूर्य ज्वालायें लहरों की तरह सर्पिल आकार में उठती हैं। उन ज्वालाओं में वैसी ही तीव्रता होती है जैसा सर्प की होती है। दो दो माह, दो दो नाग सूर्य के साथ चलते हैं। सूर्य रथ के साथ नाग भी तेजश्विता के साथ साथ, लय के भी रूपक हैं।

सूर्य रथ के साथ वर्ष पर्यन्त दो दो माह के लिये, दो दो नाग, दो-दो ऋषि, दो-दो गंधर्व, दो-दो अप्सराऐं, दो-दो राक्षस तथा दो-दो यक्ष चलते हैं।

खण्डक एवं वासुकि नाग का जोड़ा चैत्र-वैशाख में सूर्य के साथ रहता हैं। ज्येष्ठ तथा आषाढ दो माह के लिये तक्षक व अनन्त नाग दोनों साथ चलते हैं। श्रावण-भाद्रपद में एलापर्ण एवं शंखनाद नामक नाग साथ चलते हैं। आश्विन-कार्तिक में ऐरावत एवं धनञ्जय नाग साथ रहते हैं। मार्गशीर्ष और पौष में महापद्म और कर्कोटक साथ चलते हैं। माघ और फाल्गुन में काद्रवेय एवं कंबल नामक नाग सूर्य रथ के साथ चलते हैं।

नाग एवं सर्प भेद

विष्णु पुराण व हरिवंश पुराण में नाग व सर्प की उत्पत्ति का भेद बताया है। प्रजापति दक्ष की साठ पुत्रियों में से चार का विवाह ताक्ष्र्यकश्यप (अरिष्टनेमि) के साथ हुआ। उनमें कद्रू बड़ी थी। उससे १०० नाग की उत्पत्ति हुई, उनको गरुड ने अपने वश में कर लिया। दक्ष की साठ में से १३ पुत्रियों का विवाह महर्षि कश्यप के साथ हुआ। उनमें से ९ वीं क्रोधवशा थी। उससे सर्प बिच्छु एवं अन्य विषैले जन्तु पैदा हुये। इन सर्पो के क्रोधवशागण कहा गया है। इनकी संख्या १४ हजार बतायी है। ये सभी सर्प वायु पीकर रहने वाले थे। बड़े, क्रूर, क्रोधी एवं विषदन्त वाले कहे गये हैं। इस प्रकार सर्प व नाग मौसेरे भाई थे।

प्रमुख नागों के नाम

२६ प्रकार के प्रमुख नाग हैं जो १००० फन धारण करते हैं।

शेष, वासुकि, कर्कोटक, शङ्ख, ऐरावत, कम्बल, धनञ्जय, महानील, पद्म, अश्वतर, तक्षक, एलापर्ण, महापद्म, धृतराष्ट्र, बलाहक, शङ्खपाल, महाशङ्ख, पुष्पदंष्ट्र, शुभानन, शंकुरोम, बहुल, वामन, पाणिनी, कपिल, दुर्मुख तथा पतञ्जलि।

नाग के बीजाक्षर

तन्त्र शास्त्र में देवता व मन्त्र समूह के बीजाक्षर निश्चित होते हैं। इन बीजाक्षरों में उस देवता की शक्ति समाहित होती है। इनके साथ कामना मन्त्र का प्रयोग करने से पूर्ण मन्त्र बनता है।

नाम	- बीजाक्षर	नाम	-	बीजाक्षर
विष	- ज्रँ	नाग	-	ब्रीं
महाप्राण	- टाँ	नाग	-	ताँ
शिवा (शक्ति)	- रौं	श्मशान	-	ग्रं

उदाहरण मन्त्र - **१. ज्रं सर्वविषं ताडय ताडय स्वाहा।**

२. ब्रीं नागेन्द्राय सर्वविषहराय स्वाहा।

नाग पञ्चमी का महत्व

ब्रह्माजी के वरदान के अनुरूप जनमेजय के यज्ञ में सर्पों की रक्षा पञ्चमी को आस्तीक मुनि ने की थी। इसलिये पञ्चमी तिथि नागों को विशेष प्रिय है।

प्रत्येक माह में शुक्ल पक्ष की पञ्चमी तिथि आती है। अतः प्रत्येक माह १२ नागों की पूजा करें। चाँदी, ताम्बा या सोने का सर्प शिव मन्दिर में चढ़ायें।

हर माह पञ्चमी को १२ नागों का १२ महिने तक पूजा करें, पश्चात् रुद्राभिषेक कर सर्प शिव को चढ़ायें या चाँदी की कटोरी में दूध भर कर उसमें स्वर्ण का सर्प रख कर दान करें अथवा जल में प्रवाहित करें। १२ सर्पों के नाम इस प्रकार हैं

अनन्त, वासुकी, शङ्ख, पद्म, कंबल, कर्कोटक, अश्वतर, धृतराष्ट्र, शङ्खपाल, कालिय, तक्षक एवं पिङ्गल नाम से पूजा करें।

प्रार्थना करें -

सर्वेनागाः प्रियन्तां ये केचित् पृथिवीतले ।
ये च हेलिमरीचीवस्था येऽन्तरे दिवि संस्थिताः ॥
ये नदीषु महानागा ये सरस्वतिगामिनः ।
ये के चे वापीतडागेषु तेषु सर्वेषु वै नमः ॥

स्वप्न एवं सर्प दर्शन

स्वप्न में यदी बार बार सर्प दिखाई दें, तो उसे अपने परिवार की कोई अतृप्त आत्मा समझें। इसके लिये नारायणबलि कर्म व नागबलि कर्म करायें। अन्य स्वप्नों का फल इस प्रकार है –

- स्वप्न में सर्प काटने को दौड़े तो व्यक्ति कालसर्प से पीड़ित होता है।
- श्वेत सर्प काटने को दौड़े तो धन प्राप्ति होवे, काटे तो अधिक सुफल प्राप्त होवे।
- सर्प सामान्य अवस्था में बैठा दिखाई दे तो भी धन प्राप्ति होवे।
- स्वप्न में दो मुँहा सर्प काटे तो भाग्य वृद्धि एवं कुण्डलिनीं ज़ागरण का संकेत है।
- स्वप्न में सर्प उड़ता दिखाई दे तो आध्यात्म विषय कमजोर है, कोई देवदोष हो सकता है।
- पानी में सर्प दिखाई दे तो पितृ दोष का सूचक है।
- स्वप्न में सर्प गाय पर झपट्टा मारता दिखाई देवें तो धन लाभ देवे।
- सर्प व नेवला स्वप्न में लड़ते दिखाई दें तो गृह कलह कारक है।
- सर्प कुण्डली मारे दिखाई दे तो आध्यात्म शक्ति की वृद्धि होगी।
- यदि स्वप्न में कौआ सर्प बनते दिखाई दे तो वंशवृद्धि होवे।

भवनवास्तु एवं सर्प

सृष्टि का आधार शेष नाग को माना गया है। अत: भवन निर्माण के समय नींव में चाँदी के नाग-नागिन का जोड़ा अवश्य रखते हैं। इसके अलावा कश्छप व मछली भी रखते हैं। राहु का निवास भूतल में माना गया है। अतः राहु मुख देखकर ही नींव की दिशा तय करते हैं। भवन शिलान्यास करते समय ताम्बे का कलश लेवें उसमें पञ्चामृत, चन्दन का इत्र, जल, पानी वाला नारियल, गरी गोला में मक्खन, मिश्री, शक्कर, सप्तधान्य, चावल, गुड़, चन्दन की लकड़ी, वटवृक्ष की साखें, जौ, उड़द, दाल, २३ इलायची, ८ लौंग, फल, बच्चे की नाल, यज्ञवेदी की ईटें, नाग नागिन का जोड़ा, ३ छोटे नाग, सोना व चाँदी का टुकड़ा, ५, ९, ११, २१, २७ सुपारी बड़ी, हल्दी की सात गाठें, पुराना सिक्का, शहद, ५, ११, २१, २३ पान के पत्ते रखें तो आने वाली सन्तान का जीवन सुखमय होगा।

गड़ा धन कहाँ है?

गड़े धन पर सर्प का पहरा रहता है। यदि किसी तांत्रिक साधक के भाग्य में गढ़ा धन नहीं है परन्तु फिर भी प्रयत्नों के द्वारा वह उस स्थान पर प्रयोगादि करता है तो उसे गड़े धन की रक्षा करने वाले सर्प या उसकी आत्मा उसे मार देती है। पर सामान्य स्थिति में भूमि पर निम्न लक्षण हो तो गड़े धन की संभावना होती है।

❖ जहाँ अग्नि जलाने पर नहीं जले।

❖ सूर्य की तेज धूप में भी घास हरी-भरी रहे, अन्य जगह की घास जल जाये।

❖ जहाँ जेष्ठ-आषाढ में वृक्षों पर नये पत्ते आये, अन्य ऋतु में पत्तें नही आवें।

❖ जहाँ कौए मैथुन रत हो।

❖ जहाँ सिंह आकर बैठता हो।

❖ जिस जगह कमल पुष्प के समान गंध आती हो।

❖ आस-पास कोई जलाशय नहीं हो फिर भी उस जगह की मिट्टी नम होवे।

॥ छिपा धन देखने का मंत्र ॥

यह क्रिया हाजरात क्रिया कहलाती है जो अनेक तरह की होती है।

मन्त्र – ॐ नमो भगवते रुद्राय डामरेश्वराय सिलि शाल पुनने नाग बेतालिनि स्वाहा।

योग्य गुरु के मार्गदर्शन में शिव मन्दिर में जाकर ५०हजार जप करें। गुग्गुल व नारियल से होम करे। पुष्य नक्षत्र व शनिवार के दिन तुलसी की जड़ को नर्मदा के जल में घिसकर लेप बनाये। उस लेप की बत्ती बनाकर उसे इसी मंत्र से १००८ बार अभिमंत्रित करे। अब इस बत्ती को जलाकर उसका काजल बनाये। इस अंजन को छोटी कन्या या उल्टे जन्मे बच्चें की आखों में लगायें तो उस बच्चे या कन्या को गड़ा धन दिखेगा। इस कर्म में बच्चे को वहाँ की आत्मा नुकसान पहुँचा सकती है, अतः पहले बच्चे की रक्षा करे बाद में यह प्रयोग करे।

शान्ति कर्म खण्ड

॥ महामृत्युञ्जय (मृत संजीवनी) मंत्रस्य विधानम् ॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्री मृतसंजीवनी महामृत्युञ्जय मन्त्रस्य वामदेव, कहोल वसिष्ठऋषिः पंक्ति, गायत्री अनुष्टुप् छन्दः श्रीमहामृत्युञ्जयरुद्रो देवताः, हौं बीजं, जूं शक्ति, सः कीलकं श्रीमृत्युञ्जय देवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- वामदेव कहोल वसिष्ठ ऋषये नमः शिरसि। पंक्ति गायत्री अनुष्टुपछन्दसे नमः मुखे। श्रीमहामृत्युञ्जय रुद्रदेवतायै नमः हृदये। हौं बीजाय नमः गुह्ये। जूं शक्तये नमः पादयोः। सः कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु।

षडङ्गन्यास - ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं अंगुष्ठाभ्यां नमः। (हृदयाय नमः) ॥ ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ यजामहे तर्जनीभ्यां नमः। (शिरसे स्वाहा) ॥ ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् मध्यमाभ्यां नमः। (शिखायै वषट्) ॥ ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ उर्वारुकमिव बन्धनात् अनामिकाभ्यां नमः (कवचाय हुँ) ॥ ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ मृत्योर्मुक्षीय कनिष्ठिकाभ्यां नमः (नेत्रत्रयाय वौषट् ॥) ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ मामृतात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः (अस्त्राय फट्) ॥

॥ ध्यानम् ॥

चन्द्रार्काग्नि विलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्तः स्थितं ।
मुद्रापाशमृगाक्षसूत्र विलसत् पाणिं हिमांशुप्रभम् ॥
कोटिरेन्दुगलत् सुधाप्लुत तनुं हारादि भूषोज्ज्वलं ।
कान्त्या विश्व विमोहनं पशुपतिं मृत्युञ्जये भावये ॥

मन्त्र :- ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् । ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ ॥

॥ श्रीमहामृत्युञ्जय यन्त्र पूजन ॥

मृत्युञ्जय यन्त्र भिन्न-भिन्न है। सामान्य यन्त्र में पञ्चकोण, अष्टदल, वृत्तचतुष्टय भूपूर होते है। प्रस्तुत यन्त्र विस्तृत है उसमें पञ्चकोण, अष्टदल, वृत्त, चतुष्टय

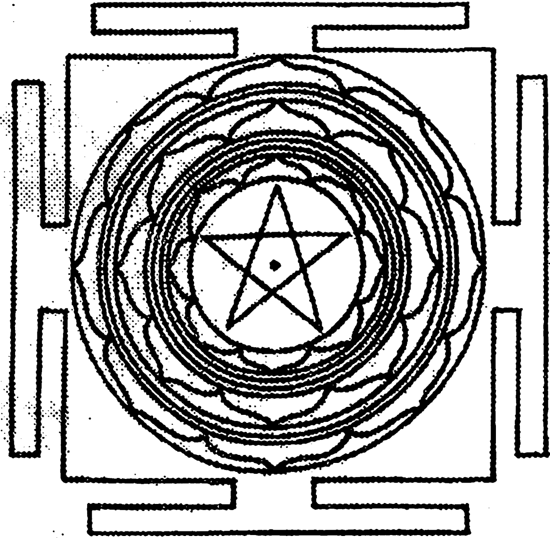
तदोपरि पुनः अष्टदल, वृत्तत्रय, ततोपुनः अष्टदल एवं भूपूर होता है। विस्तृत यंत्र नहीं कर सके तो सामान्य यंत्र में ही पूजा करें। प्रत्येक नामावलि के बाद पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि से गंधाक्षत पुष्प अर्पण करे व पञ्चामृत अर्घजल मिश्रित जल से तर्पण करें।

प्रथमावरणम् – (बिन्दु मध्ये) – मूल मंत्र से **ॐ त्र्यंबकाय श्री पादुकां पूज. नमः तर्पयामि।**

तत्रैव – **ॐ श्रीं ह्रीं मृत्युञ्जये भगवति चैतन्य चन्द्रे हंस संजीवनी स्वाहा। श्री अमृतेश्वरी देव्यै नमः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि** (शिव के वाम भाग में)।

गुरुमण्डल पूजनम् – **ॐ दिव्यौघ गुरुभ्यो श्री पा. पू न. त.। ॐ सिद्धौघ गुरुभ्यो श्री पा. पू न. त.। ॐ मानवौघगुरुभ्यो श्री पा. पू न. त.।**

स्वगुरुक्रम – **ॐ अमुक स्वगुरुनाथ सशक्तिं श्री पा. पू न. त.। ॐ परमगुरुभ्यो श्री पा. पू न. त.। ॐ परात्परगुरुभ्यो श्री पा. पू न. त.। ॐ परमेष्ठीगुरुभ्यो श्री पा. पू न. त.।**



महामृत्युञ्जय यंत्रम्

पुष्पाञ्जलि –

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। **पूजिताः तर्पिताः सन्तुः** कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ द्वितीयावरणम् – (बिन्दु समीपे) – **ॐ त्र्यम्बकं हृदयाय नमः श्री**

पा. पू न. त.। ॐ यजामहे शिरसे स्वाहा श्री पा. पू न. त.। ॐ सुगंधि पुष्टिवर्धनम् शिखायै वषट् श्री पा. पू न. त.। ॐ उर्वारुकमिव बन्धनात् कवचाय हुँ श्री पा. पू न. त.। ॐ मृत्योर्मुक्षीय नेत्रत्रयाय वौषट श्री पा. पू न. त.। ॐ मामृतात् अस्त्रायफट् श्री पा. पू न. त.।

ॐ अभिष्ट.......द्वितीयावरणार्चनम्।। पुष्पाञ्जलि प्रदान करें **पूजिताः तर्पिताः सन्तुः** कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ तृतीयावरणम् - पञ्चकोणे - प्रत्येक नाममंत्रों के बाद श्री पादुकां पूज. नमः तर्पयामि कहें। ईशाने - **सद्योजाताय श्री पादुकां पूज. नमः तर्पयामि।** पूर्वे - **वामदेवाय.।** अग्निकोणे - **ईशानाय.।** नैऋत्ये - **तत्पुरुषाय.।** वायवे - **अघोराय.।**

ॐ अभीष्ट.......ततृीयावरणार्चनम्।। पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। **पूजिताः तर्पिताः सन्तुः** कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ चतुर्थावरणम् - (अष्टदले) - प्रत्येक नाममंत्र के बाद **श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि** कहकर गंधाक्षत पुष्प अर्पण कर तर्पण करें। **ॐ अर्कमूर्तये श्री पा. पू न. त.। ॐ इन्द्रमूर्तये.। वसुधामूर्तये.। तोयमूर्तये.। वह्निमूर्तये.। वायुमूर्तये.। आकाशमूर्तये.। यजमानमूर्तये.।**

दलाग्रे - **अं आं इं ईं ......अं अः मातृकायै श्री पा. पू न. त.। कं .... ङ मातृकायै.। चं .... ञं मातृकायै.। टं ... ङं मातृकायै.। तं ... न. मातृकायै.। पं .... मं मातृकायै.। यं ... वं मातृकायै.। सं ... क्षं मातृकायै श्री पा. पू न. त.।**

ॐ अभीष्ट.......चतुर्थावरणार्चनम्।। पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। **पूजिताः तर्पिताः सन्तुः** कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ पञ्चमावरणम् - (वृत्तचतुष्कये) -**ॐ भवदेव श्री पा. पू न. त.। शर्वदेव.। ईशानदेव.। पशुपतिदेव.। रुद्रदेव.। उग्रदेव.। भीमदेव.। महान्तदेव.।**

ॐ अभीष्ट.......पञ्चमावरणार्चनम्।। पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। **पूजिताः तर्पिताः सन्तुः** कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ षष्ठमावरणम् - (अष्टदले) अगर वृहद यंत्र नहीं बनाया हो तो सामान्य यंत्र के अष्टदल में ही पूजा करें। **ॐ रमायै श्री नमः श्री पा. पू त.। ॐ शकायै.। ॐ प्रभायै.। ॐ ज्योत्स्नायै.। ॐ पूर्णायै.। ॐ उषायै.। ॐ सुधायै.।** (अष्टदलाग्रे) - **ॐ विश्वायै नमः श्री पा. पू. त.। विद्यायै.। सितायै.। प्रह्वायै.।**

सारायै.। संध्यायै.। शिवायै.। निशायै.।

ॐ अभीष्ट....... षष्ठमावरणार्चनम्॥ पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। **पूजिताः तर्पिताः सन्तुः** कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ सप्तमावरणम् :- वृक्त्रये - (अगर वृहद यंत्र नहीं बनाया हो तो पूर्व के चारों वृत्तों मे से ३ वृत्तों में पूजन करें।) **१. ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं ...... प्रचोदयात् श्री सविता देवी श्री पा. पू न. त.। २. ॐ जातवेद से सुनवाम सोम मरातीयतो निदहाति वेदः । सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धु दुरितात्यग्निः श्री दुर्गा देवता श्री पा. पू न. त.। ३. ॐ त्र्यम्बकं यजामहे .... मामृतात्। ॐ त्र्यम्बकं श्री पा. पू न. त.।**

ॐ अभीष्ट.......सप्तमावरणार्चनम्॥ पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। **पूजिताः तर्पिताः सन्तुः** कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ अष्टमावरणम् - (द्वितीय अष्टदले) या पूर्व के अष्टदल में ही 'केसरों' में पूजन करें। **ॐ आर्यायै श्री पा. पू न. त.। प्रज्ञायै.। प्रभायै.। मेधायै.। शान्त्यै.। कान्त्यै.। धृत्यै.। सत्यै.।**

ॐ अभिष्ट.......अष्टमावरणार्चनम्॥ पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। **पूजिताः तर्पिताः सन्तुः** कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ नवमावरणम् - अष्टदलमध्ये - **ॐ धरायै श्री पा. पू न. त.। मायायै.। अविन्यै.। पद्मायै.। शांतायै.। मोघायै.। जयायै.। अमलायै.।**

ॐ अभीष्ट.......नवमावरणार्चनम्॥ पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। **पूजिताः तर्पिताः सन्तुः** कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ दशमावरणम् - अष्टदलाग्रे - **ॐ ज्यैष्ठायै नमः श्री पा. पू त.। श्रेष्ठायै.। रुद्रायै.। कालायै.। कलविकरणायै नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय.। सर्वभूतदमनाय.। मनोन्मनाय.। भवोदभवाये.।**

ॐ अभीष्ट.......दशमावरणार्चनम्॥ पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। **पूजिताः तर्पिताः सन्तुः** कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ एकादशमावरणम् - अष्टदले कर्णिका समीपे - **अष्टनाग पूजा पूर्वादिक्रमेण। अनन्ताय नमः श्री पा. पू त.। वासुकीये नमः.। शेषाय नमः.। पद्मनाभाय नमः.। कंबलाय नमः.। शंखपालाय नमः.। धृतराष्ट्राय नमः.।**

तक्षकायनमः.। मध्ये - कालीये नमः।

ॐ अभीष्ट.......एकादशमावरणार्चनम्।। पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। पूजिताः तर्पिताः सन्तुः कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ द्वादशमावरणम् - (अष्टदले कर्णिका वहिः) - **पूर्वादि क्रमेण अष्टभैरवान् सम्पूज्य। ॐ असितांगभैरवाय सशक्तिं श्री पा. पू. न. त.। रुरुवभैरवाय सशक्तिं.। चण्डभैरवाय सशक्तिं.। क्रोधभैरवाय सशक्तिं.। उन्मत्तभैरवाय सशक्तिं.। कपालिभैरवाय सशक्तिं.। भीषणभैरवाय सशक्तिं.। संहारभैरवाय सशक्तिं श्री पा. पू. न. त.।**

ॐ अभीष्ट.......द्वादशमावरणार्चनम्।। पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। **पूजिताः तर्पिताः** सन्तुः कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ त्रयोदयशमावरणम् - भूपूरे - वैसे भूपूर में अष्टसिद्धि, ग्रह, उपग्रह, पीठ, उपपीठ एवं दिक्पालादि का पूजा विधान है। (नरपतिजयचर्या) **अष्टसिद्धिं - अणिमा सिद्धि श्री पा. पू. न. त.। लघिमा.। महिमा.। ईशित्व सिद्धि.। वशित्व सिद्धि.। प्राकाम्य सिद्धि.। भुक्ति सिद्धि.। इच्छा सिद्धि.।**

ॐ अभीष्ट....... **त्रयोदशमावरणार्चनम्।।** पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। पूजिताः तर्पिताः सन्तुः कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ चतुर्दशमावरणम् - (भूपूरे) - **इन्द्राय नमः श्री पा. पू. त.। अग्नये नमः.। यमाय नमः.। निर्ऋत्ये नमः.। वरुणाय नमः.। वायवे नमः.। कुबेराय नमः.। ईशानाय नमः.। ब्रह्मणे नमः.। अनन्ताय नमः श्री पा. पू. त.।**

ॐ अभीष्ट....... चतुर्दशावरणार्चनम्।। पुष्पाञ्जलि प्रदान करें। **पूजिताः तर्पिताः** सन्तुः कहकर अर्घपात्र जल से तृप्त करें।

अथ पञ्चदशावरणम् - (भूपुरे) - **वज्राय नमः श्री पा. पू. त.। शक्तये नमः.। दण्डाय नमः.। खड्गाय नमः.। पाशाय नमः.। अङ्कुशाय नमः.। गदाय नमः.। त्रिशूलाय नमः.। पद्माय नमः.। चक्राय नमः.।**

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चदशावरणार्चनम्।।

पुष्पाञ्जलि देवें। **पूजिताः** तर्पिताः सन्तुः से अर्चेन संतृप्त। फिर धूप दीप नैवेद्य अर्पण कर नीराजन करें।

॥ श्रीमहामृत्युञ्जय सहस्रनाम स्तोत्रम् ॥

विनियोग :- अस्य श्रीमहामृत्युञ्जय सहस्रनाम स्तोत्रस्य भैरवऋषिरुष्णिक् छन्दः श्रीमहामृत्युञ्जयरुद्रो देवता। ॐ बीजं जूं शक्तिः सः कीलकं मम सर्वविधरोगादिशमनपूर्वकं दीर्घायुः प्राप्तये पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- भैरवऋषये नमः (शिरसि), उष्णिक्छन्दसे नमः (मुखे), श्रीमहामृत्युञ्जयरुद्रदेवतायै नमः (हृदये), ॐ बीजाय नमः (गुह्ये), जूं शक्तये नमः (पादयोः), सः कीलकाय नमः (नाभौ) विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर-हृदयादिन्यासः :- ॐ (अंगु० हृदयाय नम०), जूं (तर्जनी० शिरसे०), सः (मध्यमा० शिखायै०) ॐ (अना० कवचाय०), जूं (कनि० नेत्र०), सः (कर० अस्त्राय०)

॥ ध्यानम् ॥

उद्यच्चन्द्र समानदीप्तिममृतानन्दैकहेतुं शिवं,
ॐ जूं सः भुवनैकसृष्टिप्रलयोद् भूतैकरक्षाकरम् ।
श्रीमत्तारदशार्णमण्डिततनुं त्र्यक्षं द्विबाहुं परं,
श्रीमृत्युञ्जयमीड्य विक्रमगुणैः पूर्ण हृदयाब्जे भजे ॥

॥ भैरव उवाच ॥

ॐ जूं सः हौं महादेवो मन्त्रोशो मन्त्रनायकः ।
मानी मनोरमाङ्गश्च मनस्वी मानवर्धनः ॥१॥
मायाकर्ता मल्लरूपो मल्लमारान्तको मुनिः ।
महेश्वरो महामान्यो मन्त्री मन्त्रजनप्रियः ॥२॥
मारुतो मरुतां श्रेष्ठो मासिकः पाक्षिकोऽमृतः ।
मातङ्गो मात्तचित्तो मत्तचिन्मत्तभावनः ॥३॥
मानवेष्टप्रदो मेशो मानकीपति वल्लभः ।
मानकायो मधुस्तेयी मारयुक्तो जितेन्द्रियः ॥४॥
जयो विजयदो जेता जयेशो जयवल्लभः ।
डामरेशो विरूपाक्षो विश्वभक्तो विभावसुः ॥५॥

विश्वेशो विश्वतातश्च विश्वसूर्विश्वनायकः ।
विनीतो विनयी वादी वान्तदो वाग्भवो वटुः ॥६॥
स्थूलः सूक्ष्मश्चलो लोलो ललज्जिह्वाकरालकः ।
वीरध्येयो विरागीणो विलासी लास्यलालसः ॥७॥
लोलाक्षो ललधीर्धर्मी धनदो धनदार्चित्तः ।
धनी ध्येयोऽप्यध्येयश्च धर्मी धर्ममयोदयः ॥८॥
दयावान् देवजनको देवसेव्यो दयापतिः ।
दुर्णिचक्षुर्दरीवासो दम्भी देवदयात्मकः ॥९॥
कुरूपः कीर्तिदः कान्तः क्लीबः क्लीबात्मकः कुजः ।
बुधो विद्यामयः कामी कामकालान्धकान्तकः ॥१०॥
जीवो जीवप्रदः शुक्रः शुद्धः शर्मप्रदोऽनघः ।
शनैश्चरो वेगगतिर्वाचालो राहुरव्ययः ॥११॥
केतु राकापतिः कालः सूर्योऽमितपराक्रमः ।
चन्द्रो भद्रप्रदो भास्वान् भाग्यदो भर्गरूपभृत् ॥१२॥
कूर्तो धूर्तो वियोगी च संगी गङ्गाधरो गजः ।
गजाननप्रियो गीतो ज्ञानी स्नानार्चनः प्रियः ॥१३॥
परमः पीवराङ्गश्च पार्वती बल्लभो महान् ।
परात्मको विराड्वास्यो वानरोऽमितकर्मकृत् ॥१४॥
चिदानन्दी चारुरूपो गारुडो गरुडप्रियः ।
नन्दीश्वरो नयो नागो नागालङ्कारमण्डितः ॥१५॥
नागहारो महानागी गोधरो गोपतिस्तपः ।
त्रिलोचनस्त्रिलोकेश स्त्रिमूर्तिस्त्रिपुरान्तकः ॥१६॥
त्रिधामयो लोकमयो लोकैकव्यसनापहः ।
व्यसनी तोषितः शम्भुस्त्रिधारूपस्त्रिवर्णभाक् ॥१७॥
त्रिज्योतिस्त्रिपुरीनाथस्त्रिधाशान्तिस्त्रिधा गतिः ।
त्रिधा गुणी विश्वकर्ता विश्वभर्ता त्रिपुरुषः ॥१८॥
उमेशो वासुकिर्वीरो वैनतेयो विचारकृत् ।

विवेकाक्षो विशालाक्षो विधिर्विधिरनुत्तमः ॥१९॥
विद्यानिधिः सरोजाक्षो निःस्मरः स्मरशासनः ।
स्मृतिदः स्मृतिमान् स्मार्तो ब्रह्मा ब्रह्मविदां वरः ॥२०॥
ब्राह्मी व्रती ब्रह्मचारी चतुरश्चतुराननः ।
चलाचलोऽचलगतिर्वेगी वीराधिपोऽपरः ॥२१॥
सर्ववासः सर्वगतिः सर्वमान्यः सनातनः ।
सर्वव्यापी सर्वरूपः सागरश्च समेश्वरः ॥२२॥
समनेत्रः समद्युतिः समकायः सरोवरः ।
सरस्वान् सत्यवाक् सत्यः सत्यरूपः सुधीः सुखी ॥२३॥
स्वराट् सत्यः सत्यमती रुद्रो रुद्रवपुर्वसुः ।
वसुमान् वसुधानाथो वसुरूपो वसुप्रदः ॥२४॥
ईशानः सर्वदेवानामीशानः सर्वबोधिनाम् ।
ईशोऽवशेषोऽवयवी शेषशायी श्रियः पतिः ॥२५॥
इन्द्रश्चन्द्रावतंसी च चराचरजगत्पतिः ।
स्थिरः स्थाणुरणुः पीनः पीनवक्षाः परात्परः ॥२६॥
पीनरूपो जटाधारी जटाजूटसमाकुलः ।
पशुरूपः पशुपतिः पशुज्ञानी पयोनिधिः ॥२७॥
वेद्यो वैद्यो वेदमयो विधिज्ञो विधिमान् मृदुः ।
शूली शुभङ्कर शोभ्यः शुभकर्ता शचीपतिः ॥२८॥
शशाङ्कधवलः स्वामी वज्री शङ्खी गदाधरः ।
चतुर्भुजश्चाष्टभुजः सहस्रभुज मण्डित ॥२९॥
स्रुवहस्तो दीर्घकेशो दीर्घो दम्भविवर्जितः ।
देवो महोदधिर्दिव्यो दिव्यकीर्तिर्दिवाकरः ॥३०॥
उग्ररूपश्चोग्रपतिरुग्र - वक्षास्तपोमयः ।
तपस्वी जटिलस्तापी तापहा तापवर्जितः ॥३१॥
हरिद्धयो हयपतिर्हयदो हरिमण्डितः ।
हरिवाही महौजस्को नित्यौ नित्यात्मकोऽनलः ॥३२॥

समानी संसृतिस्त्यागी सङ्गी सन्निधिरव्ययः ।
विद्याधरो विमानी वैमानिक वरप्रदः ॥३३॥
वाचस्पति वमासारी वामाचारी बलन्धरः ।
वाग्भवो वासवो वायुर्वासनाबीजमण्डितः ॥३४॥
वाग्मी कौलश्रुतिर्दक्षो दक्षयज्ञविनाशनः ।
दक्षो दौर्भाग्यहा दैत्यमर्दनो भोगवर्धनः ॥३५॥
भोगी रोगहरो योगी हारी हरिविभूषणः ।
बहुरूपो बहुमतिर्वङ्गवित्ती विचक्षणः ॥३६॥
नृत्तकृच्चित्तसन्तोषी नृत्यगीतविशारदः ।
शरदवर्णविभूषाढ्यो गलदग्धोऽघनाशनः ॥३७॥
नागी नागमयोऽनन्तोऽनन्तरूपः पिनाकभृत् ।
नटलो कारकेशानो वरीयान् वै विवर्णभृत् ॥३८॥
साङ्कारष्टङ्कहस्तश्च पाशीशार्ङ्गः शशिप्रभः ।
सहस्त्ररूपी समगुः साधूनामभयप्रदः ॥३९॥
साधुसेव्यः साधुगतिः सेवाफलप्रदो विभुः ।
स्वमहो मध्यमो मत्तो मन्त्रमूर्तिः सुमन्तकः ॥४०॥
कीलालीलाकरो लूतो भवबन्धैकमोचनः ।
रेचिष्णुर्विच्युतरतोऽमूतनो नूतनो नथः ॥४१॥
न्यग्रोधरूपो भयदो भयहारीतिधारणः ।
धरणीधरसेव्यश्च धराधरसुतापतिः ॥४२॥
धराधरोऽन्धकरिपुर्विज्ञानी मोहवर्जितः ।
स्थाणुः केशो जटी ग्राम्यो ग्रामारामो रमाप्रियः ॥४३॥
प्रियकृत प्रियरूपश्च विप्रयोगी प्रतापनः ।
प्रभाकर प्रभादीप्तो मनुमान् मानवेश्वरः ॥४४॥
तीक्ष्णबाहुस्तीक्ष्णकरस्तीक्ष्णां शुस्तीक्ष्णलोचनः ।
तीक्ष्णचित्तस्त्रयीरूपस्त्रयीमूर्तिस्त्रयी तनुः ॥४५॥
हविर्भुग् हविषां ज्योतिर्हालाहलो हलीपतिः ।

हविष्मल्लोचनो हालामयो हरिणरूपभृत् ॥४६॥
भ्रदिमाभ्रमयो वृक्षो हुताशो हुतभुग् गुणी ।
गुणज्ञो गरुडो गानतत्परो विक्रमी गुणी ॥४७॥
क्रमेश्वरः क्रमकरः कृमिकृत् क्लान्तमानसः ।
महातेजा महामारी मोहितो मोहवल्लभः ॥४८॥
मनस्वी त्रिदशो बालो वाल्यापतिरघापहः ।
बाल्यो रिपुहरो हार्यो गविर्गविमतो गुणः ॥४९॥
सगुणो वित्तराट् गेयो विरोचनो विभावसुः ।
मालामयो माधवश्च विकर्तनोऽविकत्थनः ॥५०॥
मानकृन्मुक्तिदोऽमूल्यः साध्यः शत्रुभयङ्करः ।
हिरण्यरेताः शुभगः सतीनाथः सुरापतिः ॥५१॥
मेढ़ो मैनाकभगिनीपतिरुत्तमरूपभृत् ।
आदित्यो दितिजेशानो दितिपुत्रः क्षयङ्करः ॥५२॥
वासुदेवो महाभाग्यो विश्वावसुर्वसुप्रियः ।
समुद्रोऽमिततेजश्च खगेन्द्रो विशिखी शिखी ॥५३॥
गुरुत्मान् वज्रहस्तश्च पौलोमीनाथ ईश्वरः ।
यज्ञिपेयो वाजपेयः शतिक्रतुः शताननः ॥५४॥
प्रतिष्ठस्तीव्रविस्रम्भी गम्भीरो भाववर्धनः ।
मायिष्ठो मधुरालापो मधुमत्तश्च माधवः ॥५५॥
मायात्मा भोगिनां त्राता नाकिनामिष्टदायकः ।
नाकेन्द्रो जनको जन्यस्तम्भनो रम्भनाशनः ॥५६॥
ईशान ईश्वर ईशः शर्वरीपति शेखरः ।
लिङ्गाध्यक्षः सुराध्यक्षो वेदाध्यक्षो विचारकः ॥५७॥
भव्योऽनर्घो नरेशानो नरकान्तकसेवितः ।
चतुरो भविता भावी विरामो रात्रिवल्लभः ॥५८॥
मङ्गलो धरणीपुत्रो धन्यो बुद्धि विवर्धनः ।
जयो जीवेश्वरो जारो जाठरो जह्नुतापनः ॥५९॥

जह्नुकन्याधरः कल्पो वासरो मास एव च ।
कर्तुर्ऋभुसुताध्यक्षो विहारो विहगापतिः ॥६०॥
शुक्लाम्बरो नीलकण्ठः शुक्लो भृगुसुतो भगः ।
शान्तः शिवप्रदो भव्यो भेदकृच्छान्तकृत्पतिः ॥६१॥
नाथो दान्तो भिक्षुरूपो धन्यश्रेष्ठो विशाम्पतिः ।
कुमारः क्रोधनः क्रोधी विरोधि विग्रही रसः ॥६२॥
नीरसः सुरसः सिद्धो वृषणी वृषघातनः ।
पञ्चास्यः षण्मुखश्चैव विमुखः सुमुखी प्रियः ॥६३॥
दुर्मुखो दुर्जयो दुःखी सुखी सुखविलासदः ।
पात्री पौत्री पवित्रश्च भूतोक्त पूतनान्तकः ॥६४॥
अक्षरं परमं तत्त्वं बलवान् बलघातनः ।
भल्ली मौलिभवाभावो भावाभावविमोचनः ॥६५॥
नारायणो युक्तकेशो दिग्देवो धर्मनायकः ।
कारामोक्षप्रदो जेयो महाङ्ग सामगायनः ॥६६॥
उत्सङ्गमो नामकारी चारी स्मरनिषूदनः ।
कृष्णः कृष्णाम्बरः स्तुत्यस्तारावर्णस्त्रयाकुलः ॥६७॥
त्रियामा दुर्गतित्राता दुर्गमो दुर्गघातकः ।
महानेत्रो महाधाता नानाशस्त्रविचक्षणः ॥६८॥
महामूर्धा महादन्तो महाकर्णो महोरगः ।
महाचक्षुर्महानाशो महाग्रीवो दिगालयः ॥६९॥
दिग्वासा दितिजेशानो मुण्डी मुण्डाक्षसूत्रधृत् ।
स्मशाननिलियो रागी महाकटिरनूतनः ॥७०॥
पुराणपुरुषः पारम्परमात्मा महाकरः ।
महालस्यो महाकेशो महेशो मोहनो विराट् ॥७१॥
महासुखो महाजङ्घो मण्डली कुण्डली नटः ।
असपत्न्यः पत्रकरः पत्रहस्तश्च पाटवः ॥७२॥
लालसः सालसः सालः कल्पवृक्षश्च कल्पितः ।

कल्पहा कल्पनाहारी महाकेतुः कठोरकः ॥७३॥
अनलः पवनः पाठः पीठस्थ पीठरूपकः ।
पाठीनः कुलसी पीनो मेरुधामा महागुणी ॥७४॥
महातूणीरसंयुक्तो देवदानवदर्पहा ।
अथर्वशेषः सौम्यास्य ऋक्सहस्त्रामितेक्षणः ॥७५॥
यजुः साममुखो गुह्यो यजुर्वेदविचक्षणः ।
याज्ञिको यज्ञरूपश्च यज्ञो वै धरणीपतिः ॥७६॥
जङ्गमी भङ्गदी भासा दक्षाभिगमदर्शनः ।
अगम्यः सुगमः खर्व खेटी खेटाननो नयः ॥७७॥
अमोघार्थः सिन्धुपतिः सैन्धवः सानुमध्यगः ।
विकालज्ञः सगणकः पुष्करस्थः परोपकृत् ॥७८॥
उपकर्ताऽपकर्ता च घृणी रणभयप्रदः ।
धर्मा चर्माम्बरश्चारूरूपश्चारु विभूषणः ॥७९॥
नक्तञ्चरः कायवशी वशी वशिवशो वशः ।
वश्या वश्यकरो भस्मशायी भस्मविलेपनः ॥८०॥
भस्माङ्गी मलिनाङ्गश्च मालामण्डितमूर्धजः ।
गणकार्यः कुलाचारः सर्वाचारः सखा समः ॥८१॥
मकरो गोत्रभिद् गोप्ता भीमरूपो भयानकः ।
अरुणश्सचैकवित्तश्च त्रिशङ्कुः शङ्कुधारणः ॥८२॥
आश्रमी ब्राह्मणो वज्री क्षत्रियः कार्यहेतुकः ।
वैश्यः शूद्रः कपोतस्थस्त्वरुष्टोऽथ रुषाकुलः ॥८३॥
रोगी रोगापहा शूरः कपिलः कपिनायकः ।
पिनाकीचाष्टमूर्तिश्च क्षितिमान् धृतिमांस्तथा ॥८४॥
जलमूर्तिर्वायुमूर्तिर्गताशः सोममूर्तिमान् ।
सूर्यदेवो यजमान आकाशः परमेश्वरः ॥८५॥
भवहा भवमूर्तिश्च भूतात्मा भूतभावनः ।
भवः शर्वस्तथा रुद्रः पशुनाथश्च शङ्करः ॥८६॥

गिरिजो गिरिजानाथो गिरिन्द्रश्च महेश्वरः ।
भीम ईशान भीतिघ्नः खण्डपश्चण्डविक्रमः ॥८७॥
खण्डभृत् खण्डपरशुः कृत्तिवासा वृषापहः ।
कङ्काल कलनाकार श्रीकण्ठो नीललोहितः ॥८८॥
गुणीश्वरो गुणी नन्दी धर्मराजो दुरन्तकः ।
भृङ्गरीटी रसासारी दयालु रूपमण्डितः ॥८९॥
अमृतः कालरुद्रश्च कालाग्निः शशिशेखरः ।
त्रिपुरान्तक ईशानस्त्रिनेत्रः पञ्चवक्त्रकः ॥९०॥
कालहृत् केवलात्मा च ऋग्यजु सामवेदवान् ।
ईशानः सर्वभूतानामीश्वरः सर्वरक्षसाम् ॥९१॥
ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्म ब्रह्मणोऽधिपतिस्था ।
ब्रह्मा शिवः सदानन्दी सदानन्दः सदाशिवः ॥९२॥
मेषस्वरूपश्चार्वङ्गो गायत्रीरूपधारणः ।
अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतराय च ॥९३॥
सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते रुद्र रूपिणे ।
वामदेवस्तथा ज्येष्ठः श्रेष्ठः कालकराकलः ॥९४॥
महाकालो भैरवेशो वेशा कलविकारणः ।
बलविकारणो बालो बलप्रमथनस्तथा ॥९५॥
सर्वभूताद्दिदमनो देवदेवो मनोन्मनः ।
सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमः ॥९६॥
भवे भवेनातिभवे भवस्व मां भवोद्भवः ।
भवनो भावनो भाव्यो बलकारी परःपदम् ॥९७॥
परः शिवः परो ध्येयः परं ज्ञानं परात्परः ।
परावरः पलाशी च मांसाशी वैष्णवोत्तमः ॥९८॥
ॐ ऐं श्रीं हसौं देवः ॐ ह्रीं हैं भैरवोत्तमः ।
ॐ ह्रां नमः शिवायेति मन्त्रो वटुवरायुधः ॥९९॥
ॐ ह्रौं सदाशिवः ॐ ह्रीं आपदुद्धारणो मतः ।

ॐ ह्रीं महाकरालास्य ॐ ह्रीं बटुकभैरवः ॥१००॥
भर्गस्त्रियम्बक ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं चन्द्रार्धशेखरः ।
ॐ ह्रीं सं जटिलो धूम्र ॐ ऐं त्रिपुरघातकः ॥१०१॥
ह्रां ह्रीं हं हरिवामाङ्ग ॐ ह्रीं हं ह्रीं त्रिलोचनः ।
ॐ वेदरूपो वेदज्ञ ऋग्यजुः सामरूपवान् ॥१०२॥
रुद्रो घोररवो घोर ॐ क्षं हं ह्रीं अघोरकः ।
ॐ जूं सः पीयूषसक्तोऽमृताध्यक्षोऽमृतालसः ॥१०३॥
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिम् पुष्टिवर्धनम् ।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥१०४॥
ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ जूं सः मृत्युञ्जयः ।
पातु मा सर्वदेवेशो मृत्युञ्जय सदाशिवः ॥१०५॥

॥ अथ श्रीमहामृत्युञ्जय चिन्तामणि स्तोत्रम् ॥

॥ स्कन्द उवाच ॥

ह्रीं मत्या शिवया विराण्यमयमिदं हृत्पङ्कजस्थं सदा ।
ह्रींणानां शिवकीर्तने हितकरं लेखैर्हृदामानितम् ॥
ह्रीं वेरादिसुगन्धवस्त्र रुचिरं हेमाद्रिबाणासनम् ।
ह्रींकारादि कपालपीठ ममलं हृद्यं नटेशं भजे ॥
श्रीमज्ज्ञानसभान्तरे प्रविलसच्छ्रीपञ्चवर्णाकृतिम् ।
श्रीवाणीनुतपाददोपविचयं श्रीवल्लभेनार्चितम् ॥
श्रीविद्यामनुमोदनाश्रितजनं श्रीदायकं श्रीधरम् ।
श्रीचक्रान्तरवासगं शिवमहं श्रीमन्नटेशं भजे ॥
भव्याम्भोजमुखं निमज्जनविधौ नारायणेनर्चितम् ।
नाकौकोनगरी नटी लसितकं नागाजिनालंकृतम् ॥
नानारूप नर्तकादि चतुरं नीलाकजान् वेष्ठितम् ।
नादात्मानमहं नगेन्द्रतनयानाथं नटेशं भजे ॥
मध्यस्थं मधुवैरिवर्णितपदं मद्दंशनाथं प्रभुम् ।

मारातीतमतीव मञ्जुवपुषं मन्दारगौरप्रभम् ॥
मायातीत मशेष मङ्गलनिधिं मद्भावनाभावितम् ।
मध्ये व्योमसभागुहान्तमखिलं कर्पूरकाशं भजे ॥
शिष्टैः पूजितपादुकं शिवकरं शीतांशुरेखाधरम् ।
शिष्टान् भक्तजनान् सदासुखकरं नाथं शिवायाः प्रियम् ॥
क्षोणीरक्षणमम्बुजासनशिरः संहारशीलं प्रभुम् ।
शीतासार विलोचनं शिवमहं श्रीमन्नटेशं भजे ॥
वाणी वल्लभ वन्द्यवैभवयुतं वन्दारुचिन्तामणिम् ।
वाताशाधिपभूषणं वरकृपावारां निधिं योगिनाम् ॥
वाञ्छापूर्तिकरं बलारिविनुतं वाहीकृताम्नायकम् ।
वामांगत् तवराननं मम हृदोवासं नटेशं भजे ॥
यक्षाधीशसखं यमप्रमथनं यामिन्यधीशाननम् ।
यज्ञध्वंशकरं यतीन्द्रविनुतं यज्ञक्रियाधीश्वरम् ॥
याज्यं याजकरूपिणं यमधनैर्यत्नोपलभ्याङ्घ्रिकम् ।
यानीभूतवृषं सदाशिवमुमायुक्तं नटेशं भजे ॥
माया श्रीविलसत् चिदम्बर महापञ्चाक्षरैर्विंतान् ।
श्लोकान् सप्तपठन्ति येऽनु दिवसं चिन्तामणी नामकान् ॥
तेषां भाग्यामनेकमायुरधिकं विद्यां वरान् सद्सुतान् ।
सर्वाभीष्टमसौ ददाति सहसा श्रीचित् समाधीध्वरः ॥

॥ इति श्रीमहामृत्युञ्जय चिन्तामणि स्तोत्रम् ॥

॥ अथ श्रीसदाशिव मृत्युञ्जय स्तोत्रम् ॥

विनियोग – ॐ अस्य श्री सदाशिव स्तोत्र मन्त्रस्य मार्कण्डेय ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीसदाशिवो देवता, गौरीशक्तिः, मम समस्तारिष्ट शान्त्यर्थे जपे विनियोगः।

रुद्रं पशुपतिं स्थाणु नीलकण्ठमुमापतिम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु करिष्यति ॥१॥

नीलकण्ठं विरूपाक्षं निर्म्मलं निरुपद्रवम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु करिष्यति ॥२॥
काल कण्ठं कालमृत्युं कालाग्निं कालनाशनम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु करिष्यति ॥३॥
देवदेवं महादेवं देवेशं वृषभध्वजम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु करिष्यति ॥४॥
वामदेवं महादेवं लोकनाथं जगद्गुरुम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु करिष्यति ॥५॥
अनन्तमव्यं शान्तमक्षमालाधरं हरम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु करिष्यति ॥६॥
भस्मोद्धूलित सर्वाङ्गं त्रिपुण्डाङ्कितमस्तकम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु करिष्यति ॥७॥
स्वर्गापवर्गदातारं सृष्टिस्थित्यन्तकारकम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु करिष्यति ॥८॥
आनन्दं परमानन्दं कैवल्यं पदगामिनम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु करिष्यति ॥९॥
त्रिनेत्रं पञ्चवक्त्रञ्च जटामुकुटमण्डितम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु करिष्यति ॥१०॥
प्रलयस्थितकर्त्तारं सृष्टिकर्त्तारमीश्वरम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु करिष्यति ॥११॥
गंगाधरं शशिधरं शंकरं शूलपाणिनम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु करिष्यति ॥१२॥
भस्माद्धूलित सर्वागं नागाभरण भूषितम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्यु करिष्यति ॥१३॥
मार्कण्डेयकृतं स्तोत्रं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
तस्य मृत्योर्भय नास्ति ह्यल्पमृत्योर्भयं कुतः ॥१४॥
मृत्युञ्जयाय रुद्राय नीलकण्ठाय शम्भवे ।
अमृतेशाय शर्वाय महादेवाय ते नमः ॥१५॥

॥ शिवापर्णण मस्तु ॥

॥ अथ महामृत्युञ्जय पुष्पाञ्जलिः ॥

जय वृषभध्वज हतमकरध्वज पुरमथन प्रमथाधिपते ।
जय जय देव त्रिजगन्नाथ त्रिशक्तिनाथ त्रिदश नमस्ते ॥
जय भूताधिप भूतविभूषित भूजगराजकृत भूषणभव्य ।
भव्यत भीमत्रिपुराधीश त्रिगुण त्र्यम्बक नाथ नमस्ते ॥
जय सपरंपदवचनागोचर वामदेव जयवर्धं नित्यम् ।
नित्याऽनित्य नरीहनिरञ्जन निर्विवाद निवर्ध नमस्ते ॥
जय तेजोमय निरुपम निर्भय महादेव कैलासनिवासिन् ।
कैलासप्रिय करुणासिन्धो पञ्चवदन परमेश नमस्ते ॥
जय जनमीप्रिय रविशशिलोचन लोकनाथ गिरिजेश गिरिश ।
गिरि राजेश्वर गिरिजाशरणप्रद शम्भो शूलिन् देव नमस्ते ॥
जयमृत्युञ्जय दक्षमखक्षय विष्णुविरञ्चि नमितपदपद्म ।
पद्मागार पदुंपदपारद पिनाकपाणिं प्रभुं नमस्ते ॥
जय सुन्दर जय सुखदमहानट महाकाल कालीहृदये ।
जय शशिशेखर सुरापगाधर सर्वगेह सर्वज्ञ नमस्ते ॥
जय जगनायक मङ्गलदायक मङ्गलेश चतुराननलक्ष्य ।
लक्ष्यालक्ष्यविपक्ष विनाशन विश्वम्भर विश्वेश नमस्ते ॥
दशकन्धर कृतमिति गिरिशस्तव मनुदिनं ममलमतिर्यः पठति ।
सुख मन भवति चिरं स महीपतिरिह चान्ते हरपुर निवसति ॥

॥ इति श्रीदशकन्धर विरचितं महामृत्युञ्जय पुष्पाञ्जलिः ॥

॥ अथ शनिमृत्युञ्जय स्तोत्रम् ॥

नीलाद्रि शोभांचित दिव्य मूर्तिः
खड्गी त्रिदण्डी शर चाप हस्तः ।
शम्भूर्महाकाल शनि पुरारि
र्जयत्यशेषासुर नाशकारी ॥
मेरुपृष्ठे समासीनं सामरस्ये स्थितं शिवम् ।
प्रणम्य शिरसा गौरी पृच्छतिस्म जगद्धितम् ॥

॥ पार्वत्युवाच ॥

भगवन्! देवदेवेश! भक्तानुग्रहकारक !
अल्पमृत्युविनाशाय यत्त्वया पूर्व सूचितम् ॥
तदेव त्वं महाबाहो! लोकानां हितकारकम् ।
तव मूर्ति प्रभेदस्य! महाकालस्य साम्प्रतम् ॥
शनैर्मृर्त्यंजयस्तोत्रं ब्रूहि मे नेत्रजन्मनः ।
अकाल - मृत्युहरणमपमृत्यु - निवारणम् ॥
शनिमन्त्रप्रभेदा ये तैर्युक्तं यत्स्तवं शुभम् ।
प्रतिनाम चतुर्थ्यन्तं नमोऽस्तु मनुनायुतम् ॥

॥ श्री ईश्वरोवाच ॥

नित्ये प्रियतमे गौरि सर्वलोकहितेरते ।
गुह्याद् गुह्यतमं दिव्यं सर्वलोकहितेरते ॥
शनि मृत्युंजयस्तोत्रं प्रवक्ष्यामि तवाऽधुना ।
सर्वमंगलमांगल्यं सर्वशत्रु विमर्दनम् ॥
सर्वरोगप्रशमनं सर्वापद्विनिवारणम् ।
शरीरारोग्य - करणमायुर्वृद्धिकरं नृणाम् ॥
यदि भक्तासि मे गौरि गोपनीयं प्रयत्नतः ।
गोपितं सर्वतंत्रेषु तच्छृणुष्व महेश्वरि ॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीमहाकालशनिमृत्युञ्जयस्तोत्रमंत्रस्य पिप्पलाद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, महाकालशनिर्देवता, शां बीजं, आयसी शक्तिः,

कालपुरुषायेति कीलकं ममाऽकालमृत्युनिवारणार्थे जपे पाठे विनियोगः ।

ऋषिन्यासं करन्यासं देहन्यासं समाचरेत् ।
महोग्रं मूर्ध्नि विन्यस्य मुखे वैवस्वतं न्यसेत् ॥
हृदि न्यसेत् महाकालं गुह्ये कृशतनुं न्यसेत् ।
जान्वोस्तूरुचरं न्यस्य पादयोस्तु शनैश्चरम् ।
गले तु विन्यसेन्मन्दं बाह्वोर्महाग्रहं न्यसेत् ।
एवं न्यासविधिं कृत्वा पश्चात् कालात्मनः शनेः ॥
न्यासं ध्यानं प्रवक्ष्यामि ततो ध्यात्वा पठेन्नरः ।
कल्पादियुगभेदांश्च करांगन्यासरूपिणः ॥
कालात्मनो न्यसेद् गात्रे मृत्युंजय! नमोऽस्तु ते ।
मन्वन्तराणि सर्वांगे महाकालस्वरूपिणः ।
भावयेत्प्रति प्रत्यंगं महाकालस्य ते नमः ॥
भावयेत्प्रभवाद्यब्दान् शीर्षे कालजिते नमः ।
नमस्ते नित्यसेव्याय विन्यसेदयने भ्रुवोः ।
सौरये च नमस्तेऽस्तु गण्डयोर्विन्यसेत् ततः ॥
श्रावणं भावयेदक्ष्णो र्नमः कृष्णनिभाय च ।
महोग्राय नमोभाद्रं तथा श्रवणयोर्न्यसेत् ॥
नमो वै दुर्निरीक्ष्याय चाश्विनं विन्यसेन्मुखे ।
नमो नीलमयूखाय ग्रीवायां कार्तिकं न्यसेत् ॥
मार्गशीर्षं न्यसेद् बाह्वोर्महारौद्राय ते नमः ।
उद्ध्र्वलोकनिवासाय पौषं तु हृदये न्यसेत् ॥
नमः कालप्रबोधाय माघं वै चोदरेन्यसेत् ।
मन्दगाय नमो मेढ्रं न्यसेद्वै फाल्गुनं तथा ॥
ऊर्वोर्न्यसेच्चैत्रमासं नमः शिवोत्रृषाय च ।
वैशाखं विन्यसेज्जान्वोर्नमः संवर्त्तकाय च ॥
जंघयोर्भौ न्यसेज्ज्येष्ठं भैरवाय नमस्तथा ।
आषाढं पादयोश्चैव शनये च नमस्तथा ॥

कृष्णपक्षं च क्रूराय नमः आपाद मस्तके ।
न्यसेदाशीर्ष पादान्ते शुक्लपक्षं ग्रहाय च ॥
न्यसेन्मूलं पादयोश्च ग्रहाय शनये नमः ।
नमः सर्वजिते चैव तोयं सर्वांगुलौ न्यसेत् ॥
न्यसेद् गुल्फद्वये विश्वं नमः शुष्कतराय च ।
विष्णवयं भावयेज्जंघोभये शिष्टतमाय ते ॥
जानुद्वये धनिष्ठां च न्यसेत् कृष्णारुचे नमः ।
पूर्वाभाद्रं तथाग्रे च करालाय नमस्तथा ।
उरूद्वये च वरुणो न्यसेत् कालभृते नमः ।
पृष्ठेउत्तरभाद्रं च करालाय नमस्तथा ।
रेवतीं च न्यसेन्नाभौ नमो मन्दचराय च ।
गर्भदेशे न्यसेदाभो नमो श्यामतराय च ॥
नमो भोगिस्त्रजे नित्यं यमं स्तनयुगे न्यसेत् ।
न्यसेत्कृत्तिका हृदये नमस्तैलप्रियाय च ॥
रोहिणीं भावयेद्धस्ते नमस्ते खड्गधारिणे ।
मृगंन्यसेद्वामहस्ते त्रिदण्डोल्लासिताय च ।
दक्षोद्र्ध्वे भावयेद्रौद्रं नमो वै बाणधारिणे ॥
पुनर्वसुमूर्ध्वभागे नमो वै बाणधारिणे ।
तिष्यं न्यसेद्दक्षबाहौं नमस्ते हर मन्यवे ।
सार्पं न्यसेद्वामबाहौ चोग्रचापाय ते नमः ॥
मघां विभावयेत्कण्ठे नमस्ते भस्मधारिणे ।
मुखे न्यसेद्भगर्चं च नमः क्रूरग्रहाय च ॥
भावयेद्दक्षनासायामर्यमाणञ्च योगिने ।
भावेद्वामनासायां हस्तज्ञ धारिणे नमः ॥
त्वाष्ट्रं न्येसद्दक्षकर्णे नमोऽस्तु ब्राह्मणाय ते ।
स्वातिं न्यसेद् वामकर्णे नमो ब्रह्ममयाय च ।
विशाखां च दक्षनेत्रे नमस्ते ज्ञानदृष्टये ॥
अनुराधां गण्डे रक्ष महाकालाय ते नमः ।

ज्येष्ठां कपोलो रक्ष च पातु मृत्युञ्जयाय माम् ॥
विष्कुंभ भावयेच्छीर्षसन्धौ कालाय ते नमः ।
प्रीतियोगं भ्रुवोः संधौ महामन्द! नमोऽस्तुते ।
नेत्रयोः संधावायुष्मेऽधोगं भीष्माय ते नमः ॥
सौभाग्यं भावयेन्नासासन्धौ फलाशनाय च ।
शोभनं भावयेत्कर्णौ सन्धौ पुण्यात्मने नमः ।
नमः कृष्णायातिगण्डं हनुसन्धौ विभावयेत् ॥
नमो निर्मांसदेहाय सुकर्माणं शिरोधरे ।
धृतिं न्यसेद्देहवातौ पृष्ठे छायासुताय च ॥
तन्मूलसन्धौ शूलं च न्यसेदुग्राय ते नमः ।
तत्कर्पूरे न्यसद्गण्डे नित्यानन्दाय ते नमः ॥
वृद्धिं तन्मणिबन्धे च कालज्ञाय नमो न्यसेत् ।
ध्रुवं तदंगुलिमूलसंधौ कृष्णाय ते नमः ॥
व्याघातं भावयेद् बाहौ बाहुपृष्ठ कृशाय च ।
हर्षणं तन्मूलसन्धौ भूतसन्तापिने नमः ।
तत्कर्पूरे न्येसद्वज्रं सानन्दाय नमोऽस्तु ते ॥
सिद्धिं तन्मणिबन्धे च न्यसेत् कालाग्नये नमः ।
व्यतीपातं कराग्रेषु न्यसेत्कालकृते नमः ॥
वरीयानं दक्षपार्श्वसन्धौ कालात्मने नमः ।
परिघं भावयेद्वामपार्श्वसन्धौ नमोस्तु ते ॥
न्यसेद्दक्षोरुसन्धौ च शिवं वै कालसाक्षिणे ।
तज्जानौ भावयेत्सिद्धिं महादेहाय ते नमः ॥
साध्यं न्यसेच्च तद्गुल्फसन्धौ घोराय ते नमः ।
न्यसेत्तदंगुलीसन्धौ शुभं रौद्राय ते नमः ॥
न्यसेद्वामोरुसन्धौ च शुक्लकालविदे नमः ।
ब्रह्मयोगं च तज्जानौ न्यसेत्सद्योगिने नमः ॥
ऐन्द्रं तद्गुल्फसन्धौ च योगोधीशाय ते नमः ।
न्यसेत्तदंगुलीसन्धौ नमो भव्याय वैधृतिम् ॥

चर्मणि बवकरणं च भावयेद्यज्यने नमः ।
वालवं भावयेद्रक्ते नमो भव्याय वैधृतिः ॥
कौलवं भावयेदस्थि नमस्ते सर्वभक्षिणे ।
तैतिलं भावयेन्मांसे आममांसप्रियाय ते ॥
गरं न्यसेद्वसायां च सर्वग्रासाय ते नमः ।
न्यसेद्वणिज्यं मज्जायां सर्वान्तक नमोऽस्तुते ॥
वीर्ये च भावयेद्विष्टिं नमो मन्यूग्रतेजसे ।
रुद्रमित्रं पितृवसुवारीयेतांश्च पश्च च ॥
मुहूर्तांश्च दक्षपादनखेषु भावयेन्नमः ।
पुरूहूर्त्तांश्च वामपादनखेषु भावयेन्नमः ॥
सत्यव्रताय सत्याय नित्यसत्याय ते नमः ।
सिद्धेश्वर! नमस्तुभ्यं योगेश्वर! नमोऽस्तुते ॥
वह्निघनक्तंचरांश्चैव वरुणार्यमयोनिकान् ।
मुहूर्तांश्च दक्षहस्तनखेषु भावयेन्नमः ॥
लग्नोदयाय दीर्घाय मार्गिणे दक्षदृष्टये ।
वक्राय चातिक्रूराय नमस्ते वामदृष्टये ॥
वामहस्तनखेष्वन्तर्यवर्णेशाय ते नमः ।
गिरिशाहिर्बुध्न्यपूषाजपष्च्छस्त्रांश्च भावयेत् ॥
राशिभोक्त्रे राशिगाय राशिभ्रमणकारिणे ।
राशिनाथाय राशीनां फलदात्रे नमोऽस्तुते ॥
यमाग्निचन्द्रादितिकविधातृंश्च विभायेत् ।
ऊर्ध्वहस्तदक्षनखेष्वन्यत्कालाय ते नमः ॥
तुलोच्चस्थाय सौम्याय नक्रकुम्भगृहाय च ।
समीरत्वष्टजीवांश विष्णु तिग्मद्युतिन्न्यसेत् ॥
ऊर्ध्ववामहस्तेष्वन्यग्रह दोष निवारणे ।
तुष्टाय च वरिष्ठाय नमो राहुसखाय च ॥
रविवारं ललाटे च न्यसेद्भीमदृशे नमः ।

सोमवारं न्यसेत्वान्त्रे नमो जीवस्वरूपिणे ॥
भौमवारं न्यसेत् व्रान्ते नमो मृतप्रियाय च ।
मेढ्रे न्यसेत्सौम्यवारं नमो जीवस्वरूपिणे ॥
वृषणे गुरुवारे च नमो मंत्रस्वरूपिणे ।
भृगुवारं मलद्वारे नमः प्रलयकारिणे ॥
पादयोः शनिवारं च निर्मांसाय नमोऽस्तुते ।
घटिकां न्यसेत्केशेषु नमस्ते सूक्ष्मरूपिणे ॥
कालरूपिन्नमस्तेऽस्तु सर्वपापप्रणाशक ।
त्रिपुरस्य वधार्थाय शम्भू जाताय ते नमः ॥
नमः कालशरीराय कालनेत्राय ते नमः ।
कालहेतो! नमस्तुभ्यं कालात्मजाय ते नमः ॥
अखण्डदण्डमानाय त्वनाद्यन्ताय वै नमः ।
कालदेवाय कालाय कालकालाय ते नमः ॥
निमेषादिमहाकल्पकालरूपं च भैरवम् ।
मृत्युंजयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥
दातारं सर्वभव्यानां भक्तानामभयंकरम् ।
मृत्युंजयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥
कर्त्तारं सर्वदुःखानां दुष्टानां भयवर्धनम् ।
मृत्युंजयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥
हर्त्तारं ग्रहजातानां फलानामधिकारिणाम् ।
मृत्युंजयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥
सर्वेषामेव भूतानां सुखदं शान्तिमव्ययम् ।
मृत्युंजयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥
कारणं सुखदुःखानां भावाऽभावस्वरूपिणम् ।
मृत्यञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥
अकालमृत्युहारिणमपमृत्यु निवारणम् ।
मृत्युंजयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥

कालरूपेण संसारं भक्षयन्तं महाग्रहम् ।
मृत्युंजयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥
दुर्निरीक्ष्यं स्थूल रोमं भीषणं दीर्घलोचनम् ।
मृत्युंजयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥
ग्रहाणां ग्रहभूतं च सर्वग्रह निवारणम् ।
मृत्युंजयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥
कालस्य वशगाः सर्वे न कालः कस्यचिद्वशः ।
तस्मात्त्वां कालपुरुषं प्रणतोऽस्मि शनैश्चरम् ।
कालादेव जगत्सर्वं काले एवं विलीयते ।
कालरूपः स्वयं शम्भूः कालात्मा ग्रह देवता ॥
चण्डीशो रुद्रडाकिन्याक्रान्त चण्डीश उच्यते ।
विद्युदाकलितो नद्यां समारूढो रसाधिपः ॥
चण्डीशः शुकसंयुक्तो जिह्वया ललित पुनः ।
चित्तजस्तामसी शोभी स्थिरात्मा विद्युतायुतः ॥
नमोऽन्तो मनुरित्येष शनितुष्टिकरः शिवे ।
आद्यन्तेऽष्टोत्तरशतं मनुमेन जपेन्नरः ॥
यः पठेच्छृणुयाद्वापि ध्यात्त्वा सम्पूज्य भक्तितः ।
तस्य मृत्युर्भयं नैव शतवर्षावधिप्रिये ॥
ज्वराः सर्वे विनश्यंति दद्रु-विस्फोटकाच्छुभा ।
दिवा सौरिं स्मरेत् रात्रौ महाकालं यजन् पठेत् ॥
जन्मर्क्षे च यदा सौरिर्जपेदेतत्सहस्रकम् ।
वेधगे वामवेधे वा जपेद्वर्षसहस्रकम् ॥
द्वितीये द्वादशे मन्दे तनौ वा चाष्टगेऽपि वा ।
तत्तद्राशौ भवेद्यावत् पठेत्तावद्दिनावधि ॥
चतुर्थे दशमे वाऽपि सप्तमे नवपञ्चमे ।
गोचरे जन्मलग्नेशो दशास्वन्तर्दशासु च ॥
गुरुलाघवज्ञानेन पठेत्तावद्दिनावधि ।
शतमेकं त्रयं वाऽयं शतयुग्मं कदाचन ॥

आपदस्तस्य नश्यन्ति पापानि न जयं भवेत् ।
महाकालालये पीठे ह्यथवा जलसन्निधौ ॥
पुण्यक्षेत्रेऽश्वत्थमूले तैलकुम्भाग्रतो ग्रहे ।
नियमेवैकमत्तेन ब्रह्मचर्येण मौनिना ॥
श्रौतव्यं पठितव्यं च साधकानां सुखावहम् ।
परं स्वस्त्ययनं पुण्यं स्तोत्रं मृत्युञ्जयाभिधम् ॥
कालक्रमेण कथितं न्यासक्रम समन्वितम् ।
प्रातःकाले शुचिर्भूत्वा पूजायां च निशामुखे ॥
पठतां नैव दुष्टेभ्यो व्याघ्रसर्पादितो भयम् ।
नाग्नितो न जलाद्वायोर्देशे देशान्तरेऽथवा ॥
नाऽकाले मरणं तेषां नाऽपमृत्युभयं भवेत् ।
आयुर्वर्षशतं साग्रं भवन्ति चिरजीविनः ॥
नाऽतः परतरं स्तोत्रं शनितुष्टिकरं महत् ।
शान्तिकं शीघ्रशाफल्यं स्तोत्रमेतन्मयोदितम् ॥
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन यदीच्छेदात्मनो हितम् ।
कथनीयं महादेवि! नैवाभक्तस्य कस्यवित् ॥

॥ इति मार्तण्डभैरव तंत्रे शनिमृत्युञ्जय स्तोत्रम् ॥

॥ अथ शिवाथर्वशीर्षम् ॥

(शिवोपनिषद)

ॐ देवाह वै स्वर्गलोकमयंस्ते रुद्रमपृच्छन्। को भवानिति। सोऽब्रवी-दहमेकः प्रथममासीद्वर्तासि च भविष्यामि च नान्यः कश्चिन्मत्तो व्यतिरिक्त इति। सोऽन्तरादन्तरं प्राविश दिशश्चान्तरं प्राविशत्सोहं नित्यानित्यो व्यक्ता व्यक्तो ब्रह्माब्रह्माहं प्राञ्चः प्रत्यञ्चोऽहं दक्षिणाञ्च उदञ्चोहमधश्चोर्ध्वश्चाहं दिशश्च प्रतिदिशश्चाहं पुमानपुमान् स्त्रियश्चाहं सावित्र्यहं गायत्र्यहं त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप् चाहं छंदोऽहं सत्योहं गार्हपत्यो दक्षिणाग्निरा हवनीयोऽहं गौरहं गौर्यह मृगहं यजुरहं सामाहमथर्वाऽङ्गिरसोऽहं ज्येष्ठोहं श्रेष्ठोहं वरिष्ठोहमापेहं तेजोहं गुह्योऽहमरण्योहं अक्षरमहंक्षरमहं पुष्करमहंपवित्र महमुग्रञ्च वलिश्च पुरस्ता ज्जोतिरित्यहमेव

सर्वेभ्यो मामेव स सर्वः समायोमां वेदस देवान् वेद सर्वाश्च वेदान साङ्गानपि ब्रह्मब्रह्माण-ै श्चगांगोभि ब्र्राह्मणेन हविर्हविषा आयुरायुषासत्त्यं सत्येन धर्मेण धर्म तर्पयामिस्वेन तेजसा। ततोह वै ते देवा रुद्रमपृच्छन्। ते देवा रुद्रमपश्यन् ते देवा रुद्रमध्यायन् ते देवा उर्ध्वबाहवो रुद्रस्तुवन्ति।

ॐ यो वै रुद्रः सभगवान् यश्च ब्रह्मा तस्मै वै नमो नमः ॥१॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यश्च विष्णुस्तस्मै वै नमो नमः ॥२॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यश्च स्कंदस्तस्मै वै नमो नमः ॥३॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यश्चेन्द्रस्तस्मै वै नमो नमः ॥४॥
यो वै रुद्रः सभगवान्यश्चाग्निस्तस्मै वै नमो नमः ॥५॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यश्चवायु स्तस्मै वै नमो नमः ॥६॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यश्च सूर्यस्तस्मै वै नमो नमः ॥७॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यश्च सोमस्तस्मै वै नमो नमः ॥८॥
यो वै रुद्रः सभगवान् येऽष्टौग्रहास्तस्मै वै नमो नमः ॥९॥
यो वै रुद्रः सभगवान् येचाष्टौ प्रतिग्रहास्तस्मै वै नमो नमः ॥१०॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यच्च भूस्तस्मै वै नमो नमः ॥११॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यच्च भुवस्तस्मै वै नमो नमः ॥१२॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यच्च स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥१३॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यच्च महस्तस्मै वै नमो नमः ॥१४॥
यो वै रुद्रः सभगवान् या च पृथिवी तस्मै वै नमो नमः ॥१५॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यच्चान्तरिक्षं तस्मै वै नमो नमः ॥१६॥
यो वै रुद्रः सभगवान् या च द्यौस्तस्मै वै नमो नमः ॥१७॥
यो वै रुद्रः सभगवान् याश्चापस्तस्मै वै नमो नमः ॥१८॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यच्च तेजस्तस्मै वै नमो नमः ॥१९॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यश्चकालस्तस्मै वै नमो नमः ॥२०॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यश्चयमस्तस्मै वै नमो नमः ॥२१॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यश्चमृत्युस्तस्मै वै नमो नमः ॥२२॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यच्चाऽमृतं तस्मै वै नमो नमः ॥२३॥
यो वै रुद्रः सभगवान् याच्चाकाशं तस्मै वै नमो नमः ॥२४॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यच्चविश्वं तस्मै वै नमो नमः ॥२५॥

यो वै रुद्रः सभगवान् यच्च स्थूलं तस्मै वै नमो नमः ॥२६॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यच्च सूक्ष्मं तस्मै वै नमो नमः ॥२७॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यच्च शुक्लं तस्मै वै नमो नमः ॥२८॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यच्च कृष्णस्तस्मै वै नमो नमः ॥२९॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यच्च कृत्स्नं तस्मै वै नमो नमः ॥३०॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यच्च सत्यं तस्मै वै नमो नमः ॥३१॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यच्च सर्वत तस्मै वै नमो नमः ॥३२॥

भूस्ते आदिर्मध्य भुवस्ते स्वस्वते शीर्षं विश्वरूपोसि ब्रह्मैकस्त्वं द्विधा त्रिधा वृद्धिस्त्वं शांतिस्त्वं पुष्टिस्त्वं हुतमहुतं दत्तमदत्तं सर्वमसर्वं विश्वमविश्वं कृतमकृतं परामपरं परायणञ्चत्वं अपामसोममृता अभूमागन्मे ज्योतिरविदाम देवान्। किं नूनमस्मान् कृणवदराति। किमुधूर्त्तिरमृतं मर्त्यस्य सोम सूर्यपुरस्तात्सूक्ष्मः पुरुषः। सर्वज्ञगद्धितं वा एतदक्षरं प्राजापत्यं सौम्यं सूक्ष्मं पुरुषं ग्राह्यमग्राह्येण भावं भावेन सौम्यं सौम्येन सूक्ष्मं सूक्ष्मेण वायव्यं वायव्येन ग्रसतिस्तस्मै महाग्रासाय वै नमो नमः। हृदिस्था देवताः सर्वा हृदि प्राणाः प्रतिष्ठिताः। हृदि त्वमसि यो नित्यं तिस्रो मात्राः परस्तुसः। तस्योत्तरतः शिरो दक्षिणतः पादौ यं उत्तरतः स ओङ्कारः य ओङ्कारः स प्रणवः यः प्रणवः स सर्वव्यापी यः सर्वव्यापी सोऽन्ततः योऽनन्तस्तत्तारंतच्छुक्लं यच्छुक्लं तत्सूक्ष्मं यत्सूक्ष्मं तद्वैद्युतं तत्परं ब्रह्म। यत् परं ब्रह्म स एकः य एकः स रुद्रः यो रुद्रः स ईशान य ईशानः स भगवान् महेश्वरः ॥३॥

अथ कस्मादुच्यते ओंकारः यस्मादुच्चार्यमाण एव प्राणानूर्ध्व मुत्क्रामयति तस्मादुच्यते ओङ्कारः।

अथ कस्मादुच्यते प्रणवः यस्मादुच्चार्यमाण एव ऋग्यजुः सामाथर्वाङ्गिरसं ब्रह्मब्राह्मणेभ्यः प्रणामयति च नामयति तस्मादुच्यते प्रणवः। अथ कस्मादुच्यते सर्वव्यापी यस्मादुच्चार्यमाण एव यथास्नेहेन पलालपिण्डमिव शान्तरूपमोतप्रोतमनुप्राप्तो व्यतिषक्तश्च तस्मादुच्यते सर्वव्यापी। अथ कस्मादुच्यते ऽनन्तः यस्मादुच्चार्यमाण एव तिर्यगमूर्ध्वमधस्ताच्चास्यान्तो नोपलभ्यते तस्मादुच्चयते ऽनन्तः। अथ कस्मादुच्यते तारं यस्मादुच्चार्यमाण एव गर्भजन्म व्याधिजरा मरण संसार महाभत्तारयति त्रायते च तस्मादुच्ये तारम्। अथ कस्मादुच्यते शुक्लं यस्मादुच्चार्यमाण एव क्रंदते क्लामयति च तस्मादुच्यते शुक्लम्। अथ कस्मादुच्यते सूक्ष्मं यस्मादुच्चार्यमाण एव सूक्ष्मोभूत्वा

शरीराण्यधितिष्ठति सर्वाणि चाङ्गान्यभिमृश्यतितस्मादुच्यते सूक्ष्मम्।

अथ कस्मादुच्यते वैद्युतं यस्मादुच्चार्यमाण एव व्यक्तेमहति तपसि द्योतयति तस्मादुच्यते वैद्युतं। अथ कस्मादुच्यते परं ब्रह्म यस्मात्परमपरं परायणञ्च बृहद् बृहत्याबृंहयति यस्मादुच्यते परं ब्रह्म। अथ कस्मादुच्यते एकः यः सर्वान् प्राणान् संभक्ष्य संभक्षणेनाजः संसृजति तीर्थमेके व्रजन्ति तीर्थमेके दक्षिणः प्रत्यञ्च उदञ्च प्राच्यो ऽभि व्रजन्त्येके तेषां सर्वेषामिह सङ्गतिः साकं स एको ऽभूदन्तश्चरति प्रजानां तस्मादुच्यते एकः। अथ कस्मादुच्यते रुद्रः यस्मादृषिभिर्नान्यै र्भवतैर्द्रुतमस्य रूपमुपलभ्यते तस्मादुच्यमे रुद्रः। अथ कस्मादुच्यते ईशानः यः सर्वान्देवानीशते ईशानीभिर्जनीभिश्च शक्तिभिः। अभित्वा शूरणोनुमो दुग्धा इव धेनवः। ईशानमस्य जगतः स्वदर्शमीशानमिन्द्र तस्थुष इति तस्मादुच्यते ईशानः। अथ कस्मादुच्यते भगवान महेश्वरः यस्माद्भक्ता ज्ञानेन भजत्यनु गृह्णाति च वाचं संसृजति विसंसृजीत च सर्वान् भावान् परित्यज्यात्म ज्ञानेन योगैश्वर्येण महति महीयते तस्मादुच्यते स भगवान् महेश्वरः तदेतद्रुद्र चरितम् ॥४॥

एषोहदेवः प्रदिशो ऽनु सर्वाः पूर्वोहजातः स उ गर्भे अन्तः। स एव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ् जनांस्तिष्ठति सर्वतोमुखः। एकोरुद्र न द्वितीया य तस्मै य इमाँ लोकानीशत ईशानीभिः। प्रत्यङ् जनस्तिष्ठति चान्तकाले संसृज्य विश्वाभुवनानि गोप्ता। यो योनिं योनिमधितिष्ठकोयेनेदं सर्वं विचरति सर्वम्। तमीशानं वरदं देवमीड्यं निचाय्येमां शांतिमत्यन्तमेति।

क्षमां हित्वा हेतुजालस्यमूलं बुद्ध्या संचितं स्थापयित्वा तु रुद्रे। रुद्रमेकत्वमाहुः शाश्वतं वै पुराणमिषमूर्जेण पशवोनानु मायन्तंमृत्यु पाशान् तदेतेनात्मन्नेतेनार्ध च चतुर्थेन मात्रेण शांतिं संसृजति। पशुपाश विमोक्षणं या सा प्रथमा मात्रा ब्रह्मदेवत्या रक्तावर्णेन यस्तांध्यायते नित्यं सगच्छेत् ब्रह्मपदम्। या सा द्वितीया मात्रा विष्णुदेवत्या कृष्णवर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यं स गच्छेद्वैष्णवं पदम्। या सा तृतीयामात्रा ईशान देवत्या कपिलावर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यं स गच्छेदीशानं पदम्। या साऽर्धचतुर्थी मात्रा सर्व देवत्याऽव्यक्तीभूता खं विचरति शुद्धा स्फटिकसन्निभावर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यं स गच्छेत्पदमनामयम्। तदेतदुपासित मुनयो वाग्वदन्ति न तस्य ग्रहणमयं पंथाविहित उत्तरेण येन देवायन्ति येन पितरो येन ऋषयः परमपरंपरायणं चेति। ब्रालाग्रमात्रं हृदयस्य मध्ये विश्वेदेवं जातरूपं वरेण्यम्। तमात्मस्थं येतु पश्यन्ति धीरा स्तेषां शांतिर्भवति नोत्तरेषाम्।

यस्मिन् क्रोधयाञ्च तृष्णां क्षमाञ्चाक्षमां हित्वा हेतु जालस्य मूलं बुद्ध्या सञ्चितं स्थापयित्वातुरुद्रे रुद्र मेकत्वमाहुः रुद्रोहि शाश्वतेन वै पुराणे नेष मूर्जेण तपसा नियन्ताग्निरिति भस्म वायुरिति भस्म जलमिति कोमेति भस्म भस्म सर्व ७७ हवा इदं भस्म मन एतानि चक्षुंषि यस्मादव्रतमिदं पाशुपतं यद्भस्मनाङ्गानि संस्पृशेत् तस्माद् ब्रह्म तदेतत्पाशुपतं पशुपाश विमोक्षणाय ॥५॥

योऽग्नौ रुद्रो यो ऽप्सन्तर्य ओषधी र्वीरुधआ विवेश य इमाविश्वा भुवनानि च क्लृपे तस्मै रुद्राय नमो ऽस्त्वग्नये। यो रुद्रो ऽप्सु यो रुद्रोऽग्नौ यो रूद्रोऽपवन्तर्यो रुद्र ओषधी र्विरुध आविवेश। यो रुद्र इमा विश्वाभुवनानि क्लृपे तस्मै रुद्राय वै नमो नमः। यो रुद्रोप्सु यो रुद्रो ओषधीषु यो रुद्रो वनस्पतिषु येन रुद्रेण जगदूर्ध्व धारितं पृथिवी द्विधात्रिधाधर्त्ताधारिता नागायेन्तरिक्षे तस्मै रुद्राय वै नमः। मूर्धानमस्य संसेव्याप्यथर्वा हृदयञ्चयत्। मस्तिष्कादूर्ध्वं प्रेरयत्यवमानो ऽधिशीर्षतः। तद्वाअथर्वणः शिरोदेवकोशः समुज्झितः तत् प्राणोऽभिरक्षति शिरोऽन्तमथोमनः न च दिवो देवजनेनगुप्ता न चान्तरिक्षाणि न च भूम इमाः। यस्मिन्निदं सर्वमोतप्रोतं तस्मादन्यन्नपरं किञ्चनास्ति। न तस्मात्पूर्वं न परं तदस्ति न भूतं नोतभव्यं यदासीत्। सहस्त्रपादेक मूर्ध्वाव्याप्तं स एवेदमावरीवर्तिभूतम्। अक्षरात् सञ्जायते कालः कालाद व्यापक उच्यते। व्यापकोहि भगवान् रुद्रो भोगायमानो यदाशेते रुद्रस्तदा संहार्यते प्रजाः उच्छवसिते तमो भवति तमस आपो ऽश्वङ्गुल्यामथिते मथितं शिशिरे शिशिरं मथ्यमानं फेनं भवति फेनादण्डं भवत्यण्डाद् ब्रह्मा भवति ब्रह्मणो वायुः वायोरोङ्कार ओङ्कारात् सावित्री सावित्र्या गायत्री गायत्र्या लोका भवन्ति अर्चयति तपः सत्यं मक्षरक्षन्ति यद्ध्रुवम्। एतद्धि परमंतपः। आपोज्योति रसोमृतं ब्रह्म भू र्भुवः स्वरोन्नमः इति ॥६॥ य इदमथर्व शिरो ब्राह्मणोऽधीते। अश्रोत्रियः श्रोत्रियो भवति। अनुपनीत उपनीतो भवति। सोऽग्निपूतो भवति। स वायुपूतो भवति। स सूर्यपूतो भवति। स सोमपूतोभवति। स सत्यपूतोभवति। स सर्वैर्देवैर्ज्ञातो भवति। स सर्वैवेदैरनु ध्यातो भवति। स सर्वेषु तीर्थेषु स्नातो भवति। तेन सर्वैः क्रतुभिरिष्टं भवति। गायत्र्याः षष्टि सहस्त्राणि जप्तानि भवन्ति। प्रणवानामयुतं जप्तं भवति। स चक्षुषः पंक्ति पुनाति। आसप्तमात् पुरुषगान्पुनातीत्याह भगवानथर्वशिरः सकृज्जप्तवै व शुचिः स पूतः कर्मण्यो भवति। द्वितीयं जप्त्वा गणाधिपत्यमाप्नोति। तृतीयं जप्त्वैवमेवान् प्रविशन्त्यो सत्यमों सत्यमों सत्यम्।

॥ इत्यथर्ववेदे शिवाथर्वशीर्षम्। इति शिवउपनिषत् ॥

॥ अथ कालाग्नि रुद्रोपनिषद् ॥

भस्म धारण हेतु यह प्रयोग सभी पापों का नाश करता है।

विनियोग - ॐ प्राणानाचम्य संकल्प्य आत्मनौ भावशुद्ध्यर्थे विभूतिधारणमहं करिष्ये।

॥ ध्यानम् ॥

शुद्धस्फटिक संकाशमेकवक्त्रं चतुर्भुजम् ।
मृगटंकधरां देवीं वरदाभय शोभिनीम् ॥
सर्वकामप्रशमनीं सर्वोपद्रव नाशिनीम् ।
सदा शिवसखीं साध्वीं निगमान्तार्विहारिणीम् ॥
ध्यात्वा चैव चिताभूतिं धारयेत् पुलकांगिभिः ॥

विनियोग - ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसने विनियोगः।

॥ ध्यानम् ॥

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवी त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरुचासनम् ॥

न्यासः - ॐ आधारशक्त्यै नमः। ॐ अंगुष्ठाग्रे तु गोविन्दः। ॐ तर्जन्यां तु महीधरः। ॐ मध्यमायां हृषीकेशः। ॐ अनामिकायां त्रिविक्रमः। ॐ कनिष्ठिकायां विष्णु। ॐ करमध्ये तुमाधवः। करपृष्ठे जनार्दनः। ॐ अकारो नाभौ। ॐ उकारः हृदये। ॐ मकारः मूर्ध्नि। ॐ भूः पादौ। ॐ भुवः जान्वोः। ॐ स्वः गुह्ये। ॐ महः नाभौ। ॐ जनः हृदये। ॐ तपः कण्ठे। ॐ सत्यं ललाटे। ॐ भूः हृदयाय नमः। ॐ भुवः शिरसे स्वाहा। ॐ स्वः शिखायै वषट्। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यमिति कवचाय हुं। ॐ भर्गोदेवस्य धीमहि नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ धियो योनः प्रचोदयात् अस्त्राय फट्।

विनियोग - ॐ प्रणवस्य ब्रह्मऋषिर्देवी गायत्रीछन्दः, परमात्मा देवता, अं बीजं, उं शक्तिः, मं कीलकं विन्दुनादेति त्रिप्रकारं ज्योतिर्ममात्मनः सर्वकर्मारम्भे प्राणायामे जपे विनियोगः।

मन्त्र	करन्यास	हृदयादिन्यास
ॐ ईशानाय	अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
ॐ तत्पुरुषाय	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
ॐ अघोराय	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
ॐ वामदेवाय	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुम्।
ॐ सद्योजाताय	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ श्रीकालाग्निरुद्राय	करतलकरपृष्ठाभ्यां।	अस्त्राय फट्।

विनियोगः – ॐ भूर्भुवः स्वः भस्मनः पिप्लादिऋषिः, जगतीछन्दः, ॐ श्रीकालाग्रिरुद्रो देवता, भस्मधारणे जपे विनियोगः।

॥ ध्यानम् ॥

त्रिनेत्रं त्रिशिरं रौद्रं त्रिहस्तं गुणवक्त्रकम्।
त्रिपादं वह्निनयनं भस्मकुण्डेति विग्रहम्॥
ताण्डवाडम्बरं भीमं रक्तपुष्पोपशोभितम्।
रक्षामन्त्रेश्वरं देवं ध्यात्वा शान्तिं लभेन्नरः॥

एवं ध्यात्वा विशेषेण भस्मनो धारणं कुरु।

ॐ श्रीनन्दिकेश्वराय नमः। ॐ वन्दितां श्रीसुरेन्द्रेण ब्रह्मणा शंकरेण च। अतस्त्वां पाहि नो देवि विभूतिर्भूतिदा भवेत्॥

ॐ अग्निरिति भस्म। ॐ जलमिति भस्म। ॐ स्थलमिति भस्म। ॐ वायुरिति भस्म। ॐ व्योमेति भस्म।

इन मन्त्रों से भस्म में जल डालकर मिलायें।

मनः सहितानि दशेन्द्रिययाणि भस्मानि सर्वाणि हव्याय नमः।

ॐ ईशानाय नमः। ॐ तत्पुरुषाय नमः। ॐ अघोराय नमः। ॐ वामदेवाय नमः। ॐ सर्वत्रसद्योजाताय नमः।

विभूति मन्त्रा – ॐ भूर्भुवः स्वः सोहं सद्योजातस्य। ॐ भ्रें भ्रें भ्रें भस्मांग सर्वाङ्गेश्वरिमयि हुं फट् स्वाहा।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
ॐ ऊर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षिय मामृतात्॥

ॐ नमः शिवाय। मन्त्र से भस्म को कर पुटित करके अभिमन्त्रित करें।

करसम्पुटं कृत्वा इत्यभिमन्त्र किञ्चिद् गृहीत्वा आपोहिष्ठेत्यापः सम्प्रोक्ष्य वामहस्तेन त्रिकोणमालिख्य षट्कोणं च तन्मध्ये बीजाक्षराणि लिखित्वा द्वादशवारं चाभिमन्त्र्य किञ्चिद् भूमौ विसृज्य। अथाम्बुना भस्मलोड्य दीप्तचण्डाय नमः। अंगुष्ठेन शिरसि प्रदक्षिणीकृत्य। ॐ नमो भगवते ब्रह्मणे नमः।

॥ पञ्चब्रह्मश्रुतिः॥

विनियोगः - ॐ ईशानमन्त्रस्य ईशानरुद्रो देवता, दुर्वासा ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, ईशान प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिः ब्रह्मा शिवो मेऽस्तु सदाशिव इति शिरसि।

विनियोग - ॐ तत्पुरुष मन्त्रस्य तत्पुरुषरुद्रो देवता, दधिचिऋषिर्देवी, गायत्रीछन्दः, तत्पुरुषप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

विनियोग - ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रयोदयात्। इति मध्यमुखे।

विनियोग - ॐ अघोरमन्त्रस्य अघोरऋषिः अघोररुद्रो देवता अनुष्टुप् छन्दः अघोर प्रसाद सिद्ध्यर्थ जपे विनियोगः।

ॐ घोर घोर महाघोर वज्रघोर प्राणघोर शिवघोर हुं फट् स्वाहा। ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः। इति दक्षिणमुखे।

विनियोग - ॐ वामदेव मन्त्रस्य वामदेवऋषिः, वामदेवरुद्रो देवता, त्रिष्टुप्छन्दः, वामदेवप्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ वामदेवाय नमः। ॐ ज्येष्ठाय नमः। ॐ श्रेष्ठाय नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ कालाय नमः। ॐ कलविकरणाय नमः। ॐ बलाय नमः। ॐ बलप्रमथनाय नमः। ॐ सर्वभूतदमनाय नमः। ॐ मनोन्मनाय नमः। इति पश्चिम मुखे।

विनियोग - ॐ सद्योजात मन्त्रस्य सद्योजातऋषिः, सद्योजातरुद्रो देवता, जगतीछन्दः, सद्योजातप्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि वै नमः भवे भवे नातिभवे भवस्य मां भवोद्भवाय

नमः। इति उत्तरमुखे।

अथवान्तरे सद्योजातमित्यर्थः। वामदेवाय नमः हृदये। अघोराय नमः नाभौ। तत्पुरुषाय नमः पादयोः। ईशानाय नमः शिरसि। एतानि तानि शिव मन्त्र पवित्राणि भस्मानि कामदहनांगभूषितानि। त्रिः पुण्ड्रकानि रचिता ललाटपटले पीतानि दैवलिखितानि द्विरक्षराणि ह्रीं ह्रीं व्यापकं च।

इन मन्त्रों से अङ्गों पर भस्म धारण करें। त्रिपुण्ड लगायें। ह्रीं ह्रीं से व्यापक न्यास करें।

श्रीकरं च पवित्रं च रोगदोष विनाशनम्।
लोके वशिकरं पुण्यं भस्मत्रैलोक्यपावनम्॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः हव्यवाहनाय नमः। पुन रपि न्यासो विधीयते।

करन्यास – ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास – ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

न्यास – नाभौ स्कन्दाय नमः। हृदये हव्यवाहनाय नमः। दक्षिणबाहुमूले रुद्राय नमः। दक्षिणबाहुमध्ये आदित्याय नमः। दक्षिणबाह्वाग्रे वसुभ्यो नमः। वामबाहुमूले वामदेवाय नमः। वामबाहुमध्ये शशिसूर्याभ्यां नमः। वामबाह्वाग्रे प्रभञ्जनाय नमः। कण्ठे नीलकण्ठाय नमः। कर्णयोर्द्वयोर्विरूपाक्षाय नमः। ललाटे ब्रह्मणे नमः। मूर्ध्नि परमात्मने नमः। अप्रगल्भे पशुपतये नमः। पृष्ठे हराय नमः। कटिप्रदेशे कालाग्निरुद्राय नमः। कुक्षौ सप्तसागराय नमः। शिश्ने प्रजापतये नमः। गुह्ये दीप्तचण्डाय नमः। जानुनोर्जाह्नव्यै नमः। कूर्मचक्रे वराहाय नमः। गुल्फयोः भैरवाय नमः। पादयोः वासुकिभ्यां नमः। पादाग्रे सर्वतीर्थेभ्यो नमः। सर्वाङ्गे सदाशिवाय नमः। भस्मोद्धूलित सर्वाङ्गे आपादतल मस्तके। रोमरोम भवेल्लिंगं स्वशरीरे शिवालये।

॥ फलश्रुति ॥

विभूतिर्निन्द्यते येन ब्राह्मणौ ह्यन्यजातिकः।
पतन्ति नरके घोरे यावद् ब्रह्माचतुर्मुखः॥
ते तावत् पतितो भूमौ भस्मानि परमाणव।

श्राद्धे यज्ञे जपे होमे वैश्वदेवे च कर्मणि ।
त्रिपुण्ड्रधारणेनैव सर्वकामफलं लभेत् ।
मध्यमानामिकाङ्गुष्ठैः क्रियामाणं त्रिपुण्ड्रकम् ॥
महाघोरकृतात् पापन्मुच्यते नात्र संशयः ।
त्रिपुड्रं ब्राह्मणो विद्वान् मनसापि न लंघयेत् ॥
श्रुत्वा विधीयते भस्म संत्यागी पतितो भवेत् ।
तस्मात् विसर्जयेत् सर्वंभस्मस्नानं समाचरेत् ॥
जलस्नानान् मलत्यागी भस्मस्नानात्सदा शुचिः ।
मन्त्रस्नानद्धरेत् पापं ज्ञानस्नानात् परंपदम् ॥
सर्वतीर्थेषु यत्पुण्यं सर्वयज्ञेषु यत्फलम् ।
तत्फलं समवाप्नोति भस्मस्नानान्न संशयः ॥
भस्मस्नाननात्परं तीर्थं गङ्गास्नानं दिनेदिने ।
भस्मरूपी शिवः साक्षाद् भस्म त्रैलोक्यपावनम् ॥
ॐ श्रीं ह्रीं विष्णुर्विष्णुः भस्मत्वं रक्षत्वम् ।
सर्वदातव्यं श्री उलटं भस्मस्त्वां फट् स्वाहा ।

॥ इति श्रीनन्दिकेश्वर पुराणोक्त कालाग्नि रुद्रोपनिषद् ॥

॥ अथ पञ्चवक्त्र (शिव) पूजनम् ॥

भगवान आशुतोष के पंचवक्त्र ब्रह्म स्वरूप पूजन में आवाहन, ध्यानक्रम एक तंत्रेण दिया गया है। तदुपरान्त पूजन एकतंत्रेण कर सकते है।.

श्वेत गंधाक्षत पुष्पों से नमस्कार करें, प्राण प्रतिष्ठा की हुई मूर्ति में आवाहन नहीं होता है अतः नाम मंत्र के साथ ध्यान करते हुये पूजन करें।

पश्चिमवक्त्र पूजा :— ॐ सद्योजातमित्यस्य जमदग्नि सद्योजातः ऋर्षि त्रिष्टुप छंद सद्योजातो देवता श्वेत वर्ण हंसवाहनं पश्चिमवक्त्रं पृथिवीतत्वं पश्चिमवक्त्र नमस्कारे पूजने विनियोगः।

ॐ सद्योजातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवानाम भवत्पुरोगाः ।
अस्य होतुः प्रदिश्यृतस्य वाचि स्वाहा कृत ठं हविरदन्तु देवाः ।।१ ।।

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ।
भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमो नमः ।।२।।

(गंधसिताक्षत श्वेत पुष्पैः) सद्योजाताय श्वेतवर्णाय हंसवाहनाय पश्चिम वक्त्राय पृथिवि तत्त्वाय सृष्टिरूपात्मने ब्रह्मणे नमः।

धेनुर्बाणमुद्रा प्रदर्शय

वामस्य मध्यमाग्रं तु तर्जन्यग्रे नियोजयेत् ।
अनामिका कनिष्ठां च तस्याङ्गुष्ठेन पीडयेत् ।
दर्शयेद् दक्षिण स्कंधे धनुर्मुद्रेयमीरिता ।।
दक्ष मुष्टिस्थतर्जन्या दीर्घया बाणमुद्रिका ।।

(इति बाणमुद्रा)

ध्यानम् :-

प्रलेयामलबिन्दु कुंद धवलं गोक्षीर फेनप्रभं
भस्माभ्यङ्गमनङ्गदेहदमन ज्वालावलीलोचनम् ।
ब्रह्मेन्द्रादि मरुद्गणैः स्तुति परैरभ्यर्चितं योगिभि–
र्वन्देऽहं सकलं कलंक रहितं स्थाणोर्मुखं पश्चिमम् ।।

ततः सद्योजातस्य कला देवता पूजनम् :—

ॐ ऋद्ध्यै नमः। ॐ सिद्ध्यै नमः। ॐ धृत्यै नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः। ॐ मेधायै नमः। ॐ कान्त्यै नमः। ॐ स्वधायै नमः। ॐ प्रभायै नमः।

अथोत्तरवक्त्रपूजा :— ॐ वाममद्येत्य च वामदेवायत्यस्य मंत्रस्त्रय भारद्वाज—वामदेव ऋषि, त्रिष्टुप जगती छंद, सविता—विष्णु देवता, गरुड़ वाहन नमस्कार पूजने विनियोगः।

ॐ वाममद्द्य सवितर्वाममुश्वो दिवे दिवे वामस्मभ्यः सावीः ।
वामस्य हि क्षयस्य देव भूरेरया धिया वामभाजः स्याम ।।१।।

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बल विकरणाय नमः ।।२।।

वामदेवाय कृष्णवर्णाय गरुड़ वाहनायोत्तर वक्त्रायापस्तत्वाय अमृतरूपात्मने विष्णवे नमः इति प्रणम्य पद्ममुद्रा प्रदर्शनम्।

करौतु संहता कृत्वासम्मुखावुन्नतांगुली ।
तलान्तर्मिलितांगुष्ठौ कुर्यादिवऽब्ज मुद्रिका ॥

(इति पद्ममुद्रा)

ध्यानम् –

गौरं कुंकुमपिङ्गलं सुतिलकं व्यापाण्डु गण्डस्थलं
भ्रू विक्षेप कटाक्ष वीक्षण लसत्संसक्त कर्णोत्पलम् ।
स्निग्धं बिम्बफलाधरं प्रहसितं नीलाल कालङ्कृतं
वन्दे पूर्ण शशाङ्क मण्डल निभ वक्त्रं हरस्योत्तरम् ॥

ततः त्रयोदश कला देवता पूजनम् :—

ॐ रजसे नमः। ॐ रक्षायै नमः। ॐ रत्यै नमः। ॐ पाल्यायै नमः। ॐ कामायै नमः। ॐ संजीविन्यै नमः। ॐ प्रियायै नमः। ॐ बुद्ध्यै नमः। ॐ क्रियायै नमः। ॐ धात्रै नमः। ॐ भ्रामर्यै नमः। ॐ मोहिन्यै नमः। ॐ ज्वरायै नमः।

अथ दक्षिणवक्त्र पूजा :— ॐ यातेरुद्र शिवेत्यस्य मंत्रस्य परमेष्ठि ऋषि अनुष्टुप छंद एको रुद्रो देवता तथा ॐ अघोरेभ्य इत्यस्य अघोरऋषि अनुष्टुप छंद रुद्रो देवता नीलवर्ण कूर्मवाहनं दक्षिणवक्त्रं तेजस्तत्वं नमस्कार पूजने विनियोगः।

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी ।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि ॥१॥
ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ।
सर्वेभ्य सर्व सर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररुपेभ्यः ॥२॥

ध्यानम् :-

कालाभ्र भ्रमराञ्चनाचल निभं व्यावृत्त पिङ्गेक्षणं
खण्डेन्दु द्वय मिश्रितांशु दशनाप्रोद् भिन्न दंष्ट्राङ्कुरम् ।

सर्प प्रोत कपाल शक्ति सकलं व्याकीर्णसच्छेखरं
वन्दे दक्षिणमीश्वरस्य कुटिलभ्रूभङ्गरौद्रं मुखम् ।।

नमस्कारं एवं ज्ञान मुद्रां प्रदर्शय।

ततौ अष्ट कलां प्रपूजयेत् – ॐ तमसे नम। ॐ मोहायै नमः। ॐ क्षयायै नमः। ॐ निद्रायै नमः। ॐ व्याधये नमः। ॐ मृतवे नमः। ॐ क्षुधायै नमः। ॐ तृषायै नमः।

अथ पूर्वक्त्र पूजा – ॐ यत्पुरुषमित्यस्य नारायण ऋषिः अनुष्टुप् छंदः जगद्बीजं पुरुषो देवता तथा तत्पुरुषायेत्यस्य तत्पुरुष ऋषिः गायत्री छंदः रुद्रो देवता पीतवर्णम् अश्ववाहनं पूर्ववक्त्रं वायु तत्वं पूर्ववक्र नमस्कार पूजने विनियोगः।

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरू पादा उच्येते ।।१।।
ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।।२।।

तत्पुरुषाय पीतवर्णाया ऽश्ववाहनाय पूर्ववक्राय वायुतत्वाय चैतन्यात्मने आदित्याय नमः । इति प्रणम्य कवच मुद्रां प्रदर्शय। (करद्वन्दांगुल्यो वर्मणिस्यु)

ध्यानम् -

सवर्त्ताग्नि तडित्प्रतप्त कनक प्रस्पर्द्धितेजोरुणं
गंभीर स्मृति निः सृतोग्र दशनप्रोद्भासिताम्राधरम् ।
बालेन्दु द्युति लोलपिङ्गल जटाभार प्रबद्धोरगं
वन्दे सिद्धसुरासुरेन्द्र नमितं पूर्व मुखं शूलिनः ।।

अथ कला पूजनम् – ॐ निवृत्यै नमः। ॐ प्रतिष्ठायै नमः। ॐ विद्यायै नमः। ॐ शांत्यै नमः।

अथोर्ध्ववक्त्रपूजा – ॐ तमीशानमित्यस्य गौतम ऋषिः जगती छंदः ईशानो देवता तथा ॐ ईशान इत्यस्य ईशान ऋषिः अनुष्टुप छंदः रुद्रो देवता गोक्षीरवर्णं वृषभवाहनं आकाश तत्वं उर्ध्ववक्त्र नमस्कार

पूजने विनियोग:

ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियान् जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसा मसदवृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ।।१।।
ॐ ईशानः सर्वविधानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति
र्ब्रह्मणोधिपतिः ब्रह्मा शिवो मे ऽ अस्तु सदाशिवोम् ।।२।।

ध्यानम् –

व्यक्ताव्यक्त गुणोत्तरं सुवदनं षट्त्रिंशतत्वाधिकं
तस्मादुत्तर तत्वमक्षयमिति ध्येयं सदा योगिभिः ।
वन्दे तामसवर्जितेन मनसा सूक्ष्माति सूक्ष्मं परं शान्तं
पञ्चममीश्वरस्य वदनं खव्यापि तेजोमयम् ।।

ततः पञ्चकला पूजनम् – ॐ शशिन्यै नमः। ॐ अङ्गदायै नमः। ॐ इष्टायै नमः। ॐ मरीच्यै नमः। ॐ ज्वालिन्यै नमः।

अथ यथायथोपचारैन पंचवक्त्र पूजनम् (एक तंत्रेण)

पश्चिमवक्त्र पूजा – गंध मनशिला चन्दन श्वेताक्षतपुष्प गुग्गुलु धूप घृत दीप पायस नैवेद्यादिभिः पूजनम् । एवं प्रार्थयेत्

शुभ्रं त्रिलोचनं नाम्ना सद्योजातं शिवप्रदम् ।
शुद्ध स्फटिक संकाशं वन्देऽहं पश्चिमं मुखम् ।।

उत्तरवक्त्र पूजा – हरिचन्दन तुलसीशतपत्र(मंजरी) पुष्प पंचसौगंधिक धूप घृत पक्कगोधूमान्न नैवेद्याभिः पूजनम्। एवं प्रार्थयेत् –

वामदेवं सुवर्णाभं दिव्यास्त्रगण सेवितम् ।
अजन्मानमुमाकान्तं वन्देऽहं ह्युत्तरं मुखम् ।।

दक्षिणवक्त्र पूजा – कृष्णागरु चन्दन नीलोत्पल करवीरपुष्प सितागरु धूप माषान्न नैवेद्यादिभिः पूजनम्। एवं प्रार्थयेत्–

नीलाभ्रवर्णमोकारमघोरं घोरदंष्ट्रकम् ।
दंष्ट्राकराल मत्युग्रं वन्देऽहं दक्षिणं मुखम् ।।

पूर्ववक्त्र पूजा – हरिताल चन्दन दुर्वांकुरार्कपुष्पान्यतर पुष्प कृष्णागरु धूप मोदक नैवेद्यादिभिः पूजनम्। एवं प्रार्थयेत–

बालार्कवर्णमारक्तं पुरुषं च तडित्प्रभम्।
दिव्यं पिङ्गजटाधारं वन्देऽहं पूर्वदिङ्मुखम्॥

उर्ध्ववक्त्र पूजा – भस्म चन्दन बिल्वपत्र कनकपुष्प ऋतु भवान्य पुष्प हरिचन्दन धूप शर्करा दध्योदन नैवेद्यादिभिः पूजनम्। एवं प्रार्थयेत्–

ईशानं सूक्ष्ममव्यक्तं तेजः च पुञ्जपरायणम्।
अमृतस्त्रावि चिद्रूपं वन्देऽहं पंचमं मुखम्॥

इति पवक्त्र पूजां कृत्वा देवस्यवामभागे शक्ति पूजनम् - ॐ उमायै नमः। ॐ शंकर प्रियायै नमः। ॐ पार्वेत्यै नमः। ॐ गौर्यै नमः। ॐ काल्यै नमः। ॐ कालिन्द्यै नमः। ॐ कोटर्यै नमः। ॐ विश्वधारिण्यै नमः। ॐ ह्रां नमः। ॐ ह्रीं नमः। ॐ गंगादेव्यै नमः।

ततः ॐ गणपतये नमः। ॐ कार्तिकाय नमः। ॐ पुष्पदंताय नमः। ॐ कपर्दिने नमः। ॐ भैरवाय नमः। ॐ शूलपाणये नमः। ॐ ईश्वराय नमः। ॐ दण्डपाणये नमः। ॐ नंदिने नमः। ॐ महाकालाय नमः।

॥ इति संपूज्य॥

ततः एकादश रुद्रार्चनम् -

ॐ अघोराय नमः। ॐ पशुपतये नमः। ॐ शर्वाय नमः। ॐ विश्वरूपिणे नमः। ॐ त्र्यम्बकाय नमः। ॐ कपर्दिने नमः। ॐ विरूपाक्षाय नमः। ॐ भैरवाय नमः। ॐ शूलपाणयै नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ महेश्वराय नमः।

ततो रुद्राभिषेकं कृत्वा। शुद्धोदक स्नान वस्त्रोपवित गंधाक्षत पुष्पाणि समर्प्य। बिल्वपत्रार्पणं कुर्यात्। तदनंतर सौभाग्यद्रव्य धूप दीप नैवेद्य ताम्बूल दक्षिणा आर्तिक्य प्रदक्षिणा मंत्र पुष्पांजली विशेषार्घाद्युपचारान् समर्प्य।

राजोपचारे - (*यथा*)

छत्रं च चामरं चैव व्यञ्जनं दर्पण तथा ।

पादुकानि च सर्वाणि गृह्यतां परमेश्वर ।।

(अभावे कल्पयामि)

।। इति पंचवक्त्र पूजा विधानम्।।

।। अथ अष्टादशरेखात्मक चतुर्लिंगतोभद्र मण्डल ।।

(व्रतोद्यापान चन्द्रिकानुसारेण)

(१). *पूर्वलिंगेषु* — (अधः, मध्य, अग्रभागे) वीरभद्राय नमः वीरभद्र आ. स्था.। (१) शंभवे नमः शंभु आ. स्था.। (२) अजैकपदे नमः अजैकपाद आ. स्था.। (३) *दक्षिणलिंगेषु* — अहिर्बुध्न्याय नमः हिर्बुध्न्य आ. स्था. । (४) पिनाकनये पिनाकिन आ. स्था.। (५) शूलपाणये नमः शूलपाणि आ. स्था.। (६)

पश्चिम लिंगेषु — भुवनाधीश्वराय नमः भुवनाधीश्वर आ. स्था.। (७) कपालिने नमः कपालिन आ. स्था.। (८) दिकपतये नमः दिकपतिं आ. स्था.। (९)

उत्तर लिंगेषु — रुद्राय नमः रुद्र आ. स्था.। (१०) शिवाय नमः शिव आ. स्था.। (११) महेश्वराय महेश्वर आ. स्था.। (१२)

चतुष्पद वल्यकाम् हरितखंडे ईशानाद्याष्ट दिक्षु — असितांग भैरवाय नमः असितांग भैरव आ. स्था.। (१३) रुरुभैरवाय रुरुभैरव आ. स्था.। (१४) चण्डभैरवाय नमः चण्डभैरव आ. स्था.। (१५) क्रोध भैरवाय नमः क्रोध भैरव आ. स्था.। (१६) उन्मत्त भैरवाय नमः उन्मत्त भैरव आ. स्था.। (१७) काल भैरवाय नमः काल भैरव आ. स्था.। (१८) भीषण भैरवाय नमः भीषण भैरव आ. स्था.। (१९) संहार भैरवाय नमः संहार भैरव आ. स्था.। (२०)

३. *शृंखला समीपे त्रिपद पीतवल्ल्याम् ईशानाद्यष्ट दिक्षु चतुर्विंशति*

देवता – भवाय नमः भवाय आ. स्था.। (२१) शर्वाय नमः शर्वं आ. स्था.(२२)। रुद्राय नमः रुद्रं आ. स्था.(२३)। पशुपतये नमः पशुपतिं आ. स्था.(२४)। महते नमः महन्तं आ. स्था.। (२५) भीमाय नमः भीमं आ. स्था.(२६)। ईशानाय नमः ईशानं आ. स्था.(२७)। अनंताय नमः अनंतं आ. स्था.(२८)। तक्षकाय नमः तक्षकं आ. स्था.(२९)। वासुकये वासुकिं आ. स्था.(३०)। कुलीशकाय नमः कुलीशं आ. स्था.(३१)। कर्कोटकाय नमः कर्कोटकं आ. स्था.(३२)। शंखपालाय नमः शंखपालं आ. स्था.(३३)। कंबलाय नमः कंबलं आ. स्था.(३४)। अश्वतराय नमः अश्वतर आ. स्था.(३५)। शूलिने नमः शूलिनं आ. स्था.(३६)। चन्द्रमौलये नमः चन्द्रमौलिं आ. स्था.(३७)। चन्द्रमसे नमः चन्द्रमसं आ. स्था.(३८)। वृषभध्वजाय नमः वृषभध्वज़ं आ. स्था.(३९)। त्रिलोचनाय नमः त्रिलोचनं आ. स्था.(४०)। शक्तिधराय नमः शक्तिधरं आ. स्था.(४१)। महेश्वराय नमः महेश्वरं आ. स्था.(४२)। शूलधारिणे नमः शूलधारिणं आ. स्था.(४३)। स्थाणवे नमः स्थाणुं आ. स्था.(४४)।

४. *मध्येकार्णिकायाम्* – ब्रह्मणे नमः ब्राह्मण आ. स्था.(४५)। (उत्तर शिवलिंगस्याधः) सोमाय नमः सोमं आ. स्था.(४६)। ईशान्यां खण्डेदो – ईशानाय नमः ईशानं आ. स्था.(४७)। (पूर्वालिंगस्याधः) इंद्राय नमः इंद्रं आ. स्था.(४८)। आग्नये खंडेदौ – अग्नेये नमः अग्निं आ. स्था.(४९)। (दक्षिण लिंग स्याधः) यमाय नमः यमं आ. स्था.(५०)। नैर्ऋत्यां खंडेदौ – निर्ऋत्यये नमः निर्ऋत्यं आ. स्था.(५१)। पश्चिम लिंगास्याध – वरुणाय नमः वरुणं आ. स्था.(५२)। वायव्यां खण्डेदौ – वायवे नमः वायुं आ. स्था.(५३)।

५. *अष्टरक्तभद्रे* – वायुसोमयोर्मध्ये – अष्टवसुभ्यो नमः अष्टवसुं आ. स्था.(५४)। सोमेशानयोर्मध्ये – एकादशरुद्रेभ्यो एकादशरुद्रान् आ. स्था.(५५)। ईशानेन्द्रयोर्मध्ये – द्वादशादित्येभ्यो नमः द्वाशादित्यान् आ. स्था.(५६)। इन्द्राग्नेयोर्मध्ये – अश्विभ्यां नमः अश्विनौ आ. स्था.(५७)। अग्नियमयोर्मध्ये – विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः विश्वदेवान् आ. स्था.(५८)। यमनिर्ऋत्योर्मध्ये – सप्तयक्षेभ्यो नमः सप्तयक्षान् आ. स्था.(५९)।

निर्ऋत्यवरुणयोर्मध्ये – भूतनागेभ्यो नमः भूतनागान् आ. स्था.(६०)। वरुणवायव्योर्मध्ये – गंधर्वाप्सरोभ्यो नमःगंधर्वाप्सरसः आ. स्था.(६१)।

६. *उत्तरलिंगस्याधः* – स्कंदाय नमः स्कंद आ. स्था.(६२)। तत्रैव – नन्दीश्वराय नमः नन्दीश्वर आ. स्था.(६३)। *तत्रैव* – शूलमहाकालाभ्यां नमः शूलमहाकाल आ. स्था.(६४)।

ब्रह्मेशानयोर्मध्ये शृंखलायाम् – दक्षादि सप्तकाय नमः दक्षादि सप्तकान् आ. स्था.(६५)। *पूर्वलिंगस्याधः* – दुर्गायै नमः दुर्गा आ. स्था.(६६)। *तत्रैव* – विष्णवे नमः विष्णुं आ. स्था.(६७)।

ब्रह्माग्नयोर्मध्यो शृंखलायाम् – स्वधायै नमः स्वधा आ. स्था. (६८)। *दक्षिणलिंगस्यधः* – मृत्युरोगाभ्यां नमः मृत्युरोगौ आ. स्था.(६९)। *ब्रह्म निर्ऋत्योर्मध्ये शृखलायाम्* – गणपतये नमः गणपतिं आ. स्था.(७०)। *पश्चिमलिंगास्याधः* – अद्भ्यो नमोऽपः आ. स्था.(७१)। *ब्रह्मवायोर्मध्ये शृखलायाम्* – मरुद्भ्यो नमः मरुतः आ. स्था.(७२)।

७. *ब्रह्मणः पादमूले कर्णिकायाम्* – पृथिव्यै नमः पृथिवीं आ. स्था.(७३)। तत्रैव – गंगादिनदीभ्यो नमः गंगादिनदीः आ. स्था.(७४)। सप्तसागरेभ्यो नमः सप्तसागरान् आ. स्था.(७५)। ब्रह्मणो मस्तके कर्णिकोपरि – मेरवे नमः मेरुम् आ. स्था.(७६)।

८. *उद्क्लिंगे* – सद्योजाताय नमः सद्योजात आ. स्था.(७७)। प्राच्यालिंगे वामदेवाय नमः वामदेव आ. स्था.(७८)। *दक्षिणलिंगे* – अघोराय नमः अघोर आ. स्था.(७९)। *प्रतीची लिंगे* – तत्पुरुषाय नमः तत्पुरुषाय आ. स्था.(८०)। कर्णिकायां मेरुपरि ईशानाय नमः ईशान आ. स्था.(८१)।

९. *मध्य परिधौ (पीतवर्णे षोडश पदे)* – परिधवे नमः परिधि आ. स्था.(८२)। मेरोः परिधि – समंतात् लिंगानां स्कन्धे विशांति रक्त कोष्ठेषु (पंचपदा प्रीतकोणेषु) –चतुः पुरीभ्यो नमः चतुश्पुरीः आ. स्था.(८३)। आग्नेयादिषु त्रिपद कोणेषु शृखला शिरसि – ऋग्वेदाय नमः ऋग्वेद आ. स्था.(८४)। यजुर्वेदाय नमः यजुर्वेद आ. स्था.(८५)। सामवेदाय नमः

सामवेद आ. स्था.(८६)। अथर्वेदाय नमः अथर्ववेद आ. स्था.(८७)।

१०. *उत्तरलिंगास्य दक्षिणवापीमारभ्य वामवापी पर्यन्तासु पंचदा वाप्यां* - भवाय नमः भवाय आ. स्था.(८८)। शर्वाय नमः शर्व आ. स्था. (८९)। पशुपतये नमः पशुपतिं आ. स्था.(९०)। ईशानाय नमः ईशान आ. स्था.(९१)। उग्राय नमः उग्रम् आ. स्था.(९२)। रुद्राय नमः रुद्रं आ. स्था. (९३)। भीमाय नमः भीम आ. स्था.(९४)। महते नम महान्तम् आ. स्था. (९५)।

११. *वापीसमीपस्थैकैकपद्देषु पीतवर्णेषु क्रमशः* – भवान्यै नमः भवानीं आ. स्था.(९६)। शर्वाण्यै नमः शर्वाणीं आ. स्था.(९७)। पशुपत्यै नमः पशुपतिं आ. स्था.(९८)। ईशान्यै नमः ईशानीं आ. स्था.(९९)। उग्रायै नमः उग्राम् आ. स्था.(१००)। रुद्राण्यै नमः रुद्राणीं आ. स्था.(१)। भीमायै नमः भीमां आ. स्था.(२)। महत्यै नम महातीं आ. स्था.(३)।

१२. *पूर्वादिक्रमेण परिधि समीपे* – (पूर्वे) ॐ पृथ्वी तत्वाय नमः आ. स्था.(४)। (दक्षिणे) जलतत्वाय नमः आ. स्था.(५)। (पश्चिमे) तेजस्तत्वाय नमः आ. स्था.(६)। (उत्तरे) वायुतत्वाय नमः आ. स्था.(७)। मध्ये – आकाश तत्वाय आ. स्था.(८)।

१३. *बाह्यश्वेत परिधौ उत्तरतः सोमारभ्य वायुपर्यन्तमायु* ६ *ान्नि* – गदायै नमः गदा आ. स्था.(९)। त्रिशूलाय नमः त्रिशूलम.(१०)। वज्राय नमः वज्रम.(११)। शक्तये नमः शक्तिं.(१२)। दण्डाय नमः दण्डम्. (१३)। खड्गाय नमः खड्गं.(१४)। पाशाय नमः पाशम्.(१५)। अंकुशाय नमः अंकुशं.(१६)।

१४. *तद्बाह्ये रक्तपरिधौ उत्तरतः क्रमेण* – गौतमाय नमो गोतमं आ. स्था.(१७)। भारद्वाजाय नमो भारद्वाजं.(१८)। विश्वामित्राय नमा विश्वमित्रं.(१९)। कश्यपाय नमः कश्यपं आ. स्था.(२०)। जमदग्नये नमः जमदग्निं आ.(२१)। वशिष्ठाय नमो वशिष्ठ.(२२)। अत्रये नमो ऽत्रयिम्. (२३)। अरुंधत्यै नमो ऽ रुन्धतीम्. आ. स्था.(२४)।

१५. *तद्बाह्ये कृष्ण परिधौ उत्तरतः क्रमेण* – ऐन्द्र्यै नमः ऐन्द्रीं आ.(२५)। कौमार्यै नमः कौमारीं.(२६)। ब्राह्म्यै नमो ब्राह्मीं.(२७)। वाराह्यै नमः वाराहीं आ.(२८)। चामुण्डायै नमः चमुण्डां आ.(२९)। वैष्णव्यै नमः वैष्णवीं आ.(३०)। माहेश्वर्ये नमो माहेश्वरीं आ.(३१)। विनायिक्यै नमो वैनायिकीं आ. स्था.(३२)।

।। एताः चतुर्लिंगतो भद्र मंडल देवता सुप्रतिष्ठताः वरदा भवन्तु ।।

॥ अथ नीलकण्ठ स्तोत्रम् ॥

यह बडवानल नीलकण्ठ स्तोत्र रोग, सङ्कट, ग्रहपीड़ा, भूतप्रेतादि दोष तथा विष योग को नष्ट करता है। शत्रुओं के षडयन्त्र को नष्ट करता है।

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

ॐ नीलकण्ठं जगन्नाथं निर्मलानन्दविग्रहम् ।
हृदिध्यात्वा प्रवक्ष्यामि यन्त्रसिद्धत्वमेव च ॥
नमस्ते नीलकण्ठाय सर्वमन्त्रविशारदः ।
नीलकण्ठास्त्रविद्या च अथर्वणशिरः शिखा ॥
वद मे करुणासिन्धो कृतसर्वोपकारकम् ।
सर्वमन्त्रमयीविद्या सर्वशास्त्रार्थमेव च ॥
क्षेत्रसिद्धिप्रदं मन्त्रमाद्यानां क्षिप्रसिद्धिदम् ।
अपि रोगघ्नविद्या च अद्भुतं शुभदायकम् ॥
षट्कर्मसिद्धिदांविद्या वषट्कारात्मको मनुः ।
वडवानलमन्त्रेषु अस्त्राणां वडवानलैः ॥
अथर्वणमहाविद्या मन्त्रराजेषु भूतले ।
एतत् विद्या समं देवि नास्तीत्युक्त्या पुनः पुनः ॥
सर्वविद्यां पदं स्वामिन् ममापेक्षा च वर्तते ।

॥ श्रीईश्वरोवाचः॥

साधु साधु महादेवि सर्वमन्त्रविशारदे ।
एतदधारिणीविद्या महासिद्धिप्रदायिका ॥

विनाभूशुद्धिभूतं च विनाकर्म कलौ युगे ।
न्यासध्यानं विनां देवि सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥
अथर्वणास्त्रं तृतीयंनीलकण्ठश्चचतुर्थकम् ।
एकविंशत् समायुक्तं एतते वडवानलम् ॥
अथर्वणास्त्रशिरसि नीलकण्ठशिखामनुः ।
साधकस्तु जपेत् सिद्धिः सार्वभौमवरप्रदाम् ॥
सर्वदा सर्वरोगघ्नीं सर्वदा भयनाशिनीम् ।
सर्वदा क्रूरसर्पादिभयं नास्तीति साधके ॥
चौरादिराजराजादिभयं किचिन्न विद्यते ।
बालग्रहपिशाचादि मन्त्राणामभिमन्त्रितम् ॥
नीलकण्ठास्त्रमन्त्रेण बालानां रोगनाशनम् ।
सद्यो विमुक्ती रोगाणां त्रिवारं मन्त्रितं बुधैः ॥
त्रिवारं मन्त्रितं भस्मयाचयेदुष्णवारिणा ।
एवं ज्वरादयः सर्वेकार्यलाघवगौरवात् ॥
त्रिदिनं पञ्चरात्रं वा ज्वरशान्तिर्भविष्यति ।
नानारोगांश्चोदरस्थान् गुल्मानि बहुलानि च ॥
स्पृष्टवा मन्त्रेण मन्त्रैर्वा सप्तहाच्छान्तिमाप्नुयात् ।
चन्द्रसूर्योपरागेषु लक्ष्मीसर्वेषु साधकः ॥
पुरश्चर्या प्रकुर्वीत मन्त्रसिद्धिर्भवेन्नरः ।
अथवा कार्तिके मासे माघवैशाखमासयोः ॥
पुरश्चर्या विधानेन जपसिद्धिमवाप्नुयात् ।
येनेदं नीलकण्ठास्त्रं महाविद्यां च साधकः ॥
सर्वदा विचरेद्देवी जपेन्मन्त्रं महामनुः ।
यं यं वापि स्मरेच्छान्ति तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ॥
मालामन्त्रमहाविद्या नीलकण्ठास्त्रमेव च ।
पुत्राय च सशिष्याय दातव्यं नात्र संशयः ॥

विनियोग – ॐ अस्य श्रीमहानीलकण्ठ अथर्वणः शिरः। शिखा वडवानल

नीलकण्ठास्त्र महामन्त्रस्य अथर्वण ऋषिः, नानाछन्दांसि, श्रीमहा नीलकण्ठोरुद्रो देवता, ह्रीं बीजं, सः शक्तिः, ग्लौं कीलकं, श्रीनीलकण्ठ वर प्रसाद प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

न्यास – अथर्वणऋषये नमः शिरसि। नानाछन्दोभ्यो नमः मुखे। श्रीमहा नीलकण्ठोरुद्रो देवतायै नमः हृदि। हुं बीजाय नमो गुह्ये। सः शक्तये नमः पादयोः। ग्लौं कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कराङ्गन्यास – ॐ ह्रां वडवानलास्त्राय नीलकण्ठास्त्राय अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं अथर्वणशिखा नीलकण्ठास्त्राय तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं कालरुद्राय नीलकण्ठास्त्राय मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं नीलकण्ठास्त्राय अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं व्योमव्यापिने हिरण्ययाय नीलकण्ठास्त्राय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः अनेक ब्रह्माण्ड नीलकण्ठास्त्राय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास – ॐ ह्रां वडवानलास्त्राय नीलकण्ठाय हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं अथर्वण शिखानीलकण्ठास्त्राय शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं कालरुद्राय नीलकण्ठाय शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं नीलकण्ठास्त्राय कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं व्योमव्यापिने हिरण्याय नीलकण्ठास्त्राय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अनेक ब्रह्माण्डाय नीलकण्ठास्त्राय अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

बाणं कालान्तकालं ह्यभयवरकरं सोमसूर्य्याग्निनेत्रम् ।
कालं कालाग्निरुद्रं त्रिपुरहरमहामन्मथं दह्यमानम् ॥
खड्गं खेटं पिनाकं सपरशुडमरूभिन्दिपालं त्रिशूलम् ।
घोरास्त्रं पञ्चवक्त्रं गलनिहितगरं नीलकण्ठ भजेऽहं ॥

॥ मानस पूजनम् ॥

अथर्वणास्त्रमन्त्र च वडवानलनामकम् ।
नीलकण्ठास्त्रविद्याख्यं मन्त्ररूपं हृदि स्मरेत् ॥
कोटिसूर्यप्रतीकाशं ताण्डवप्रलयाकृतिम् ।
भस्मीकृतजगद् व्याप्तं विग्रहं च समाश्रये ॥
मृत्युघ्नं पापदमनं घृतानाममृतप्रदम् ।
सुधामयं नीलकण्ठमस्त्ररूपं हृदि स्मरेत् ।
एवं विकालप्रयोगं प्रजपेत् साधकोत्तमः ।

सर्वार्थसिद्धिः पठनात् तेजोवृद्धिकरं परम् ॥

मानस पूजन करें -

ॐ लं पृथिव्यात्मकं नीलकण्ठाय नमः, गन्धं समर्पयामि। हं आकाशात्मकं नीलकण्ठाय नमः, पुष्पं समर्पयामि। यं वाय्वात्मकं नीलकण्ठाय नमः, धूपम् समर्पयामि। रं अग्न्यात्मकं नीलकण्ठाय नमः, दीपम् समर्पयामि। वं अमृतात्मकं नीलकण्ठाय नमः, नैवेद्यम् समर्पयामि। सं सर्वात्मकं नीलकण्ठाय नमः, ताम्बूलं समर्पयामि।

॥ माला मन्त्रः ॥

ॐ आं ह्रीं ग्लौं ऐं क्लीं सौं श्रीं स्त्रां क्षां क्षां वं क्रौं एहि एहि महानीलकण्ठाय परमितवक्त्राय आविर्भूत चतुर्दशभुवनाय अण्डज पिण्डज उद्भिजजरायुज अन्तर्यामिने पञ्चवक्त्राय पञ्चाननाय उमावराय वृषभवाहनाय भस्मोद्धूलितविग्रहाय भाललोचनाय परमहंसाय पञ्चतत्त्वस्वरूपाय पञ्चाग्निमयाय पद्मबाणान्तकाय तत्पुरुषाय घोर घोर सद्योजात वामदेवेशाय अनादि पञ्चब्रह्माण्डाय अष्टमूर्तये सृष्टिरक्षण संहार तत्पराय रक्षोगण निकृन्ताय लक्ष्मीवरसखाय त्रिपुरान्तकाय त्र्यम्बकाय त्रिदश पूजिताय त्रिनेत्राग्निमयाय त्रयीपुष्करात्मिकाय ज्वलस्वरूपाय जगज्जनकाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः ग्लां ग्लीं ग्लूं ग्लौं ग्लं ग्लः झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रैं झ्रौं झ्रः छ्रां छ्रीं छ्रूं छ्रैं छ्रौं छ्रः रां रीं रूं रैं रौं रः रवि कोटि प्रभाय रजोगुण दूराय कैलाशवासिने करुणाकराय कन्दर्पकोटी कान्तियुक्ताय युगान्तकाय प्रलयरुद्राय कामिक फलप्रदाय कलिन्दराय एकमूर्ति द्विमूर्ति त्रिमूर्ति चतुमुर्ति पञ्चमूर्ति मयाय पञ्चवक्त्राय पञ्चदर्शन करुणाय लोकान्विताय अनन्त ब्रह्माण्ड मयाय काल ब्रह्मेश्वराय अवरलवर अन्धकासुर संहारकारिणे अमित पराक्रमाय तारकासुर निरनाशकाय वडवानल नीलकण्ठाय स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर परम कारुणीकाय घोर घोरतर तनुरूप तत्त्वात्मिकाय चट चट प्रचट प्रचट परमहंस निर्वापणाय कह कह यम यम बम बम गंगाधराय बन्धय बन्धय घातय घातय मङ्गल प्रदाय प्रदाय वीर यु क ए इ ल ह्रीं कालरूपधराय ह स क हल ह्रीं सच्चिदानन्दाय सकल ह्रीं ह्रीं ह्रीं नित्यमुक्ति प्रियाय एकाहिक द्वाहिक त्र्याहिक चातुर्थिक पक्ष ज्वर मासिकज्वर साम्वत्सरिकज्वर सर्वज्वरान् नाशय नाशय वातरोग स्वासरोग पैत्रकरोग श्लेष्मरोगान् हर हर यू क्रिमी ज्वरान् नाशय नाशय पिशाचादीन् निकृन्तय निकृन्तय आविर्भूतानन्त ब्रह्माण्डकाय विश्वमयाय

सास्वतहिरामग्राय ह्ु ह्रं ह्रूं कृतभस्मोद्धूलित सर्वोत्तम किङ्किणींरव महाशङ्कराय उमार्द्धदेहाय चन्द्रशेखराय नानाविषं सर्वविषं हर हर शमय शमय निर्विषं दन्तीविषं धत्तूरविषं कृत्रिमविषं शमय शमय प्रधान अमृतं नीलकण्ठाय आवेश आवेश स्फुर स्फुर सूर्य शशांकाय चन्द्रकोटि सुशीतलाय सान्द्र सिन्दूरमयाय आं ह्रीं क्रों कालरुद्राय करुणाकराय हर विषं हर रोगान् हर निकृन्तनाय कृत्रिमान् निर्नाशय निर्नाशय ग्रह निग्रह अनुग्रहान शमय शमय शान्तिं कुरु कुरु प्रारब्ध संचित क्रियमाणान् नाशय नाशय अकारण बान्धवाय अनवरत लक्षणैक कटाक्ष परायणाय सर्वसिद्धि प्रदाय चिन्तित मनोरथ सुन्दराय आनन्द परायणाय मां रक्ष रक्ष शत्रून् द्वेषकान् किल्विषासाद्रसोदुर्मपाय आं ह्रीं क्रां हुं कालरुद्राय करुणाकराय कृत्रिमधारकान् शत्रून् क्षुद्धौघधरान् भस्मी कुरु कुरु असुयापरान् निकृन्तय परमन्त्र परयन्त्र परतन्त्र चेटक परवाक्कटु परजपहोम कृत अभिचारान् नाशय नाशय स्वमन्त्र स्वयन्त्र स्वतन्त्र स्वकृत प्रयागान् प्रकाशय प्रकाशय मे मनोरथान् क्षिप्रं सफलं कुरु कुरु सर्वजगन्मयाय स्वतन्त्र स्वमन्त्र स्वयन्त्र मयाय सर्वाङ्गं सकल वैद्यकार्चे यशावराधनेकादितन्त्र स्वरूपाय पञ्चवक्त्र वडवानलाय नीलकण्ठाय एहि एहि आगच्छ आगच्छ सुहृदयकमल आहितोभव संस्थापिता भव सर्वतोमुख सदाशिवाय सर्वाय मकर किरीट कोटि कान्त्यालंकृताय पाद पद्माय आं ह्रीं क्रों वडवानल प्रलयाग्नि अथर्वणास्त्र नीलकण्ठाय ममैव हृदये सदा स्फुर स्फुर प्रलयानल घोर घोरतर तनुरूप चट चट प्रचट प्रचट वं वं नीलकण्ठाय वडवानल अथर्वणास्त्ररूपिणो वरदाभयक्षिप्रप्रसन्नो भव मम कायिक वाचिक मानसिक सिद्धि देहि देहि हुं हुं आं हां वं ॐ क्रों अमृत नीलकण्ठाय मम हृदये वशं मम काल मृत्युर्विनाशनं कुरु अपमृत्यु निर्दलनं कुरु अपमृत्युं प्रधान् अमृत नीलकण्ठाय मम शरीरे अमृतं कुरु कुरु अत्यन्त लक्ष्मीसरस्वती निदानं कुरु कुरु ममैव कर स्पर्शान् नाना रोगान् नाशय नाशय भूत प्रेत पिशाच ब्रह्मराक्षस शाकिनी डाकिनी रुद्रपिशाचान् अनेक भूत प्रेत पिशाचान् पलायनं कुरु मम मनसा स्मरण मात्रेण दारिद्रं विदारित विग्रहस्थस्य अपरमितैश्वर्य प्रसन्नं कुरु कुरु वाक्सिद्धिं देंहि नीलकण्ठ नवनाथाय चतुरशीतिसिद्धैः सदा पूजितचरणकमलाय चर्चित चिद्रूपाय निवारसूकररूपाय चिनानन्द ज्ञान भक्ति वैराग्य प्रदाय मम हृदये आवेशय सदानन्द सर्वकामित सर्वज्ञ आगतानागता ज्ञानवान् कुरु कुरु चतुष्षष्ठिविद्या प्रवीणां कुरु कुरु आँ ह्रां ऐं ग्लों झ्रां क्लीं श्रीं ह्रीं क्रों सद्यः सकलविद्याप्रदा नीलकण्ठाय वद वद वाग्विद्वासं मां कुरु कुरु प्रचण्ड ब्रह्माण्ड

परिपूरित विद्या नीलकण्ठ वाग्विलास चण्डवान् कुरु कुरु क्रों ऐं ह्रूं स्त्राँ आँ उल्लसत्तटि नीलकण्ठाय उत्कृष्ट फलप्रदाय उमार्धशरीराय उत्तरोत्तर चिरकाल महादारिद्र अंधकार निलयवन्तं निर्मलैश्वर्यनिदा नित्यानन्द लक्ष्मी सारस्वतं कुरु कुरु लक्ष्मीतत् पदाम्बुज लक्ष्मीप्रद नीलकण्ठ मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् सद्योदारिद्रवन्तं कुरु कुरु अत्यन्त रोगजाड्य पीठान् कुरु कुरु शत्रून् विद्यान् शमदमादि शान्ति गुणप्रदाय परम अचरलैक महामहानीलकण्ठाय खण्डतं वैदि दण्ड प्रचण्ड दोर्दण्ड पिण्डि कृत वैरि मण्डलाय अमर पुण्डरीक सखाय द्रां द्रीं द्रुं द्रैं द्रौं द्रः ढक्कावाद्य प्रियाय नरकपाल हस्ताय शाश्वतकीर्तये सहस्त्रभुजाय सर्व मन्त्र सिद्धिं कुरु कुरु अयुतभुजाय आयुतार्णवाय आयुष्मन्तं कुरु कुरु नीलकण्ठाय सततं मम हृदये चिन्तित मनोरथ सिद्धिं कुरु कुरु चिदानन्दकान् कुरु कुरु पञ्चवक्त्र शतवक्त्र सहस्त्रवक्त्र अयुतवक्त्र अनन्तवक्त्र अनन्तानन्तभुज अनंतभुजब्रह्माण्ड परिपूर्ण विराट्रूपाय विश्वतोमुख विश्वरूपाक्ष ॐ क्लीं ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा रूपं महापशुपतास्त्राय। ह्रां ह्रीं क्लीं ऐं ग्लौं श्रीं ह्रीं क्रौं संमोहनाय महापशुपतास्त्राय बडवानल नीलकण्ठास्त्रा एहि एहि आगच्छ आगच्छ स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर प्रलयानल घोरतर तनुरूपाय चट चट प्रचट प्रचट सम्मोहनाय सदा मां रक्ष रक्ष मम हृदये सदा स्थिरो भव वरप्रदो भव साक्षात्कार सिद्धिप्रदो भव चर्मचक्षुष्क दर्शन्प्रदोभव सिद्धि महाथर्वणास्त्राय प्रलयानल मृत्युञ्जय प्रसन्न सम्मोहन पाशुपत दर्शय दर्शय सहशत्रु मन्त्र खणुन विषंध्वंशनवीर घोरनीलकण्ठास्त्राय वीरघोर मां रक्ष रक्ष मम हृदये सदा स्थिरो भव मङ्गलानां दोषान् संमंगल सहस्त्रानन्तब्रत नीलकण्ठास्याय हुं फट् स्वाहा।

कण्ठादिदारुणं अंकंडं मन्त्रं अस्त्रं
च अथर्वणशिखास्त्रकम्।
सहस्त्रं यो जपेद् विद्वान् मुण्डं च मुखरोपि वा।
येन केनापि जपतो मन्त्रसिद्धि मवाप्नुयात्।
कालरुद्रमहानाम्ना विषं च ध्वंनन्तथा॥
श्रीमहानीलकण्ठाख्यं अस्त्रराजमिदं कृतम्।
जपात् कुष्ठशरीराणां निर्मलं देहमाप्नुयात्॥
अष्टादशानि कुष्ठानि नश्यन्ते नात्र संशयः॥

॥ इत्यं अथर्वण रहस्ये अनेक मन्त्र संपूटितं प्रसिद्धमिदं नीलकण्ठस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ अथ श्रीनीलकण्ठ स्तोत्रम् ॥

इस स्तोत्र के पाठ से १२ नाग दोष सर्प भय, ग्रह पीड़ा निवारण, रोगनाश व अभिचार कर्म नष्ट होते हैं।

॥ ध्यानम् ॥

बालार्कयुत तेजसं धृतजटा जूटेन्दुखण्डोज्ज्वलं ,
नागेन्द्रैः कृत भूषणं जपवटीं धत्ते कपालं करैः ।
खट्वाङ्गं दधतं त्रिनेत्रविलसत् पञ्चाननं सुन्दरं ,
व्याघ्रत्वक्परिधान मब्जनिलयं श्रीनीलकण्ठं भजे ॥

विनियोग – अस्य श्रीनीलकण्ठ स्तोत्रस्य ब्रह्माऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीनीलकण्ठ सदाशिवो देवता, ब्रह्मबीजं, पार्वतीशक्तिः, शिवकीलकं, मम कायजीवरक्षणार्थे, सर्वारिष्ट निवारणार्थे, भुक्तिमुक्तिसिद्ध्यर्थे सकल कामनासिद्ध्यर्थे श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थे च पाठे विनियोगः।

ॐ नमो नीलकण्ठाय श्वेतशरीराय नमः। सर्पमःलाऽलंकृत भूषणाय नमः। भुजङ्ग परिकराय नागयज्ञोपवीताय नमः। अनेककालमृत्यु विनाशाय नमः। युग युगान्त काल प्रलय प्रचण्डाय नमः। ज्वलनमुखाय नमः। दंष्ट्राकराल घोररूपाय नमः। हुं हुं फट् स्वाहा। ज्वालामुख मन्त्र करालाय नमः। प्रचण्डार्क सहस्त्रांशु प्रचण्डाय नमः। कर्पूरामोदपरिमलाङ्ग सुगन्धिताय नमः। इन्द्रनील महानील वज्रवैडूर्य मणिमाणिक्य भूषणाय नमः। श्रीअघोरास्त्र मूलमन्त्राय नमः। ॐ ह्रां स्फुर स्फुर। ॐ ह्रीं स्फुर स्फुर। ॐ ह्रूं स्फुर स्फुर। अघोर घोरतनुरूपाय नमः। रथ रथ तत्र तत्र चट चट कह कह मद मद मदनदहनाय नमः। श्रीअघोरास्त्र मूलमन्त्राय नमः। ज्वलन मरणभय क्षय हुँ फट् स्वाहा। अनन्तघोर ज्वरमरणभय कुष्ठ व्याधि विनाशाय नमः। शाकिनी डाकिनी ब्रह्मराक्षस दैत्य दानव बंधनाय नमः। अपस्मार भूत वेताल कूष्माण्ड सर्वग्रह विनाशनाय नमः। मन्त्रकोष्ठ करालाय नमः। सर्वापद् विच्छेदाय नमः। हुँ हुँ फट् स्वाहा। आत्म मन्त्र सुरक्षणाय नमः। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं नमो भूत डामर ज्वाला वश भूत द्वादश भूतानां त्रयोदश भूतानां पञ्चदशडाकिनीं हन हन दह दह नाशय नाशय।

एकाहिक द्व्याहिक चतुराहिक पञ्चाहिक व्याप्ताय नमः। आपादानत सन्निपात वातादि हिक्का कफादिकास श्वासादिक दह दह छिन्धि छिन्धि

श्रीमहादेव निर्मित स्तम्भन मोहन वश्याकर्षणोच्चाटन कीलन उद्वासन इति षट्कर्म विनाशाय नमः।

अनन्त वासुकि तक्षक कर्कोटक खड्गपाल विजय पद्म महापद्म एलापर्ण नाना नागान् कुलकादि विषं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि प्रवेशय प्रवेशय शीघ्रं शीघ्रं हुं हुं फट् स्वाहा।

वात ज्वर मरणभय छिन्न छिन्न हन हन भूतज्वर प्रेतज्वर पिशाचज्वर रात्रिज्वर शीतज्वर सन्निपातज्वर बालज्वर ग्रहज्वर कुमारज्वर तापज्वर ब्रह्मज्वर विष्णुज्वर महेशज्वर आवश्यकज्वर कामाग्निज्वर विषमज्वर मरीचिज्वरादि प्रथम दण्डधराय नमः।

परमेश्वराय नमः। आवेशय आवेशय शीघ्रं शीघ्रं हुं हुं फट् स्वाहा। चौर मृत्युग्रहव्याघ्रसर्पादिक विषभय विनाशाय नमः। मोहन मन्त्राणामाकर्षण मन्त्राणां परविद्या छेदन मन्त्राणां ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं कुलि लीं लीं हुं क्षं कुं कुं हुं हुं फट् स्वाहा।

नमो नीलकण्ठाय नमः। दक्षाध्वरहराय नमः। श्रीनीलकण्ठाय नमः।

॥ अथ पार्थिव शिव पूजनम् ॥

पार्थिवशिव पूजन से मन्दिर निर्माण व मूर्ति प्रतिष्ठा का फल मिलता है। इस अक्षय पुण्य से नि:सन्तान को पुत्र की प्राप्ति होती है। अनेक तरह के कष्टों व अभिशाप से मुक्ति मिलती है। कष्ट प्रदान करने वाले ग्रह जन्म कुण्डली के कुयोग तथा कालसर्पादि दोष शान्त हो जाते हैं।

विशिष्ट कामना हेतु सवालक्ष शिवलिङ्ग का निर्माण किया जाता है। मध्य में प्रधानशिवलिङ्ग बड़ा बनाया जाता है। तथा साथ में शिवपरिवार भी बनाया जाता है।

प्रतिदिन १० हजार शिवलिङ्ग अङ्गुष्ठाकार के बनायें। प्रत्येक पर **"नमः शिवाय"** मन्त्र बोलकर गन्ध, अक्षत, पुष्प अलग अलग चढावें। नित्य विसर्जन कर नित्य नवीन शिवलिङ्ग बनायें।

श्रावण मास में नित्य एक हजार शिवलिङ्ग बनाकर उनका पूजन करें। सायंकाल में विसर्जन कर देवें।

प्रधान शिव के साथ आठ हजार शिव मूर्तियां आठों दिशाओं में रखकर पूजन करें। नवनाग पूजन भी वहीं उनके साथ करें। अशक्ति में एक हजार शिवलिङ्ग अवश्य बनायें।

अलग अलग वारों के अनुसार शिवलिङ्ग को किस आकृति में जमाया जायवे उसका उल्लेख तन्त्र ग्रन्थों में भी मिलता है।

श्रावण में चार या पाँच सोमवार आते हैं।

प्रत्येक सोमवार को बनाये जाने वाले लिङ्गों का विवरण निम्न है -

प्रथम सोमवार - २ नाग (प्रधान लिङ्ग एवं दूसरा अन्य)

द्वितीय सोमवार - ३ नाग (प्रधान लिङ्ग एवं दो लिङ्ग अन्य)

तृतीय सोमवार – ५ नाग (प्रधान लिङ्ग एवं चार चारों दिशाओं)

चतुर्थ सोमवार – ९ नाग (प्रधान लिङ्ग एवं आठ चारों दिशाओं)

यदि किसी श्रावण मास में ५ सोमवार आते हैं तो चतुर्थ सोमबार को ७ सर्प व पाँचवे को ९ सर्प बनायें। अथवा –

प्रथम सोमवार – १ नाग। द्वितीय सोमवार – २ नाग

तृतीय सोमवार – ३ नाग। चतुर्थ सोमवार – ५ नाग

पञ्चम सोमवार – ९ नाग

इसके अलावा अन्य वारों में सहस्त्रशिवलिङ्गों का इस प्रकार जमायें।

रविवार को गोलाकार। मङ्गलवार को त्रिकोणाकार। बुधवार को कूर्माकार या बाणाकार। गुरुवार को आयताकार चौकोर उसमें कुण्डली की रेखाओं की तरह आडे–तिरछे बनाकर १२ भागों में भी जमा सकते हैं। शुक्रवार को पञ्चकोण उसके बाहर अष्टदल उसके बाद १२ दल की आकृति में शिवलिङ्ग जमाये। शनिवार को धनुषाकार आकृति के शिवलिङ्ग सजायें।

इन सभी के रंगीन चित्र पुस्तक के प्रारम्भ में दिये गये हैं।

॥ अथ विधानम् ॥

पूर्व दिन शुद्ध स्थान, तालाब या नदी स्थल पर जायें। वहां पृथ्वी को जल, दुग्ध, गन्धादि से पूजनकर पार्थिव शिवलिङ्ग के निर्माण हेतु मिट्टी प्राप्त करने की याचना करें। दूसरे दिन शुद्ध मिट्टी लाकर उसे **''ॐ हराय नमः''** मन्त्र बोलते हुये हाथ से या सांचे से अङ्गुष्ठ प्रमाण (ढाई इंच) का शिवलिङ्ग बनायें। प्रधान शिव तथा शिव परिवार की मूर्तियाँ बड़ी बनायें।

''ॐ शूलपाणये नमः'' से शिवलिङ्ग को पूजा पात्र में रखें।

इसके साथ गौरी, गणेश, नन्दी व कार्तिक की मूर्तियाँ रखें। आठों दिशाओं में शिव की विशेष अष्टमूर्ति बनायें। शिवलिङ्ग पर सर्पाकृति बनायें। अन्यलिङ्गों पर सर्पाकृति नहीं बनायें। गणेश को शिव के दक्षिण भाग में वामभाग में पार्वती व कार्तिक तथा सम्मुख (कुछ तिरछे) नन्दी का पूजन करें। शिवलिङ्ग की जलेहरी उत्तर की तरफ रहती है। नन्दी भी उत्तर में कुछ तिरछे रहते हैं।

सङ्कल्प – संवत्, मास, दिवस व स्थान का उल्लेख करते हुये सङ्कल्प करें – मम जन्म कुण्डल्यां स्थित कालसर्पादि दोष निवारणार्थे, सकल पाप क्षयार्थे,

सर्वविध शापादि सकलदुरितोप शमनार्थे, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, पुत्रपौत्रादि सकल ऐश्वर्य प्राप्ति हेतवे श्रीपार्थिव शिवलिङ्ग पूजनं चाहं करिष्ये।

॥ ध्यानम् ॥

ध्याये नित्य महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रवतंसम् ।
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराऽभीति हस्तं प्रसन्नम् ॥
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतिममरगणै र्व्याघ्रकृत्तिं वसानम् ।
विश्वाद्यं विशवन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र – "ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं यं हं लं क्षं हौं हंसः शूलपाणे प्राणा इह प्राणा"

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं यं हं लं क्षं हौं हंसः शूलपाणे जीव इह जीव स्थित।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं यं हं लं क्षं हौं हंसः शूलपाणे वाङ्मन चक्षु श्रोत्र घ्राण पाणि पदादिनि सर्वेन्द्रियाणि सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। ३ बार कहें।

ॐ शूलपाणे नमः इह तिष्ठो। इह प्रतिष्ठो भव। भो पिनाकधृक् इहतिष्ठ सन्निहतो वरादो भव। अत्रधिष्ठानं कुरु कुरु मम पूजां गृहाण। यावत् पूजां करोम्यहं तावदिहाधिष्ठानं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ पशुपतये नमः आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि नमः।

इसी प्रकार – **गं गणपतये नमः। ॐ गां गौर्यै नमः। स्वां कार्तिकेये नमः। ॐ नं नन्दीश्वराय नमः।**

मन्त्र द्वारा उनका आवाहन करें।

रुद्राभिषेक कर सभी का अर्चन करें।

आठों दिशाओं में शिव की अष्टमूर्तियों का पूजन करें।

ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः। ॐ रुद्रायअग्निमूर्तये नमः। ॐ भवाय जलमूर्तये नमः। ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः। ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः। ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः। ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः। ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः।

तत्पश्चात् नवनाग का पूजन उनके साथ करें –

मध्ये – **अन्ताय नमः**। पूर्वे – **शेषाय नमः**। आग्नये – **वासुक्यै नमः**। दक्षिणे – **तक्षकाय नमः**। नैऋते – **कर्कोटकाय नमः**। पश्चिमे – **शंखपालाय नमः**। वायवे – **नीलाय नमः**। उत्तरे – **कबलाय नमः**। ईशाने – **महापद्माय नमः**।

सब देवताओं का तथा सहस्त्र शिवलिङ्गों का प्रत्येक पर '**नमः शिवाय**' बोलते हुये गन्धार्चन करें। धूप दीप नैवेद्य अर्पण करें। १०८ या १००८ बार '**नमः शिवाय**' मन्त्र जप करें। स्तुति करें।

ॐ सर्वज्ञान प्रविज्ञान प्रदायैक महात्मने ।
नमस्ते देव देवेश सर्वभूत हिते रतः ॥

अनन्तकांति संभोग परमेश नमोस्तुते। अनन्तकान्ति सम्पन्न अनन्तासन संस्थित परापर परातीत उत्पत्ति स्थिति कारक सर्वार्थ साधनोपाय विश्वेश्वर नमोस्तुते। सवार्थ निर्मलाभोग सर्वव्याधि विनाशन योग योगि महायोगि योगश्वर नमोस्तुते।

॥ फलश्रुति ॥

कृत्वालिङ्गं प्रतिष्ठां च ध्यात्व देवं सदाशिवम् ।
लिङ्गस्तवं महापुण्यं यः श्रृणोति सदा नरः ॥
नोत्पद्यते च संसारे स्थानं प्राप्नोति शाश्वतम् ।
पापकञ्चुक निर्मुक्तः प्राप्नोति परमं पदम् ॥

इसके बाद शिव के दक्षिण हस्त में कर्म समर्पण करें।

ॐ गुह्याति गुह्य गोप्ता त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत् प्रसादान्महेश्वर ॥

अब संहारमुद्रा से विसर्जन करें। निम्न मन्त्र पढें –

ॐ गच्छ गच्छ महादेव गच्छ गच्छ पिनाकधृक् ।
कैलासादि पीठं गच्छन्तु यत्र तिष्ठति पार्वति ॥

॥ अथ मनसा देवी स्तोत्रम् ॥

यदि सर्प भय हो, स्वप्न में काले सर्प दिखाई देते हों, कालसर्पजन्य दोष के लक्षण दिखाई देते हों तो मनसा देवी स्तोत्र का पाठ करें। मनसा देवी के कहने पर आस्तीक मुनी ने सर्पों की रक्षा की थी। मनसा देवी तथा नवनागों का ध्यान पूर्वक षोडशोपचार पूजन कर प्रार्थना करें।

॥ महेन्द्र उवाच ॥

देवी त्वां स्तोतुमिच्छामि साध्वीनां प्रवरां पराम् ।
परात्परां च परमां नहि स्तोतुं क्षयोऽधुना ॥
स्तोत्राणां लक्षणं वेदे स्वभावाख्यानतः परम् ।
न क्षमः प्रकृतिं वक्तुं गुणानां तव सुव्रते ॥
शुद्धसत्त्वस्वरूपा त्वं कोपहिंसाविवर्जिता ।
न च शप्तो मुनिस्तेन त्यक्तया च त्वयायतः ॥
त्वं मय पूजिता सा वी जननि च यथाऽदितिः ।
दयारूपा च भगिनी क्षमारूपा यथा प्रसूः ॥
त्वया मे रक्षिताः प्राणाः पुत्रद्वाराः सुरेश्वरी ।
अहं करोमि त्वां पूज्यां मम प्रीतिश्च वर्धते ॥
नित्यं यद्यपि पूज्या त्वं भवेऽत्र जगदम्बिके ।
तथाऽपि तव पूजां वैवर्धयामि पुनः पुनः ॥
ये त्वामाषाढसक्रांत्यां पूजयिष्यन्ति भक्तितः ।
पञ्चम्यां मनसाख्यायां मासान्ते वा दिने दिने ॥
पुत्रपौत्रादयस्तेषां वर्धन्ते च धनानि च ।
यशस्विनः कीर्तिमन्तो विद्यावन्तो गुणान्विताः ॥

ये त्वां न पूजयिष्यन्ति निन्दत्यज्ञानतो जनाः ।
लक्ष्मीहीना भविष्यन्ति तेषां नागभयं सदा ॥
त्वं स्वर्गलक्ष्मीः स्वर्गे च वैकुंठे कलाकला ।
नारायणांशो भगवान् जरत्कारुर्मुनीश्वरः ॥
तपसा तेजसा त्वां च मनसा ससृजे पिता ।
अस्माकं रक्षणायैव तेन त्वं मनसाभिधा ॥
मनसा देवितुं शक्ता चाऽऽत्मना सिद्धयोगिनी ।
तेन त्वं मनसादेवी पूजिता वंदिता भवे ॥
यां भक्त्या मनसा देवाः पूज्यन्त्यनिशं भृशम् ।
तेन त्वां मनसादेवीं प्रवदन्ति पुराविदः ॥
सत्त्वरूपा च देवी त्वं शश्वत्सर्वानषेवया ।
यो हि यद्भावयेन्नित्यं शतं प्राप्नोति तत्समम् ॥
इदं स्तोत्रं पुण्यबीजं तां संपूज्य च यः पठेत् ।
तस्य नागभयं नास्ति तस्य वंशोद्भवस्य च ॥
विषं भवेत्सुधातुल्यं सिद्धस्तोत्रं यदा पठेत् ।
पञ्चलक्षजपेनैव सिद्धस्तोत्रो भवेन्नरः ॥
सर्पशायी भवेत्सोऽपि निश्चितं सर्पवाहनः ॥

॥ इति श्री ब्रह्मवैवर्तपुरणे महेन्द्रकृत मनसादेवी स्तोत्र सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीमनसादेवी नाम स्तोत्रम् ॥

॥ ॐ मनसा देव्यै नमः ॥

जरत्कारु जगद्गौरी मनसा सिद्धयोगिनी ।
वैष्णवी नागभगिनी शैवी नागेश्वरी तथा ॥
जरत्कारुप्रियाऽऽस्तीकमाता विषहरीति च ।
महाज्ञानयुता चैव सा देवी विश्वपूजिता ॥
द्वादशैतानि नामानि पूजाकाले च यः पठेत् ।
तस्य नागभयं नास्ति तस्य वंशोद्भवस्य च ॥

नागभीते च शयने नागग्रस्ते च मन्दिरे ।
नागक्षते महादुर्गे नागवेष्टित विग्रहे ॥
इदं स्तोत्रं पाठित्वा तु मुच्यते नात्रसंशयः ।
नित्यं पठेद् यः तं दृष्ट्वा नागवर्गः पलायते ॥
नागौधं भूषणं कृत्वा स भवेत् नागवाहनाः ।
नागासनो नागतल्पो महासिद्धो भवेन्नरः ॥

क्षमापन -

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरी ।
यत्पूजितं मया देवी परिपूर्ण तदस्तु मे ॥

सङ्कल्प - अनेन ध्यानावाहनादि षोडशोपचारैः अन्योपचारेश्च पूजनेन अमृतरक्षिणी च मनसादेवी सहिताः अनंतादिनवनागाः प्रीयंताम्।

मनसादेवी व नाग का पूजन कर नवग्रह हवन करें। अग्नि का बलवर्धिनी नाम से पूजन कर, मनसादेवी मन्त्र से हवन करें।

होमक्रमः - बलवर्धनामाग्निं सम्पूज्य होमः कार्यः। ग्रहहोमं समाप्य।

ग्रह होम के बाद मनसा मन्त्र से होम करें।

मनसादेवी मन्त्र - ह्रीं तत्कारिणी विषहारिणी विषरूपिणी विषं हन इन्द्रस्य वज्रेण नमः स्वाहा।

इस मन्त्र से द्रव्य से १०८ आहुति देवें तथा मनसा देवी के मन्त्र का होम करें। इसके पश्चात् नव नागों का उनके पृथक-पृथक मन्त्र से सङ्कल्प करके हवन करें। सर्पसूक्त का १०८ या १००८ बार हवन करें। व्याहृति होम करें। खीर की बलि देकर नागों प्रसन्न करें।

शनि को भी सर्प का प्रतीक माना है अतः शनि होम करके प्रार्थना करें-

प्रीतः शनैश्चरस्तस्य सर्वबाधान् व्यपोहति ।
दद्याद् सर्वसमृद्धि च पुत्रपौत्रादि सन्ततिम् ।
आयुष्यं दीर्घमारोग्यं सर्वत्र विजयं दिशेत् ॥

॥ अथ दुष्ट बाधाशमन प्रयोगा:॥

जिसकी कुण्डली में कालसर्प योग हो अथवा लग्न में सूर्य, चन्द्र से अथवा बृहस्पति से भी केन्द्र में पापग्रह (राहु, केतु, शनि, मङ्गल) होवे या उनसे षडाष्टक योग हो तो ऐसा व्यक्ति टोने-टोटके, प्रेतबाधा, पूर्वजन्म का शाप आदि योगों से ग्रसित रहता है।

स्वप्न में काले, डरावने या मृतात्माओं के दर्शन हो, तो ऊपरी बाधा पैशाचिक दोष या अभिचारकर्म, टोटकों के कारण उसको बाधायें रहती है।

इसके लिये कई तरह के उपाय है -

१. **पञ्चमुखी हनुमान कवच का पाठ करें।**

   सुन्दरकाण्ड या हनुमान चालिसा पढ़ने से रक्षा नही होगी। कवच का पाठ व हनुमान वडवानल स्तोत्र या अन्य उग्र प्रयोग करें।

२. **भैरव नामावली के पाठकर भैरव के लिये बलि प्रयोग करें। भैरव के साबर मन्त्रों के पाठ करें।**

   भैरव बलि हेतु सात्विक कर्म के अनुसार उड़द के पकोड़े, उड़द की मिठाई, (इमरती, कंगन) दही, सिन्दूर, नमकीन, पापड़, अदरक, किशमिश, गुड़ का पानी या ताम्बे के बरतन में दूध में गुड़ डालकर चढ़ावें।

   मन्त्र - ह्रीं वं वटुकाय आपद् उद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं।

॥ अथ वटुकभैरवाष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम्॥

(कालसंकर्षणातन्त्रे)

विनियोगः - ॐ अस्य श्रीवटुकभैरवस्तोत्र मन्त्रस्य कालाग्निरुद्र ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। आपदुद्धारक वटुकभैरवो देवता। ह्रीं बीजम्। भैरवीवल्लभः शक्तिः। नीलवर्णो दण्डपाणिरिति कीलकम्। समस्तशत्रुदमने समस्तापन्निवारणे सर्वाभीष्टप्रदाने च विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः – ॐ कालाग्निरुद्रऋषये नमः शिरसि ॥१ ॥ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ॥२ ॥ आपदुद्धारक वटुकभैरवदेवतायै नमः हृदये ॥३ ॥ ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये ॥४ ॥ भैरवीवल्लभशक्तये नमः पादयोः ॥५ ॥ नीलवर्णो दण्डपाणिरिति कीलकाय नमः नाभौ ॥६ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥७ ॥

मूलमन्त्रः – ॐ ह्रीं वं वटुकाय क्ष्रौं क्ष्रौं आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं वटुकाय स्वाहा।

यह मंत्र प्रेतादि उपद्रव शांति व शत्रुदमन में विशेष काम में आता है

॥ ध्यानम् ॥

नीलजीमूतसंकाशो जटिलो रक्तलोचनः ।
दंष्ट्राकरालवदनः सर्पयज्ञोपवीतवान् ॥१ ॥
दंष्ट्रायुधालंकृतश्च कपालस्त्रग्विभूषितः ॥
हस्तन्यस्तकरोटीको भस्मभूषितविग्रहः ॥२ ॥
नागराजकटीसूत्रो बालमूर्तिर्दिगंबरः ।
मंजुसिंजानमंजरि – पादकंपितभूतलः ॥३ ॥
भूतप्रेतपिशाचैश्च सर्वतः परिवारितः ।
योगिनीचक्रमध्यस्थो मातृमण्डलवेष्टितः ॥४ ॥
अट्टहासस्फुरद्वक्त्रो भृकुटीभीषणाननः ।
भक्तसंरक्षणार्थाय दिक्षु भ्रमणतत्परः ।
एवंभूतस्तु वटुको ध्यातव्यो भैरवीश्वरः ॥५ ॥
एवं ध्यात्वा स्तोत्रं पठेत् ।
ॐ ह्रीं वटुको वरदः शूरो भैरवः कालभैरवः ।
भैरवीवल्लभो भव्यो दण्डपाणिर्दयानिधिः ॥६ ॥
वेतालवाहनो रौद्रो रुद्रभ्रुकुटिसंभवः ।
कपाललोचनः कांतः कामिनीवशकृद्वशी ॥७ ॥
आपदुद्धारणो धीरो हरिणांकशिरोमणिः ।
दंष्ट्राकरालो दष्टौष्ठो धृष्टो दुष्टनिर्वहणः ॥८ ॥
सर्पहारः सर्पशिराः सर्पकुण्डलमण्डितः ।
कपाली करुणापूर्णः कपालैकशिरोमणिः ॥९ ॥

श्मशानवासी मांसाशी मधुमत्तोऽट्टहासवान् ।
वाग्मी वामव्रतो वामो वामदेवप्रियंकरः ॥१०॥
वनेचरो रात्रिचरो वसुदो वायुवेगवान् ।
योगी योगव्रतधरो योगिनीवल्लभो युवा ॥११॥
वीरभद्रो विश्वनाथो विजेता वीरवंदितः ।
भूताध्यक्षो भूतिधरो भूतभीतिनिवारणः ॥१२॥
कलंकहीनः कंकाली क्रूरः कुक्कुरवाहनः ।
गाढो गहन गम्भीरो गणनाथसहोदरः ॥१३॥
देवीपुत्रो दिव्यमूर्तिर्दीप्तिमान् दीप्तिलोचनः ।
महासेनप्रियकरो मान्यो माधवमातुलः ॥१४॥
भद्रकालीपतिर्भद्रो भद्रदो भद्रवाहनः ।
पशुपहाररसिकः पाशी पशुपतिः पतिः ॥१५॥
चण्डः प्रचण्डचण्डेशश्चंडीहृदयनन्दनः ।
दक्षो दक्षाध्वरहरो दिग्वासा दीर्घलोचनः ॥१६॥
निरातंको निर्विकल्पः कल्पः कल्पांतभैरवः ।
मदतांण्डवकृन्मत्तो महादेवप्रियो महान् ॥१७॥
खट्वांगपाणिः खातीतः खरशूलः खरांतकृत् ।
ब्रह्माण्डभेदनो ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मणपालकः ॥१८॥
दिक्चरो भूचरो भूष्णुः खेचरः खेलनप्रियः ।
सर्वदुष्टप्रहर्ता च सर्वरोगनिषूदनः ॥१९॥
सर्वकामप्रदः शर्वः सर्वपापनिकृंतनः ।
इत्थमष्टोत्तरशतं नाम्नां सर्वसमृद्धिदम् ॥२०॥
आपदुद्धारजनकं वटुकस्य प्रकीर्तितम् ।
एतच्च श्रृणुयान्नित्यं लिखेद्वा स्थापयेद्-गृहे ॥२१॥
धारयेद्वा गले बाहौ तस्य सर्वाः समृद्धयः ।
न तस्य दुरितं किंचिन्न चोरनृपजं भयम् ॥२२॥
न चापस्मृतिरोगेभ्यो डाकिनीभ्यो भयं नहि ।

न कूष्माण्डग्रहादिभ्यो नापमृत्योर्न च ज्वरात् ॥२३॥
मासमेकं त्रिसंध्यं च शुचिर्भूत्वा पठेन्नरः ।
सर्वदारिद्यनिर्मुक्तो निधिं पश्यति भूतले ॥२४॥
मासद्वयमधीयानः पादुकासिद्धिमान् भवेत् ।
अञ्जनं गुटिका खड्गं धातुवादरसायनम् ॥२५॥
सारस्वतं च वेतालवाहनं बिलसाधनम् ।
कार्यसिद्धिं महासिद्धिं मन्त्रं चैव समीहितम् ॥२६॥
वर्षमात्रमधीयानः प्राप्नुयात्साधकोत्तमः ।
एतत्ते कथितं देवि गुह्याद्गुह्यतरं परम् ॥२७॥
कालसंकर्षणीतन्त्रे कलिकल्मषनाशनम् ।
नरनारीनृपाणां च वशीकरणमंबिके ॥२८॥

॥ इति कालसंकर्षणतन्त्रोक्तवटुकाष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रं समाप्तं ॥

३. **दुर्गा सप्तशती को बगलामुखी, कालिका या प्रत्यङ्गिरा मन्त्र का सम्पुटित पाठ करें।**

४. **प्रत्यङ्गिरा स्तोत्र एवं प्रत्यङ्गिरा मन्त्र जप करें।**

यह देवी सिंहवाहना है। इनके मुँह से अग्नि ज्वाला निकलती है जो शत्रु बाधाओं को जलाकर नष्ट कर देती है।

(क) ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे माम रक्ष रक्ष मम शत्रून् भञ्जय भञ्जय फें हुं फट् स्वाहा।

(ख) **ह्रीं यां कल्पयन्ति नोऽरय क्रूरां कृत्यां वधूमिव।**

तां ब्रह्मणाप निर्णुद्म प्रत्यक् कर्तारमिच्छतु ॥

यह मन्त्र शत्रु की क्रिया को वापस उसी पर लौटाता है।

५. **शरभराज मन्त्र** -

यह भगवान शिव का उग्ररूप है जिसने भगवान नृसिंह का गर्व नष्ट किया था।

मन्त्र - खें खां खं फट्। प्राण ग्रहासि प्राणग्रहासि हुं फट्। सर्वशत्रु

संहारणाय शरभ शालुव पक्षिराजाय हुं फट्।

६. **कुब्जिका प्रयोग** -

कालसर्प योग के कारण या शापित कुण्डली के कारण यदि बार-बार टोटके व प्रेतबाधा उत्पन्न होती है तो कुब्जिका देवी का ध्यान करें। यह देवी सभी नागों को अपने आभूषण रूप में धारण करती है। इससे कालसर्प जनित दोष शान्त हो जाता है।

मन्त्र - ॐ गुह्यकुब्जिके हुं फट् मम सर्वोपद्रवान् यन्त्र मन्त्र तन्त्र विषचूर्ण प्रयोगादिकं येन कुतं कारितं कुरुते करिष्यति कारयिष्यति तान् सर्वान् हन हन दंष्ट्रा करालिनि हैं ह्रीं हूं गुह्यकुब्जिकायै स्वाहा ह्रौं ॐ खें वों गुह्यकुब्जिकायै नमः।

॥ ध्यानम् ॥

नीलोत्पलदल श्यामा षड्वक्त्रा षट्प्रकारिका ।
चिच्छक्तिरष्टादशाख्या बाहु द्वादश संयुता ॥
सिंहासनसुखासिना प्रेतपद्मोपरि स्थिता ।
कुलकोटि सहस्त्राढ्या कर्कोटो मेखलास्थितः ॥
तक्षकेणोपरिष्टाच्च गले हारश्च वासुकिः ।
कुलिकः कर्णयोर्यस्याः कूर्मकुण्डल मण्डलः ॥
भ्रुवोः पद्मो महापद्मो वामे नागः कपालकः ।
अक्षसूत्रं च खट्वाङ्गं शङ्खं पुस्तं च दक्षिणे ॥
त्रिशूलं दर्पणं खड्गं रत्नमालाऽङ्कुशं धनुः ।
श्वेतमूर्ध मुखं देव्या उर्ध्वश्वेतं तथाऽपरम् ॥
पूर्वस्यं पाण्डरं क्रोधि दक्षिणं कृष्णवर्णकम् ।
हिमकुन्देन्दुभं सौम्यं ब्रह्मा पादतले स्थितः ॥
विष्णुस्ते जघने रुद्रो हृदि कण्ठे तथेश्वरः ।
सदाशिवो ललाटे स्याच्छिवस्तस्योर्ध्वतः स्थितः ।
आधूर्णिका कुब्जिकैवं ध्येया पूजादिकर्मसु ॥

कुब्जिका देवी के छः मुख, छह प्रकारिकायें,, १८ चिच्छक्तियां और १२ भुजायें हैं। इनका वर्ण नीलकमल के समान है। वे सिंहासन पर प्रेतासन पर स्थित

हैं। सहस्त्र करोड़ कुल से सम्पन्न है। मेखला में कर्कोटक नाग बंध हुआ है। ऊपर से तक्षक पड़ा हुआ है। गले में वासुकि सर्प का हार है, कानों में कुलिक सर्प है। कूर्म का कुण्डल बना हुआ है। भौंहों पर पद्म तथा महापद्म सर्प बैठे हैं। बाँये हाथ में कापालक नाग, अक्षसूत्र, अस्थिपञ्जर, शङ्ख तथा पुस्त है।

दाँये हाथ में त्रिशूल, दर्पण, खड्ग, रत्नमाला, अङ्कुश व धनुष धारण किये हुये हैं। उर्ध्वमुख एवं सम्मुख मुख श्वेत वर्ण का है। पूर्व दिशा का मुख पाण्डुरङ्ग और क्रोध युक्त है। दक्षिणदिशा का मुख काले रंग का और उत्तरदिशा का मुँह हिम, कुन्दपुष्प एवं चन्द्रमा के समान शुभ्रवर्ण है। ब्रह्मा उनके चरणों के नीचे, विष्णु जघनस्थल में, रुद्र हृदय में, ईश्वर कण्ठ में, सदाशिव मस्तक में तथा शिव उनके ऊपर स्थित है।

इनकी उपासना से दुर्योग जनित कष्ट दूर होते हैं। इस देवी की विशेष उपासना दीक्षा लेकर की जाती है। सामान्य व्यक्ति इस देवी का ध्यान कर मन्त्र को २१ पाठ नित्य करें।

॥ अथ कालसर्प दोष शान्ति प्रयोगा:॥

कालसर्प दोष शान्ति हेतु विशिष्ठ कर्म के कई अङ्ग हैं।

❖ सर्पयोग कारक राहु व केतु के ३१-३१ हजार जप करायें।

❖ सर्पमन्त्र के ३१००० जप करायें। नवनाग पूजा कराकर रुद्राभिषेक कराकर सर्प को बहते जल में प्रवाहित करायें।

❖ सर्पयन्त्र की आवरण पूजा करें। नागपाश यन्त्र की पूजा कर घर में शान्ति हेतु रखें।

❖ पुष्टिकर्म के लिये मृत्युञ्जय जप २५००० करायें।

❖ वंशवृद्धि कामना में शान्ति कर्म के पश्चात् षष्ठीदेवी की उपसना करें। इसकी उपासना से सन्तान की प्राप्ती होती है।

मन्त्र - **ह्रीं षष्ठीदेव्यै स्वाहा।**

शुक्लपक्ष की षष्ठी से चन्द्रबल देखकर, गुरु-शुक्र के उदय काल से करायें। मलमास में अनुष्ठान प्रारम्भ नहीं करें।

❖ परिवार के पितृ हेतु पिण्डदान, नागबलि, कर्म करें। पितृतर्पण करें तथा पितृसूक्त का पाठ करं। ये प्रयोग अगल से दिये गये हैं।

❖ पार्थिव शिवलिङ्ग पूजन, रुद्राभिषेक करें, सर्पपूजा करक सर्प का विसर्जन करें।

❖ ऋणयोग कारक ग्रहों का उपाय करें।

❖ दरिद्रता की देवी ज्येष्ठालक्ष्मी का पूजन कर उससेअपने घर को छोड़कर जाने की प्रार्थना करें।

❖ धूमावती देवी की उपासना की उसे सब दु:खों को लेकर चले जाने की प्रार्थना करें। इनका स्थाई निवास दरिद्रता देता है अत: पूजन के बाद विसर्जन करें।

मन्त्र - **धूं धूं धूमावती स्वाहा।**

- ❖ राहु-केतु के जप, स्तोत्र, कवच, अष्टोत्तरशत नामावलि का पाठ करें।
- ❖ नाग सहस्त्रनामावलि का पाठ कराकर हवन करें।
- ❖ मनसा देवी स्तोत्र, नवनाग स्तोत्र, उतङ्गमुनि कृत मृत्युञ्जय सहस्त्रनामादि के पाठ करने से भी दोष शान्ति होती है।
- ❖ नागपाश यन्त्र का पूजन करने से भी सर्पदाष की शान्ति होती है।
- ❖ पार्थेश्वर शिवलिङ्ग बनाकर उनका अर्चन करें। प्रत्येक वार के अलग अलग प्रयोग दिये गये हैं।

  श्रावण मास में नित्य एक हजार शिवलिङ्ग बनाकर प्रत्येक का शिव मन्त्रों से अर्चन करें। प्रत्येक वार को अलग अलग स्वरूप में उनको स्थापित करें। श्रावण मं ४-५ सोमवार आते हैं, उनके अलग अगल चित्र प्रारम्भ में दिये गये हैं।
- ❖ जो व्यक्ति अनुष्ठान का व्यय वहन नहीं कर सकते हैं वे स्वयं कुछ पाठ जपादि करें। शिव मन्त्र, मृत्युञ्जयमन्त्र, गरुडमन्त्र, राहुमन्त्र, नागस्तोत्र या सहस्त्रनामादि कर्म करते रहें।
- ❖ नागपञ्चमी (प्रत्येक शुक्ला पञ्चमी) को व्रत करें। नागपूजा करें, स्तोत्र पढ़ें, मनसा देवी का पूजन करें।
- ❖ जिस मन्दिर में शिवलिङ्ग पर सर्प चढ़ा हुआ नहीं हो वहां उसके परिमाप का ताम्बे का सर्प रुद्राभिषेक कराकर चढ़ायें।
- ❖ बुधवार को सर्प की अंगूठी, लोहा, ताम्बा या चान्दी की कनिष्ठा अंगुलि में या तर्जनी अंगुलि में दूध से धोकर राहु मन्त्र पढ़कर धारण करें।
- ❖ प्रक्येक बुधवार को उड़द या मूंग काले कपड़े में बांधकर किसी गरीब भिखारी को दान में देवें। ७२ बुधवार तक करें।
- ❖ पलाश के पुष्पों को गोमूत्र में भिगोकर सुखायें। पश्चात् उन्हें कूटकर चूर्ण बना लेवें। स्नान करते समय उस चूर्ण व तिल को पानी के पात्र में डाल लेवें। उससे स्नान करें।
- ❖ शिव मन्त्र का उच्चारण करते हुये एक वर्ष तक वट वृक्ष की परिक्रमा करें।

- भैरव की उपासना करें।
- जैन धर्म में पार्श्वनाथ, पद्मावती की आराधना करें।

॥ अथ नाग दिग्रक्षण विधानम् ॥

(देवी रहस्ये)

जिस व्यक्ति के हर कार्य में विघ्न आते हैं। व्यक्ति किसी कार्य या व्यापार हेतु घर से बाहर जाता हो और वह जिसे मिलने गया हो और वह व्यक्ति कुछ समय पूर्व ही अन्यत्र चला गया हो वहां नहीं मिले, रकम की उगाही करने जाये तो देनदार कुछ समय पूर्व ही रकम किसी अन्य को दे चुका हो अर्थात् वृथा भ्रमण या व्यय होवे तो ऐसे योग वाले व्यक्ति प्रातःकाल उठकर या यात्रा समय नाग दिग्रक्षण स्तोत्र का पाठ अवश्य करें। इससे आठों दिशओं का बन्धन होता है।

ॐ वासुकिः पूर्वतः पातु नीलनागोऽनलेऽवतात् ।
तक्षको दक्षिणे पातु नैऋते पद्मनागकः ॥१॥
कर्कोटकः पश्चिमेऽव्यात् शङ्खपालस्तु वायुगे ।
कुलिकश्चोत्तरे पातु शेष ईशान मण्डले ॥२॥
ब्राह्मी ब्रह्ममुहुर्त्तेऽव्याद दिनादौ वैष्णवी मम ।
रुद्राणी पातु मध्याह्ने सायं पात्वपराजिता ॥३॥
निशादौ पातु कौमारी निशीथे चण्डिकाऽवतु ।
निशान्ते पातु वाराही सर्वदा नारसिंहिका ॥४॥

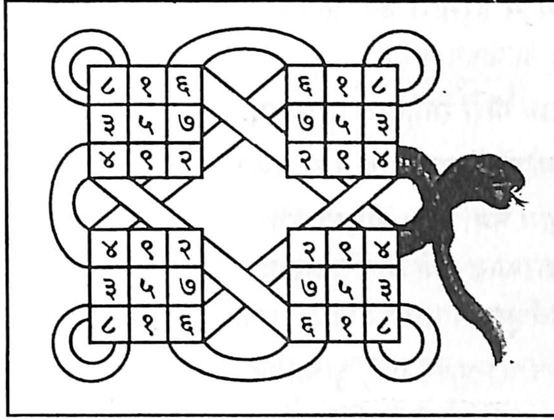
॥ अथ नागपाश यन्त्र पूजनम् ॥

इस यन्त्र में सर्प का मुँह व पूंछ एक ओर दिखाया गया है। तथा नाग के शरीर से ८ प्रकार के वलय (गाँठे) बनायें है। मध्य भाग में प्रधान नाग अनन्त या कालीय की पूजा करें। आठों वलय में अन्य अष्टनागों की पूजा करें। पन्द्रह यन्त्र ४ स्थान पर हैं, उनमें हरगौरी तथा नवदुर्गा का पूजन करें।

मुख पूजन् - मुँह में राहु मन्त्र से पूजन करें।

ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कयाशचिष्ठयावृता।

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।



कालसर्प नागफास पूजन यन्त्रम्

पुच्छ पूजन – पुच्छ में केतु का पूजन करें।

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्याऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।

ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रां सः केतवे नमः।

आठों वलय में ८ शिव मूर्ति तथा मध्य में त्र्यम्बक शिव का आवाहन करें।

ॐ अर्कमूर्तय नमः। इन्द्रमूर्तये नमः। वसुधामूर्तये नमः। तोयमूर्तये नमः। वह्निमूर्तये नमः। वायुमूर्तये नमः। यजमानमूर्तये नमः। मध्ये – ॐ त्र्यम्बकाय नमः।

पुनः अष्टरुद्रों के साथ शिव का पूजन करें।

ॐ भवदेवाय नमः। ॐ सर्वदेवाय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ पशुपतये नमः। ॐ रुद्रदेवाय नमः। ॐ उग्रदेवाय नमः। ॐ भीमाय नमः। ॐ महान्ताय नमः। मध्ये – **ॐ नमः शिवाय।**

पश्चात् अष्टवलय एवं मध्य में नवनाग का पूजन करें।

ॐ अनन्ताय नमः। ॐ वासुकीये नमः। ॐ शेषाय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ कम्बलाय नमः। ॐ शङ्खपालाय नमः। ॐ धृतराष्ट्राय नमः। ॐ तक्षकाय नमः। ॐ कालीयाय नमः।

पन्द्रह यन्त्र के नवखण्डों में नवदुर्गा का पूजन करें।

ॐ शैलपुत्र्यै नमः। ॐ ब्रह्मचारिण्यै नमः। ॐ चन्द्रघण्टायै नमः। ॐ कुष्माण्डायै नमः। ॐ स्कन्दमातायै नमः। ॐ कात्यायन्यै नमः। ॐ कालरात्र्यै नमः। ॐ महागौर्यै नमः। ॐ सिद्धिदात्र्यै नमः।

पुनः मध्य में **हरगौरी** का आवाहन करके शेष अष्टकोष्ठों में शिव की **अष्ट शक्तियों** का आवाहन करें।

मध्ये - ॐ गौरी सहिताय हरायनमः।

शेष अष्टकोष्ठों में पूर्वादि क्रम स पूजन करें -

ॐ ज्येष्ठाय नमः। ॐ श्रेष्ठाय नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ कालाय नमः। ॐ कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो। ॐ बलाय नमो बलप्रमथनाय नमो। ॐ सर्वभूतदमनाय नमो। ॐ मनोन्मयाय नमः।

पश्चात् यन्त्र का पूजन करें, दुग्धाभिषेक करें। गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य अर्पण कर शिव की आरती करें।

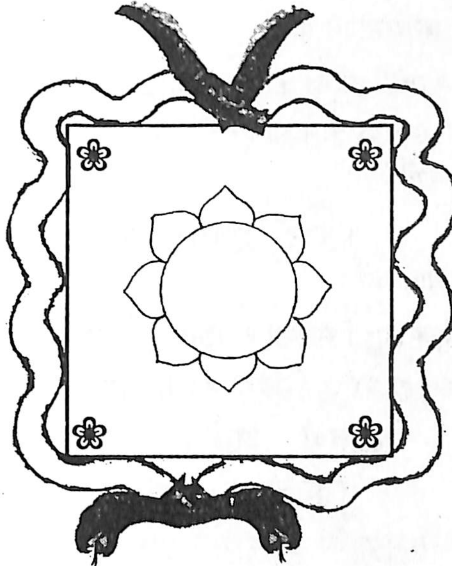
॥ अथ नाग प्रधानपीठ पूजनम् ॥

मण्डप के मध्य में अष्टदल बनाकर बाहर नावगेष्टित १२ दल बनायें। चारों कोणों में चार कलश रखें। यह यन्त्र नवग्रह के ईशान में बनायें।

ईशान कलश में रक्तचन्दन, प्रियन्गु, मुस्ता, आमलक डालें। अग्निकोण के कलश में तीर्थोदक, पञ्चामृत व सप्तधान्य डालें। नैऋति कलश में सप्तमृत्तिका डालें। वायुकोण के कलश में वट, पीपल, उदुम्बर, आम, जामुन के पत्ते डालें। मध्य कलश में सतौषधी सतावर, सूंठी, सफेद सरसों डालें।

सभी कलशों में जल डालकर पूर्णपात्र से ढककर ऊपर श्रीफल रखें।

शान्ति स्तात्र,.जातवेदसूक्त, रक्षोघ्न सूक्त, पुरुषसूक्त से ईशानादि चारों कोणों में पजन करें। मध्य में **मृत्युञ्जय शिव** का आवाहन कर **रौद्रसूक्त** का पाठ करें।



ये सभी सूक्त पुस्तक में अलग से दिये गये हैं।

नागपीठ में मध्य मृत्युञ्जय शिव का ध्यान करें -

हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसै राप्लावयन्तं शिरो ,
द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यांवहन्तं परम् ।

अङ्कन्यस्त करद्वाभ्याममृतघटं कैलासकान्तं शिवम् ,
स्वच्छाम्भोजगतं नवेन्दुमुकुटां भान्तं त्रिनेत्रं भजे ॥

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनं उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः महामृत्युञ्जयाय इह आगच्छ इह तिष्ठ।

यहीं पर ''मनसादेवी'' का आवाहन करें।

॥ मनसादेवी ध्यानम् ॥

नारायणांशो भगवान जरत्कारुर्मुनीश्वरः ।
तपसा तेजसा त्वां च मनसा ससृजे पिता ।
अस्माकं रक्षणायैव तैन त्वं मनसाभिधा ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मनसा देव्यै इहागच्छ इहतिष्ठ।

ॐ अमृतरक्षणी मनसादेव्यै नमः।

मण्डल के दक्षिण भाग (वायव्य कोण) में कालेवस्त्र पर उड़द रखकर कालपात्र (मटकी) रखें तथा मण्डल के वाम भाग (नैऋत्य कोण) में काले वस्त्रों पर तिल रखकर काली मटकी रखें।

॥ राहु पूजनम् ॥

वायव्य कोण में ध्यान करें।

नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी कराल वक्त्र करवालशूली ।
चतुर्भुजश्चर्मधरश्च राहुः सिंहासनस्थौ वरदोस्तु मह्यम् ॥
वन्दे राहुं धूम्रवर्णं अर्धकायं कृताञ्जलिम् ।
विकृत्यास्यं रक्तनेत्रं धूम्रालङ्कारमन्वहम् ॥

ॐ कयानश्चित्र ऽआभुवदूति सदावृधः सखा। कया शचिष्टया वृता॥

भो राहो इहागच्छ इह तिष्ठ वरदो भव ।

॥ केतु पूजनम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

धूम्रो द्विबाहुवरदो गदाभृद्गृधासनस्थो विकृताननश्च ।
किरीट केयूर विभूषिताम्बरः सदास्तु मे केतुगणः प्रशान्तः ॥

वन्दे केतुं कृष्णवर्ण कृष्णवस्त्र विभूषणम् ।
वामोरून्यस्ततद्धस्तं साभयेतर पाणिकम् ॥
ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्य्या ऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथा॥
भो केतु इहागच्छ इह तिष्ठ वरदो भव ।

दुर्गासप्तशती में लिखा है -

कालमृत्यु च सम्पूज्यो सर्वारिष्ट प्रशान्तये ।

अत: काल-मृत्युका पूजन करें। राहु के साथ काल का पूजन करें -

॥ ध्यानम् ॥

एह्येहि दंडायुध धर्मराज कालांजनाभास विशालनेत्र ।
विशाल वक्षस्थल रुद्ररूप गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते ॥
चित्रगुप्तादि संयुक्त दण्डमुद्‌गरधारक ।
आगच्छ भगवान काल (धर्म) पूजार्थं सन्निधो भव ॥
कालाय कालरूपाय कालाञ्जन समप्रभो ।
दक्षिणस्यां कृतावास कालदेव नमोऽस्तुते ॥
ॐ कार्षिरसि समुद्रस्यं त्वा क्षित्वा उन्नयामि ।
समापो अद्भिभरग्मत समोषधी भिरोषधीः ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः काल इहागच्छ इह तिष्ठ वरदो भव।

॥ व्याधि एवं मृत्यु पूजन ॥

केतु के पास में व्याधि एवं मृत्यु का पूजन करें। अरिष्ट शान्ति हेतु मृत्युलाङ्गुल स्तोत्र पुस्तक में अलग से दिया गया है। अमुक के स्थान पर पीड़ित का उच्चारण करें।

॥ व्याधि ध्यानम् ॥

त्रिपादं त्रिभुज भीमं त्रिमूर्द्धानं त्रिलोचनम् ।
कपालाढ्यं ज्वालास्य वक्त्र दंष्ट्रकम् ॥
सप्तशृङ्गं वसामाली चर्माम्बर धारिणम् ।
अशेषाङ्गे वृणोद्भूतं कृमिजाले समाकुलम् ।
वक्त्रानासं वृहत्स्कंधं क्षुधया पीडितोदरं ॥
वैरिणां देहमालिङ्गय भक्षयन्तं विकर्णकम् ।

कलाय कुसुमनीलं महाव्याधिकरं शिवम् ॥

मन्त्र – ॐ नमो भगवते रुद्राय महाव्याधिकारिणे अमुकस्य सर्वपीड़ा निवारय निवारय स्वाहा।

॥ मृत्यु ध्यानम् ॥

रक्तास्यं भीमदंष्ट्र प्रकटित वदनं वक्रनासं कराब्जैः ।
शूलं पाशं कपालं फणिमुसल हलं वज्रखेटं वहन्तम् ॥
भीमकालाभ्रनीलं भृकुटित नयनं सैरिभ स्कन्धरूढम् ।
नानाभूतैः करालैः परिवृतमखिलं प्राणिकालं भजामि ॥

मन्त्र – ॐ नमो भगवते मृत्यवे यमाय सर्वजीव हरण कारणाय उग्राय दण्डहस्ताय ङ हैं अमुक जीव मृत्युपाशात् मुंचय मुंचय सर्वलोक भयङ्कराय वराभय प्रदय प्रदय सर्वारिष्ट नाशय नाशय आरोग्यं कुरु कुरु हैं हूं फट् स्वाहा।

(अमुक के स्थान पर पीड़ित का नाम उच्चारण करें।)

॥ सर्प पूजनम् ॥

मध्य कलश में सर्प का आवाहन करें –

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु ।
ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥
एह्येहि नागेन्द्र धराधेश सर्वामरैर्वदन्ति, पादपद्म ।
नानाफणा मण्डल राजमान गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते ॥

॥ नवनाग आवाहनम् ॥

अष्टदले

अनन्त – अनन्तं विप्रवर्गं च तथा कुंकुमवर्णकम् ।
सहस्त्रफण संयुक्तं तं देवं प्रणमाम्यहम् ॥
मध्ये – ॐ अनन्ताय नमः अनन्त आवाहयामि स्थापयामि।

शेष – विप्रवर्गं श्वेतवर्णं सहस्त्रफण संयुक्तम् ।
आवाहयाम्यहं देवं शेष वै विश्वरूपिणम् ॥
पूर्वे – ॐ शेषाय नमः। शेषं आवाहयामि स्थापयामि।

वासुकी - क्षत्रीयवर्गं पीतवर्णं फणैसप्तशतैर्युतम् ।
युक्तमुत्तुगकायं च वासुकीं प्रणमाम्यहम् ॥
आग्नयां - ॐ वासुक्यै नमः। वासुकीं आवाहयामि स्था.।

तक्षक - वैश्यवर्गं नीलवर्णं फणैः पञ्चशतैर्युतम् ।
युक्तमुत्तुंगकायं च तक्षकं प्रणमाम्यहम् ॥
दक्षिणे - ॐ तक्षकाय नमः। तक्षकं आवाहयामि स्थापयामि।

कर्कोटक- शूद्रवर्णं श्वेतवर्णं शतत्रयफणैर्युतम् ।
युक्तमुत्तुंगकायं च कर्कोटकं नमाम्यहम् ॥
नैऋते-ॐ कर्कोटकाय नमः। कर्कोटक आवाहयामि स्था.।

शङ्खपाल - शङ्खपालं क्षत्रियं च पीतं सप्तशतैः फणैः ।
युक्तमुत्तुंगकायं च शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥
पश्चिमे - ॐ शङ्खपालाय नमः। शङ्खपालं आवाहयामि स्था.।

नील - वैश्यवर्गं नीलवर्णं फणैः पञ्चशतर्युतम् ।
युक्तमुत्तुंगकायं च तं नीलं प्रणमाम्यहम् ॥
वायव्ये - ॐ नीलाय नमः। नील आवाहयामि स्थापयामि।

कम्बलक- कम्बलं शूद्रवर्गं च शतत्रयफणैर्युतम् ।
आवायामि नागेशं प्रणमामि पुनः पुनः ।
उत्तरे - ॐ कंबलाय नमः। कंबलक आवाहयामि स्थापयामि।

महापद्म - वैश्यवर्गं नीलवर्णं पञ्चशतैर्युतम् ।
युक्तमुत्तुंगकायं च महापद्म नमाम्यहम् ॥
ईशाने - ॐ महापद्माय नमः। महापद्म आवाहयामि स्था.।

॥ द्वादश नागिनी देवता ॥

नाग के द्वारा १२ वलय बनाये हुये हैं। परिधि के समीप उनमें पूर्वादि क्रम से द्वादश नागशक्तियों का पूजन करें।

ॐ जरत्कार्यै नमः। ॐ जगद्गौर्यै नमः। ॐ मनसादेव्यै नमः। ॐ सिद्धयोगिन्यै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ नागभागिन्यै नमः। ॐ शैव्यै नमः। ॐ नागेश्वर्यै नमः। ॐ जरत्कारूप्रियायै नमः। ॐ आस्तीकमातायै नमः। ॐ

विषहरायै नमः। ॐ महाज्ञानयुतायै नमः।

कालीय नाग पूजन – मध्य में कालीय नाग का पूजन करें।

कालीयो नाम नागसौ विषरूपो भयङ्करः ।
नारायणेन संपृष्टो दोषो क्षेमकरो भव ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कालीय सर्पाय नमः। आ. स्थाप.।

नाग गायत्री मन्त्र – ॐ नवकुल नागाय विद्महे विषदन्ताय धीमहि तन्नोः सर्प प्रचोदयात्।

॥ ध्यानम् ॥

अनन्तपद्म पत्राद्यं फणाननेकतोज्ज्वलम् ।
दिव्याम्बरधरं देवं रत्नकुण्डल मण्डितम् ॥१॥
नानारत्नपरिक्षिप्तं मुकुटं द्युतिरंजितम् ।
फणमणिसहस्त्रोद्यै रसंख्यै पन्नगोत्तमे ॥२॥
नानाकन्या सहस्त्रेण समन्तात्परिवारितम् ।
दिव्याभरणं दिप्ताङ्गं दिव्यचन्दन चर्चितम् ॥३॥
कालाग्निमिव दुर्धर्षतेजसादित्य सन्निभम् ।
ब्रह्माण्डाधार भूतं त्वां यमुनातीर वासिनम् ॥४॥
भजेऽहंदोष शान्त्यैत्र पूजये कार्यसाधकम् ।
आगच्छ कालसर्पाख्य दोषं मम निवारयः ॥५॥

आसनम् – नवकुलाधिपं शेषं शुभ्रकच्छप वाहनम्।
नानारत्न समायुक्तं आसनं प्रतिगृह्यताम्॥

पाद्यम् – अनन्त प्रिय शेषं च जगदाधार विग्रह।
पाद्यग्रहाणभक्तयात्वं काद्रवेय नमोस्तुते॥

अर्घ्यम् – काश्यपेयं महाघोरं मुनिभिर्वन्दित प्रभो।
अर्घ्यं गृहाण सर्वज्ञ भक्त्या मां फलदायक॥

अरचमीयम् – सहस्त्रफणरूपेण वसुधाधारक प्रभो।
गृहाणाचमनं दिव्यं पावनं च सुशीतलम्॥

पञ्चामृत स्नानम् – पञ्चामृतं गृहाणेदं पावनं स्वभिषेचनम्।

बलभद्रावतारेश क्षेमं कुरु मम प्रभो ॥

वस्त्रम् - कौशेय युग्मदेवेश प्रीत्या तव मयार्पितम् ।
पन्नगाधीश नागेन्द्र ताक्ष्र्यशत्रो नमोस्तुते ॥

यज्ञोपवीतम् - सुवर्ण निर्मितं सूत्रं पीतं कण्ठोपहारकम् ।
अनेकरत्न संयुक्तं सर्पराज नमोस्तुते ॥

॥ अथ यन्त्र आवरण पूजनम् ॥

गन्ध अक्षत् पुष्प संयुक्त कर अष्टदल में पूजन करें।

प्रथरमावरणम् - ॐ अनन्ताय नमः। ॐ शेषाय नमः। ॐ वासुकये नमः। ॐ तक्षकाय नमः। ॐ कर्कोटकाय नमः। ॐ शङ्खपालाय नमः। ॐ नीलाय नमः। ॐ कंबलाय नमः। ॐ महापद्माय नमः।

पुष्पाञ्जलि -

दयाब्धे त्राहि संसार सर्पमन्या शरणागतः ।
भक्त्या समर्पयेतुभ्यं प्रथमावरणम् ॥

जल छोड़कर कहे - "पूजिता तर्पिता सन्तुः"

द्वितीयावरणम् - ॐ कालभैरवाय नमः। ॐ कालदुर्दराय नमः। ॐ कालाय नमः। ॐ धरणीधराय नमः। ॐ फणाधराय नमः। ॐ फहारिणे नमः। ॐ सर्पगामिने नमः। ॐ जलधराय नमः। ॐ वक्रगतिने नमः। ॐ रौद्राय नमः। ॐ श्रीधरधारिणे नमः।

पुष्पाञ्जलि अर्पण करें -

अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शणागत वत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥

जल छोड़कर कहे - "पूजिता तर्पिता सन्तुः"

तृतीयावरणम् - ॐ आदिकालाय नमः। ॐ महाकालाय नमः। ॐ गौरकालाय नमः। ॐ शक्तिकालाय नमः। ॐ वीरभद्राय नमः। ॐ कालनेत्राय नमः। ॐ सहजाय नमः। ॐ सावित्र्याय नमः। ॐ वारुण्यकुमाराय नमः। ॐ क्षेत्राय नमः। ॐ कपिलाय नमः। ॐ भैरवाय नमः। ॐ मुद्रिकाय नमः। ॐ सुविग्निवाय नमः।

पुष्पाञ्जलि - **अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शणागत वत्सल ।**
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥

जल छोड़कर कहे - "**पूजिता तर्पिता सन्तु:**"

चतुर्थावरणम् - **क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः फट् स्वाहा। ॐ कालाय नमः। ॐ रूपकालाय नमः। ॐ सूर्यकालाय नमः। ॐ क्षयकालाय नमः। ॐ अन्तकाय नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ धर्मराजाय नमः। ॐ मृत्यवे नमः। ॐ अन्तकाय नमः। ॐ वैवस्ताय नमः। ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः। ॐ औदुंबराय नमः। ॐ दघ्नाय नमः। ॐ नीलाय नमः। ॐ परमेष्ठिने नमः। ॐ वृकोदराय नमः। ॐ चित्राय नमः। ॐ चित्रगुप्ताय नमः।**

पुष्पाञ्जलि - **अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शणागत वत्सल ।**
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥

जल छोड़कर कहे - "**पूजिता तर्पिता सन्तु:**"

पञ्चमावरणम् - **ॐ दिव्यायै नमः। ॐ सुष्मायै नमः। ॐ रूपजायै नमः। ॐ रुद्रायै नमः। ॐ खेचरायै नमः। ॐ खेमलायै नमः। ॐ खेधूपायै नमः। ॐ सर्वतोमुख्यै नमः। ॐ भद्रायै नमः।**

पुष्पाञ्जलि - **अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शणागत वत्सल ।**
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥

जल छोड़कर कहे - "**पूजिता तर्पिता सन्तु:**"

षष्टमावरणम् - **ॐ नीलकण्ठाय नमः। ॐ हाटकेश्वराय नमः। ॐ कश्यपाय नमः। ॐ आस्तिकाय नमः। ॐ कद्रूवे नमः। ॐ मनसायै नमः।**

पुष्पाञ्जलि - **अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शणागत वत्सल ।**
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठमावरणार्चनम् ॥

जल छोड़कर कहे - "**पूजिता तर्पिता सन्तु:**"

सप्तमावरणम् - **ॐ गुरवे नमः। ॐ परमगुरवे नमः। ॐ परात्परगुरवे नमः। ॐ परमेष्ठी गुरवे नमः।**

पुष्पाञ्जलि - **अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शणागत वत्सल ।**
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ॥

जल छोड़कर कहे - "**पूजिता तर्पिता सन्तु:**"

अष्टमावरणम् – (परिधि समीप की दशों दिशाओं में) **ॐ अणिमासिद्ध्यै नमः। ॐ महिमासिद्ध्यै नमः। ॐ लघिमासिद्ध्यै नमः। ॐ गरिमासिद्ध्यै नमः। ॐ प्राप्तिसिद्ध्यै नमः। ॐ इच्छासिद्ध्यै नमः। ॐ भुक्तिसिद्ध्यै नमः। ॐ प्राकम्यसिद्ध्यै नमः। ॐ अमितासिद्ध्यै नमः। ॐ वशितासिद्ध्यै नमः।**

पुष्पाञ्जलि – अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शणागत वत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम् ॥

जल छोड़कर कहे – "**पूजिता तर्पिता सन्तु:**"

नवमावरणम् – परिधि समीप इन्द्रादि दिक्पालों व उनके आयुधों का पूजन करें।

ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ नैर्ऋत्याय नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ सोमाय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अनन्ताय नमः।

पूर्वादिक्रमेण – **ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्त्यै नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अङ्कुशाय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ चक्राय नमः।**

पुष्पाञ्जलि – अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शणागत वत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम् ॥

जल छोड़कर कहे – "**पूजिता तर्पिता सन्तु:**"

इसके पश्चात् सर्प के अङ्ग देवताओं का पूजन करें।

ईशाने – ॐ अमृत रक्षिणे मनसा देव्यै नमः।

॥ अङ्गदेवता पूजनम् ॥

ॐ सहस्त्रधारिण्यै नमः पादौ पूजयामि। ॐ अनद्याय नमः गुल्फौ पूजयामि। ॐ विषदन्ताय नमः जङ्घौ पूजयामि। ॐ मन्दगतये नमः जानू पूजयामि। ॐ कृष्णाय नमः कटिं पूजयामि। ॐ पित्रे नमः नाभिं पूजयामि। ॐ श्वेताय नमः उदरं पूजयामि। ॐ उरगाय नमः स्तनौ पूजयामि। ॐ कालिकाय नमः भूजौ पूजयामि। ॐ जम्बूकण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि। ॐ द्विजिह्वाय नमः मुखं पूजयामि। ॐ मणिभूषणाय नमः ललाटे पूजयामि। ॐ शेषाय नमः शिरं पूजयामि। ॐ अनन्ताय नमः सर्वाङ्ग पूजयामि।

गन्धम् - कस्तूरी कर्पूर केसाढ्यं चागररक्तचन्दनम् ।
श्रीचन्द्राढ्यं शुभं दिव्यं गन्धं गृहाण नागाधिपते ॥

अक्षतान् - काश्मीर पंकलितप्राश्च शाललेमानक्षतान् शुभान् ।
पातालाधिपतये तुभ्यं अक्षतान् तं गृहाण प्रभो ॥

पुष्पम् - केतकी पाटलजाति चम्पकै वकुलादिभिः ।
मोगरै शतपत्रश्च पूजितो वरदो भव ॥

इसके पश्चात् धूप, दीप, नैवेद्य अर्पण करें।

नैवेद्यम् - नैवेद्यं गृहतां देव क्षीराज्य दधिमिश्रितम् ।
नाना पक्वान्न संयुक्त पायसं शर्करायुतम् ॥

ऋतुफल, ताम्बूल, दक्षिणा प्रदान कर पुष्पाञ्जलि प्रदान करें।

राहु प्रार्थना

कायाहीनः महाशक्तिः ग्रसते शशिभास्करौ ।
सिंहकेयो महावीर्यो राहु प्रीतो भवेन्मम ॥
महाशिरा महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः ।
अतनुः चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखी ॥

काल प्रार्थना

यमो निहन्ता पितु धर्मराजो वैवस्वतो दण्डधरश्च कालः ।
प्रेताधिपो दत्तकृपानुसारी कृतांत एतत् दशभिर्जपन्तिः ॥
धर्मराज महाकाय दक्षिणाधिपते नमः ।
रक्तेक्षण महाबाहो मम पीड़ां निवारय ॥

सर्प प्रार्थना

ब्रह्मलोके च ये सर्पाः शेषनागपुरोगमाः ।
नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्ना सतु मे सदा ॥
अनन्त संसारधर प्रियतां कालिन्दजा वासक पन्नगाधिपते ।
नमोस्मि मत्वा कृपणं हि हिमं रक्षस्व मां शङ्करभूषणेश ॥
एतैत सर्पाः शिवकण्ठाभूषा लोकोपकाराय भुवे वहन्तः ।
भूतैः समेता मणिभूषिताङ्गाः गृह्णीत पूजां परमा नमो वः ॥

॥ अथ नागमूर्ति प्रतिष्ठा विधानम् ॥

नागमूर्ति को शिवलिङ्ग पर अर्पण करें अथवा नाग पूजन, जप, विसर्जन हेतु काम में लेवें उसकी प्रतिष्ठा अवश्य कां।

पहले मूर्ति के घृत लगाकर तपायें। पश्चात् एक पात्र में रख कर दूध व जल की धारा देकर अग्न्युत्तारण करें।

मन्त्र -

ॐ समुद्रस्यत्वाव कयाग्ने परिव्ययामसि। पावको अस्मभ्य ठं शिवोभव ॥१ ॥

हिमस्यत्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि पावको अस्मभ्य ठं शिवोभव ॥२ ॥

प्राण प्रतिष्ठा - मूर्ति के अङ्गुष्ठ का स्पर्श कर सर्प के जीव, प्राण, अङ्गों की कल्पना करें। यदि नवनाग की मूर्तियाँ है तो उनके अलग अलग नाम का उच्चारण करते हुये प्रतिष्ठा करें।

मन्त्र - ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हंसः अमुक सर्पस्य प्राणा इह प्राणा।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हंसः अमुक सर्पस्य जीव इह जीव स्थिर।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हंसः अमुक सर्पस्य वाङ्मनः चक्षुः श्रोत्र जिह्वा घ्राण पाणी पदादीनि इहागत्य स्वस्तये सुखेन चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

इस मन्त्र को तीन बार पढें।

पश्चात् उन्हें विराजमान कर प्रतिष्ठा की भावना कर अक्षत् पुष्प छोडें।

ॐ मनोजूतिर्जुसतामाजस्य बृहस्पतियज्ञमिमन्तो त्वरिष्ट यज्ञं ठं समीदमन्द दधातु विश्वेदेवा साऽइहमादयंता ॐ प्रतिष्ठा सुप्रतिष्ठा वरदो भव।

यदि विसर्जन व पूजन हेतु नागों के जोडे बनाये हो तो नवनाग के साथ "**अमुक नाग सपत्निकाय**" कहकर प्रतिष्ठा करें।

नागनाम - अनन्त, शेष, वासुकी, पद्म, कंबल, कर्कोटक, तक्षक, शङ्खपाल, कालीय, शङ्ख, अश्वतरूप, नील, धृतराष्ट्र, कपिल इत्यादि का पूजन करें।

नव अथवा द्वादश नाग का विशेष पूजन होता है।

नागगायत्री मन्त्र - ॐ नवकुलाय विघ्नेह विषदन्ताय धीमहि तन्नो सर्पः प्रचोदयात्।

॥ अथ शिवो सर्पाऽर्पण विधानम् ॥

जिस शिव मन्दिर में शिवलिङ्ग पर सर्प चढ़ाया हुआ नहीं हो वहां सर्प का अर्पण करने से विशेष पुण्य मिलता है। उस पुण्य से सर्पदोष का क्षय होता है।

शिवलिङ्ग के परिमाप का सर्प बनवायें। गणपति, मातृका, नवग्रह पूजन करें, सर्प की प्राणप्रतिष्ठा करें। उसका पूजन करें तथा शिव का दुग्धाभिषेक, पञ्चामृताभिषेक करके ब्राह्मणों द्वारा रुद्रपाठ युक्त रुद्राभिषेक कराकर सर्प को शिव के कण्ठाकार में अर्पित करें।

पुण्यफल शिव को अर्पण करते हुये प्रार्थना करें –

एह्येहि नागेन्द्र धराधरेश सर्वामरैर्वन्ति पादपद्म ।
नानाफणा मण्डलं राजमान गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥१ ॥
आशीविषसमोपेत नागकन्या विराजित ।
प्रसन्नो नागराजेन्द्र त्वं शिव सन्निधो भव ॥२ ॥
ब्रह्मलोके च ये सर्पाः शेषनागपुरोगमाः ।
नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्ना सन्तु मे सदा ॥
विष्णुलोके च ये सर्पाः वासुकिप्रमुखाश्च ते नमोस्तु ।
रुद्रलोके च ये सर्पाः तक्षकप्रमुखास्तथा नमोस्तु ॥
अनन्तं वासुकिं शेषु पद्मनाभं च कंबलम् ।
शङ्खपाल धृतराष्ट्रं तक्षकं कालिकं तथा ॥
एतानि नवनामानि नागानां च महात्मनम् ।
सायंकाले पठेनित्यं प्रातः काले विशेषतः ।
तस्मै विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत् ॥

पुनः प्रार्थना करें –

एतैत सर्पाः शिवकण्ठभूषा लोकोकाराय भुवंवहन्तः ।

भूतैः समेता मणिभूषितांगाः गृह्णीत पूजां परमां नमो वः ॥
कल्याणरूपं फणिराजमग्र्यं नानाफणामण्डल राजमानम् ।
भक्त्यैगम्यं जनताशरण्यं यजाम्यहं नः स्वकुलभिवृद्धये ॥

नाग गायत्री मन्त्र से प्रणाम करें -

ॐ नवकुलाय विद्महे विषदन्ताय धीमहि तनो सर्पः प्रचोदयात् ॥

कर्म समर्पण - शिवकण्डभूणाय नागदेवता शिवशोभिताय मम कालसर्पदोष शान्ताय श्रीसदाशिवार्पणमस्तु ॥

॥ अथ नवनाग स्तोत्रम् ॥

अनन्तं वासुकिं शेषं पद्मनाभं च कम्बलम् ।
खङ्खपालं धृतराष्ट्रं तक्षकं कालियं तथा ॥१॥
एतानि नवनामानि नागानां च महात्मनाम् ।
सायंकाले पठेन्नित्यं प्रातःकाले विशेषतः ॥२॥
तस्मै विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत् ॥३॥

॥ अथ सर्पसूक्तम् ॥

सार्पसूक्त का पठन नाग पञ्चमी, नाग पूजन व नाग विसर्जन के समय करें।

ब्रह्मलोके च ये सर्पाः शेषनाग पुरोगमाः ।
नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ॥१॥
विष्णुलोके च ये सर्पाः वासुकिः प्रमुखादयः ।
नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ॥२॥
काद्रवेयाश्च ये सर्पाः मातृभक्ति परायणाः ।
नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ॥३॥
इन्द्रलोके च ये सर्पाः तक्षको प्रमुखादयः ।
नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ॥४॥
सत्यलोके य ये सर्पाः वासुकिना च रक्षिताः ।
नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ॥५॥
मलये चैव ये सर्पाः कर्कोटः प्रमुखादयः ।

नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ॥६॥
समुद्रतीरे ये सर्पाः ये सर्पाः जलवासिनः ।
नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ॥७॥
रसातले च ये सर्पाः अनन्तादि महाबलाः ।
नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ॥८॥
सर्पसत्रे तु ये सर्पा आस्तिकेन च रक्षिताः ।
नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ॥९॥
धर्मलोके च ये सर्पाः वैतरण्यां समाश्रिताः ।
नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ॥१०॥
पर्वताणां च ये सर्पाः दरीसन्धिषु संस्थिताः ।
नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ॥११॥
खाण्डवस्य तथा दाहे स्वर्गं ये च समाश्रिताः ।
नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ॥१२॥
पृथिव्यां चैव ये सर्पाः ये च साकेतवासिनः ।
नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ॥१३॥
सर्वग्रामेषु ये सर्पाः वसन्ति सर्वे स्वच्छन्दाः ।
नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ॥१४॥
ग्रामे वा यदिवारण्ये ये सर्पाः प्रचरन्ति च ।
नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा ॥१५॥

॥ अथ नाग सहस्रनामावली ॥

नाग सहस्र नामावलि का पाठ करें या एक एक नाग के नाम से गन्ध, अक्षत्, पुष्प, नैवेद्य चढ़ाकर प्रत्येक नाम मन्त्र से हवन करने से उत्तम लाभ होवे। कालसर्प दोष व सर्प भय नष्ट होवे। अकस्मात् लाभ होवे।

नाग सहस्र नामावलि से हवन करते समय नाम के साथ **स्वाहा** लगायें।

विनियोग: – **ॐ अस्य श्रीनागदेव सहस्रनाम मन्त्रस्य अग्निऋषिः, सर्वाणि छन्दः, तक्षो देवता, क्षं बीजं, ह्रीं शक्तिः, नृं हृदयम्, क्लीं कीलकं विषं इति अस्त्रम् अमृतं इति कवचं, अनन्तशेषतक्षकं इति परमो मन्त्रः श्री अनन्तादि नवकुल नागदेवता प्रीत्यर्थं कालसर्प दोष परिहारार्थं सहस्रनामभिः पुष्पार्पणे (बिल्वार्पण, तुलसीदलार्पण) विनियोगः।**

ॐ अनन्ताय नमः। (इसी प्रकार प्रत्येक नाम के पहले **ॐ** व अन्त में नमः लगावें।) **शेषाय., तक्षकाय., वासुकिये., शंखपालाय., महापद्माय., कंबलाय., कर्कोटकाय., कुलिकाय., फणिराज्ञे., स्थिराय., प्रभवे., भीमाय., प्रवराय., वरदाय., वराय., मणिमण्डलभूषिताय., सर्वात्मने., सर्वविख्याताय., सर्वस्मै., सहस्रपदे., गूढगुल्फाय., हेमजंधाय., दिगंबराय.,।**

गंभीराय., वाताशनाय., उरगाय., कालीयाय., कम्बुकण्ठाय., विषकलाय., मणिभूषणाय., सुलक्षणाय., सर्वज्ञाय., भयाय., गरिम्णे., गर्विणे., सर्वांगाय., सर्वभावनाय., सर्वभूतहराय., वृत्तये., निवृत्तये., नियंताय., शाश्वताय., ध्रुवाय., भगवते., अर्हणाय., अभिवाद्याय., महाकर्मणे., उन्मत्ताय., प्रच्छन्नाय., पातालवासिने., महायशसे., महा- कायाय., पन्नगाय., शङ्करभूषणाय., अनन्तशिखिने., पातालवासाय., यशकर्त्रे., विश्वरूपाय., महाहनवे., लोकपालाय.।

अंतर्हितात्मने., प्रसाद्याय., पवित्राय., महते., नियमाय., नियमाश्रिताय.,

यमुनान्तर्वासिने., विषग्रहाय., विषहन्त्रे., नागेन्द्राय., नागकन्या परिवृत्ताय., नागलोकाधिपतये., शौरये., अपराजिताय., स्वकर्मणे., सर्वभूताय., आवये., अविकाराय., निधये., सहस्राक्षाय., विशालाक्षाय., शनवे., केतवे.,ग्रहाय., ग्रहपतये., कालघ्ने., विश्वरूपिणे., विश्वात्मने., जगत्पतये., सर्वभूतात्मने.,।

सर्वेश्वराय., चञ्चलाय., चपलाय., महाबलाय., उत्कंठाय., अंबुजाय., अहिर्बुध्न्याय., आह्निककर्मणे., अमितविक्रमाय., अपराजिताय., अश्वदाय., अग्निनेत्राय., अग्निवपुषे., अत्रिपुत्राय., अनघाय., आदिनाथाय., साधकाय., मन्त्राय., योगिने., योज्याय., महाबीजाय., महारेतसे., महाबलाय., सर्वज्ञाय., सुबीजाय.।

बीजवाहनाय., भूपतये., विश्वरूपाय., स्वयंश्रेष्ठाय., बलाधीशाय., अबलाय., अट्टाहासाय., अनाकुलाय., अघनाशिने., अनघाय., अप्सुनिलयाय., अर्हाय., अष्टमूर्तये., अनिर्विण्णाय., अचंचलाय., अष्ट- दिक्पालमूर्तये., अन्तकराय., गणाय., गणकर्त्रे., कामाय., सर्वभावकराय., सुरूपाय., तेजसे., तेजस्करनिधये., उदग्राय.।

दीर्घाय., हरिकेशाय., सुतीर्थाय., सिद्धार्थाय., सर्वशुभकराय., अरूपाय., अनन्तरूपाय., अभयंकराय., अक्षराय., अभ्रवपुषे., अव्ययाय., अनादि-निधनाय., अघशत्रवे., अमराविघ्ने., हर्त्रे., अनादये., अनुत्तमाय., अह्ने., अमोघाय., बहुरूपाय., कपर्दिने., ऊर्ध्वरेतसे., सेनापतये., विभवे., अहश्चराय.।

नक्तं चराय., निम्नमन्यवे., सुवर्चसाय., गजघ्ने., दैत्यघ्ने., कालाय., लोकधाम्ने., गुणकराय., सिंहशार्दूलरूपाय., कालयोगिने., महानादाय., सर्वकामाय., निशाचराय., बहुधराय., स्वर्भानवे., गतये., नित्यप्रियाय., नित्यनर्ताय., नर्तकाय., सर्वलालसाय., घोराय., नित्याय., गिरिसहायाय., अनभसे., विजयाय.।

व्यवसायाय., अतीन्द्रियाय., अघर्षणाय., घर्षणात्मने., कामनाशकाय., सुसहाय., मध्यमाय., तेजोपहारिणे., बलदात्रे.। २००

भूरिदाय., अर्थाय., अवराय. गरलाशाय., गंभीराय., गंभीरबलवाहनाय., बृहत्कर्णस्थितये., सुतीक्ष्णदशनाय., महाकार्याय., महाननाय., अहायाय., अमृताय., अघोरवीर्याय., अवृंगाय., अविघ्नाय., अमिततेजसे., अतिवंद्याय., अष्टाङ्गन्यासरूपाय., अनिलाय., अवशाय., अनावरणीयाय., तीक्ष्णतापाय., सहाय., कर्मकालविदे., समुद्राय.।

वडवामुखाय., हुताशनसहायाय., प्रशान्तात्मने., हुताशनाय., उग्रतेजसे., जन्याय., विजयकालविदे., ज्योतिषाम्नायाय., सिद्धये., सर्वविग्रहाय., शिखिने., ज्वालिने., मूर्तिदाय., भुजङ्गाय., बलिने., तेजस्विने., शङ्खाय., पद्माय., अश्वतराय., धृतराष्ट्राय., पणविने., कालियाय., कपालाय., तालिने., खलिने.।

कालात्मकवंटकाय., नक्षत्रविग्रहमनसे., गुणबुद्धये., भावाय., अनामयाय., प्रजापतये., विश्ववाहवे., विभावाय., सर्वगाय., विमोदनाय., सुराख्याय., हिरण्यकवचधराय., भेदभंजकाय., बलहारिणे., महीचारिणे., अशोकाय., अनुकूलाय., अमिताशनाय., अरण्यनासिने., अप्रभावाय., अनलाय., स्नुवाय., सर्वतुर्यविनाशिने., सर्वतापपरिग्रहाय., व्यालरूपाय.।

गुहावासिने., गुहाय., मालिने., तरंगविदे., अनिर्देश्यवपुषे., अहोरात्राय., अमृत्यवे., अकारादिहकारान्ताय., अनिमिषाय., अस्वरूपाय., अग्रण्याय., महिषाय., विकालदृगे., सर्वकर्मबंधविमोचनाय., असुरेन्द्राणां बंधनाय., युधि शत्रुविनासिने., सांख्यप्रसादाय., दुर्वाससे., सर्वशत्रुनिषेविताय., प्रस्कन्दनाय., विभागशयाय., अनुकूलाय., अप्रथिताय., असंख्येयाय., अन्नपतये.॥ ३००॥

अमृतपतये.,अजिताय., यज्ञांगविदे., सर्वचारिणे., दुर्वासहृदये., वासनाय., सर्ववासाय., हेमांगाय., अमराय., धरोत्तमाय., लोहिताय., महाज्ञानाय., विजयाय., विशाखाय., सर्वकामदाय., सर्वकालप्रसादाय., सुबलाय., बलारूपधृगे., अपांनिधये., अपांपतये., असुरघातिने., अमरप्रियाय., अधिष्ठानाय., अरविन्दप्रियाय., अरविन्दवदनाय., अष्टसिद्धिदाय.,।

संग्रहाय., निग्रहाय., मुख्याय., अमुख्याय., सर्वोपरिनिवासनाय., देहाय., सर्वकामवराय., महावेगाय., वसुव्रेगाय., सुवर्चस्विने., बहुरश्मने., अंशवे., रौद्ररूपाय., अवशाय., जितात्मने., आकाशनिर्विरूपाय., सर्वज्ञाय., निशांपतये., अतिदीप्ताय., सहस्रदाय., मनोवेगाय., सर्ववासिने., श्रद्धावासिने., अकाराय., उपवेशकराय.।

आत्मभिदे., संलग्नाय., अनन्तशयाय., अनन्तब्रह्माण्डपतये., अशिवविनाशाय., अतिभूषणाय., अविद्याधराय., सिद्धसाधनाय., महर्षये., सिद्धयोगिने., दक्षिणाय., प्राच्यै., यशसे., अर्थकराय., अव्ययाय., भावनाय., कामाय., उन्मादाय., भिक्षवे., विषयाय., मृदवे., महीसैन्याय., विशाखाय., षष्ठिभागाय., रिपुभिदे.,

चतुरस्तंभाय., वृत्तावृत्तकराय., ताल्घ्नाय., मधवे., अतिप्रियाय.,

अकल्मषाय., अकलयाय., अतुलितबलाय., अचलरूपाय., अघोराय., अक्षोभ्याय., अलक्ष्मीनाशकाय., मधुकलाय., वाचस्पतये., वाजसेनाय., आश्रमपूजिताय., ब्रह्मचारिणे., लोकचारिणे., विचारविदे., सर्वचारिणे., अतिसुन्दराय., मनोहराय., अद्वैताय., अमितप्रभवाय. ॥४०० ॥

अवनिपतये., अपवर्गप्रदाय., कालाय., निशाचारिणे., पिनाकधृषे., विभिन्नस्थाय., नन्दिने., नन्दिकराय., अर्चिष्मते., निमित्ताय., नन्दनाय., अघहारिणे., विरंचिने., विश्ववरदाय., ज्ञानरूपाय., विश्वचक्षुषे., जगन्मायिने., महाकालाय., विद्यनिधये., अमदाय., गजरूपाय., सत्यधराय., सुराधीशाय., समस्तसाक्षिणे., संसाराय. त्रिलोकाय.।

अमोघविक्रमाय., पुष्टाय., वक्रगतये., कान्तिदाय., कामरूपिणे., काम-योगिने., कमलाक्षाय., शुद्धाय., दीर्घतुण्डाय., सुराध्यक्षाय., योगाध्यक्षाय., बीजाध्यक्षाय., बलाय., इतिहराय., निशाकराय., दलाय., अह्नाय., वेदर्भाय., भारवर्जिताय., आपदाय., गणप्रियाय., गणप्रियसुहृदे., गणविहरणानित्याय., गणप्रतीतिवर्धनाय., अतिधूम्राय.।

गणगर्वपरिहर्त्रे., गणप्रवृत्तमानसाय., महाश्रूलाय., अग्निज्वालाय., महा-घोराय., महामेघवासिने., अमरमर्दनाय., भयङ्कराय., नैष्काराय., अभयदात्रे., बहुप्रसादाय., अनागताय., गोत्रार्तिनाशिने., गोत्रप्रियाय., गोत्रपतये., गोपद-प्रियाय., गौतमाय., अविनाशाय., गौतमामृत्युपरिहाराय., गौतमीतीर्थदाय., गौतमार्तिसंहारिणे., महायशदार्त्रे., महाकायाय., सर्ववह्निमणिप्रियाय, सुवर्णाय.।

कुलवर्णाय., महागर्भपरायणाय., महाकालाय., उत्सर्गाय., लघवे., महा-ग्रीवाय., शरण्याय., सिद्धसेनाय., अव्यग्राय., गणाध्यक्षाय., गणसाध्याय., गणनायकाय., ज्योतिश्चराय., सिद्धवेदाय., लीलासेविताय., पूर्णाय., परम-सुन्दराय., नित्याय., कवये., लोककर्मिणे., महाकर्त्रे., अनौषधाय., परब्रह्मणे., कालपतये. ॥५०० ॥

नीतये., अनीतये., शुद्धात्मने., स्वस्तिभावाय., स्वस्तिदाय., शूरमदाय., दिव्यपापघ्नाय., भक्तकल्पाय., कल्याणगुरवे., सहस्त्रशीर्षे., निरविग्रहाय., शोभनाय., अंगलुब्धाधाय., नीलाय., वर्चस्विने., हविषे., गणभूतये., गणवल्लभाय., मूतर्य., गणसर्वस्मै., गणप्राणाय., गणस्तुताय., भागकराय., भामिने., कलिनाशनाय., महायोगिने.।

महात्मने., भुवनेश्वराय., भूतभव्याय., भाविताात्मने., भूतनिकराय.,

शरण्याय., वरेण्याय., सुसंयुक्ताय., परद्राणाय., प्रीतात्मने., महाबुद्धये., प्राप्तबाणाय., गरिष्ठदृशे., गौरकीर्तये., गौरिप्रणयाय., गौरिवरप्रदाय., गौरि-प्रियाक्षाय., गौरीशनन्दनाय., मनोवाञ्छितसिद्धकृते., महामूर्ध्ने., महानेत्राय., महान्तकाय., महाहनवे., महानासाय., महाग्रीवाय.।

अन्तरात्मने., बभ्रुवाहनाय., आनन्दितमनसे., कृतमङ्गलाय., कपर्दिने., प्रचण्डवेगाय., सुमनसे., धर्मवरुणाय., समायुक्ताय., कृतिनांवराय., आस्य-दंतपंक्तये., श्रेष्ठाय., कारुणिकाय., बोधकाय., समलोकज्ञाय., सर्पराज्ञे., संजीवनाय., जीवनाय., जगज्जीवाय., जगत्पतये., गणैकनेत्रे., गानपराय., गानयज्ञाय., गानसिंघवे., गानभूषणाय.।

गानसमुद्राय., गानाङ्गज्ञानदृगे., गानभूतये., गानोत्सुकाय., महाभूताय., महादिव्याय., महाद्रष्ट्रे., महाकृताय., महामायाय., मायातत्त्वय., गतश्रमाय., ज्ञानविज्ञानसम्पन्नाय., गानश्रवणलालसाय., गानयज्ञाय., गानप्रणयवते., गानध्यात्रे., गानगुणिने., विश्वप्रियाय., संविभागिने., कल्पकर्त्रे., कल्याणकराय., परावराय., परावज्ञाय., समास्थाय., अर्थप्रदाय. ॥६००॥

देवाधिपतये., मेरुधाम्ने., मण्डलिने., वायुवाहनाय., अनलाय., स्नेहाय., अस्नेहाय., अर्हिताय., महामुनये., गंधर्वाय., विद्वत्तमाय., विधये., पतंगाय., गतिप्रियाय., सर्वदमनाय., भावितात्मने., दीर्घक्रोधाय., आलोककृते., नाभये., आशुवेगाय., अध्ययनाय., कालपूजिताय., कालाय., कालिकाय., यज्ञाय.।

यज्ञसमाहिताय., कीर्तिकराय., वरुचिने., परंतापाय., अमरश्रेष्ठाय., समु-दाचाराय., तमोघ्ने., अंतःकरणाय., प्रमतनिद्राय., भूतेशाय., गगनस्थाय., जीवानन्दाय., अग्नये., ध्रुवाय., वरुणपाशाय., जगत्स्वामिने., कंचनवृद्धाय., कनकाय., उपकाराय., अभिगम्याय., अमोघाय., प्रशमाय., ऋजु- पादभुजाय., सगणाय., वीर्यनिधये.।

असंगगामिने., सुरकार्यज्ञाय., सुरश्रेष्ठाय., सुरपतये., वयसांपतये., संप्रतापनाय., भूमिजनकाय., अनिमिषगतये., सर्वपूजिताय., कवीशाय., कपिलाय., अंबुजाय., विश्वकर्मभूतये., जलेशयाय., महाक्रोधाय., अनुकांक्षिणे., पराय., अपराय., सर्वाङ्गरूपाय., मायाविने., सत्यशस्त्राय., विश्वेदेवाय., अनिलयाय., अलौकिकाय., सर्वतोमुखाय,।

प्रणताय., कालानिलद्युतये., सुखसम्पदाय., जगतामादिकारणाय., महेन्द्रमित्राय., सर्वपतये., सर्वशत्रुनिवारणाय., सर्वकल्याणभाजनाय.,

वैश्रवणाय., सर्वाशयाय., पुण्यसंचयाय., अतिशांताय., महागर्भाय., उरुगाय., दीर्घलोचनाय., समायुक्ताय., लोकेशाय., अलोकेशाय., वेद- निलयाय., प्रकृतिस्थिताय., हरिप्रियाय., मोक्षाधारनिकेतनाय., राजाधिराजाय., विद्याधराय., विषादधुने ॥७०० ॥

सर्वोपाधिस्थितिकराय., स्वाहास्वधावेदाधिकाराय., विघ्नदात्रे., सुगन्ध-प्रियाय., धर्मप्रवर्तकाय., वेदप्रतिष्ठाय., सर्वप्राणपतये., सुखकराय., सर्वरत्नविदे., जगत्कालस्थानाय., लोकहिताय., कवचांगाय., सर्वभूत- वादिने., सर्वभूतनिलयाय., दिव्यजनमनोहराय., मायामुक्ताय., अधिदेवाय., पुराणप्रभवे., सत्त्वात्मने., सप्तसागराय., सत्यविदे., सत्त्वसाराय., सत्य- ध्यानप्रियाय., संतापनाशनाय., सर्वनिर्णयाय.।

सर्वसाक्षिणे., बहुलानन्दवर्धनाय., अव्यक्तपुरुषाय., परमात्मने., परात्परविनिर्मुक्ताय., सत्यप्रकाशात्मने. भावकरणाय., भयसन्तापनाशनाय., प्रत्यक्ब्रह्मसनातनाय., प्रमाणविगताय., प्रत्याहारिनियोजकाय., प्रणवाय., प्रणवातीताय., परमात्मने., प्रबोधकाम्नाधाराय., संस्थिताय., यज्ञाय., आवेदनीयाय., सर्वसंघसुखाय., तारणाय., कलाधिपतये., परात्पराय., चराचरविकासकृते., विश्वप्रणवकृते., नमस्कारप्रियाय.।

युगादिकरणाय., वेदशास्त्राय., जातवेदसे., जगद्धृते., कांन्तये., संयोग-वर्धनाय. गुणाधिकवृद्धाय., नित्यतृप्ताय., सुवर्णविज्ञात्रे., आवर्तमानवपुषे., वसुश्रेष्ठाय., अङ्गिरसयोगिने., निर्जीवाय., निधनाय., महार्णवाय., पण्डिताय., मदपाय., युगरूपाय., युगकराय., अधियोगाय., धर्मकर्म- प्रभावकृते., आधारभूताय., धनधान्यसमृद्धिने., सन्तापसंहर्त्रे., मनोवाञ्छित दायकाय.।

कालाभयनन्तरूपाय., मुनिवरनमस्कृताय., सामन्यधनपूजिताय., समाराधनाय., भक्तदुःखक्षयकराय., भवसागरतारकाय.,विसर्गाय., सकलाध्यक्षाय., सुमुखाय., सर्वयुद्धाय., सुखजाताय., सर्वकर्मोत्थानाय., अप्रमेयपराक्रमाय., दिव्यचैतन्याय., देवानां परमागतये., परंधाम्ने., परंसुखाय., व्यवसायफलप्रदे., योगमायाधराय., परंतपसे., योगारीन्- प्रकाशाय., योगपातालाय., सत्यविद्यानमस्काराय., जगन्मोहनाय ॥८०० ॥

इडानाड़ीस्वरूपाय., मरणदुःखविमोचनाय., कृपासिंधवे., कल्पद्रुम निषेविताय., चिन्तामणिप्रियाय., चिन्तासागरवारणाय., चिन्तामणि विभूषिताय, कुण्डलिने., विकृताय., सर्वाश्रयकामाय., ऊर्ध्वसंहताय., सर्वदेवमयाय.,

सर्वलोककृते., एकाय., एकांतिकाय., नानाभाव विवर्जिताय., पूर्णविषाय., नानारूपधराय., प्राणपञ्चकनिर्मुक्ताय., कवि पञ्चकवर्जिताय., निर्वाणाय., निष्कालाय., निष्प्रपञ्चाय., निराश्रयाय., निष्ठासर्वज्ञाय.।

संसारश्रमनाशकाय., दूरत्वपरिनाशाय., प्रत्यक्चैतन्यगर्भाय., आरोग्य सुखदाय., अनन्तविक्रमाय., जितसिंधवे., जयप्रदाय., जनानन्दाय., जगत्पापनाशनाय., तीर्थसेविने तीर्थवासिने., तीर्थनीरनिवासकराय., तपोनिष्ठाय., तपोधनसमाश्रयाय., त्रैलोक्यवशकराय., दारिद्रनाशकाय., दुःखसागर भन्जनाय., कृष्णपिंगलाय., कृष्णवर्णाय., ऊर्ध्वगात्मने., अनन्तरूपाय., स्वयंभुवे., अतितेजसे., जगद्पालकाय., धर्मवर्धनाय., अमृताय.।

उपद्रष्ट्रे., वेदसिद्धान्तवेद्याय., पुरातनाय., तापत्रयनिवारकाय., संसार तमनाशकाय., सङ्कल्पदुःखदहनाय., तापसोत्तमवंदिताय., ब्रह्म प्रकाशात्मने ब्रह्मविद्याप्रकाशनाय., सर्वभावविदिताय., वरेण्याय., महाप्रसादाय., प्रयतात्मने., साध्यर्षये., सर्वसुसङ्कल्प विस्तारणाय., सूक्ष्मात्मने., सर्व साधारणाय., प्रधानधृगे., जीवसञ्जीवनाय., परिक्रमाय., महाभीमाय., सर्वभावविनिःसृताय., अंतःशून्याय., बहिःशून्याय., शून्यात्मने,।

शून्यभावनाय., अंतःपूर्णाय., अनन्तपूर्णाय., अन्तर्योगिने., अन्तर्निष्ठाय., बाह्यांत र्विमुक्ताय., कालकालाय., कैवल्याय., निगमाश्रयाय., युक्त सद्गतये., प्रजाजीवाय., संख्यासमाय., पर्यटनपराय., आयनिर्गमाय., निर्वाणाय., मोक्षकराय., विविक्ताय., भावाय., असंवेदिने., अनाश्रयारंभाय., देहधर्म विदितात्मने., सर्वकामफलप्रदाय., सर्वकामनिवर्तकाय ॥९०० ॥

सर्वकामफलाश्रयाय., जगद्वपुषे., मालासप्तप्रवर्तकाय., संशयार्क वशंकराय., फलदात्रे., फलेश्वराय., फलिरूपाय., फलिगर्भाय., बुद्धसार निर्वाणकाय., शङ्करप्रियाय., भयनाशकाय., महावताराय., भारभृते., भुवन भयाय., देवासुरगणाश्रयाय., देवासुरनमस्कृताय., परागतये., देवासुर गणाधिपतये., देवासुरगुरवे., विश्रामाय., आत्मसंभवाय., माननीयाय., मूर्ताय., मत्तमातङ्गविक्रमाय., मर्मज्ञाय.।

मन्दारकुसुमप्रियाय., यशस्याय., यशोराशये., योगकर्त्रे., योगपालनाय., राजमण्डलप्रतिष्ठाय., रक्षोघ्ने., वसुधापालकाय., वायुजीवाय., वायुबीजाय., विश्वकराय., शरणाश्रयाय., शोभनाय., सुदर्भाय., अमराय., पिलुशाय., सर्वदेवाय., सुरगणाय., अभिरामाय., सर्वपावनाय., वज्रिणे., शान्तिदात्रे.,

शान्तिरक्षकाय., षट्चक्रभेदनकराय., सज्जनप्रियाय.।

सर्वपापप्रमोदकराय., सर्वसाधनाय., नियमवर्धनाय., सिद्धभूताय., भक्तानां सुखदे., परमागतये., सर्वानां नमस्कृताय., सर्वयशस्वरूपाय., क्षेमप्रदाय., स्थावरपतये., वराय., ब्रताधिपाय., श्रीवर्धनाय., सकलात्मने., पूज्याय., सहस्त्ररूपाय., परसंवेदनात्मकाय., स्वानुसंधानाय., भोगमोक्ष कलाप्रदाय., सागराय., योगिहृदयविश्रामाय., आदिदेवाय., रसातलस्थिताय., शुद्धाय.।

सर्वव्याधिनिवारकाय., दुःखस्वप्ननाशकाय., सौम्याय., विषबाधा विनाशकाय., वीर्यातिशयसंयुक्ताय., नागराज्ञे., धर्मधारकाय., भक्तेष्ट दाननिरताय., प्रसन्नात्मने., पुरातनाय., अनन्तनाम्ने., सुमनसे., रसातल समाश्रिताय., वायुभक्षिणे., धराशायिने., धर्माऽधर्मविवेचकाय., पुत्रदाय., कीर्तिदाय., सत्याय., भक्तानामभयङ्कराय., सौभाग्यदाय., सदासेव्याय., ज्ञानमार्गप्रदीपकाय नमः ॥१००१॥

॥ इति श्री नाग सहस्त्र नामावलि ॥



॥ श्री राहुतन्त्रम् ॥

॥ राहुकाल समय निर्णय ॥

राहुकाल की मान्यता दिन में ही हैं रात्रि में नहीं है। अतः दिनमान के आठ भाग कीजिये उन आठ चौघड़ियों की गणना इस प्रकार करे। रविवार को ८ वां (४.३० से ६बजे) सोम को दूसरा (७.३० से ९ बजे) मंगल को ७ वां (३ से ४.३०तक) बुध को ५ वां (१२ से १.३० तक) गुरु को छठा (१.३० से ३ तक) शुक्र को चौथा (१०.३० से १२ बजे) शनि को तीसरा (९ से १०.३० तक) चौघड़िया राहुकाल का होता हैं। यह समय ६ बजे सूर्योदय व ६ बजे सूर्यास्त के हिसाब से लिखा हैं। दिन छोटे बड़े होते रहते हैं अतः सूक्ष्मगणना पूरे दिनमान के अनुसार करे।

राहु का जन्म

श्रीमद्भागवत् महापुराण के अनुसार दैत्यराज राहु का जन्म वैप्रचित दैत्य कुल में भरणी नक्षत्र में हुआ। उसकी माता का नाम सिंहीका था। सिंहीका होलीका की बहन व भक्त प्रहलाद की बुआ थी। राहु के सौ भाई थे। सिंहीका के गर्भ से एक फणी (भारी फन वाला) वाले नाग के रूप में राहु का जन्म हुआ। राहु एक इच्छाधारी नाग था। वह अपने शरीर को किसी भी रूप में परिवर्तित कर लेता था।

सागर मन्थन के समय भगवान विष्णु ने कूर्मावतार धारण कर मन्दराचल पर्वत को धारण किया। वासुकि नाग को उससे लपेटा गया। उस नाग के फन को दानवों ने व पुच्छ के हिस्से को देवताओं ने पकडा। सागर मन्थन में सभी वस्तुओं के साथ अमृत भी निकला। उस अमृत को पीने के लिये देवताओं व दानवों में लड़ाई शुरु हो गई। तब भगवान विष्णु ने मोहिनी रूप धारण करके सुझाव दिया कि एक कतार में देवता व दूसरी कतार में दानव बैठें, वे दोनों को बारी बारी से अमृत का पान करायेंगी।

सभी ने उनका यह सुझाव मान लिया। भगवान विष्णु छल से देवताओं को अमृत पान करा रहे थे तथा मोहित दानवों को नहीं। राहु यह बात समझ गया। वह दानवों की कतार से उठ कर देवता का रूप धारण कर, देवताओं की कतार मे बैठ गया। भगवान ने उसे देव समझ कर अमृत पान करा दिया। किन्तु तुरन्त ही यह बात उनके समझ में आ गई। उन्होनें राहु का सिर अपने सुदर्शन चक्र से काट दिया। राहु तो अमृत पी चुका था। अत: उसका धड़ व शिर अलग हो गये। परन्तु दोनों ही जीवित रहे।

इस प्रकार धड़ का नाम केतु व शिर का नाम राहु हो गया। केतु संभवत: आश्लेषा नक्षत्र में हुआ। राहु एक इच्छाधारी सर्प था इसलिये राहु-केतु के योग को सर्प योग भी कहते हैं। तथा राहु का भरणी नक्षत्र व केतु का आश्लेषा नक्षत्र है जिनका स्वामी ''काल'' व ''सर्प'' होने से कालसर्प योग कहलाता है।

राहु का वाहन सिंह तथा केतु का वाहन मत्स्य है। महाभारत भीष्म पर्व के अनुसार राहु ग्रह मण्डलाकार होता है।

नागवीथि - अश्विनी, भरणी, कृत्तिका यह तीनों नक्षत्र अन्तरिक्ष के जिस खण्ड में रहते है उसे ''नागवीथि'' कहते हैं।

तिथियाँ - सर्प को पञ्चमी तिथि तथा काल को दशमी तिथि का अधिष्ठाता कहा गया है।

राहु की विशेषताएं

राहु विद्युत शक्ति का कारक है। अत: बीजली की चोरी व बिजली के सामान की चोरी नहीं करनी चाहिये, इससे राहु का ऋण बढ़ता है एवं व्यर्थ खर्चा बढ़ता है एवं परेशानी प्राप्त होती है।

विभिन्न तरह के शाप, पितृशाप, मातृशाप, भ्रातृशाप, गुरुशाप, पत्निऋण आदि राहु से देखे जाते हैं।

राहु शुभ होता है तो प्रतापी, शत्रुहंता एवं बलवान होवे। यह अशुभ हो तो राजा से रङ्क एवं शुभ होने पर रङ्क से राजा बना देता है।

ऋषि पाराशर कहते हैं कि राजयोग प्राप्ति के बाद व्यक्ति अहंकारी निरङ्कुश एवं कपटी भी हो सकता है।

शुभ राहु **सुरपति व देवांश योग** बनाता है।

सुरपति योग – पाँचवें राहु, चन्द्र मङ्गल दूसरे या तीसरे स्थान में होने से यह योग महाधनी बनाता है। उच्च पद भी देता है।

देवांश योग – राहु दशवें, शनि लाभ में हो एवं उन पर नवमेश की दृष्टी हो तो राज योग बनता है।

अन्य योग इस प्रकार है –

- जातक के राहु मङ्गल साथ हो, तो आक्रामक व हिंसक होता है।
- राहु बुध साथ हो तो जातक वणिज बुद्धि वाला हो। ऐसा भी अनुमान है कि ऐसा व्यक्ति पिछले जन्म में साधु-सन्त हो तो बाद में गृहस्थ जीवन अपनाया या अपनी शिष्या से सम्पर्क बनाये।
- राहु सूर्य युति, पिता को कष्टकारक हो, स्वयं के कार्यों में विघ्न आये।
- राहु चन्द्र योग से व्यक्ति कल्पना अधिक करे लाभ कम होवे।
- राहु बृहस्पति योग से व्यक्ति किसी का उपकार नहीं माने। वह व्यक्ति नास्तिक, गुरु, ब्राह्मण का द्वेषी भी हो सकता है।
- राहु शुक्र वाला जातक विलासी हो, पत्नि शाप का अवलोकन करना चाहिये।
- राहु शनि युति वाला व्यक्ति पूर्व जन्म में अमीर रहा होगा। गरीबों व कर्मचारियों का शोषण किया होगा। किसी की आत्मा को दुःख पहुँचाया होगा। जिसके दुष्परिणाम इस जन्म में भोगने पड़ेगे।
- राहु के कारण जातक तन्त्र मन्त्र, बुरी आत्माओं से भी प्रभावित रहता है।
- राहु के कारण मिथ्याभाषी, दुराचारी, कपटी व स्वार्थी एवं नास्तिक भी होता है। अधिक परेशानी के कारण निराशावादी भी हो जाता है।
- चोरी, डकैती, किसी का बुरा सोचने का आदि हो जाता है।
- गैस, धुँआ, गैस चेम्बर, विद्युत, बम का सम्बन्ध भी राहु से है।
- वायर लैस, टेलीविजन, टेलीफोन, गड़ा हुआ धन, वीरान महल अपराधियों की शरण स्थली का सम्बन्ध भी राहु से है।
- पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक अथवा नैतिक सम्बन्धों को नकारने में जातक गर्व अनुभव करता है।

- ❖ जुआ, सट्टा, मदिरा, माफिया, दुर्व्यसनों का राहु से सम्बन्ध है।
- ❖ राहु का वाहन व्याघ्र है, वह भी क्रोधी जानवर होने से व्यक्ति क्रोधी व हिंसक हो जाता है।
- ❖ लाल किताब में राहु को हाथीमाना है जो बिगड़ने पर अपने स्वामी को भी मार देता है। राहु शुभ होने पर राजयोग देता है।
- ❖ राहु स्वयं सम्बन्धित ग्रह से कार्य करवाता है। जबकि केतु सम्बन्धित ग्रह को निर्देश देता है।
- ❖ राहु सर्प है एवं सर्प को चन्दन अधिक प्रिय है अतः पूजा में चन्दन का अवश्यप्रयोग करें।-
- ❖ राहु को शुभ करने हेतु विवाह सही उम्र (१८-२५) तक हो जाना चाहिये।

राहु नक्षत्रों में जन्में जातक के रोग

आर्द्रा नक्षत्र - इस नक्षत्र में जन्मने वाले को स्नोफीलिया, श्वांस, पित्तवाली खाँसी, कण्ठ विकार, उदर रोग, यकृत की खराबी, वाणी, गले की खराबी आदि रोग होते हैं।

स्वाति नक्षत्र - इस नक्षत्र जन्मने वाले को आमवात, एलर्जी, त्वचा, गुर्दे सम्बन्धी रोग, कब्ज, मूत्र विकार, मधुमेह, भगन्दर, बवासीर, दुष्टव्रण, वृद्धावस्था में रोग शीघ्र प्रकट होते हैं।

शतभिषा नक्षत्र - बचपन में पेट की शल्य चिकित्सा, तिल्ली रोग, पीलिया, सन्निपात, विषम ज्वर, पिण्डलियों में दर्द, पसीना अधिक आना, रक्तचाप, तलवों व हथेली में जलन, नेत्र रोग आदि परेशानी होती है।

राहु-केतु नक्षत्रों के स्वामी-स्थान

नक्षत्र	स्वामी	निवास स्थान
अश्विनी	अश्विनी कुमार	दाँतों का ऊपरी भाग
मघा	पितृ	होठ
मूल	राक्षस	कुक्षि
आर्द्रा	शिव	आखें

स्वाति	वायु	हृदय
शतभिषा	वरुण	दाईं जङ्घा

॥ अथ राहुवैदिकमन्त्रप्रयोगः॥

राहुमंत्रः- ॐ कया नश्चित्रऽआभुवदूतीसदाव्वृधःसखा कयाशचिष्ठ यावृता ॥८ ॥

विनियोगः- ॐ कयान इति मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः। गायत्रीछन्दः। राहुर्देवता। कयान इति बीजम्। शचिरिति शक्तिः। राहुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः॥

ऋष्यादि न्यासः- ॐ वामदेव ऋषये नमः शिरसि ॥१ ॥ ओं गायत्रीछन्दसे नमः मुखे ॥२ ॥ ओं राहुदेवतायै नमः हृदये ॥३ ॥ ओं कयान इति बीजाय नमः गुह्ये ॥४ ॥ ओं शचिरिति शक्तये नमः पादयोः ॥५ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यासः- ओं कयान इत्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥१ ॥ ओं चित्र इति तर्जनीभ्यां नमः ॥२ ॥ ओं आभुव इति मध्यमाभ्यां नमः ॥३ ॥ ॐ दूतीसदावृध इत्यनामिकाभ्यां नमः ॥४ ॥ ॐ सखाकया इति कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५ ॥ ॐ शचिष्ठयावृता इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥६ ॥ इति करन्यासः।

हृदयादि न्यास- ॐ कयान इति हृदयाय नमः ॥१ ॥ ॐ चित्र इति शिरसे स्वाहा ॥२ ॥ ॐ आभुव इति शिखायै वषट् ॥३ ॥ ॐ दूतीसदावृध इति कवचाय हुं ॥४ ॥ ॐ सखाकया इति नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५ ॥ ॐ शचिष्ठयावृता इत्यस्त्राय फट् ॥६ ॥

मंत्रन्यास- ॐ कया शिरसि ॥१ ॥ ॐ न इति ललाटे ॥२ ॥ ॐ चित्र मुखे ॥३ ॥ ॐ आभुव दूती नाभौ ॥४ ॥ ॐ सदावृधः कट्याम् ॥५ ॥ ॐ सखा ऊर्वोः ॥६ ॥ ॐ कया जानुनोः ॥७ ॥ ॐ शचिष्ठया गुल्फयोः ॥८ ॥ ॐ वृता पादयोः ॥९ ॥ इति मन्त्रन्यासः।

एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

॥ अथ ध्यानम् ॥

नीलांबरो नीलवपुः किरीटी करालवाक्त्रः करवलशूली।
चतुर्भुजश्चर्मधरश्च राहुः सिंहासनस्थो वरदोस्तु मह्यम् ॥१ ॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य जपं कुर्य्यात्।

राहोरष्टादशैव तु १८००० इति दूर्वासमित्तिलपायसघृतैर्दशांशहोमः। अन्यत्सर्वं पूर्ववत्।

॥ अथ दानद्रव्याणि ॥

गोमेदरत्नं च तुरंगमश्च सुनीलचैलामलकंबलं च ।
तिलाश्च तैलं खलु लोहमिश्रं स्वर्भानवे दानमिदं वदंति ॥१॥

॥ इति राहुमन्त्रजपप्रयोगः ॥

॥ राहु तांत्रिक मंत्राः ॥

१ षडक्षर मंत्रः- रां राहवे नमः।

इस मंत्र के ऋषि ब्रह्मा। छन्द गायत्री। देवता राहु। है।

२ सप्ताक्षर मंत्रः- ॐ रां राहवे नमः।

ऋषि ब्रह्मा। छन्द पंक्ति। देवता राहु। बीज रां। शक्ति वेशः।

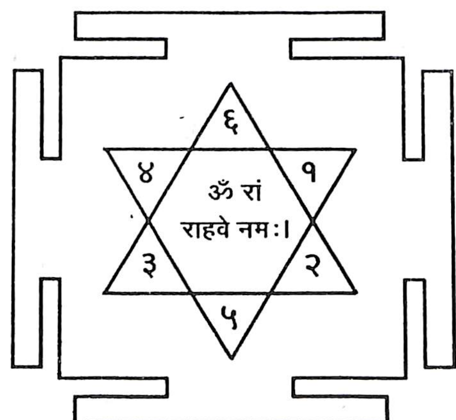
॥ ध्यानम् ॥

वन्दे राहुं धूम्रवर्णं अर्धकायं कृताञ्जलिम् ।
विकृत्यास्यं रक्तनेत्रं धूम्रालङ्कारमन्वहम् ॥

दशाक्षर मंत्र - ॐ सां सीं सौं रां राहवे स्वाहा।

अन्यच्च - ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।

॥ यंत्रार्चनम् ॥



षटकोण एवं भूपूर युक्त यंत्र बनाये। मध्य में राहु का पूजन करें। षट्कोण हृदयादि देवताओं का पूजन करें।

प्रथमावरणम् - (षट्कोणे) **ॐ रां हृदयाय नमः। ॐ रीं शिरसे स्वाहा। ॐ रूं शिखायै वषट्। ॐ रैं कवचाय हुं। ॐ रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ रः अस्त्राय फट्।**

द्वितीवारणम् – भूपूर में इन्द्रादि लोकपालों का पूजन करें!

ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ नैऋतिये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ कुबेराय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अनन्ताय नमः।

तृतीयावरणम् – भूपूर में इन्द्रादि लोकपालों के वज्रादि आयुधों का पूजन करें।

मंत्र का पुरश्चरण करके दूर्वा से होम करें।

॥ श्रीराहु पञ्चविंशति नाम स्तोत्रम् ॥

विनियोगः– ॐ अस्य श्री राहु पंचविंशन्नाम-स्तोत्रस्य वामदेव ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्री राहुर्देवता, श्री राहुप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः – शिरसि वामदेव ऋषये नमः। मुखे गायत्रीछन्दसे नमः। हृदि श्रीराहुर्देवतायै नमः। सर्वाङ्गे श्रीराहुप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः।

राहुर्दानवमंत्री च सिंहिका चित्त नंदनः।
अर्धकायः सदाक्रोधी चन्द्रादित्य-विमर्दनः॥
रौद्रो रुद्रप्रियो दैत्यः स्वर्भानुर्भानुभीतिदः।
ग्रहराजः सुधापायी राकातिथ्यभिलाषकः॥
कालदृष्टिः कालरूपः श्रीकण्ठहृदयाश्रितः।
विधुन्तुदः सैंहिकेयो घोररूपो महाबलः॥
ग्रहपीड़ाकरो दंष्ट्री रक्तनेत्रो महोदरः।

॥ फलश्रुति ॥

पञ्चविंशतिनामानि स्मृत्वा राहुं सदा नरः॥
यः पठेन् महतीं पीडां तस्य नश्यति निश्चितम्।
आरोग्यं पुत्रमतुलां श्रियं धान्यं पशूंस्तथा॥
ददाति राहुस्तस्मै यः पठेत् स्तोत्रमनुत्तमम्।
सततं पठते यस्तु जीवेत् वर्ष शतं नरः॥

॥ श्री स्कन्द पुराणे श्री राहु स्तोत्रम् ॥

राहु मङ्गल स्तोत्रम्

जिस व्यक्ति की कुडली में राहु मङ्गल साथ हों वे इस स्तोत्र को शिव व कार्तिकेय के सामने पढें तो विशेष लाभ होगा। इससे जातक का क्रोध शान्त होता है। उन्नति प्राप्त होती है।

राहुः सिंहल देशजश्च निऋतिः कृष्णाङ्ग शूर्पासनो ।
यः पैठीनसिगोत्र संभव समिद्दुर्वा मुखो दक्षिणः ॥
यः सर्पाद्यधिदैवते च नितिः प्रत्यधिदेवः सदा ।
षट्त्रिंशः शुभकृत् च सिंहिका सुतः कुर्यात् सदा मङ्गलम् ॥

इस स्तोत्र के पहले राहु के २५ नाम का स्तोत्र पढ़ें।

॥ श्रीराहु कवचम् ॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीराहु कवचस्य चन्द्रमा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीराहुर्देवता, राँ बीजं, नमः शक्तिः, स्वाहा कीलकं, श्रीराहु प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- शिरसि चन्द्रमा ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप् छन्दसे नमः। हृदि श्रीराहु देवतायै नमः। गुह्ये राँ बीजाय नमः। पादयोः नमः शक्तये नमः। नाभौ स्वाहा कीलकाय नमः। सर्वाङ्गे श्रीराहु प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः।

मन्त्रः	करन्यास	षडङ्गन्यास
राँ	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
रीँ	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
रूँ	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
रैं	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुम्।
रौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
रः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

प्रणमामि सदा राहुं शूर्पाकारं किरीटिनम् ।
सैंहिकेयं करालास्यं लोकानामभयङ्करम् ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

नीलाम्बरः शिरः पातु ललाटं लोक वन्दितः ।
चक्षुषी पातु मे राहुः श्रोत्रे त्वर्द्धशरीरवान् ॥
नासिकां मे धूम्रवर्णः शूलपाणिर्मुखं मम ।
जिह्वा मे सिंहिकासूनुः कण्ठं मे कंठिनाङ्घ्रिकः ॥
भुजङ्गेशो भुजौ पातु नील माल्याम्बरः करौ ।
पातु वक्षस्थलं मन्त्री पातु कुक्षिं विधुन्तुदः ॥
कटिं मे विकटः पातु ऊरू मे सुरपूजितः ।
स्वभानुर्जानुनी पातु जङ्घे मे पातु जाड्यहा ॥
गुल्फौ ग्रहपतिः पातु पादौ मे भीषणाकृतिः ।
सर्वाण्यङ्गानि मे पातु नीलश्चन्दन भूषणः ॥

॥ फलश्रुति ॥

राहोरिदं कवचमृद्धिदं वस्तुदं यो भक्त्या
पठत्यनुदिनं नियतः शुचिः सन् ।
प्राप्नोति कीर्तिमतुलां श्रियमृद्धिमायुरारोग्य-
मात्मविजयं च हि तत् प्रसादात् ॥

॥ इति श्रीमहाभारते द्रोणपर्वे श्रीराहुकवचम् ॥

॥ राहुशान्ति प्रयोगः ॥

रोगलक्षण

वातरोग, हिचकी, शिरःशूल, अतिसार, प्रदर, अम्लीय विकार, मूर्छा, मन्दबुद्धि, आलस्य, अविवेक, हकलाना, हाथ पैरों में कमजोरी, नशे की आदत, जुआ सट्टा प्रवृत्ति, राजनैतिक असफलता, चरित्रहीनता, धोखा, चोरी, अपयश, व अनेक विघ्न राहु के कारण होते हैं।

उपचार

१. राहुयंत्र को बुधवार या शनिवार को एवं आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा नक्षत्रों में पूजन कर धारण करें।
२. श्वेतचन्दन की माला धारण करें। श्वेतचन्दन का प्रयोग करें। स्फटिक के

शिवलिङ्ग का पूजन शुभ रहे।

३. लोध्रफूल, भुजेहुये तिल, मोती, गजमद, कस्तूरी, इत्यादि के स्नान से राहु पीड़ा दूर होवे।

गुग्गल, हींग, हरताल, मनःशिला, बिनौला, को लोहपात्र में भिगायें, महिषश्रृंग या लौहपात्र से स्नान करने से राहुपीड़ा दूर होवे।

४. दान - अभ्रक, लोहा, सीसाकत्तीर, कांस्य, तिल, नीलावस्त्र, ऊन, छाग, ताम्रपात्र, सप्तधान्य, उड़द, गोमेद, कालापुष्प, तेल, कम्बल, घोड़ा एवं खड्ग के दान से राहु पीड़ा दूर होवे।

५. रत्न - गोमेद, एपीटाइट स्टोन को धारण करना शुभ रहें।

॥ श्रीराहु अष्टोत्तरशत नामावली ॥

ॐ रां राहवे नमः।
ॐ रां सैंहिकेयाय नमः।
ॐ रां विदुतुन्दाय नमः।
ॐ रां सुरशत्रवे नमः।
ॐ रां तमसे नमः।
ॐ रां प्रणये नमः।
ॐ रां गार्ग्याननाय नमः।
ॐ रां सुरागवे नमः।
ॐ रां नीलजीमूतसङ्काशाय नमः।
ॐ रां चतुर्भुजाय नमः।
ॐ रां खड्गखेटकधारिणे नमः।
ॐ रां वरदायकहस्ताय नमः।
ॐ रां शूलायुधाय नमः।
ॐ रां मेघवर्णाय नमः।
ॐ रां कृष्णाध्वजपताकवते नमः।
ॐ रां दक्षिणाशामुखस्थाय नमः।
ॐ रां तीक्ष्णदंष्ट्राकराय नमः।
ॐ रां शूर्पाकारासनस्थाय नमः।
ॐ रां गोमेदाभरणप्रियाय नमः।
ॐ रां माषप्रियाय नमः।
ॐ रां काश्यपर्षिनन्दनाय नमः।
ॐ रां भुजगेश्वराय नमः।
ॐ रां उल्कापातयित्रे नमः।
ॐ रां शूलनिधिपाय नमः।
ॐ रां कृष्णसर्पराज्ञे नमः।
ॐ रां वृषत्वराव्रतास्याय नमः।
ॐ रां अर्धशरीराय नमः।
ॐ रां जाड्यप्रदाय नमः।
ॐ रां रवीन्दुभीकराय नमः।
ॐ रां छायास्वरूपिणे नमः।

ॐ रां कठिनाङ्गाय नमः।

ॐ रां द्विषचक्रभेदकाय नमः।

ॐ रां करालास्याय नमः।

ॐ रां भयङ्कराय नमः।

ॐ रां क्रूरकर्मणे नमः।

ॐ रां तमोरूपाय नमः।

ॐ रां श्यामात्मने नमः।

ॐ रां नीललोहिताय नमः।

ॐ रां किरीटिने नमः।

ॐ रां नीलवसनाय नमः।

ॐ रां शनिसामन्त वर्त्मगाय नमः।

ॐ रां चाण्डालवर्णाय नमः।

ॐ रां आत्मर्क्षभवाय नमः।

ॐ रां मेषभवाय नमः।

ॐ रां शनिवत् फलदाय नमः।

ॐ रां शूलाय नमः।

ॐ रां अपसव्यगतये नमः।

ॐ रां उपरागकराय नमः।

ॐ रां सूर्येन्दुच्छविह्लादकराय नमः।

ॐ रां नीलपुष्पविहाराय नमः।

ॐ रां ग्रहश्रेष्ठायनमः।

ॐ रां अष्टमग्रहाय नमः।

ॐ रां कबन्धमात्रदेहाय नमः।

ॐ रां यातुधानकुलोद्भवाय नमः।

ॐ रां गोविन्दवरपात्राय नमः।

ॐ रां देवजातिप्रविष्टकाय नमः।

ॐ रां क्रूराय नमः।

ॐ रां घोराय नमः।

ॐ रां शनेर्मित्राय नमः।

ॐ रां शुक्रमित्राय नमः।

ॐ रां अगोचराय नमः।

ॐ रां मौनये नमः।

ॐ रां गङ्गास्नानदात्रे नमः।

ॐ रां स्वगृहे भूबलाढ्याय नमः।

ॐ रां स्वगृहेऽन्यबलहृते नमः।

ॐ रां मातामहकारकाय नमः।

ॐ रां चन्द्रयुतचाण्डाल-
जन्मसूचकाय नमः।

ॐ रां जन्मसिंहाय नमः।

ॐ रां राज्यदात्रे नमः।

ॐ रां महाकायाय नमः।

ॐ रां जन्मकर्त्रे नमः।

ॐ रां राज्यधात्रे नमः।

ॐ रां मत्तकाज्ञानदाय नमः।

ॐ रां जन्मकान्याराज्यदात्रे नमः।

ॐ रां जन्महानिदाय नमः।

ॐ रां नवमे पित्ररोगाय नमः।

ॐ रां पञ्चमेशोकदायकाय नमः।

ॐ रां द्यूने कलत्रहन्त्रे नमः।

ॐ रां सप्तमे कलहप्रदाय नमः।

ॐ रां षष्ठे वित्तदात्रे नमः।

ॐ रां चतुर्थे वैरदात्रे नमः।

ॐ रां नवमे पापदात्रे नमः।
ॐ रां दशमेशोकदात्रे नमः।
ॐ रां आदौ यशः प्रदात्रे नमः।
ॐ रां अन्ते वैरप्रदात्रे नमः।
ॐ रां कलात्मने नमः।
ॐ रां गोचराचराय नमः।
ॐ रां धने ककुत्प्रदाय नमः।
ॐ रां पञ्चमे दृषद् श्रृङ्गदाय नमः।
ॐ रां स्वर्भानवे नमः।
ॐ रां बलिने नमः।
ॐ रां महासौख्यप्रदात्रे नमः।
ॐ रां चन्द्रवैरिणे नमः।
ॐ रां शाश्वताय नमः।
ॐ रां सूरशत्रवे नमः।
ॐ रां पापग्रहाय नमः।
ॐ रां पूज्यकाय नमः।
ॐ रां पाठीरपुरनाथाय नमः।
ॐ रां पैठीनसकुलोद्भवाय नमः।
ॐ रां भक्तरक्षाय नमः।
ॐ रां राहुमूर्तये नमः।
ॐ रां सर्वाभीष्टफलप्रदाय नमः।
ॐ रां दीर्घाय नमः।
ॐ रां कृष्णाय नमः।
ॐ रां अशिरसे नमः।
ॐ रां विष्णुनेत्रारये नमः।
ॐ रां देवाय नमः।
ॐ रां दानवाय नमः।

॥ इति श्रीराहु अष्टोत्तरशत नामावली ॥



॥ श्री केतुतन्त्रम् ॥

केतु नक्षत्रों में जन्में जातक के रोग

अश्विनी, मघा एवं मूल केतु के नक्षत्र है। अश्विनी की आकृति घोड़े जैसी, मघा की घर जैसी तथा मूल की आकृति सिंह की पूंछ जैसी होती है।

अश्विनी – इस नक्षत्र में जन्में जातक को अपस्मार, ज्वर आदि योग का भय रहता है।

मघा – इस नक्षत्र में जन्में जातक को हृदय की कमजोरी, मानसिक चिन्ता, पथरी, पृष्ठशूल, निर्णय लेने की शक्ति में कमी, पेट व पेशाब की तकलीफ तथा दन्त रोग की शिकायत रहती है।

मूल नक्षत्र – दुर्घटना भय, चोट, ऑपरेशन, जख्म का देरी से भरना, बवासीर, भगन्दर, आकस्मिक रोग, नेत्ररोग, जङ्घा पीड़ा, पैरों में कमजोरी, झनझनाहट, कमर दर्द, वाति व्यधि रोग होते हैं।

॥ अथ केतु वैदिकमंत्रप्रयोगः॥

मंत्रः– ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवेपेशोमर्य्याऽअपेशसे ॥ समुष द्भिरजायथा ॥१ ॥

विनियोगः– केतुं कृण्वन्निति मंत्रस्य मधुऋषिः। गायत्री छंदः। केतुर्देवता। अपेशसे इति बीजम्। मर्य्या शक्तिः। केतुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः– ॐ मधु ऋषये नमः शिरसि ॥१ ॥ ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे ॥२ ॥ ॐ केतुदेवतायै नमः हृदये ॥३ ॥ ॐ अपेशसे इति बीजाय नमः गुह्ये ॥४ ॥ मर्य्याशक्तये नमः पादयोः ॥५ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।
इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास :- ॐ केतुंकृण्वन् इत्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥१ ॥ ॐ अ केतवे इति तर्जनीभ्यां नमः ॥२ ॥ ॐ पेशोमर्य्या इति मध्यमाभ्यां नमः ॥३ ॥ ॐ अपेशसे अनामिकाभ्यां नमः ॥४॥ ॐ समुषद्भिः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥ ॐ अजायथाः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥६ ॥ इति करन्यासः।

हृदयादिन्यास - ॐ केतुंकृण्वन्निति हृदयाय नमः ॥१ ॥ ॐ अकेतवे शिरसे स्वाहा ॥२ ॥ ॐ पेशोमर्य्या शिखायै वषट् ॥३ ॥ ॐ अपेशसे कवचाय हुं ॥४ ॥ ॐ समुषद्भिर्नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५ ॥ ॐ अजायथा इत्यस्त्राय फट् ॥६ ॥ इति हृदयादिन्यासः।

मंत्रन्यास - ॐ केतुं शिरसि ॥१ ॥ ॐ कृण्वन् ललाटे ॥२ ॥ ॐ अकेतवे मुखे ॥३ ॥ ॐ पेशो हृदये ॥४॥ ॐ मर्य्या नाभौ ॥ ॥५॥ ॐ अपेशसे कट्याम् ॥६ ॥ ॐ समूर्वोः ॥७ ॥ ॐ उषद्भिर्जानुनोः ॥८ ॥ ॐ अजायथाः पादयोः ॥१ ॥ इति मंत्रन्यासः।

एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

॥ अथ ध्यानम् ॥

धूम्रो द्विबाहुर्वरदो गदाभृद्गृध्रासनस्थो विकृताननश्च ।
किरीटकेयूर विभूषितांबरः सदास्तु मे केतुगणः प्रशांतः ॥१ ॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य जपं कुर्यात्।

केतोः सप्त सहस्त्राणि ७००० जपसंख्या प्रकीर्तिता॥ ततो जपान्ते कुशसमित्तिलपायसघृतैर्दशांशहोमः॥ अन्यत्सर्वं पूर्ववत्।

॥ अथ दानद्रव्याणि ॥

वैडूर्यरत्नं सतिलं च तैलं सुकंबलं चापि मदो मृगस्य ।
शस्त्रं च केतोः परितोषहेतोश्छागस्य दानं कथितं मुनीन्द्रैः ॥

॥ इति केतु मंत्र जप प्रयोगः ॥

॥ केतु तान्त्रिक मंत्राः ॥

षडक्षर मंत्र :- कं केतवे नमः।

सप्ताक्षर मंत्र :- ॐ कें केतवे नमः।

दोनो मंत्रो के ऋषि ब्रह्मा। छन्द पंक्ति। षडक्षर के बीज एवं शक्ति कं है।

॥ ध्यानम् ॥

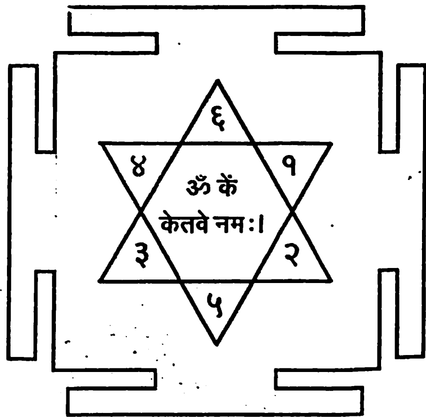
वन्दे केतुं कृष्णवर्णं कृष्णवस्त्र विभूषणम् ।
वामोरू-न्यस्त-तद्धस्तं साभयेतर-पाणिकम् ॥

दशाक्षर मंत्र – ॐ प्रां प्रीं प्रौं कं केतवे स्वाहा।

अन्यच्च– ॐ स्त्रां स्त्रीं स्रौं सः केतवे नमः।

॥ यंत्रार्चनम॥

षट्कोण एवं भूपूर बनावें।



प्रथमावरणम् – (षट्कोणे)
ॐ कां हृदयाय नमः। ॐ कीं शिरसे स्वाहा। ॐ कूं शिखायै वषट्। ॐ कैं कवचाय हुं। ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ कः अस्त्राय फट्।

द्वितीवारणम् – भूपूर में इन्द्रादि लोकपालों का पूजन करें।

ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ नैर्ऋतिये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ कुबेराय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अनन्ताय नमः।

तृतीयावरणम् – भूपूर में लोकपालों के वज्रादि आयुधों का पूजन करें।

मंत्रो का पुरश्चरण करके **कुशों** से होम करें।

॥ श्री केतु विंशतिनाम स्तोत्रम् ॥

केतुः कालः कलयिता धूम्रकेतुर्विवर्णकः ।
लोककेतुर्महाकेतुः सर्वकेतुर्भयप्रदः ॥
रौद्रो रुद्रप्रियो रुद्रः क्रूरकर्मा सुगन्धधृक् ।
पलाशपुष्पसंकाशः चित्रयज्ञोपवीतधृक् ॥
तारागणविमर्दी च जैमिनेयो ग्रहाधिपः ।

॥ फलश्रुति ॥

एतद् विंशति नामानि केतोर्यः सततं पठेत् ।
तस्य नश्यन्ति बाधाश्च सर्वाः केतु-प्रसादतः ॥
धनधान्यपशूनां च भवेत् वृद्धिर्न संशयः ॥

॥ इति श्री स्कन्द पुराणे श्रीकेतोर्विंशति नाम स्तोत्रम् संपूर्णम् ॥

॥ श्री केतु कवचम् ॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्री केतु कवचस्य त्र्यम्बक ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीकेतुर्देवता, श्रीकेतु-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास :- शिरसि त्र्यंबकऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप् छन्दसे नमः। हृदि श्रीकेतुर्देवतायै नमः। सर्वाङ्गे श्रीकेतुप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः।

॥ ध्यानम् ॥

क्रूरं करालवदनं चित्रवर्णं किरीटिनम् ।
प्रणमामि सदा केतुं ध्वजाकारं ग्रहेश्वरम् ॥
चित्रवर्णः शिरः पातु भालं धूम्र समद्युतिः ।
पातु नेत्रे पिङ्गलाक्षः श्रुती मे रक्त लोचनः ॥
घ्राणं पातु सुवर्णाभश्चिबुकं सिंहिकासुतः ।
पातु कण्ठं च मे केतुः स्कन्धौ पातु ग्रहाधिपः ॥
हस्तौ पातु सुरश्रेष्ठः कुक्षिं पातु महाग्रहः ।
सिंहासनः कटिं पातु मध्यं पातु महाऽसुरः ॥
उरू पातु महाशीर्षो जानुनी मेऽति कोपनः ।
पातु पादौ च मे क्रूरः सर्वाङ्गं नरपिङ्गलः ॥

॥ फलश्रुति ॥

इतीदं कवचं दिव्यं सर्वरोगविनाशनम् ।
शत्रु विनाशं भूतानां शमनं सर्व सिद्धिदम् ॥
बहुना किमिहोक्तेन यद्यन्मनसि वर्तते ।
तत् सर्वं भवेत्तस्य कवचस्य च धारणात् ॥

यः पठेच्छृणुयाद्वापि सर्वत्र विजयी भवेत् ॥

॥ श्रीब्रह्माण्ड पुराणे श्रीकेतु कवचम् ॥

॥ केतुशान्ति प्रयोगः॥

रोगलक्षण

चर्मरोग, हड्डियों की पीड़ा विकार, वातव्याधि, श्वास, कृमिरोग, अनिद्रा, फोड़ा फुंसी, रक्तविकार, चेचक, गर्भपात्, शिशुदौर्बल्यता, आपरेशन योग, दांत की पीड़ा, शस्त्राघात्, दुर्घटना, शत्रुबाधा साधना के विघ्न केतु के कारण होते हैं।

उपचार

१. केतुयंत्र को बुधवार के दिन या अश्विनी, मघा एवं मूलनक्षत्रों में पूजन कर धारण करें।

२. अश्वगंधा की जड़ को पूजन कर धारण करें।

३. सूअर के द्वारा खोदी गई मिट्टी, पर्वत की मिट्टी, बकरी का दूध ये सब एक लौह पात्र में भिगो देवें। शनिवार या बुधवार को शाम को स्नान करें।
   देवदारु, सरसों तथा लोबान उबाल कर स्नान करने से अनिष्ट दूर होवे।

४. **दान** – कस्तूरी, तिल, छाग, कालावस्त्र, ध्वजा, सप्तधान्य, कम्बल, उड़द, वैडूर्य, लहसुनियां, फिरोजा, कालापुष्प, तेल, सुवर्ण, लोहा एवं शस्त्र का दान करना चाहिये।

५. **रत्न** – लहसुनिया, फिरोजा, वैडूर्य धारण करें।

॥ श्रीकेतु अष्टोत्तरशत नामावलि ॥

ॐ कें केतवे नमः।
ॐ कें स्थूलशिरसे नमः।
ॐ कें शिरोमात्राय नमः।
ॐ कें ध्वजाकृतये नमः।
ॐ कें नवग्रहयुताय नमः।
ॐ कें सिंहिकागर्भसम्भवाय नमः।
ॐ कें महाभीतिकराय नमः।
ॐ कें चित्रवर्णाय नमः।
ॐ कें पिङ्गलाय नमः।
ॐ कें फलधूम्रसङ्काशाय नमः।
ॐ कें तीक्ष्णदंष्ट्राय नमः।
ॐ कें महोरगाय नमः।

ॐ कें रक्तनेत्राय नमः।
ॐ कें चित्रकारिणे नमः।
ॐ कें महासुराय नमः।
ॐ कें तीव्रकोपाय नमः।
ॐ कें पापकण्टकाय नमः।
ॐ कें क्रोधनिधये नमः।
ॐ कें छायाग्रहविशेषकाय नमः।
ॐ कें अन्त्यग्रहाय नमः।
ॐ कें महाशीर्षाय नमः।
ॐ कें सूर्यारये नमः।
ॐ कें पुष्पवत्ग्रहिणे नमः।
ॐ कें वरहस्ताय नमः।
ॐ कें गदापाणये नमः।
ॐ कें चित्रशुभ्रधराय नमः।
ॐ कें चित्रध्वजपताकाय नमः।
ॐ कें घोराय नमः।
ॐ कें चित्ररथाय नमः।
ॐ कें शिखिने नमः।
ॐ कें कुलुत्थभक्षकाय नमः।
ॐ कें वैडूर्याभरणाय नमः।
ॐ कें उत्पातजनकाय नमः।
ॐ कें शुक्रमित्राय नमः।
ॐ कें मन्दसखाय नमः।
ॐ कें शिखिनेनापकाय नमः।
ॐ कें अन्तर्वेदिने नमः।
ॐ कें ईश्वराय नमः।
ॐ कें जैमिनिगोत्रजाय नमः।
ॐ कें चित्रगुप्तात्मने नमः।
ॐ कें दक्षिण-मुखाय नमः।
ॐ कें मुकुन्दवरपात्राय नमः।
ॐ कें असुरकुलोद्भवाय नमः।
ॐ कें घनवर्णाय नमः।
ॐ कें लम्बदेहाय नमः।
ॐ कें मृत्युपुत्राय नमः।
ॐ कें उत्पातरूपधराय नमः।
ॐ कें अदृश्याय नमः।
ॐ कें कालाग्निसन्निभाय नमः।
ॐ कें नरपीठकाय नमः।
ॐ कें ग्रहकारिणे नमः।
ॐ कें सर्वोपद्रवकारकाय नमः।
ॐ कें चित्रप्रसूताय नमः।
ॐ कें अनलाय नमः।
ॐ कें सर्वव्याधिनाशनाय नमः।
ॐ कें अपसव्यप्रचारिणे नमः।
ॐ कें नवमे पापदाय नमः।
ॐ कें पञ्चमे शोकदाय नमः।
ॐ कें उपराग-गोचराय नमः।
ॐ कें पुरुषकर्मणे नमः।
ॐ कें तुरीये सुखप्रदाय नमः।
ॐ कें तृतीये वैरदाय नमः।
ॐ कें पापग्रहाय नमः।
ॐ कें स्फोटकारकाय नमः।

ॐ कें प्राणनाथाय नमः।
ॐ कें पञ्चमे श्रमकारकाय नमः।
ॐ कें द्वितीयेस्फुटवाक्दात्रे नमः।
ॐ कें विषाकुलितवक्त्रकाय नमः।
ॐ कें कामरूपिणे नमः।
ॐ कें सिंहदन्ताय नमः।
ॐ कें सत्येऽप्यनृतवते नमः।
ॐ कें चतुर्थेमातृनाशनाय नमः।
ॐ कें नवमे पितृनाशनाय नमः।
ॐ कें अन्ते वैरप्रदाय नमः।
ॐ कें सुतानन्दनबन्धकाय नमः।
ॐ कें सर्पाक्षिजाताय नमः।
ॐ कें अनङ्गाय नमः।
ॐ कें कर्मराश्युद्भवाय नमः।
ॐ कें उपान्ते कीर्तिदाय नमः।
ॐ कें सप्तमे कलहप्रियाय नमः।
ॐ कें अष्टमे व्याधिकर्त्रे नमः।
ॐ कें धने बहुसुखप्रदाय नमः।
ॐ कें जनने रोगदाय नमः।
ॐ कें ऊर्ध्वमूर्धजाय नमः।
ॐ कें ग्रहनायकाय नमः।
ॐ कें पापदृष्टये नमः।
ॐ कें खेचराय नमः।
ॐ कें शाम्भवाय नमः।
ॐ कें अशेषजनपूजिताय नमः।
ॐ कें शाश्वताय नमः।
ॐ कें नटाय नमः।
ॐ कें शुभाशुभफलप्रदाय नमः।
ॐ कें धूम्राय नमः।
ॐ कें सुधापायिने नमः।
ॐ कें अजिताय नमः।
ॐ कें भक्तवत्सलाय नमः।
ॐ कें सिंहासनाय नमः।
ॐ कें केतु मूर्तये नमः।
ॐ कें रवीन्दु द्युति नाशकाय नमः।
ॐ कें अमराय नमः।
ॐ कें पीडकाय नमः।
ॐ कें अमर्त्याय नमः।
ॐ कें विष्णु दृष्टाय नमः।
ॐ कें असुरेश्वराय नमः।
ॐ कें भक्तरक्षाय नमः।
ॐ कें वैचित्र्यकपोतस्यन्दनाय नमः।
ॐ कें विचित्रफलदायिने नमः।
ॐ कें भक्ताभीष्टफलप्रदाय नमः।

॥ इति श्रीकेतु अष्टोत्तरशत नामावली ॥

राहु केतु की सुप्तावस्था

लाल किताब में ग्रह के जागृत व सुप्तावस्थ के संबध मे अलग रूप से बताया गया है। जातक की जन्म पत्रिका में दूसरे भाव में ग्रह होवे तथा दशम भाव में कोई ग्रह न हो तो कर्मभाव कमजोर होने से दूसरे भाव का ग्रह सुप्तावस्था में चला जायेगा। इसका अर्थ यह है कि जब कोई भी ग्रह कर्म का साथ नहीं देगा तो धन देने वाला ग्रह क्या करेगा।

धन घर दूसरे भाव में ग्रह नहीं है एवं नवम दशम भाव में ग्रह हो तो नवम का ग्रह सुप्त हो जायेगा।

इन दोनों योगों से यदि राहु सुप्त है तो सुसराल में मङ्गल कार्य, विवाहादि कार्य होने के बाद जागृत होगा। उस समय जातक की आयु ३६ से ४२ वर्ष होगी। ४४ से ४८ के मध्य आर्द्रा, स्वाति, या शतभिषा में जन्में जातक को कष्ट होगा।

प्रथम या द्वितीय सन्तान के जन्म के बाद जातक का केतु जागृत हो जायेगा। इससे जातक को शुभ फल मिलेंगे। ४८ वर्ष की आयु के बाद जातक धर्म, कर्म, समाज सेवा के अधिक कार्य करता है।

नाग करण – तिथि के आधे भाग को करण कहते हैं। अत: एक तिथि में दो करण होते हैं। अमावस्या के उत्तरार्ध भाग में ''नाग'' करण होता है। अत: अमावस्या को जिस दिन नाग करण होवे उस दिन नाग शान्ति करना उत्तम है।

नक्षत्र लिङ्ग – अश्विनी नक्षत्र पुर्ल्लिग है तथा मघा, आर्द्रा, स्वाति नक्षत्र स्त्रीलिङ्ग है।

शेषनाग के नेत्र – बद्रीनाथ धाम के गरीब ही एक नर पर्वत पर एक शिला है जहाँ नेत्राकृति बनती है जिन्हें शेषनाग के नेत्र कहे जाते हैं।

राहु–बुध–शुक्र एवं यदुवंश

बृहस्पति ग्रह की पत्नि तारा से बुध उत्पन्न हुआ। बुध के पुत्र पुरूरवा हुये तथा इनसे ''आयु'' आदि ६ पुत्र उत्पन्न हुये। बुध के प्रपौत्र आयु का विवाह राहु की कन्या से हआ, उनसे नहुष आदि ५ पुत्र हुये। नहुष के यति, ययाति आदि ६ पुत्र हुये। ययाति से शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी का विवाह हुआ। अत: बुध–राहु व शुक्र का समधि हुआ। इसी कारण राहु दोष की शान्ति के लिये बुधवार श्रेष्ठ माना है।

इसी प्रकार बुध-राहु व शुक्र आपस में समधि होने से राहु मिथुन, कन्या, वृष व तुला राशि में हानिकारक नहीं माना गया है।

ययाति व देवयानि से यदु व तुर्वसु नामक दो पुत्र हुये। यदु की ४३ वीं पीढी में शूरसेन हुये, उनके पुत्र वासुदेव हुये, जो भगवान कृष्ण के पिता हुये।

॥ अथ श्रीमृत्युलांगूल स्तोत्रम् ॥

विनियोग:- ॐ अस्य श्रीमृत्युलांगूल मंत्रस्यानुष्टुप् छन्दः, कालाग्निरुद्रा देवताः, वसिष्ठऋषिर्यमो देवता मृत्यूपस्थाने विनियोगः।

अथातो योग जिह्वा मधुमति वाजिन्यामेवाहं कालपुरुषमूर्ध्वलिङ्गं विरूपाक्षं विश्वरूपाय नमो नमः ।वर वृषभाय फेनकपिलरूपाय नमो नमः ।पशुपतये नमो नमः। ॐ क्रां क्रीं स्वः॥ य इदं मृत्युलांगूलं त्रिसन्ध्यं कीर्तयति स ब्रह्महत्यां व्यपोहति। स्वर्णस्तेयोऽस्त्येयि भवति, गुरुदाराभि गम्योऽगमी भवति, सर्वेभ्यः पातकेभ्यः उपपातकेभ्यश्च सद्यो विमुक्तो भवति, सकृज्जपितेन मंत्रेणानेन गायत्र्यास्त्वष्ट सहस्राणि भवन्ति। अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा ब्रह्मरुद्रलोकमवाप्नोति। यः कश्चिन्न ददाति स श्वेतकुष्ठी, कुनखी भवति। यः कश्चिद्दीयमानं न गृह्णाति सोऽन्धो वधिरो भवति। मृत्यावुपस्थिते षणमासादर्वाक् मंत्रोऽयं विस्फुरति॥ अस्य मृत्युलांगूलाख्य महामंत्रस्य सकृज्जपेन भगवान् धर्मराजो मे प्रीयताम्।

॥ मंत्र ॥

ॐ ऋतं सत्यं परंब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलम् ।
उर्ध्वलिगं विरूपाक्षं विश्वरूपाय नमो नमः ॥
ऋतं नष्टं यदा काले षणमासेन मरिष्यति ।
सत्यं तु पञ्चमे मासे, परंब्रह्म चतुर्थके ॥
पुरुषं तु तृतीये वै द्वितीय कृष्णपिङ्गलम् ।
उर्ध्वलिङ्गन्तु मासेन, विरूपाक्षं तदर्धके ॥
विश्वरूपं तृतीयेऽह्नि सद्यश्चैव नमो नमः ।

॥ इति श्रीमृत्युलांगूल स्तोत्रम् ॥

॥ विधानम् ॥

जिज्ञासुजन इस मृत्युलांगूल स्तोत्र का पाठ दीपमाला, ग्रहण या महाशिवरात्री आदि पर्व के दिन से प्रारंभ करें। गुरुमुख से एक बार श्रवण कर लिया जाए तो उत्तम है। अन्यथा भगवान् श्रीसदाशिव को गुरु मानकर उनकी मूर्ति या चित्र के सामने प्रथमपर्व के दिन इस स्तोत्र के ११ पाठ करें और **ऋतंसत्यं मंत्र की ११ माला जप लेवें।** पर्व के प्रथम दिन इतना ही करना है। तदुरान्त प्रतिदिन नित्यकर्म के बाद एक बार स्तोत्र पाठ करना और रात्रि को सोते समय केवल तीन बार **ऋतंसत्यं परंब्रह्म** इस पूरे मंत्र का जप करके सो जाना चाहिये। प्रतिदिन एक स्तोत्र पाठ और रात्रि को सोते समय ३ बार मंत्र का जप नियमित रूप से होता रहेगा तो ६ मास पूर्व मृत्यु का ज्ञान हो जायेगा। वह इस प्रकार कि जिस दिन मंत्र का ऋतं शब्द भली-भांति उच्चारण नही हो या इस शब्द पर जिह्वा अटक जावें तो समझ लेना चाहिए कि मृत्युदेव या धर्मराज के घर का आमंत्रण आ गया है। ६ मास के भीतर जो भी सत्कार्य और परिवार का प्रबंध करना है वह कर देना चाहिए। जिस दिन सत्यं शब्द ठीक से उच्चारित न हो या इस शब्द पर जिह्वा अटक जाये तो समझ लो कि अब मृत्यु में पाँच मास शेष है। इसी प्रकार जिस दिन परंब्रह्म शब्द ठीक से उच्चारित न हो तो समझ लेना चाहिए की अब आयु के ४ मास शेष रहे है। पुरुषं शब्द से तीन मास, कृष्णपिङ्गलं शब्द से दो मास, उर्ध्वलिङ्गं शब्द से एक मास, विरूपाक्षं शब्द से १५ दिन, विश्वरूपं शब्द से ३ दिन और नमो नमः शब्द के ठीक उच्चारण न होने से उसी दिन तत्काल मृत्यु समझना चाहिये।

॥ अथ गरुड माला मन्त्रः॥

गरुड एवं सर्प के बैर है। गरुड सर्प का संहारक है, अतः गरुड मन्त्र के प्रभाव से विष योग नष्ट होता है। गरुड मन्त्र का प्रयोग टोना टोटका के तथा अभिचार कर्म की निवृत्ति के लिये भी किया जाता है। जब श्रीराम व लक्ष्मण को रावण ने नागपाश में बाँध दिया था तो गरुड़जी ने ही उन्हे पाश से मुक्त करवाया था। प्राचीन समय में षट्कर्म (मारण, मोहन, उच्चाटनादि) हेतु गरुड के कई प्रयोग प्रचलित थे इसलिये इस विषय को गुप्त रखने के लिये कहा गया था कि **"ज्योतिषी गारुडी विद्या पिता पुत्रं न देयत्"**।

अतः गरुड मन्त्र के स्मरण से आत्मबल की वृद्धि, शरीर में स्फुर्ति प्राप्त होती है जिससे कालसर्प या अशुभ ग्रहों के कारण प्राप्त उदासीनता नकारात्मक विचार, अशुभ का भय नष्ट हो जाता है। व्यक्ति अपने आत्मबल को प्राप्त कर नये सिरे से पुनः अपने कार्य में जुट जाता है, और उसे सफलता अवश्य प्राप्त होती है। निम्न स्तोत्र का पाठ करने से परिवार में व्याप्त संकट, सर्प भयादि दोष दूर होते हैं -

॥ आशुगारुड मालामन्त्राः॥

विनियोगः - ॐ अस्य श्री आशु गारुड़ स्तोत्रस्य शंख ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्री आशुताक्ष्र्यो देवता, गां बीजं, गों शक्तिः, गूः कीलकं मम सर्वारिष्ट निवाणार्थे आशुगरुडप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

गां, गीं, गूं, गें, गौं, गः से षड्ङ्गन्यास करे।

॥ ध्यानम् ॥

आजानोस्तप्त हेमप्रभममलहिमं प्रख्यमानं हि तस्मा
दाकर्ण कुङ्कुमाभं भ्रमरकुलमिवश्यामलं मूर्ध्नि केशम् ।
ब्रह्माण्डव्याप्तदेहं भुजमहि प्रवैर्भूषणैर्भूषिताङ्गम्
पिङ्गाक्षं ताक्ष्र्य दंष्ट्रं वरदमभयदं ताक्ष्र्यमुग्रं नमामि ॥

(१) ॐ नमो भगवते श्री आशुगरुडाय गरुडाय महागरुडाय समस्ताण्डबहि - स्त्रैलोक्यनायकाय नागशोणिततीर्थाय पक्षिराजाय विष्णुवाहनाय सर्वसर्वान् संहर संहर मर्दय-२ मोटय-२ त्रोटय-२ भ्रमय-२ मुञ्च-२ आगच्छ-२

आवेशय-२ शीघ्रं -२ समस्तभूतवेतालान्नाशय नाशय परमंत्र परहोम परजप परशून्य परक्षुद्रान् छेदय छेदय स्वविद्या मंत्रान् प्रकटय-२ स्वाहा।

(२) ॐ नमो भगवते श्री आशुगरुड़ाय स्वर्णपक्षाय विनतादास्य मोचनाय कश्यपानन्दवर्धनाय सर्पशत्रून्निवारणाय ॐ हन् २ दह२ ॐ पच २ हन२ दहि२ सर्वसर्पान्ति भक्षय२ सर्वविषान्नाशय नाशय हूं फट् स्वाहा।

विनियोग: - अस्य श्री आशुगारुड़ मन्त्रस्य शंकर ऋषिः, जगतीछन्दः, आशुगरुडो देवता, गं बीजं, स्वाहा शक्तिः, सर्वविषहरणे विनियोगः।

(३) ॐ श्रीं गरुडाय महागरुडाय समस्ताण्डाद् वहिस्त्रैलोक्य नायकाय नागशोणित दिग्धाङ्गाय ॐ पक्षिराजाय विष्णु वाहनाय सर्प सर्प संहर२ मठ२ मर्दय२ मोटय२ लोपय२ त्रौटय२ भ्रामय२ मुञ्चय२ आकर्षय२ आवेशय२ सिद्धय२ शीघ्र२ समस्त भूत वेतालान् नाशय२ सर्वग्रहान् नाशय२ सर्वशत्रून् विद्रावय२ सर्वदष्टान् विनाशय२ सर्वविषं नाशय नाशय स्वाहा।

(४) (तन्त्रसारे) ॐ नमो भगवते गरुडाय कालाग्निवर्णाय एह्येहि कालानल -लोलजिह्वाय पातय२ मोहय२ विद्रावय२ भ्रम२ भ्रामय२ हन२ दह२ पत२ हुं फट् स्वाहा।

इस मन्त्र का अयुत जप का पुरश्चरण है। घृताक्त कृष्णपुष्पों से दशांश होम करें।

(५) ॐ नमो भगवते गरुडाय महेन्द्रपर्वतशिखराकार रूपाय संहारय२ मोचय२ निर्विष२ विषमप्यमृतं चाहारसदृशरूपमिदं ज्ञापयामि स्वाहा।

(६) **गरुडस्तव**- (तन्त्रसारे) सुपर्णं वैनतेयं च नागारिं नागभीषणम्। जैवातृकं विषारं च हृयजितं विश्वरूपिणम्॥१॥ गुरुत्मंतं खगश्रेष्ठं ताक्ष्यं कश्यपनंदनम् द्वादशैतानि नामानि गरुडस्य महात्मनः ॥२॥ यः पठेत्प्रातरुत्थाय स्थाने वा शयनेऽपि वा। विषं नाक्रमते तस्य न हिंसंति हिंसकाः ॥३॥ संग्रामे व्यवहारे च विजयस्तस्य जायते। बंधनान् मुक्तिमाप्नोति यात्रायां सिद्धिमेव च॥

(७) (हारीतः) नर्मदायै नमः प्रातर्नर्मदायै नमो निशि। नमोस्तु नर्मदे तुभ्यं त्राहिमां विषसर्पतः ॥१॥ सर्पायसर्व भद्रं ते दूरं गच्छ महाविष। जन्मेजयस्य यज्ञान्ते आस्तीक वचनं स्मर ॥२॥ आस्तीक वचनं श्रुत्वा यः सर्पो न निवर्तते। शतधाभिद्यते मूर्ध्नि शिंशवृक्ष फलं यथा ॥३॥ एतान्गारुडमंत्रांस्तु निशायां पठते यदि। मुच्यते सर्वबाधाभ्यो नात्र कार्या विचारणा।

॥ इति गरुड़ मन्त्रप्रयोग विधानम्॥

श्राद्धादि खण्ड

॥ अथ नारायणबलि कर्म विधानम् ॥

परिवार में यदि किसी व्यक्ति की अकालमृत्यु हुई हो अथवा मोहवश उसकी आत्मा भटकती रहती है तो उसके लिये नारायण बलि कर्म कराया जाता है।

यदि परिवार में सर्पदंश से मृत्यु हुई है, तो पहले नागबलि पश्चात् नारायण बलि करें। मृतक के १२ दिनों में नारायण बलि कर्म कराने के पश्चात् भी आत्मा भटक रही हो, तो एक बार पुनः नारायण बलि कर्म कराना चाहिये। हो सकता है प्रथम नारायण बलि के दिनों में आत्मा उद्द्विग्न रही हो, इस कारण उसने कर्म को ग्रहण नहीं किया हो।

सन्तान प्राप्ति में भी प्रेत दोष जनित प्रतिबन्धन योग आ रहा हो तो उसे भी नारायण बलि करानी चाहिये। भटकती पारिवारिक आत्मा परेशानी कर रही हो तो भी यह कर्म कराना चाहिये।

शुभ नक्षत्र - नारायण बलि कर्म पञ्चक नक्षत्रों में नहीं करायें। कृत्तिका, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, उत्तराषाढा, पूर्वाभद्रपद नक्षत्र में करायें व त्रिपाद नक्षत्र भी इस कर्म में मध्यम है। इसके अलावा हस्त, पुष्य, आश्लेषा, मृगशीर्ष, आर्द्रा, स्वाति, मूल एवं श्रवण नक्षत्र भी शुभ हैं।

शुभ तिथि - दोनों पक्षों की पञ्चमी, एकादशी, तिथी उत्तम है। रविवार, सोमवार, गुरुवार उत्तम है।

वैस यह कर्म पुरुष द्वारा ही किया जाता है। परन्तु किसी स्त्री के संतति बंधक दोष आया है तो पति-पत्नि दोनों पूजन कर्म करें। प्रधान पूजा, पिण्डपूजा पति करे, पत्नि नमस्कार करे। नारायण बलिकर्म ५ ब्राह्मणों द्वारा कराया जाना चाहिये। इस कर्म में ४-५ घण्टे का समय लगता है। यहां पर पूर्ण विधान नहीं देकर सामान्य जानकारी दे रहें हैं। नारायण बलि कर्म तीर्थ, नदी, जल समीप अथवा निर्जन स्थान में जीर्ण मन्दिर के पास करें।

सर्व प्रथम घृत को पात्र में भरकर उसमें सोने का टुकड़ा ड़ालकर जातक के मुँह की छाया उसमें दिखाकर **पापघट** का दान किसी ब्राह्मण को दिलायें। यदि दान लेने वाला ब्रह्मण नहीं हो तो घी को नारियल में भरें तथा बारीकशक्कर के

साथ गाय को खिला देवें।

सङ्कल्प – (संवत्सर, गोत्रोपचार) **मम पूर्वजन्मोक्त प्रेतशाप दोष निवाणार्थे, संतति प्रतिबंधक दोष निवाणार्थे, गृहे, व्यापारे, सर्वोपद्रव शमनार्थे, ममगृहे प्रकट अप्रकट प्रेतत्व दोष निवारणार्थे वा मम गृहे अमुक गोत्रोत्पन्न अमुक प्रेतस्य प्रेतत्व निवृत्यर्थे असद्गति विनाशार्थे सव्यं सद्गति स्वर्गलोक फल प्राप्त्यर्थे नारायण बलिकर्म चाहं करिष्ये।**

पहले पुरुषसूक्त से अपने अङ्गों में न्यास करें। पश्चात् पुरुषसूक्त से विष्णु शलिग्राम का पूजन करें। तुलसीदल चढ़ायें।

अर्घपात्र बनाकर उसको इन्द्रसूक्त (**आशु शिशानो......संहिता अध्याय १७ मन्त्र ३३ से ४९**) पढ़कर ब्राह्मणों का पाद प्रक्षालन कर अर्घ देवें। आचार्य वरण करें। ब्राह्मण यजमान का स्वस्तिवाचन करें। कंकण बंधन करं।

मन्त्र –

आयुष्यं वर्चस्य ठ रायस्पोष मौद्भिदम् ।
इदं ठ हिरण्यं वर्चस्वजैत्रायाविशता दुमाम् ॥

वेदी बनाकर उसके संस्कार करें तथा **अदिति** नाम से अग्नि का पूजन करें।

ईशान में एकादशरुद्र की कलश में पूजा करें – **अघोर, पशुपति, विरूप, विश्वरूप, त्र्यम्बक, भैरव, कपर्दिन, शूलपाणि, ईशान, महेश व रुद्र** का आवाहन करें। ईशान में ही लालवस्त्र पर **अष्टदल** बनायें।

मध्य में **श्रीकृष्ण** सुवर्ण या चान्दी की तथा **रुक्मिणी** की चान्दी की मूर्ति बनायें। अष्टदल मध्य में आठों पटरानियों का पूजन करें।

यथा - पूर्वादि क्रम से **रुक्मिणी, सत्यभामा, कालिन्दी, मित्रविन्दा, जाम्बवंती, लक्ष्मी, भद्रा एवं नाग्निजिता** का पूजन करें।

इन्द्रादि दश दिक्पालों का पूजन करें।

इसके बाद हवन प्रारम्भ करे। **प्रजापति, इन्द्र, अग्नि, सोम, भूः, भुवः, स्वः एवं वरुण** की आहुति देकर **दिक्पाल बलि** देवे।

इसके पश्चात् निम्न मन्त्र से २४ आहुति देवे – **ॐ तद् विप्रासो विपन्यवो जागृवा ठ सः समिन्धते। विष्णोर्यत्परमं पदम्॥**

पुरुषसूक्त से होम करें। इसके बाद **''लोमभ्याय स्वाहा''** इत्यादि ४२ मन्त्रों से होम करें। पुनः चरु होम करें। उपरोक्त विष्णु मन्त्र से १०८ बार होम करें।

पश्चात् आठों पटरानियों तथा दशदिक्पालों का होम करें। पुनः प्रायश्चित होम की ९ आहुतियाँ देवे।

इसके बाद पञ्चकलश पूजन करें -

दक्षिण की ओर वस्त्र बिछाकर पश्चिम से पूर्व की ओर गेहूँ, चांवल, मूंग, उड़द, तिल की ढेरी बनाकर उन पर पञ्च कलश रखें। पाँच मूर्तियाँ बनायें **ब्रह्मा की चाँदी की, विष्णु की स्वर्ण की, शिव की ताँबे की, यम की लौह की तथा प्रेत की सीसा** की बनाकर उनकी प्राण प्रतिष्ठा कर, पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः रखें। यथा नाम से पूजन करं। पाँचवी प्रेत की मूर्ति या अधोगति वाले मनुष्य की होती है।

पश्चात् विष्णु तर्पण करें - गया भूमि का ध्यान करें। दक्षिण मुख होकर बैठकर तर्पण करें।

पुरुषसूक्त के प्रत्येक मन्त्र के साथ मोक्ष मन्त्र बोलते हुये तर्पण करें। मन्त्र -

अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधर ।
अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष प्रेत मोक्ष प्रदोभव ॥

इस प्रकार १६ बार तर्पण करें। इसके अलावा १०० मन्त्र तर्पण के अन्य है उनसे भी प्रेत मोक्ष हेतु तर्पण करें।

इसके पश्चात् **एकादश श्राद्ध** करें।

पञ्चकलशों के आगे ११ चटें रखें। इन चटों पर गरुडपुराण के द्वादश अध्याय के श्लोक ६०-६२ के अनुसार उनको पश्चिम से पूर्व की ओर आवाहन करें। **विष्णु, शिव, यम, सोम, हव्यवाहन, कव्यवाहन, काल, रुद्र, पुरुष, प्रेत तथा विष्णु** का आवाहन स्थापन कर अर्घ देवें। पुनः उन्हें पिण्डदान कर जल छोडें तथा सबको सूत्र से आच्छादन एक साथ कर देवें। पूजन कर पुनः जलधारा देवें।

तत्पश्चात् **"पञ्चश्राद्ध"** कर्म करें। पञ्चकलशो में पश्चिम से पूर्व की ओर **ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, यम** की तथा ५ वें स्थान पर **प्रेत** का आवाहन कर अर्घादि देकर उनके ५ पिण्ड प्रदान करें। अर्घादि प्रदान कर सूत्राच्छादन करें। धूप दीप नैवेद्य तर्पण करें पिण्डों पर दुग्ध, गङ्गाजल, जव, शङ्खोदक से (शङ्ख से) जलधारा देवें।

पुनः भगवान के कर्म समर्पण हेतु सङ्कल्प लेवें।

मेरे द्वारा किया गया नारायण बलि कर्म श्रीभगवान वासुदेव अमुक प्रेत की प्रेतत्त्व निवृत्ति तथा सद्गति प्राप्ति हेतु आपको अर्पण है।

॥ अथ नागबलिकर्म विधानम् ॥

ग्रह योगों के आधार पर सर्पशाप से सन्तान सुख में कमी बनती हो, अथवा किसी के द्वारा साँप को मार दिया गया हो, परिवार के किसी व्यक्ति की मृत्यु सर्पदंश से हुई हो या अन्य अवरोध हो तो नागबलि कर्म करना चाहिये।

शुभ नक्षत्र – नागबलि आश्लेषा नक्षत्र में करना उत्तम रहता है।

शुभ तिथि – पञ्चमी, नवमी, पूर्णिमा या अमावस्या बुधबार, अमावस्या शनिवार भी शुभ है।

॥ विधानम् ॥

घृतादि से पापघट दान करायें, अथवा चौदह कृच्छचान्द्रायण व्रत का सङ्कल्प करायें या उनके निमित्त प्रायश्चित्त दान सङ्कल्प करायें।

वर्षदुपदिष्ट चतुर्दश कृच्छ्र प्रायश्चितं अमुक प्रत्याम्नायेन चाहं आचरिष्ये।

स्वर्णदण्ड या लोहदण्ड का दान करें –

सर्पवध दोष परिहारार्थं इमं लोहदण्डं (स्वर्णदण्डं) सदक्षिणां अमुक **गोत्राय, ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे।**

इसके पश्चात् तिल, राल, गेहूँ अथवा चावल के आटे का नाग बनाकर लाल कपड़े पर रखकर सङ्कल्प करके उसका पूजन करें।

सङ्कल्प – मेरे या मेरे परिवार के किसी सदस्य के द्वारा इस जन्म या पूर्वजन्म में सर्पवध किया गया हो तो उसके प्रायश्चित्त के निमित्त नागबलि करता हुँ।

यदि किसी व्यक्ति कि मृत्यु सर्पदंश से हुई हो तो उसकी आत्मा भी सर्प बन्धन में रहती है, उसकी आत्मा की शान्ति हेतु भी नागबलि कर्म किया जाना चाहिये।

नागबलि से सर्पवध का दोष समाप्त है।

ये तु नागबलि राजन कुर्वन्ति त्र्यम्बकेनरा: ।
लाभस्य दर्शन तेषां यत्रकुत्रापि जायते ॥
अपुत्रो पुत्रिकायुक्तो धनधान्य समन्वित: ।

भूनक्ति भोगान् अखिलान् ते मोक्षमाप्नुयात् ॥

सर्प मन्त्र से सर्प की प्राण प्रतिष्ठा करें।

ॐ सर्पेभ्यो प्राणा इह प्राणा। ॐ सर्पेभ्यो जीव इह जीव। ॐ सर्पेभ्यो सर्वेन्द्रियाणि इह सर्वेन्द्रियाणि एहि पूर्वमृतः सर्प अस्मिन् पिष्टे समाविशः। संस्कारार्थं अहं भक्त्या प्रार्थयामि समाहितः॥

नाग गायत्री मन्त्र से सर्प का पूजन करें -

ॐ भुजङ्गे शापविग्रहे सर्पराजाय धीमहि तन्नो नाग प्रचादयात्।

गन्ध पुष्पादि से पूजन करके पके हुये चावलों व क्षीरान्न से बलि प्रदान करें। बलि को काक के लिये अलग जगह रख कर हाथ पैर धोये।

नाग से हाथ जोड़कर प्रार्थना करें - **हे! नाग देवता ब्रह्मगिरी की परिक्रमा का पुण्य लेकर मोक्ष प्राप्त करें।**

इसके पश्चात् हवन करें। एक पात्र में हवन के बाद स्रुव से घृत का त्याग करते रहें। प्रत्येक आहुति के साथ कहें **''इदं न मम''**।

समिधा डालकर होम करें।

ॐ समिधायै स्वाहा। इदं समिधायै इदं न मम। अब घृत से होम करें।

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये इदं न मम। ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदं इन्द्राय इदं न मम। ॐ अग्नये स्वाहा, इदं अग्नये इदं न मम। ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय इदं न मम। ॐ अग्निसोमाभ्यां स्वाहा, इदं अग्निसोमाभ्यां इदं न मम।ॐ भूः स्वाहा, इदं अग्नये इदं न मम। ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायव्ये इदं न मम। ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय इदं न मम। ॐ भू र्भूवः स्वः स्वाहा, इदं सवितायै इदं न मम।

सर्प को चिता पर रखें। उसका दाह करें। एक आहुति सर्प के मुँह मे देवें।

ॐ भू र्भुवः स्वः सर्पेभ्यो स्वाहा, इदं सर्पेभ्यो इदं न मम।

बचा हुआ घी सर्प पर ड़ाल देवें। यहां स्विष्टकृत होम नहीं करें।

स्रुव से जल लेकर सर्प पर छिड़कें। मन्त्र पढ़ें -

विनियोग - अग्नेरक्षणो वसिष्ठौग्निर्गायत्री सर्पायाग्निदाने विनियोगः।

ॐ भू र्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः।

इसके पश्चात् अग्नि का उपस्थापन (प्रार्थना करके विसर्जन) करें।

नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु ।
ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यो सर्पेभ्यो नमः ॥
त्राहि त्राहि महाभोगिन सर्वोपद्रव दुःखतः ।
सन्तानं देहि मे पुण्यां निर्दुष्टां दीर्घजीवितीम् ॥
प्रपन्न पाहि मां भक्त्या कृपालो दीन्नवत्सलः ।
ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि कृतः सर्पवधो मया ॥
जन्मान्तरे तथंचास्मिन् नत्पूर्रैस्थवा विभो ।
तत्पापं नाशयं क्षिप्तं अपराधं क्षमस्व मे ॥

पश्चात् शरीर शुद्धि करें।

ॐ भू भुर्वः स्वः पठते हुये जल व दुग्ध से अग्नि को सर्प के जलने पर शान्त करें।

पति-पत्नि तीन दिन का अशौच रखें। वैसे अस्थि संचय नहीं कहा है परन्तु नागभस्म को जल में विसर्जन करं।

कुछ विद्वानों का मत है कि चौथे दिन अष्टनाग हेतु अष्ट पिण्ड दान करें। अष्टनागों के नाम इस प्रकार है -

ॐ अनन्ताय नमः। इदं पिण्डं मयादत्तं तवोपदिष्टतम्। ॐ वासुकीये नमः। इदं पिण्डं मयादत्तं तवोपदिष्टतम्। ॐ शेषाय नमः। इदं पिण्डं मयादत्तं तवोपदिष्टतम्। ॐ शङ्खाय नमः। इदं पिण्डं मयादत्तं तवोपदिष्टतम्। ॐ पद्माय नमः। इदं पिण्डं मयादत्तं तवोपदिष्टतम्। ॐ कंबलाय नमः। इदं पिण्डं मयादत्तं तवोपदिष्टतम्। ॐ कर्कोटकाय नमः। इदं पिण्डं मयादत्तं तवोपदिष्टतम्। ॐ तक्षकाय नमः। इदं पिण्डं मयादत्तं तवोपदिष्टतम्। ॐ कपिलाय नमः। इदं पिण्डं मयादत्तं तवोपदिष्टतम्।

८ ब्राह्मणें को भोजन के निमित्त बुलायें। यवान्न बिखेर कर उन्हें आसन देवें, पाद प्रक्षालन करें।

"**नमोस्तु सर्पेभ्यो**" से तिलक करें। एक स्वर्ण का सर्प बनाकर दूध या घृतपात्र में स्थापित कर उसका पूजन करें। भोजन के लिये जो वस्तुयें परोसे उस पर मन्त्र बोलते हुये सङ्कल्प छोड़ें।

सर्पाय इदं अन्नं परिविष्ठ परिवेक्ष्यमाणं च दत्तं दास्यमानं च अतृप्ते अमृतरूपेण स्वाहा सर्पद्यतां न मम्।

सर्प के निमित्त वस्त्रादि प्रदान करें। ब्राह्मणों को दक्षिणादि देवें। **सर्पसूक्त** का पाठ करें तथा स्वर्ण नाग का दान करें

अनेन कृत संस्कार कर्मणः साङ्गतार्थ इमं हेमनागं सकलशं सवस्त्रं सदक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे। अनेन स्वर्णनाग दानेन अनन्तादयो नाग देवता प्रीयताम्।

गोदान सङ्कल्प भी करें।

यस्य स्मृत्या च मया कृतं सर्पसंस्कारख्य कर्म तद्भक्त्यां विप्राणां वचनात् परमेश्वर प्रसादात् सर्व परिपूर्णमस्तु।

ब्राह्मण कहें - **तथास्तु।**

॥ सर्पदंशात् मृतक हेतवे बलिकर्म विधानम् ॥

जब किसी व्यक्ति की सर्पदंश से मृत्यु हो जाती है तो संभवतः उस प्राणी की आत्मा भी सर्पयोनि या प्रेतयोनि में रह सकती है।

अतः पहले नागबलि कर्म करायें पश्चात् नारायणबलि कर्म करायें। यह कर्म मृतक के १२ दिनों में करें। यदि वर्षान्तराल में करायें तो प्रतिमास शुक्ल पञ्चमी को उपवास या नक्तव्रत करके कर्म करें। यव या चावल की पिष्ठी का ५ फण का नाग बनाकर पूजा करें। १२ महिनों में १२ तरह के नागों का पूजन करें यथा -

ॐ अनन्ताय नमः। ॐ वासुकीये नमः। ॐ शङ्खाय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ कंबलाय नमः। ॐ कर्कोटकाय नमः। ॐ अश्वतराय नमः। ॐ धृतराष्ट्राय नमः। ॐ शङ्खपालाय नमः। ॐ कालियाय नमः। ॐ तक्षकाय नमः। ॐ कपिलाय नमः।

सर्पसूक्त का जप करें। नागपिष्ठी का जल में विसर्जन करें।

प्रतिमास पिण्ड पूजा कर सकते हैं। अथवा १२ वें महिने में नागबलि का पूरा कर्म करें उस समय देवें।

अनादिनिधनो देवः शङ्ख चक्र गदाधरः ।
अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष पितृमोक्ष प्रदोभव ॥

पुनः नागबलि की तरह स्वर्ण के नाग का पूजन कर दान करें। १२ ब्राह्मणों को भोजन कराकर १२ नागनामों से उनको वस्त्रादि दान करें।

इसके बाद नारायण-बलि कर्म करें।

॥ अथ त्रिपिण्डीश्राद्ध विधानम् ॥

जिन मृतात्माओं का लगातार तीन वर्षो तक श्राद्ध न किया जाय वे आत्मायें अतृप्त होकर प्रेतत्व को प्राप्त करती हैं। अत: उनके निमित्त त्रिपिण्डी श्राद्ध अवश्य करना चाहिये। इसका फल **त्र्यम्बकेश्वर** (नासिक, महाराष्ट्र) में करने से प्राप्त होता है। वैसे किसी तीर्थ या नदी के तीर पर भी कर सकते हैं।

पितृतिथी यदि भाद्रकृष्ण पक्ष या नवरात्र में पड़े तो उस दिन नहीं करे।

शुभ मास, तिथि – त्रिपिण्डी श्राद्ध श्रावण, आश्विन कृष्ण पक्ष, कार्तिक, पौष, माघ, फाल्गुन एवं वैशाख में पञ्चमी, अष्टमी, एकादशी, त्रयोदशी, चर्तुदशी और अमावस्या में कभी भी कर सकते हैं।

त्र्यम्बकेश्वर में पीपल के पेड़ के नीचे **कपर्दिकेश्वर** का मन्दिर है वहां का फल श्रेष्ठ कहा कहा है। इस तीर्थ स्थान में त्रिपिण्डी श्राद्ध करने से पिशाच बाधायें भी दूर होती है।

तीन तरह की प्रेत योनि होती है। पृथ्वी पर विचरण करने वाली प्रेतात्मा तमोगुणी, अन्तरिक्ष में विचरण करने वाली रजोगुणी, वायुमण्डल में विचरने वाली प्रेतात्मा सतोगुणी होती है।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश की तीन प्रतिमायें बनायें उनका पूजन करें। तीन ब्राह्मण **ब्रह्मसूक्त, पुरुषसूक्त** एवं **रौद्रसूक्त** का पाठ करें।

इस कर्म में तीन तरह के पिण्ड होते हैं। तिल का पिण्ड तमोगुणी, चावल का पिण्ड रजोगुणी तथा जौ के आटे का पिण्ड सतोगुणी होता है। आटे में कुशा, दही, शहद, शक्कर, दूध व घी डालकर पिण्ड तैयार करें। तीनों द्रव्यों के अलग अलग पिण्ड बनायें अथवा चावल (उबले हुये) में जौ, तिल कुशादि डालकर इनके तीन पिण्ड आत्मा के लिये रखें।

जातक को सताने और प्रताडित करने वाली आत्मा का नाम व गौत्र याद न हो तो "**अनारिष्ट गोत्र**" शब्द का प्रयोग करें। प्रेतयोनि प्राप्त जीवात्मा को सम्बोधन

करके कर्म करें।

तीनों पिण्डों का पूजन कर नींबू, जामुन, छुआरे से अर्घ देकर देवताओं को अर्पित करें।

पश्चात् जीवात्मा की मुक्ति तथा अपने परिवार की कुशलता की कामना कर प्रार्थना करें। ब्राह्मण भेजन करायें। चान्दी, स्वर्ण, ताम्बा, धातु बर्तन, गाय, चावल, जौ, कालेतिल, उड़द, छत्र, खड़ाऊ तथा कमण्डलादि का दान करें।

पितृ या प्रेत के तर्पण में विष्णु मन्त्र से तर्पण करें।

अनादिनिधनो देवः शङ्ख चक्र गदाधरः ।
अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष प्रेतमोक्ष (पितृमोक्ष) **प्रदोभव ॥**

॥ अथ पाथेयश्राद्ध कर्म विधानम् ॥

नारायणबलि कर्म पूर्ण होने के पश्चात् जौ या गेहूँ के आटे के तीन पिण्ड बनाकर जीवात्मा के लिये पाथेयश्राद्ध रूप में दिये जाते हैं ताकि प्रेतलोक से पितृलोक गमन के मार्ग में उसकी क्षुधाशान्त होवे। इसे "**सकाम नारायण बलि**" भी कहते है।

॥ अथ नान्दीश्राद्ध विधानम् ॥

नान्दीश्राद्ध का अवलोकन कालसर्प अनुष्ठान क्रम में पृष्ठ सख्या ३०९ पर करें

॥ अथ पितृस्तोत्रम् ॥

नमस्येऽहं पितृभाद्धेये वसन्ताधि देवताः ।
दैवेरपि तर्प्यन्ते ये च भाद्धै स्वधोत्तरै ॥१॥
नमस्येऽहं पितृन्स्वर्गे ये तर्प्यन्ते महर्षिभिः ।
श्राद्धैर्मनोमयैर्भत्क्या भुक्तिमुक्तिमभीप्सुभिः ॥२॥
नमस्येऽहं पितृन्स्वर्गे सिद्धाः संतर्पयन्ति यान् ।
श्राद्धेषु दिव्यैः सकलै-रुपहारैरनुत्तमैः ॥३॥
नमस्येऽहं पितृन्भक्त्यायेऽर्च्यन्ते गुह्यकैरपि ।
तन्मयत्वेन वाञ्छाद्धि-र्ऋद्धिमात्यंतिकीं पराम् ॥४॥
नमस्येऽहं पितृन्मर्त्यैरर्च्यन्ते भुवि ये सदा ।
श्राद्धेषु श्रद्धयाभीष्टलोकप्राप्ति प्रदायिनः ॥५॥
नमस्येऽहं पितृन् विप्रैरर्च्यन्ते भुवि ये सदा ।
वाञ्छिताभीष्ट-लाभाय प्राजापत्यप्रदायिनः ॥६॥
नमस्येऽहं पितृन् ये वै तर्प्यंतेऽरण्य वासिभिः ।
वन्यैः श्राद्धैर्यताहारै-स्तपोनिर्धूतकिल्विषैः ॥७॥
नमस्येऽहं पितृन् विप्रैनैंष्टिक ब्रह्मचारिभिः ।
ये संयतात्मभिर्नित्यं संतर्प्यन्ते समाधिभिः ॥८॥
नमस्येऽहं पितृन् श्राद्धै राजन्यास्तर्पयंति यान् ।
कव्यैरशेपैर्विधिवल्लोकत्रय फल प्रदान् ॥९॥
नमस्येऽहं पितृन्वैश्यैरर्च्यन्ते भुवि ये सदा ।
स्वकर्माभिरतैर्नित्यं पुष्पधूपान्नवारिभिः ॥१०॥
नमस्येऽहं पितृन् श्राद्धैर्ये शूद्रैरपि भक्तितः ।
संतृप्यन्ते जगत्यत्र नाम्ना ज्ञाताः सुकालिनः ॥११॥

नमस्येऽहं पितृन् श्राद्धैः पाताले ये महासुरैः ।
संतर्प्यन्ते स्वधाहारैस्त्यक्तदंभमदैः सदा ॥१२॥

नमस्येऽहं पितृन् श्राद्धैरर्च्यन्ते ये रसातले ।
भोगैरशेषैर्विधिवन्नागैः कामानभीप्सुभिः ॥१३॥

नमस्येऽहं पितृन् श्राद्धैः सर्पैः संतर्पितान् सदा ।
तत्रैव विधिवन्मंत्र भोगसंपत्समन्वितैः ॥१४॥

पितृन्नमस्ये निवसन्ति साक्षाद्ये देवलोके च तथांतरिक्षे ।
महीतले ये च सुरादिपूज्यास्ते मे प्रयच्छंतु मयोपनीतम् ॥१५॥

पितृन्नमस्ये परमात्मभूता ये वै विमाने निवसंतिमूर्ताः ।
यजन्ति यानस्तमलै र्मनोभिर्योगीश्वराःक्लेशविमुक्ति हेतून् ॥१६॥

पितृन्नमस्ये दिवि ये च मूर्ताः स्वधाभुजः काम्यफलाभिसंधौ ।
प्रदानसक्ताः सकलेप्सिताना विमुक्तिदा येऽनभिसंहितेषु ॥१७॥

तृप्यंतु तेऽस्मिन् पितरः समस्ता इच्छावतां ये प्रदिशंति कामान् ।
सुरत्वमिन्द्रत्व मतोऽधिकं वा सुतान् पशून् स्वानि बलं गृहाणि ॥१८॥

सोमस्य ये रश्मिषु येऽर्कबिम्बे शुक्ले विमाने च सदा वसंति ।
तृप्यन्तु तेऽस्मिन् पितरोऽन्नतोयैर्गंधादिना पुष्टिमितो व्रजंतु ॥१९॥

येषां हुतेऽग्नौ हविषा च तृप्तिर्ये भुञ्जते विप्रशरीरभाजः ।
ये पिण्डदानेन मुदं प्रयांति तृप्यन्तु तेऽस्मिन् पितरोऽन्नतोयैः ॥२०॥

ये खड्गिमांसेन सुरैरभीष्टैः कृष्णैस्तिलैर्दिव्यमनोहरैश्च ।
कालेन साकेन महर्षिवर्यैः संप्रीणितास्ते मुदमत्र यान्तु ॥२१॥

कव्यान्यशेषाणि च यान्यभीष्टान्यतीव तेषाममरार्चितानाम् ।
तेषां तु सान्निध्यमिहास्तु पुष्पगंधान्नभोज्येषु मया कृतेषु ॥२२॥

दिने दिने ये प्रतिगृह्णतेऽर्च्चां मासान्तपूज्या भुवि येऽष्टकासु ।
ये वत्सरान्तेऽभ्युदये च पूज्याः प्रयान्तु ते मे पितरोऽत्र तृप्तिम् ॥२३॥

पूज्या द्विजानां कुमुदेंदुभासो ये क्षत्रियाणां च नवार्कवर्णाः ।
तथा विशां ये कनकावदाता नीलीनिभाः शूद्रजनस्य ये च ॥२४॥

तेऽस्मिन् समस्ता मम पुष्पगंधधूपान्नतोयादिनिवेदनेन ।

तथाग्निहोमेन च यांतु तृप्तिं सदा पितृभ्यः प्रणतोऽस्मि तेभ्यः ॥२५॥
ये देवपूर्वाण्यतितृप्ति हेतोरश्नंति कव्यानि शुभाहुतानि ।
तृप्ताश्च ये भूतिसृजो भवंति तृप्यन्तु तेऽस्मिन् प्रणतोऽस्मि तेभ्यः ॥२६॥
रक्षांसि भूतान्यसुरांस्तथोग्रान्निर्णाशयन्तस्त्वशिवं प्रजानाम् ।
आद्याः सुराणाममरेश पूज्यास्तृप्यन्तु तेऽस्मिन्प्रणतोऽस्मि तेभ्यः ॥२७॥
अग्निष्वात्ता बर्हिषदा आज्यपाः सोमपास्तथा ।
व्रजन्तु तृप्तिं श्राद्धेऽस्मिन् पितरस्तर्पितामयां ॥२८॥
अग्निष्वात्ताः पितृगणाः प्राचीं रक्षन्तु मेदिशम् ।
तथा बर्हिषदः पान्तु याम्यायां पितरस्तथा ॥२९॥
प्रतीचीमाज्यपास्तद्वदुदीचीमपि सोमपाः ।
रक्षोभूतपिशाचेभ्यस्तथैवासुरदोषतः ॥३०॥
सर्वतश्चाधिपस्तेषां यमो रक्षां करोतु मे ।
विश्वो विश्वभुगाराध्यो धर्म्यो धन्यः शुभाननः ॥३१॥
भूतिदो भूतिकृद्भूतिः पितृणां ये गणा नव ।
कल्याणः कल्पतां कर्त्ता कल्पः कल्पतराश्रयः ॥३२॥
कल्पताहेतुरनघः षडिमे ते गणाः स्मृताः ।
वरो वरेण्यो वरदः पुष्टिदस्तुष्टिदस्तथा ॥३३॥
विश्वपाता तथा धाता सप्तैवैते गणास्तथा ।
महान् महात्मा महितो महिमा वान्महाबलः ॥३४॥
गणाः पंच तथैवेते पितृणां पापनाशनाः ।
सुखदो धनदश्चान्यो धर्मदोऽन्यश्च भूतिदः ॥३५॥
पितृणां कथ्यते चैतत्तथा गणचतुष्टयम् ॥
एकविंशत्पितृ गणा यैर्व्याप्तमखिलं जगत् ॥३६॥
ते मेऽनुतृप्तास्तुष्यं तु यच्छन्तु च सदा हितम् ॥

(सप्तार्चिस्तवम्)

अमूर्त्तानां च मूर्त्तानां पितृणां दीप्ततेजसाम् ॥३७॥
नमस्यामि सदा तेषां ध्यानिनां दिव्यचक्षुषाम् ।

इन्द्रादीनां च नेतारो दक्षमारी चयोस्तथा ॥३८॥
सप्तर्षीणां तथान्येषां तान्नमस्यामि कामदान् ।
मन्वादीनां मुनींद्राणां सूर्य्यांचन्द्रमसोस्तथा ॥३९॥
तान्नमस्याम्यहं सर्व्वान् पितरश्चार्णवेषु ये ।
नक्षत्राणां ग्रहाणां च वाय्वग्न्योर्नभ सस्तथा ॥४०॥
द्यावापृथिव्योश्च तथा नमस्यामि कृतांजलिः ।
देवर्षीणां ग्रहाणां च सर्वलोकनमस्कृतान् ॥४१॥
अभयस्य सदा दातॄन्नमस्येऽहं कृतांजलिः ।
नमो गणेभ्यः सप्तभ्यस्तथा लोकेषु सप्तसु ॥४२॥
स्वयंभुवे नमस्यामि ब्रह्मणे योग चक्षुषे ।
सोमाधारान् पितृगणान् योगमूर्तिधरांस्तथा ॥४३॥
नमस्यामि तथा सोमं पितरं जगतामहम् ।
अग्निरूपांस्तथैवान्यान्नमस्यामि पितॄनहम् ॥४४॥
अग्नीसोममयं विश्वं यत एतदशेषतः ।
ये तु तेजसि ये चैते सोमसूर्य्याग्निमूर्त्तयः ॥४५॥
जगत्स्वरूपिणश्चैव तथा ब्रह्मस्वरूपिणः ।
तेभ्योऽखिलेभ्यो योगिभ्यः पितृभ्यो यतमानसाः ।
नमो नमो नमस्ते मे प्रसीदन्तु स्वधाभुजः ॥४६॥

॥ पितर ऊचुः ॥

स्तोत्रेणानेन च नरो यो मां स्तोष्यति भक्तितः ।
तस्य तुष्टा वयं भोगानात्मज्ञानं तथोत्तमम् ॥४७॥
शरीरारोग्यमर्थं च पुत्रपौत्रादिकं तथा ।
प्रदास्यामो न संदेहो यच्चान्यदभिवांछितम् ॥४८॥
तस्मात्पुण्यफलं लोके वाञ्छद्भिः सततं नरैः ।
पितॄणां चाक्षयां तृप्तिं स्तव्यां स्तोत्रेण मानवैः ॥४९॥
वाञ्छद्भिः सततं स्तव्याः स्तोत्रेणानेन वै यतः ।
श्राद्धे च य इमं भक्त्या अस्मत्प्रीतिकरं स्तवम् ॥५०॥

पठिष्यंति द्विजाग्र्याणां भुञ्जतां पुरतः स्थिताः ।
स्तोत्रश्रवणसंप्रीत्या सन्निधाने परे कृते ॥५१॥
अस्माकमक्षयं श्राद्धं तद्भविष्यत्यसंशयम् ।
यद्यप्यश्रोत्रियं श्राद्धं यद्यप्युपहतं भवेत् ॥५२॥
अन्यायोपात्तवित्तेन यदि वा कृतमन्यथा ।
अश्राद्धार्हैरुपहृतैरस्तथा कृतम् ॥५३॥
अकालेऽप्यथवाऽदेशे विधिहीनमथापि वा ।
अश्रद्धया वा पुरुषैर्दंभमाश्रित्य वा कृतम् ॥५४॥
अस्माकं तृप्तये श्राद्धं तथाप्येतदुदीरणात् ।
यत्रैतत्पठ्यते श्राद्धे स्तोत्रमस्मत्सुखावहम् ॥५५॥
अस्माकं जायते तृप्तिस्तत्र द्वादशवार्षिकी ।
हेमंते द्वादशाब्दानि तृप्तिमेतत्प्रयच्छति ॥५६॥
शिशिरे द्विगुणाब्दांश्च तृप्तिस्तोत्रमिदं शुभम् ।
वसंते षोडश समास्तृप्तये श्राद्धकर्मणि ।
ग्रीष्मे च षोडशे वैतत्पठितं तृप्तिकारकम् ।
विकलेऽपि कृते श्राद्धे स्तोत्रेणानेन साधिते ॥५८॥
वर्षासु तृप्तिरस्माकमक्षया जायते रुचे ।
शरत्काले पिपठितं श्राद्धकाले प्रयच्छति ॥५९॥
अस्माकमेतत्पुरुषैस्तृप्तिं पंचदशाब्दिकाम् ।
यस्मिन् गृहे च लिखितमेततिष्ठति नित्यदा ॥६०॥
सन्निधानं कृते श्राद्धे तत्रास्माकं भविष्यति ।
तस्मादेतत्त्वया श्राद्धे विप्राणांभुंजतां पुरः ॥६१॥
श्रावणीयं महाभाग अस्माकं पुष्टिहेतुकम् ।
इत्युक्त्वा पितरस्तस्य स्वर्गता मुनिसत्तम ॥६२॥

॥ इति मार्कण्डेयपुराणे रुचिमनुना कृतं रुचिस्तवं सप्तार्चिस्तवं च पितृस्तोत्रम् ॥

॥ अथ पितरादि बाह्यशान्ति स्तोत्रम् ॥

(पितर शान्ति, देवदोष शमन, इष्टसिद्धि हेतु)

इस सूक्त का पाठ करने से मनोवांछित कार्यो में सफलता प्राप्त होती है। घर-परिवार में सुख शान्ति रहती है। मनोकामना पूर्ण होती है। पितर प्रसन्न होते है उन्हें शान्ति मिलती है। यह दुर्लभ स्तोत्र है। इससे अन्य देवदोष भी शान्त होकर इष्ट सिद्धि होती है।

॥ सूक्त पाठ करने का विधान ॥

(१) उक्त सूक्त के २४ श्लोकों में से २२ वें, २३ वें, २४ वें श्लोक का पाठ दो बार करें। अर्थात् पहले १ से २४ श्लोक तक पाठ कर लेवें तदुपरान्त २२-२३-२४ श्लोकों का पाठ दो बार करें। इस प्रकार २२-२३-२४ श्लोकों का पाठ तीन बार होगा। तब इस पितृ सूक्त का पाठ पूर्ण होगा।

(२) श्लोक २२-२३-२४ के पाठ में अधिक ध्यान देवें।

(३) काले तिल व शुद्ध घी से हवन करें। हवन में भी २२-२३-२४ श्लोक से तीन-तीन आहुतियाँ दी जावेगी।

(४) १, १२, २३, २४ श्लोक में स्वाहा की जगह होम समय स्वधा कहें।

(५) दक्षिण दिशा की और मुख करके ही पाठ एवं हवन करें।

(६) केवल एक आवृति पाठ और एक ही आवृति से हवन करें।

(७) नित्य पाठ एवं हवन आवश्यक है।

नमो वः पितरो, यच्छिव तस्मै नमो वः पितरो यतृस्योन तस्मै ।
नमो वः पितरः, स्वधा वः पितरः ॥१ ॥

नमोऽस्तु ते निर्ऋत्तु, तिग्मतेजोऽयस्यमयान विचृता बन्धपाशान्।
यमो मह्यं पुनरितृत्वां ददाति। तस्मै यमाय नमोऽस्तु मृत्यवे ॥२ ॥

नमोऽस्त्वसिताय, नमस्तिरश्चिराजये।
स्वजाय वभ्रवे नमो, नमो देवजनेभ्यः ॥३ ॥

नमः शीताय, तक्मने नमो, रूराय शोचिषे कृणोमि।
यो अन्येद्युरुभयद्युरभ्येति, तृतीय कायं नमोऽस्तु तक्मने ।।४ ।।
नमस्ते अधिवाकाय, परावाकाय ते नमः।
सु-मत्यै मृत्यो ते नमो, दुर्मत्यै त इदं नमः ।।५ ।।
नमस्ते यातुधानेभ्यो, नमस्ते भेषजेभ्यः।
नमस्ते मृत्यो मूलेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इदं मम ।।६ ।।
नमो देववद्येभ्यो, नमो राज-वद्येभ्यः।
अथो ये विश्वानां वद्यास्तेभ्यो मृत्यो नमोऽस्तु ते ।।७ ।।
नमस्तेऽस्तु नारदा नुष्ठ विदुषे वशा।
कसमासां भीमतमा याम दत्वा पराभवेत् ।।८ ।।
नमस्तेऽस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे।
नमस्तेऽस्तु वश्मने येना दूड़ाशे अस्यसि ।।९ ।।
नमस्तेऽस्त्वायते नमोऽस्तु पराय ते।
नमस्ते प्राण तिष्ठत, आसीनायोत ते नमः ।।१० ।।
नमस्तेऽस्त्वायते, नमोऽस्तु पराय ते।
नमस्ते रुद्र तिष्ठत, आसीनायोत ते नमः ।।११ ।।
नमस्ते जायमानायै, जाताय उत ते नमः ।
वालेभ्यः शफेभ्यो रूपायाध्न्ये ते नमः ।।१२ ।।
नमस्ते प्राणक्रन्दाय नमस्ते स्तनयित्नवे।
नमस्ते प्राणविद्युते नमस्ते प्राणवर्षते ।।१३ ।।
नमस्ते प्राण-प्राणते, नमोऽस्त्वपान ते।
पराचीनाय तेनमः, प्रतीचीनाय तेनमः, सर्वस्मै न इदं नमः ।।१४ ।।
नमस्ते राजन्! वरुणास्तु मन्यवे विश्व ह्युग्र निचिकेषि दुग्धम्।
सहस्त्रमन्यान्प्रसुवामि, साकं शतं जीवाति शरदस्तवायं ।।१५ ।।
नमस्ते रुद्रास्य ते, नमः प्रतिहितायै।
नमो विसृज्यमानायै, नमो निपतितायै ।।१६ ।।
नमस्ते लाङ्गलेभ्यो नमः ईषायुगेभ्यः।

वीरुत् क्षेत्रिय-नाशन्यप क्षैत्रियमुच्छतु ॥१७॥
नमो गंधर्वस्य नमस्ते नमो भामाय चक्षुषे च कृण्मः।
विश्वावसो ब्रह्मणा ते नमोऽभि जाया अप्सरसः परेहि ॥१८॥
नमो यमाय, नमोऽस्तु मृत्यवे, नमः पितृभ्य उतये नयन्ति।
उत्पारणस्य यो वेद, तमग्निं पुरो दद्येऽस्याः अरिष्टतातये ॥१९॥
नमो रुद्राय, नमोऽस्तु तक्मने, नमो राज्ञ वरुणायं त्विणीमते।
नमो दिवे, नमः पृथिव्ये, नमः ओषधीभ्यः ॥२०॥
नमो रुराय च्यवनाय रोदनाय, घृष्णवे।
नमः शीताय पूर्वकामकृत्वने ॥२१॥
नमो वः पितर उर्जे, नमः वः पितरो रसाय ॥२२॥
नमो वः पितरो भामाय, नमो वः पितरो मन्धवे ॥२३॥
नमो वः पितरां पदघोरं, तस्मै नमो वः पितरो, यत क्रूरं तस्मै ॥२४॥

॥ अथ तर्पण प्रयोग:॥

(गोपुच्छोदक तर्पण विधान सहित)

पितर दोष होने पर पितरों के निमित्त तर्पण प्रयोग अवश्य करे। तर्पण तीर्थ व नदी के तीर पर करे तो उत्तम रहे। संक्राति, पर्व तथा पितृ तिथी पर तर्पण तीर्थ व नदी तीर पर नहीं करे सके तो घर पर करे। कुल के पितरों के निमित्त अमावस्या या श्राद्ध तिथि पर तर्पण करे।

ब्रह्महत्या, गौ हत्यादि दोष निमित्त **गोपुच्छोदक** से तर्पण करे। गाय की पूँछ पकड़कर तर्पण करे। **सव्य पूर्वाभिमुख होकर दाहिने हाथ में कुश, अक्षत्, जल, पुष्प व गोपुच्छ लेकर तर्पण करें।** तर्पण के जल को इकठ्ठा करने के लिये पूंछ के नीचे कोई पात्र रख लेवें। हाथ में गोपुच्छ लेने में कठिनाई हो तो पुच्छ के मोली बाँधकर हाथ में रख लेवें। तर्पण समय में दूसरा व्यक्ति हाथ में जल डालता जाये। तर्पण का जल नीचे रखे पात्र में छोड़ते जायें। **गोपुच्छ तर्पण के पहले गोदान विधि में सवत्स गोपूजन करे।**

यदि तर्पण प्रयोग घर पर ही कर रहे है तो एक पात्र में श्वेतगंध, तुलसीपत्र, चन्दन, तिल, यव, अक्षत्, पुष्प, कुशा, दूध एवं तीर्थोदक या गंगाजल डाले, उसके जल से तर्पण प्रयोग करे।

पवित्र होकर आसन पर बैठे दक्षिण हाथ की अनामिका में कुश की पवित्री धारण करे।

संकल्प- संवत्, अयन, मास, तिथ्यादि का उच्चारण करे पश्चात् कहे- सर्वे पितर देवा प्रीत्यर्थे श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं देव, ऋषि, मनुष्य, पितृतर्पणं करिष्यामहे।

इसके बाद **विश्वेदेवा** का आवाहन करे।

विनियोग - विश्वेदेवास आगतेत्यस्य प्रजापति ऋषिः गायत्री छन्दः, विश्वेदेवा देवताः तथा विश्वदेवा श्रृणुतेममित्यस्य स्वयंभूर्ब्रह्मा ऋषि त्रिष्टुप्

छन्दः विश्वेदेवा देवताः आवाहने विनियोगः।

ॐ विश्वेदेवा स ऽआगतश्रृणुताम्इम ७ हवम्। एदम्बर्हिर्निषदित। विश्वेदेवाः श्रृणुतेम ७ हवमेये ऽअन्तरिक्षेय उपद्यविष्ट। ये अग्निजिह्वा उतवा यजत्रा आसद्यास्मिन्वर्हिषि मादयद्ध्वम्॥ आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदवा महाबलाः॥

ये तर्पणेऽत्र विहिताः सावधाना भवन्तु ते॥

देवतर्पण – दर्भा हाथ में लेकर अंगुलियों के अग्रभाग देवतीर्थ से एकएक अंजलि देकर पूर्वाभिमुख सव्य होकर प्रदान कर तर्पण करें।

ॐ तीर्थानि तृप्यन्ताम्। ॐ तीर्थदेवास्तृप्यन्ताम्। ॐ विश्वेदेवास्तृप्यन्ताम्। ॐ मोदास्तृप्यन्ताम्। ॐ प्रमोदास्तृप्यन्ताम्। ॐ सुमुखास्तृप्यन्ताम्। ॐ दुर्मुखास्तृप्यन्ताम्। ॐ अविघ्नास्तृप्यन्ताम्। ॐ विघ्नकर्तास्तृप्यन्ताम्। (कहीं कहीं शुरु के इन नव तर्पणों का लेख नहीं है) ॐ ब्रह्मास्तृप्यन्ताम्। ॐ विष्णुस्तृप्यन्ताम्। ॐ रुद्रस्तृप्यन्ताम्। ॐ प्रजापतिस्तृप्यन्ताम्। ॐ मनवस्तृप्यन्ताम्। ॐ देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ॐ रुद्रातिपुत्रास्तृप्यन्ताम्। ॐ छन्दा ठेसितृप्यन्ताम्। ॐ वेदास्तृप्यन्ताम्। ॐ साध्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ मरुद्गणास्तृप्यन्ताम्। ॐ ग्रहास्तृप्यन्ताम्। ॐ नक्षत्राणिस्तृप्यन्ताम्। ॐ योगास्तृप्यन्ताम्। ॐ राशयस्तृप्यन्ताम्। ॐ पुराणार्चस्तृप्यन्ताम्। ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम्। ॐ वसुधास्तृप्यन्ताम्। ॐ इतराचार्यस्तृप्यन्ताम्। ॐ संवत्सरः सावयवस्तृप्यन्ताम्। ॐ अश्विनौ तृप्यन्ताम्। ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम्। ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम्। ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम्। ॐ नागास्तृप्यन्ताम्। ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम्। ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम्। ॐ रुद्रास्तृप्यन्ताम्। ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्। ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतानि तृप्यन्ताम्। ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्। ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम्। ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतग्राम चतुर्विधस्तृप्यन्ताम्। ॐ योगिनस्तृप्यन्ताम्। ॐ विद्याधरास्तृप्यन्ताम्। ॐ दिग्गजास्तृप्यन्ताम्। ॐ देवगणास्तृप्यन्ताम्। ॐ देवपत्न्यस्तृप्यन्ताम्। ॐ लोकपालास्तृप्यन्ताम्। ॐ नारदस्तृप्यन्ताम्। ॐ जन्तवस्तृप्यन्ताम्। ॐ स्थावरास्तृप्यन्ताम्। ॐ जङ्गमास्तृप्यन्ताम्।

ऋषि तर्पण – निम्नलिखित ऋषियों को भी एक अंजलि प्रदान करें।

ॐ मरीचिस्तृप्यन्ताम्। ॐ अत्रिस्तृप्यन्ताम्। ॐ अंगिरास्तृप्यन्ताम्। ॐ पुलस्त्यस्तृप्यन्ताम्। ॐ पुलहस्तृप्यन्ताम्। ॐ क्रतुस्तृप्यन्ताम्। ॐ वसिष्ठस्तृप्यन्ताम्। ॐ प्रचेतास्तृप्यन्ताम्। ॐ भृगुस्तृप्यन्ताम्। ॐ

नारदस्तृप्यन्ताम्।

दिव्य मनुष्य तर्पण – उत्तर दिशा की ओर मुँह करके बैठे। यज्ञोपवीत व अंगोछे को कण्ठी के समान गले में लपेट लेवें। सीधा बैठें घुटने जमीन पर नहीं लगायें। अर्घ पात्र में जौ छोडें। तीन कुशाओं को उत्तराग्र रखते हुये हाथ में पकड़े तथा कायतीर्थ अर्थात् कुशों को दाहिने हाथ की कनिष्ठिका के मूलभाग में रखकर **दो दो अंञ्जलि जल तर्पण करें।**

विनियोग – सप्तऋषय इति मन्त्रस्य कूर्म ऋषिः जगति छन्दः सप्तऋषयो देवता ऋष्यावाहने विनियोगः।

मन्त्र – ॐ सप्तऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्तरक्षन्ति सदमप्रमादम्। सप्तापः स्वपतोलोकमीयुस्तत्र जागृतो अस्वप्न जौसत्र सदौ च देवौ।

ॐ सनकस्तृप्यन्ताम्। ॐ सनन्दनस्तृप्यन्ताम्। ॐ सनातनस्तृप्यन्ताम्। ॐ कपिलस्तृप्यन्ताम्। ॐ आसुरिस्तृप्यन्ताम्। ॐ वोढुस्तृप्यन्ताम्। ॐ पञ्चशिखस्तृप्यन्ताम्।

दिव्यपितृ तर्पण – दक्षिण दिशा की ओर मुँह करके अपसव्य होवे अर्थात् यज्ञोपवत को दाहिने कंधे पर रखकर बाँये हाथ के नीचे ले जायें। अंगोछे को दाहिने कंधे पर रखें। बाँया घुटना जमीन पर लगाकर बैठें। अर्घपात्र में तिल छोड़ें। कुशाओं को बीच से मरोड़कर उनकी जड़ और अग्रभाग को दाहिने हाथ में तर्जनी और अंगुष्ठ के मध्य में रखे। पितृतीर्थ अर्थात् अंगुष्ठ और तर्जनी के मध्य से तीन तीन अञ्जलि तर्पण करें।

[यदि गोपुच्छोदक से तर्पण कर रहे हो तो निम्न सात मन्त्रों को इस प्रकार पढ़ें – ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यंतामिदं सतिलं गापुच्छोदकं तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः।

इस प्रकार स्वधा सहित ३-३ अञ्जलि जल देवें।]

साधारण तर्पण में प्रत्येक मन्त्र से ३-३ अंञ्जलि दें। नाम के साथ "**इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। तस्मै स्वधा नमः। तस्मै स्वधा नमः।**" इस प्रकार **अञ्जलि देवें।**

ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यन्ताम्। ॐ सोमस्तृप्यन्ताम्। ॐ यमस्तृप्यन्ताम्। ॐ अर्यमास्तृप्यन्ताम्। ॐ अग्निस्तृप्यन्ताम्। ॐ पितरस्तृप्यन्ताम्। ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम्। ॐ बर्हिषद पितरस्तृप्यन्ताम्।

चतुर्दश यम तर्पण - निम्नलिखित प्रत्येक नाम मन्त्र से यमराज को पितृतीर्थ से ही दक्षिणाभिमुख होकर तिलादि से ३-३ अञ्जलि देवें।

क्योंकि पितृतीर्थ के तर्पण हैं अतः **स्वधा** युक्त तर्पण ३ बार करें।

ॐ यमाय नमः इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। तस्मै स्वधा नमः। तस्मै स्वधा नमः॥ ॐ धर्मराजाय नमः इदं जलं तस्मै स्वधा नमः। तस्मै स्वधा नमः। तस्मै स्वधा नमः।

इसी प्रकार प्रत्येक नाम के पश्चात् **इदं जलं तस्मै स्वधा नमः। तस्मै स्वधा नमः। तस्मै स्वधा नमः।** उच्चारण करें।

ॐ मृतवे नमः०। ॐ अन्तकाय नमः०। ॐ वैवस्वताय नमः०। ॐ कालाय नमः०। ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः०। ॐ औदुम्बराय नमः०। ॐ दध्नाय नमः०। ॐ नीलाय नमः०। ॐ परमेष्ठिने नमः०। ॐ वृकोदराय नमः०। ॐ चित्राय नमः०। ॐ चित्रगुप्ताय नमः०।

पित्र्यादि तर्पण - दाहिने हाथ में तिल, जल, मोटक लेकर अपसव्य दक्षिणामुख हो बायाँ घुटना जमीन पर टिकार पित्र्यादि का ३ बार तर्पण करें।

॥ प्रथम गोत्र ॥

१. पिता - ॐ अद्य अमुक गोत्रोत्पन्न अस्मपिता वसुस्वरूपः इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। इदं जलं तस्मै स्वधा नमः। इदं जलं तस्मै स्वधा नमः।

[यदि गोपुच्छोदक से तर्पण करें तो कहें - इदं सतिलं **गोपुच्छोदकं तस्मै स्वधा नमः। तस्मै स्वधा नमः। तस्मै स्वधा नमः।**]

२. पितामह - ॐ अद्य अमुक गोत्रोत्पन्न अस्मत्पितामह रुद्ररूपः इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। इदं जलं तस्मै स्वधा नमः। इदं जलं तस्मै स्वधा नमः।

३. प्रपितामह - ॐ अद्य अमुक गोत्रोत्पन्न अस्मत्प्रपितामह आदित्यरूपः इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। इदं जलं तस्मै स्वधा नमः। इदं जलं तस्मै स्वधा नमः।

१. माता - ॐ अद्य अमुक गोत्रोत्पन्न अस्ममाता गङ्गा रूपिणी इदं जलं तस्मै स्वधा नमः। इदं जलं तस्मै स्वधा नमः। इदं जलं तस्मै स्वधा नमः।

२. पितामही - ॐ अद्य अमुक गोत्रोत्पन्न अस्मत्पितामही यमुना रूपिणी

इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। इदं जलं तस्मै स्वधा नमः। इदं जलं तस्मै स्वधा नमः।

३. प्रपितामही – ॐ अद्य अमुक गोत्रोत्पन्न अस्मत्प्रपितामही सरस्वती रूपिणी इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। इदं जलं तस्मै स्वधा नमः। इदं जलं तस्मै स्वधा नमः।

सौतेली माता के लिये **अस्मत् सापत्न्यमाता देवी रूपिणी** कहें।

॥ द्वितीय गोत्र ॥

इसी प्रकार से मातामह (नाना) के लिये "**वसुरूप**"। प्रमातामह (परनाना) के लिये "**रूद्ररूप**"। वृद्धप्रमातामह (वृद्धपरनाना) के लिये "**आदित्यरूप**" कहें।

इसी प्रकार से मातामही (नानी) के लिये "**गङ्गास्वरूपा**"। प्रमातामही (परनानी) के लिये "**यमुनारूपा**"। वृद्धप्रमातामही (वृद्धपरनानी) के लिये "**सरस्वतीरूपा**" कहें।

प्रसेचन – अपनी गोत्र के तर्पण के पश्चात् या स्वयं व ननिहाल पक्ष के तर्पण के बाद निम्न ऋचायें पढ़ते हुये पितृतीर्थ से प्रसेचन करें।

विनियोग – **ॐ उदीरतामिति क्रमेण नवर्चः उपांशु आम्नाय स्वरेण पठन अञ्जलिकृतं जलं पितृतीर्थेन प्रसिंचेत्। उदीरतामङ्गिरस आयुन्तुन इति त्रयाणां शंख ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः पितरो देवता ऊर्जवहन्तीत्यस्य प्रजापति ऋषिः गायत्री छन्दः पितृभ्यो चेहइतिद्वयो प्रजापत्यश्विसरस्वत्य ऋषयः त्रिष्टुप्छन्दः त्रयाणां पितरो देवताः। मधुवाताइतित्र्यृचस्य गौतम ऋषिः गायत्री छन्दः विश्वेदेवा देवताः सर्वेषां प्रसेके विनियोगः।**

उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः।
असुँय ईयुरवृका ऋतज्ञास्तेनोवन्तु पितरो हवेषु ॥१॥
अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः।
तेषां द्वय ७ सुमतो यज्ञिया नामपि भद्रसौमनसे स्याम ॥२॥
आयन्तुनः पितरः सोम्यसोग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानेः।
अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोधिब्रवन्तु तेवन्त्वस्मान् ॥३॥
उर्जवहन्तीरमृतङ्घृतम्पयः कीलालम्परिसुतम्।

स्वधास्थ तर्पयत मे पितृन् ॥४॥
पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः
स्वधायिभ्य स्वधा नमः प्रपितामहेभ्य स्वधायिभ्यः
स्वधा नमः ।
अक्षन्नपितरो मीमदन्तपितरो तीतृपन्त
पितरः पितरः शुन्धद्ध्वम् ॥५॥
ये चेह पितरो येचनेहयांश्चविद्मयां उचन प्रविद्म.।
तं वेत्थयति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञः सकृतञ्जुषस्व ॥६॥
मधुवाता ऋतायुते मधुक्षरन्ति सिन्धवः ।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधी ॥७॥
मधुनक्त मुतोषसो मधुमत्पार्थिव ७ रजः ।
मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥८॥
मधुमानो वनस्पतिर्मधुमाँ ऽअस्तु सूर्यः ।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥९॥
ॐ तृप्यध्वं तृप्यध्वं तृप्यध्वम् ॥

॥ इति प्रसेचनम् ॥

जपः – नमो व इति मन्त्रस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषीः यजुश्छन्दः पितरो देवताः जपे विनियोगः।

नमो व पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय, नमो वः पितरः स्वधायै, नमो वः पितरो घोराय, नमो वः पितरोमन्यवे नमो वः पितरः पितरो, नमो वो गृहान्नः, पितरोदत्तसतो वः पितरोदेष्मैतद्व पितरोवास ऽआधत्त॥

पत्न्यादि तर्पण – पत्नि पुत्रादि के निमित्त भी तर्पण कर सकते हं। किसी ग्रन्थ में एक अञ्जलि देने हेतु कहा है तो किसी ने तीन अञ्जलि तर्पण कहा है, यही अधिक प्रचलित है।

सभी के लिये गोत्र, नाम उच्चारण करके **"इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः"** कहें।

१. पत्नि – अस्मत पत्नि देवी इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। इदं

सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। "**इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः**" कहें।

पुत्र हेतु – **अस्मत् पुत्र।** भाई हेतु – **अस्मत् भ्राता।** भाई की स्त्री हेतु – **अस्मत् भातृपत्नि।** भतीजा हेतु – **अस्मत् भातृपुत्र।** बुआ हेतु – **अस्मत् पितृष्वसा।** फूफा हेतु – **अस्मत् पितृष्वसृपति।** बुआ के पुत्र हेतु – **अस्मत् पैतृष्वस्त्रेय।** मौसी हेतु – **अस्मन्मातृष्वसा।** मौसा हेतु – **अस्मन्मातृष्वसृपतिः।** मौसीया भाई हेतु – **अस्मन्मातृज्वस्त्रेयः।** मामा हेतु – **अस्मन्मातुलः।** मामी हेतु – **अस्मन्मातुलानी।** मामा का लड़का हेतु – **अस्मन्मातुलपुत्र।** श्वसुर हेतु – **अस्मच्छ्वशुर।** सास हेतु – **अस्मच्छ्वश्रु।** गुरु हेतु – **अस्मद् गुरु।** मित्र हेतु – **अस्मिन् मित्र।** नौकर हेतु – **अस्मद् भृत्य।**

इस तरह नाम व गौत्र सहित तर्पण कर सकते हैं।

जलधारा – तदनन्तर निम्न श्लोकों के उच्चारण से पितृतीर्थ से जलधारा (गोपुच्छोदक तर्पण करें तो गोपुच्छ सहित) देवें।

ये ऽबान्धवा बान्धवा ये येऽन्यजन्मनि बांधवाः ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मया दत्तेन वारिणा ॥

यदि गोपुच्छ से तर्पण कर रहें हो तो **मया दत्तेन वारिणा** की जगह **गोपुच्छोदक तर्पणैः** कहें।

मातृपक्षाश्च ये केचिद् ये केचित् पितृपक्षकाः ।
गुरुश्वशुर बन्धूनां ये कुलेषु समुद्भवाः ॥
ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः ।
क्रियालोपगता ये च जात्यन्धा पङ्गवस्तथा ॥
विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञातकुले मम ।
ते र्से तृप्तिमायान्तु मया दत्तेन वारिणा (गोपु.) ॥
अतीतकुल कोटीनां सप्तद्वीप निवासिनाम् ।
आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम् (गोपु.) ॥
वृक्षयोनिगता ये च पर्वतत्वं गताश्च ये ।
पशुयोनिगता ये च ये च कीटकपतङ्गका ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मयादत्तेन वारिणा (गोपु.) ॥
नरके रौरवे ये च महारौरव संस्थिता ।

असिपत्रवने घोरे कुंभीपाकस्थिताश्च ये ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मयादत्तेन वारिणा (गोपु.) ॥
स्वार्थबद्धामृता ये च शस्त्रघातमृताश्च ये ।
ब्रह्महस्तमृता ये नारीहस्तमृताश्च ये ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मयादत्तेन वारिणा (गोपु.) ॥
पाशमध्येमृता ये च स्वल्पमृत्युवशं गताः ।
सर्वे च मानवा नागाः पाशवः पक्षिणस्तथा ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मयादत्तेन वारिणा (गोपु.) ॥
आब्रह्म स्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मयादत्तेन वारिणा (गोपु.) ॥

इसके बाद भीष्मपितामह को निम्न श्लोक से कुशों द्वारा पितृतीर्थ से जल देवें।

वैयाघ्रपदगोत्राय सांकृत्य प्रवराय च ।
अपुत्राय ददाम्येतज्जलं भीष्माय वर्मणे ॥

इसके बाद अपने गोत्र से अपुत्रादि के हेतु अपने अघोवस्त्र से जल निचोड़ कर जमीन पर ड़ालें।

ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः ।
ते गृह्णन्तु मयादत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम् ॥

इसके बाद पूर्वाभिमुख होकर निम्न मन्त्र से देवतीर्थ (अञ्जलि के अग्रभाग) से जलधारा देवें।

देवासुरस्तथा यक्षा नागा गन्धर्वराक्षसाः ।
पिशाचा गुह्यका सिद्धाः कूष्माण्डास्तरवः खगाः ॥
जलेचरा भूनिलया वाय्वाधाराश्च जन्तवः ।
तृप्तिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाम्बुनाखिलाः ॥

हाथ जोड़कर नमस्कार करें।

ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ रुद्राय नमः।

॥ इति तर्पण प्रयोगः ॥

॥ अथ गोदान विधानम् ॥

(पञ्चधेनु दान विधान सहित)

जन्म कुण्डली में ब्रह्मशाप दोष, देवदोष या गोहत्यादि दोष हो तथा वंशवृद्धि में बाधा आये तो गोदान कर्म करना चाहिये।

वैतरणी नदी विधान सहित गोदन करने से पितरों के मोक्ष की प्राप्ति होती है।

गाय को लाकर स्नानादि से शुद्ध करें। पैर के क्षुरों में, शृङ्गों को रजताभूषण से सुसज्जित व शृङ्गार करें। गोपूजन समय गाय को भूसी, चेरी व गुड़ खिलाते रहें। गणेश व गौरी नवग्रहादि का पूजन कर दान करायें। गौरी की प्रतिमा गोबर से बनायें। अन्यथा गौरी व गणेशजी की सुपारी की प्रतिमा बनाकर ही पूजा कर लें। गाय के प्रत्येक अङ्ग की पूजा करें। **गोपुच्छोदक से तर्पण करने से पितरों की तृप्ती होती है। गोपुच्छोदक तर्पण विधि "तर्पण प्रयोग" में पहले दे दी गई है।**

गोपुच्छोदक तर्पण के बाद रुई के पहाड़ पर कलश रखें, उस पर यमराज की मूर्ति रखें। कलश की पूजा कर यम की पूजा करें।

यम मन्त्र - ॐ यमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे।

गोदान पाँच प्रकार का होत है। सङ्कल्प में कामनानुसार नाम लेवें।

१. ऋणापनोदधेनु - पूर्व जन्म के ऋण दोष हेतु।

२. पापापनोदधेनु - पूर्व जन्म के पाप निवारण हेतु।

३. उत्क्रान्तिधेनु - सुख पूर्वक प्राणेत्सर्ग के लिये।

४. वैतरणीधेनु - यममार्ग में स्थित घोर वैरतणी नदी को पार करने हेतु।

५. मोक्षधेनु - मोक्ष प्राप्ति हेतु दान।

गोदान बछड़े सहित करना चाहिये।

सङ्कल्प - ॐ अद्य............ संवत् मास, दिनादि, गोत्रादि उच्चारण करें

तथा गोदान की अमुक कामना सिद्धि हेतु अमुक धेनु दानकर्म चाहं करिष्ये। तत्रादौ गणेश गौर्यादि पूजन गोपूजनादि करिष्ये।

विशेष कर्म हेतु ग्रहशान्ति प्रयोग एवं ब्राह्मण भोजन भी यथा शक्ति किया जाता है।

गणेश गौर्यादि पूजन करके सपत्नीक ब्राह्मण वरण करें। सुसज्जित गाय का प्रोक्षण करें।

ॐ इरावती धेनुमती हि भूत ग्ग् सूयवसिनी मनवे दशस्या।
व्यस्कभ्नारोदसी विष्णवे तेदधार्थ पृथिवीमभितो मयूखैः स्वाहा ॥
आवाहयाम्यहं देवीं गां त्वां त्रैलोक्य मातरम्।
यस्याः स्मरणमात्रेण सर्वपाप प्रणाशनम् ॥

इसके पश्चात् गौ के प्रमुख अङ्गों में देवताओं का आवाहन करें –

शृङ्गमूलयो – **ब्रह्मविष्णुभ्यां नमः, ब्रह्मविष्णू आवहयामि।** शृङ्गाग्रे – **सर्वतीर्थेभ्यो नमः आ०।** शिरोमध्ये – **महादेवाये नमः आ०।** ललाटाग्रे – **गौर्य्यै नमः आ०।** नासावंशे – **षण्मुखाय नमः आ०।** कर्णयोः –**अश्विभ्यां नमः आ०।** नेत्रयोः – **शशिभास्कराभ्यां नमः आ०।** दन्तेषु – **सर्ववायवे नमः आ०।** जिह्वायां – **वरुणाय नमः आ०।** हुंकारे – **सरस्वत्यै नमः आ०।** गण्डयोः – **मासपक्षाभ्यां नमः आ०।** ओष्ठयोः – **सन्ध्याद्वयाय नमः आ०।** ग्रीवायां – **इन्द्राय नमः आ०।** उरसि – **साध्येभ्यो नमः आ०।** जङ्घयो – **धर्माय नमः आ०।** खुरमध्ये – **गंधर्वेभ्यो नमः आ०।** खुराग्रेषु – **पन्नगेभ्यो नमः आ०।** खुरमूले – **अप्सरोगणेभ्यो नमः आ०।** पृष्ठे – **एकादशरुद्रेभ्यो नमः आ०।** सर्वसंधिषु – **वसुभ्यो नमः आ०।** कटिभागे – **पितृभ्यो नमः आ०।** पुच्छे – **सोमाय नमः आ०।** अधोभागे – **द्वादशादित्येभ्यो नमः आ०।**

केशेषु – **सूर्यरश्मिभ्यो नमः आ०।** गोमूत्रे – **गंगायै नमः आ०।** गोमये – **यमुनायै नमः आ०।** क्षीरे – **सरस्वत्यै नमः आ०।** दधि – **नर्मदायै नमः आ०।** घृतै – **वह्नये नमः आ०।** रोमसु – **त्रयस्त्रिंशत्कोटि देवेभ्यो नमः आ०।** उदरे – **पृथिव्यै नमः आ०।** स्तनेषु – **चतुर्भ्यः सागरेभ्यो नमः आ०।** सर्वशरीरे – **कामधेनवे नमः आ०।**

प्रतिष्ठा – हाथ में अक्षत् पुष्प लेकर गाय पर छोड़ें।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तन्नोत्वरिष्टं यज्ञ ग्ग् समिमं

दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्तामो ३ म्प्रतिष्ठ ॥

उक्त ब्रह्मादि कामधेन्वन्तदेवताः सुप्रतिष्ठिता भवन्तु आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

॥ अथ विविधोपचार पूजनम् ॥

पाद्य - सौरभेयि सर्वहिते पवित्रे पापनाशिनि ।
प्रतिगृह्य मयादत्तं पाद्यं त्रैलोक्यवंदिते ॥

आवाहित देवता सहितायै सवत्सायै गवे नमः। पाद्यं समर्पयामि ॥

अर्घ्यम् - देहस्थाया च रुद्राण्याः शङ्करस्य सदाप्रिये ।
धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु ॥

आचमनीयम् - या लक्ष्मीः सर्वभूतेषु या च देवेष्वस्थिता ।
धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु ॥

स्नानम् - सर्वदेवमयी मातः सर्वदेव नमस्कृते ।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं स्नानार्थं गृह्ण धेनुके ॥

वस्त्रम् - आच्छादनं गवे दद्यात्सम्यक् शुद्धं सुशोभनम् ।
सुरभिर्वस्त्रदानेन प्रीयतां परमेश्वरि ॥

रक्तचन्दन - सर्वदेवप्रियं देवि चन्दनं चन्द्रसन्निभम् ।
कस्तूरी कुङ्कुमाढ्यञ्च प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

अक्षत् - अक्षतान् तिलजान् देवि शुभ्रचन्दनमिश्रिताम् ।
गृहाण परमप्रीत्या गौस्त्वं त्रिदिवपूजिते ॥

अलङ्कारादि - शृङ्गभूषार्थं स्वर्ण शृङ्गम् । चरणभूषणार्थ घण्टाम् ।
दोहनार्थं कांस्यपात्रम् । कण्ठे मालाभरणम् ।
सर्वालङ्कारार्थं यथा शक्ति द्रव्यम् ।

पुष्पमाला - पुष्पमालां तथा जातिपाटलाचम्पकानि च ।
पुष्पाणि गृह्ण धेनो त्वं सर्वविघ्न प्रणाशिनि ॥

धूपम् - देवद्रुमरसोद्भूतं गोघृतेन समन्वितम् ।
प्रयच्छामि महाभागे धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।

दीपम् - आनन्ददः सुराणाञ्च लोकानां सर्वदा प्रियः ।

गोस्त्वं पाहि जगन्मातः दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।

नैवेद्यम् - सुरभिर्वैष्णवी माता नित्यं विष्णुपदं स्थिता ।
ग्रासं गृह्णातु सा धेनुर्याऽस्तु त्रैलोक्य वासिनी ॥

दक्षिणा - हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्त पुण्य फलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

पुष्पाञ्जलि - ॐ गोभ्यो यज्ञाः प्रवर्तन्ते गोभ्यो देवाः समुपस्थिताः ।
गोभ्यो वेदाः समुत्कीर्णाः षडङ्गपादसक्रमाः ॥

प्रदक्षिणा - पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादिफलंददाति ।
तां सर्वपापक्षय हेतुभूतां प्रदक्षिणान्ते परितः करोमि ॥

आवाहित पूजित समस्त देवता सहितायै सवत्सायै गवे नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

गाय की एक या चार प्रदक्षिणा करें।

गो पूजा के अनन्तर **गोपुच्छोदक से तर्पण करें** जिसकी विधि पुस्तक में तर्पण प्रयोग में दी गई है।

गोपुच्छोदक तर्पण के बाद ब्राह्मण उस जल से यजमान का अभिषेक करें।

जिस कामना का सङ्कल्प कर गोपूजन किया है उस दोष के निवारण की कामना का सङ्कल्प (कालसर्पदोष निवारण, देव गुरु ब्रह्म शाप निवारण, अनिष्ट निवारण, वंध्या दोष निवारण, पाप एवं शाप दोष निवारण) कर पञ्चधेनु दान कर्म के अनुसार ब्राह्मण को गोपुच्छ, जल, अक्षत्, पुष्प, तिलादि सङ्कल्प् कर प्रदान करें। पश्चात् **गोमती पाठ** कर गाय की वन्दना करें।

॥ अथ गोमती पाठः॥

गावो मामुपतिष्ठन्तु हेमशृंग्यः पयोमुचः ।
सुरभ्य सौरभेय्यश्च सरितः सागरं यथा ॥१॥

गा वै पश्याम्यहं नित्यंगावः पश्यन्तु मां सदा ।
गावोऽस्माकं वयं तासां यतो गावस्ततो वयम् ॥२॥

गावः सुरभयो नित्यं गावो गुग्गुलगंधिकाः ।
गावः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं परम् ॥३॥

अन्नमेव परं गावो देवानां हविरुत्तमम् ।
पावनं सर्वभूतानां रक्षन्ति च वहन्ति च ॥४॥
हविषा मन्त्रपूतेन तर्पयन्त्यमरान् दिवि ।
ऋषीगणामग्निहोत्रेषु गावो होमे प्रयोजिता: ॥५॥
सर्वेषामेव भूतानां गावः शरणमुत्तमम् ।
गावः पवित्रं परमं गावो मङ्गलमुत्तमम् ॥६॥
गावः स्वर्गस्य सोपानं गावः स्वर्गेऽपि पूजिताः ।
गावः कामदुहो देव्यो नान्यत् किंचित् परं स्मृतम् ॥७॥
नमोगोभ्यः श्रीमतीभ्यः सारभेयीभ्य एव च ।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः ॥८॥
ब्राह्मणाश्चैव गावश्च कुलमेकं द्विधा कृतम् ।
एकत्र मन्त्रास्तिष्ठन्ति हविरेकत्र तिष्ठति ॥९॥
घृतक्षीरप्रदा गावो घृतयोन्यो घृतोद्भवाः ।
घृतनद्यो घृतावर्तास्त मे सन्तु सदा गृहे ॥१०॥
घृतं मे हृदये नित्यं नाभ्यां प्रतिष्ठितम् ।
घृतं मे सर्वतश्चैव घृतं मनसि वै घृतम् ॥११॥
गावो ममाग्रतः गावो मे सन्तु पृष्ठतः ।
गावो मे सर्वतः सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् ॥१२॥
गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश ।
यस्मात् तस्माच्छिवं मे स्यदिह लोके परत्र च ॥१३॥

गाय के कान में मन्त्र जप करें -

ॐ ह्रीं नमो भगवत्यै ब्रह्ममात्रे विष्णुभगिन्यै रुद्रदेवतायै सर्वपापप्रमोचिन्यै।

॥ पञ्चधेनु दान सङ्कल्प ॥

॥ १. वैतरणी धेनु दान ॥

समय तथा स्थान के अनुरूप गड्ढा खोदकर अथवा मिट्टी की बाड़ बनाकर उसमें पानी भरकर वैतरणी नदी बनकर उसमें पानी भर कर वैतरणी नदी का आकार बनायें।

ह्रीं वैतरण्यै नमः से पूजन करें।

गन्ने के टुकडे को काटकर या चाँदी की नाव बनायें। चाँदी की पतवार बनायें। नाव में स्वर्ण का यज्ञ पुरुष, कपास तथा लोहखण्ड रखें। नदी पश्चिम से पूर्व की ओर बहने वाली ढलवां होवे। पार करने वाला उत्तर से दक्षिण की ओर जाये। आगे गाय होनी चाहिये, उसकी पूंछ में मोली (कलावा) से नाव को बाँध देना चाहिये। गाय की पूंछ तथा नाव को पकड़े हुये पार करने वाला उसके पीछे चले।

इस प्रकार मन्त्र पढ़ें -

धेनुके मां प्रतीक्षस्व यमद्वारमहापथे ।
उत्तरणार्थं देवेशि वैतरण्यै नमोऽस्तु ते ॥

हाथ जोड़कर भगवान से प्रार्थना करें -

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यतः ।
स्मरणा देव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥
यत्पादपङ्कज स्मरणात् यस्य नामजपादपि ।
न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम् ॥
कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्याऽऽत्मना वानुसृत स्वभावात् ।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत् ॥

ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः, ॐ साम्बसदाशिवाय नमः, ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।

दान सङ्कल्प - ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु अद्य यथोक्तगुण विशिष्ट तिथ्यादौ प्रतिनिधिभूतोऽहं मम पितरः (पितुः, मातः, बान्धवाः) यममार्गेस्थिताः महाघोरां वैतरणीं सुखेन संतरण कामनया श्रीपरमेश्वर प्रीतये इमां वैतरणीधेनुं रुद्रदैवताम् (निष्क्रय द्रव्यं वा) ....गोत्राय.......शर्मणे.......ब्राह्मणाय भवते संप्रददे।

ऐसा कहकर संकल्प जल, गोपुच्छ या गोनिष्क्रय द्रव्य निम्न श्लोकों से ब्राह्मण को देवें।

यमद्वारे महाघोरा या सा वैतरणी नदी ।
तर्तुकामा ददाम्येनां तुभ्यं वैतरणीश्चगाम् ॥

ब्राह्मण कहें - **ॐ स्वस्ति।**

॥ २. ऋणापनोदधेनु दान ॥।

देव, गुरु, स्त्री, माता, पिता, भ्रातृ व भृत्यादि या अन्य का ऋणानुबंध कुण्डली से आता हो तो गोदान सङ्कल्प इस प्रकार करें -

सङ्कल्प - ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु अद्य (संवत्, मास, तिथ्यादि) प्रतिनिधिभूतोऽहं (स्वयं का नाम, गौत्र) मम पितु (मातुः) ऐह्किामुष्मिकानेक जन्मार्जित देवर्षि पितृ मनुष्यादि समस्त ऋणापनोदनार्थं श्रीविष्णु प्रीतये इमाम् ऋणापनोदधेनुं रुद्रदवतां (इदमृणापनोदधेनु मूल्यं वा) अमुक गोत्रय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय भवते संप्रददे।

निम्न श्लोकों से ब्राह्मण के हाथ में सङ्कल्प जल, गोपुच्छ, अथवा गोनिष्क्रय द्रव्य देवें।

ऐहिकामुष्मिकं यच्च सप्तजन्मार्जितं त्वृणम् ।
तत्सर्वं शुद्धिमायातु गामेतां ददतो मम ॥

ब्राह्मण कहें - **ॐ स्वस्ति।**

॥ ३. पापापनोदक धेनु दान ॥

अनेक जन्मों के पाप, शाप, कालसर्पादि दोष, सर्पवध दोष की निवृत्ति हेतु यह दान करें।

सङ्कल्प - ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु अद्य (संवत्, मास, तिथ्यादि) प्रतिनिधिभूतोऽहं (स्वयं का नाम, गौत्र) मम पितु (मातुः) ज्ञानाज्ञत मनोवाक्काय कृत पापापां तथा अमुक दोष संक्षयार्थे इमां पापापनोदधेनुं रुद्रदैवतां अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय भवते संप्रददे।

ऐसा कहकर ब्राह्मण के हाथ में सङ्कल्प जल, गोपुच्छ, अथवा गोनिष्क्रय द्रव्य देवें।

आजन्मोपार्जितं पापं मनोवाक्काय संभवम् ।
तत्सर्वं नाशमायातु गोप्रदानेन केशव ॥

ब्राह्मण कहें - **ॐ स्वस्ति।**

॥ ४. उत्क्रान्तिधेनु दान ॥

सुख पूर्वक प्राणोत्सर्ग हेतु इस तरह सङ्कल्प करें -

सङ्कल्प - ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु अद्य (संवत्, मास, तिथ्यादि) प्रतिनिधिभूतोऽहं (स्वयं का नाम, गौत्र) मम पितु (मातुः) सुखेन प्राणोत्क्रमणार्थं श्री परमेश्वर प्रीतये इमां उत्क्रान्ति धेनुं रुद्रदैवतां (निष्क्रियद्रव्यं वा) अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय भवते संप्रददे।

ऐसा कहकर ब्राह्मण के हाथ में सङ्कल्प जल, गोपुच्छ, अथवा गोनिष्क्रय द्रव्य देवें।

ब्राह्मण कहें - **ॐ स्वस्ति।**

यह सङ्कल्प दीर्घकालीन रोगी के सुखपूर्वक प्राणोत्सर्ग के लिये भी कर सकते हैं।

॥ ५. मोक्षधेनु दान ॥

माता पिता की मोक्ष या स्वयं की भावी मोक्ष कामना हेतु यह दान करें।

सङ्कल्प - ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु अद्य (संवत्, मास, तिथ्यादि) प्रतिनिधिभूतोऽहं (स्वयं का नाम, गौत्र) मम पितु (मातुः) भगवत्प्रसादान्मोक्ष प्राप्तये इमां मोक्षधेनुं रुद्रदैवतां (तन्मूल्य द्रव्यं वा) अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय भवते संप्रददे।

ऐसा कहकर ब्राह्मण के हाथ में सङ्कल्प जल, गोपुच्छ, अथवा गोनिष्क्रय द्रव्य देवें।

मोक्षं देहि हृषिकेश मोक्षं देहि जनार्दन ।
मोक्षधेनु प्रदानेन मुकुन्द प्रीयतां मम ॥

ब्राह्मण कहें - **ॐ स्वस्ति।**

॥ इति गोदान विधानम् ॥

॥ अथ तुलादान विधानम् ॥

जातक को मारकेश दशा चल रही हो, राहु, शनि, केतु आदि में से किसी ग्रह के कारण हानि व कष्ट का समय चल रहा हो तो उसकी शान्ति के लिये तुलादान प्रयोग कराया जाता है।

आर्थिक सम्पन्नता की स्थिति में ग्रह शान्ति व यज्ञादि कर्म के साथ तुलादान कार्य का समापन किया जा सकता है।

मृत्युञ्जय जप के अन्तर्गत भी यह दान कराया जाता है। इस कर्म से मृत्युतुल्य कष्ट दूर होता है।

दान किसी एक द्रव्य का करें अथवा सप्तधान्य व अष्टधातु युक्त करें। दान हेतुं गृहीत वस्तुऐं इस प्रकार है -

तिल, स्वर्ण, चाँदी, घृत, वस्त्र, धान्य, गुड़, लवण, जौ, चावल, कंगणी, मूंग, मसूर, चना, सावा, टांगण, ताम्बा, सीसा, मृतिका पाषाण की घर में काम आने वाली वस्तु, लोहा, कांस्य, तैल इत्यादि।

गणपति, मातृका, नवग्रह पूजन करने के पश्चात् इस दान को करें।

मोक्ष कामना हेतु यह प्रयोग ग्रहण, व्यतीपात, संक्रान्ति पर्व, जन्मदिन, देवयात्रा, नदीतट, तीर्थसमीप, लक्षहोम समय में करें ।

इस प्रयोग में सङ्कल्प अरिष्ट निवारण हेतु करें। मोक्ष कामना हेतुअपने इष्ट शिव के लिये ''शिवपुरगमन'' तथा वैष्णव ''विष्णुपुरनिवास'' हेतु सङ्कल्प का उल्लेख करें।

१. अरिष्ट निवारणार्थ सङ्कल्प - ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु अद्योत्यादि ....अमुकोऽहं मम ग्रह पीड़ा अमुक दोष संक्षयार्थे तथा च सर्वारिष्ट शान्ति पूर्वक सर्वसुखवाप्तये श्रीमृत्युञ्जय देवता प्रीत्यर्थ अमुक पर्वणि दिने अमुक द्रव्येण तुलापुरुषदानमहं करिष्ये।

२. शान्ति व मोक्ष प्राप्ति हेतु सङ्कल्प - एक मन्वन्तर कालावच्छिन्न

प्रतिलोकपाल स्थान निवास पूर्वकार्क किंकिणि जालिमालि विमानाधिकरणकाप्सरः पूजा सहित शिवपुर गमन पूर्वक कल्पकोटि शतावछिन्न विष्णुपुराधिकरणक निवास कामः सुवर्ण रौप्य रत्न अमुक द्रव्येण तुलापुरुषदानमहं करिष्ये। तत्रादौ गणेशाम्बिकादि पूजनं चाहं करिष्ये।

गणेश गौरी नवग्रह का पूजन करें।

यजमान अपने प्रमाण की ऊँचाई का पलाश, खदिर, पीपल, देवदारु या शमी का स्तम्भ बनवायें। उस पर तुला को स्थिर करें।

तुला को दक्षिण उत्तर दिशा में स्थिर करें। उस पर लाल वस्त्र लपेटें। २४ छोटी प्रतिमायें बनायें। उनको तुला की डण्डी पर दक्षिण से उत्तर की ओर लगाकर बाँध देवें। विष्णु की ४ माशा की प्रतिमा बनायें, उसकी प्राण प्रतिष्ठा कर पूजा करें तथा तुला की डण्डी के मध्य में बाँध देवें।

भूमि का पूजन करें। डण्डी के दोनों ओर के शिरों पर **विष्णु एवं अनन्त** का पूजन करें।

ॐ विष्णवे नमः। ॐ अनन्ताय नमः।

पश्चात् स्तम्भ व तुला का पूजन करें।

ॐ स्तम्भसहित तुलाधिष्ठित दैवतायै नमः।

स्तम्भ सहित तुला का षोडशोपचार पूजन करें। माल्यादि अर्पण करें। दान द्रव्यों का पूजन करें -

ॐ तोलनीय द्रव्याधि देवताभ्यो नमः।

तुला दण्ड सहित २४ प्रतिमाओं का पूजन करें। यथा -

ॐ ईशानाय नमः। ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ शशिने नमः, आ०। ॐ मरुताय नमः, आ०। ॐ रुद्राय नमः, आ०। ॐ सूर्याय नमः, आ०। ॐ विश्वकर्मणे नमः, आ०। ॐ गुरवे नमः, आ०। ॐ अङ्गिरोऽग्निभ्यो नमः, आ०। ॐ प्रजापतये नमः, आ०। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, आ०। ॐ धात्रे नमः, आ०। ॐ पर्जन्य शम्भुयां नमः, आ०। ॐ पितृभ्यो नमः, आ०। ॐ सौम्याय नमः, आ०। ॐ धर्माय नमः, आ०। ॐ अमरराजाय नमः, आ०। ॐ अश्विभ्यां नमः, आ०। ॐ जलेशाय नमः, आ०। ॐ मित्रावरुणाभ्यां नमः, आ०। ॐ मरुद्गणेभ्यो नमः, आ०। ॐ धनेशाय नमः, आ०। ॐ गन्धर्वाय नमः, आ०। ॐ वरुणाय नमः, आ०। ॐ

विष्णवे नमः, आ०।

इसके पश्चात् यजमान सुवासीत होकर तुला की ३ प्रदक्षिणा कर पुष्पाञ्जलि देवें।

पूर्वाभिमुख होकर प्रार्थना करें -

ॐ नमस्ते सर्वदेवानां शक्तिस्त्वं सत्यमाश्रिता ।
साक्षिभूता जगद्धात्री निर्मिता विश्वयोनिना ॥
एकतः सर्वसत्यानि तथा नृतशतानि च ।
धर्माधर्मकृतां मध्ये स्थापिताऽसि जगद्धिते ।
त्व तुले सर्वभूतानां प्रमाणमिह कीर्तिता ।
मां तोलयन्ती संसारदुद्धरस्य नमोऽस्तु ते ॥
यौ ऽसौ तत्त्वाधिपो देवः पुरुषः पञ्चविंशकः ।
स एषोऽधिष्ठितो देवि त्वयि तस्मान्नमो नमः ॥
सिद्धिरस्तु क्रियारंभे वृद्धिरस्तु धनागमे ।
पुष्टिरस्तु शरीरे मे शान्तिरस्तु गृहे मम ॥
नमो नमस्ते गोविन्द तुलापुरुष संज्ञक ।
हरे तारयसे यस्मात्तस्माच्छान्तिं प्रयच्छ मे ॥

पुष्पाञ्जलि देकर पुनः तुला की ३ परिक्रमा करें।

यजमान बाँये हाथ में **धर्मराज की सुवर्ण** की तथा दाहिने हाथ में सुवर्ण की **सूर्य** मूर्ति ग्रहण करें, पश्चात् तुला के उत्तर के पलड़े में बैठें। दक्षिण के पलड़े में दान द्रव्य रखें।

तुला दण्ड बाराबर होने पर गोदहन समय (१५-२० मिनिट) तक बैठा रहे एवं तुलादण्ड मध्य में स्थिर विष्णु प्रतिमा की ओर देखता हुआ प्रार्थना करें -

ॐ नमस्ते सर्वभूतानां साक्षिभूते सनातनि ।
पितामहेन देवि त्वं निर्मिता परमेष्ठिना ॥
त्वया धृतं जगत्सर्व सह स्थावर जंगमम् ।
सर्वभूतात्मभूतस्थे नमस्ते विश्वधारिणि ॥

इसके बाद तुला से उतर कर तोलित वस्तुओं पर गन्ध, पुष्पाक्षत, तुलसीपत्र

चढायें। ब्राह्मणों का पूजन कर दान सङ्कल्प करें।

ॐ अद्येत्यादि ....ममक्षेम ऐश्वर्य विजयायुरारोग्यावाप्तये इमान्यात्म समसंतोलित सप्तधान्यादि द्रव्याणि स्व स्वदेवतानि अमुकामुक गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च विभज्य दातुमहमुत्सृजे।

केवल एक वस्तु का दान करें तो कहें -

मम अमुकाभीष्ट प्राप्तये अमुकद्रव्यं आत्मसमतोलितं आचार्याय अन्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यः संप्रददे।

तुलापुरुष की प्रतिष्ठा हेतु दक्षिणा देवें, भूयसी दक्ष्डिणा देवें। भगवान को नमस्कार करें -

ॐ नमो ब्रह्मण्य देवाय गोब्राह्मणहिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ।
यच्चापराह्ने मध्याह्ने सायाह्ने च तथा निशि ।
कायेन मनसा वाचाकृतं पापमजानता ॥
जानता वा हृषिकेश पुण्डरीकाक्ष माधव ।
नामत्रयोच्चारणान्मे पापं यातु सहस्त्रधा ॥
यद्बाल्ये यच्च कौमारे यौवने वार्धकेऽपि वा ।
अन्यजन्मकृतं पापमिह जन्मकृतञ्च यत् ॥
तत्सर्वं नश्यतु क्षिप्रं पुण्यं भवतु चाक्षयम् ।
देवता ऋषयो नाग गन्धर्वाश्चाप्सरोगणाः ॥
हृष्टा पुष्टा इहागत्य शान्तिं कुर्वन्तु मे सदा ।

तोली हुयी वस्तुओं को ब्राह्मणों को प्रदान करें, एवं उन्हें विदा करें।

यजमान वस्त्रों का त्याग कर अन्य वस्त्र धारण करें।

शान्ति हवन कर ब्राह्मणों को भोजन करायें।

वैदिक अनुष्ठान खण्ड

॥ अथ कालसर्प योग शान्ति अनुष्ठान ॥
(सम्पूर्ण वैदिक कर्म)

शान्ति कर्म अनुष्ठान राहु-केतु जप, नागपूजा घर के बाहर किसी मन्दिर में करायें। मृत्युञ्जय मन्त्र या अन्य पुष्टिकारक मन्त्र जप घर पर करायें।

यजमान सपत्निक बैठे। पवित्रीकरण करे, ग्रन्थिबंधन कर तिलक करें। भद्रसूक्त का पाठ करें।

॥ अथ भद्रसूक्तम् ॥

ॐ आनोभद्द्रा: क्रतवो यन्तु विश्वतोदब्धासोऽ अपरीतासऽउद्भिद:।
देवानोयथामसद्मिद्वृधे ऽअसन्नप्रायुवोरक्षितारो दिवेदिवे ।।१।।
देवानाम्भद्द्रासुमतिर्ऋजूयतान्देवाना ४ँ रातिरभिनोनिवर्त्तताम्। देवाना४ँ
सक्ख्यमुपसेदिमा व्वयन्देवानऽआयु: प्रतिरन्तुजीवसे ।।२।।
तान्नपूर्व्वयानिविदाहूमहेव्वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्ष मस्त्रिधम् ।
अर्य्यमणंवरुण ठ सोममश्श्विना सरस्वतीन: सुभगामयस्करत् ।।३।।
तन्नोव्वातोमयोभुवातु भेषजन्तमातापृथिवी तत्पिताद्द्यौ: ।
तद्ग्रावाण: सोमसुतो मयोभुवस्तदश्शिवना शृणुतन्धिष्ण्या युवम् ।।४।।
तमीशानञ्जगतस्तस्त्थुष स्प्पतिन्धियाञ्जिन्वमवसे हूमहेव्वयम् ।
पूषानो यथाव्वेदसा मसद्द्वृधे रक्षिता पायुरदब्धय: स्वसतये ।।५।।

स्वति न इन्द्रोव्वृद्धश्रवाः स्वति नः पूषाव्विश्ववेदाः ।
स्वतिनस्ताक्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वति नो बृहस्प्पतिर्द्दधातु ।।१।।
पृषदश्श्वामरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो व्विदथेषु जग्गमयः ।
अग्निर्जिह्वामनवः सूरचक्षसो व्विश्श्वेनोदेवाऽअवसागमन्निह ।।२।।
भद्द्रङ्कर्ण्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्द्रम्पश्ये—माक्षभिर्य्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टवा ठं सस्तनू—र्भिर्व्व्यशेमहि देवहितँ य्यदायुः ।।३।।
शतमिन्नु शरदोऽअन्तिदेवा यत्रा नश्च्चक्क्रा जरसन्तनूनाम् ।
पुत्त्रासो यत्रपितरो भवन्ति मानो मद्ध्यारीरिषतायुर्ग्गन्तोः ।।४।।
अदितिद्द्यौरदितिरंतरिक्ष मदितिर्म्माता सपिता सपुत्रः ।
विश्वेदेवाऽअदितिः पञ्चजनाऽअदितिर्ज्जात मदितिर्ज्जनित्त्वम्।।५।।
द्यौ शान्तिरन्तरिक्ष ठं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरौषधयः शान्तिः। व्वनस्प्पतयः शान्तिर्व्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्ब्रह्मशान्तिः सर्व्वं ठं शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।।६।। यतोयतः समीहसे ततोनोऽअभयंकुरु। शन्नःकुरुप्प्रजाब्भ्यो ऽभयन्नः पशुभ्यः ।।७।। सुशान्तिर्भवतु ।।

॥ अथ पूजन प्रकरणम् ॥

हाथ में पुष्प अक्षत पुनः लेकर गणेश जी का ध्यान करें—

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लंबोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायक ॥१॥
धुम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥२॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥३॥
अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥४॥
वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ।
अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥५॥
सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सवार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यंबके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते ॥६॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्ण चतुर्भजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥७॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलम् ।
येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनो हरिः ॥८॥
तदैव लग्नं सुदिनं तदैव विद्याबलं दैवबलं तदैव ।
ताराबलं चन्द्रबलं तदैव लक्ष्मीपतेस्तेऽङ्घ्रियुगंस्मरामि ॥९॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।

येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ।१०।।
यत्र योगेश्वरः कृष्ण यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयोभूतिर्ध्रुवा — नीतिर्मतिर्मम ।११।।
सर्वेष्वारम्भकार्येषु देवास्त्रिभुवनेश्वराः ।
देवाः दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ।१२।।
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान् ।
सरस्वतीं प्रणौम्यादौ सर्वकार्यार्थसिद्धये ।१३।।
विश्वेशं माधवं ढुण्डिं दण्डपाणिं च भैरवम् ।
वन्दे काशीं गुहां गंगां भवानीं मणिकर्णिकाम् ।१४।।

श्रीलक्ष्मीनारायणाभ्यांनमः, उमामहेश्वराभ्यांनमः शचीपुरन्दराभ्यांनमः वाणीहिरण्यगर्भाभ्यांनमः । इष्टदेवताभ्योनमः, कुलदेवताभ्यो नमः, स्थानदेवताभ्योनमः, वास्तुदेवताभ्योनमः, ग्रामदेवताभ्योनमः, मातापितृभ्यो नमः। सर्वेदेवेभ्योनमः सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। एतत्कर्म प्रधान देवताय नमः।

सङ्कल्प - ॐ विष्णु र्विष्णुः श्रीमद्भगवतौ महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्रीश्वेतवाराह कल्पे सप्तमे वैवस्वन्मन्वतरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखंडे तत्रापि परमपुनीते भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे कुमारिका नाम क्षेत्रे पुष्करारण्ये(अमुकारण्येके) गंगा यमुनयोः पश्चिम तटे नर्मदाया उत्तरे तटे, अमुक राज्ये, अमुक मंडलान्र्तगत अमुक नगरे, अमुक तीर्थसमीपे, अमुक क्षेत्रे, अमुक स्थाने, अमुक विक्रमसंवते अमुक शालिवाहन शताब्दे, अमुकायने अमुकर्तौ, अमुक अमुक राशि स्थाने स्थित ग्रहेषु, अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रो अमुक योगे अमुक करणे अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुक शर्माऽहं ममात्मनः सपरिवारस्य सभार्यास्य इह जन्मनि पूर्वजन्म कृत सकल दोष उत्पात निखिल दुरितोपशमन

द्वारा क्षेमायुरारोग्यादि संवृद्धि हेतवे, धन धान्यादि सम्मृद्धि सिद्ध्यर्थं मम जन्मकुण्डल्याम् राहु केतु जनित कालसर्पाख्य दोष शान्त्यर्थं राहु मन्त्र जप/ सर्पमन्त्र जप/ मृत्युञ्जय मन्त्र जप/ पितृकर्म/ पार्थिवशिव पूजादि/ कर्म चाहं करिष्ये तत्रादौ गणपतिं अम्बिकाूजन चाहं करिष्ये।

दिग्रक्षण - :— (बायें हाथ मे सरसों लेकर दाहिने हाथ से ढकें।)

ॐ रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीमिद महन्तं वलगमुत्किरामि यम्मेनिष्ट्यो यममात्यो निचखदेन महन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे समानो यम समानो निचखादेन महन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे सबंधु र्यम सबंधुर्निचखानेद महन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे सजातो यम सजातो निचखानोत्कृत्याङ्गिरामि।

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः, सर्वतोदिशम् ।
सर्वेषामवरोधेन पूजाकर्म समारंभे ।।
यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः ।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ।।
भूतप्रेत — पिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसा ।
स्थानादस्माद् व्रजन्त्वन्यतस्वीकारोमि भुवंत्विमाम् ।।
भूतानि राक्षसा वापि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन ।
ते सर्वेऽप्यप गच्छन्तु पूजा कर्म करोम्यहम् ।।

इसके बाद थोड़ी सरसों लेकर चारों दिशाओं मे बिखेरें फिर दसों दिशाओं में दिग्रक्षण करें।

ॐ पूर्वे रक्षतु गोविन्दः आग्नेयां गरुड़ध्वजः ।
याम्यां रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैरृत्ये ।।
वारुण्या केशवो रक्षेद्वायव्यां मधुसूदनः ।
उत्तरो श्रीधरो रक्षेदीशाने तु गदाधरः ।।
उर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेदधस्ताच्च त्रिविक्रमः ।
एवं दशदिशो रक्षेद्वासुदेवो जनार्दनः ।।

॥ अथ वरुण पूजनम् ॥

पृथ्वी पर यंत्र बनाकर अक्षत रख उस पर वरुण पात्र रखें। (यंत्र में बिन्दु त्रिकोण वृत्त उस पर वरुण चतुस्त्र बनावें।)

ॐ महीद्यौः पृथ्वी च नऽइमं यज्ञमिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः।

कलश के हाथ लगावें या अनामिका से स्पर्श करें।

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहेडमानो वरुणहवोध्युरुश ठ समान आयुः प्रमोषीः ॥
मकरस्थं पाशहस्तमम्भसां पतिमीश्वरम् ।
आवाहये प्रतीचीशं वरुणं यादसां पतिम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अस्मिन्कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवार सायुधं सशक्तिकम् आवाहयामि स्थापयामि।

स्नानं –

ॐ वरुणस्योत्तंभनमसि वरुणस्य स्कंभ सर्जनीस्थो । वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद॥

पंचामृतंप्रक्षेप –

ॐ पंचनद्यः सरस्वती मपियन्ति सस्त्रोतसः ।
सरस्वती तु पंचधासोदेशे भवत्सरित् ॥

गंगाजल डालें –

नमामि गंगे तव पादपंकजं, सुरासुरैर्वन्दित दिव्य रूपम् ।
भुक्तिं च मुक्तिं प्रददासि नित्यं, भावानुसारेण सदा नराणाम् ॥

वस्त्रम् –

सर्वभूषाधिके शुद्धे लोक लज्जा निवारणे ।
मयोपपादिते वस्त्रे गृहाण परमेश्वर ॥

उपवस्त्रम् –

ॐ सुजातो ज्योतिषा सहशर्म वरुथ मा सदत्स्वः ।
वासो अग्नेविश्वरूपः ठ संव्ययस्व विभावसो ॥

गंधम् –

गंधद्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।

अक्षताः –

अक्षताधवलाः शुभ्राः कुंकुमेन विराजिताः ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ।।

पुष्पं

पत्रं पुष्पं फलं तोयं रत्नानि विविधानि च ।
गृहाणार्घं मयादत्तं देहि मे वांछितं फलम् ।।

धूपं –

वनस्पतिरसोद्भूतो गंधाढ्यं सुमनोरहरः ।
आघ्रेयः सर्वं देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।।

दीपं –

साज्यं च वर्तिं संयुक्तं वन्हिना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापह ।।

सुगंधित द्रव्यं –

ॐ अ ठं शुनाते अ ठं शु:पृच्यताम्परुषापरु ।
गंधस्ते सोममवतु मदाय रसोऽअच्युतः ।।

नैवेद्यं –

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च ।
आहारं भक्ष्यभोज्यञ्च नैवेद्यं प्रतिगृहताम् ।।

आचमनीयम् –

शीतलं निर्मलं तोयं कर्पूरेण सुवासितम् ।
आचम्यतां सुरश्रेष्ठ मयादत्तं च भक्तितः ।।

ताम्बूलं समर्पयामि –

नागवल्लीदलं चैव पूगीफलं समन्वितम् ।
कर्पूरेण समायुक्तं ताम्बूलं प्रतिगह्यताम् ।।

पूगीफलं समर्पयामि –

समुद्रतीरसम्भूतं नानारोगनिवारणम् ।
पूगीफलं मयादत्तं गृहाण परमेश्वरम् ॥

दक्षिणा समर्पयामि –

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो ।
अनंतपुण्यफलदमतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥

विशेष आवाहन –

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धो कावेरि जलेऽस्मिसन् सानिध्यं कुरु ॥
ब्रह्माण्डोदर तीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे ।
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर ॥
पूर्वेऋग्वेदाय नमः। दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः। पश्चिमे सामवेदाय नमः उत्तरे अथर्वण वेदायनमः

अंकुश मुद्रा से सूर्य मंडल के तीर्थो का आवाहन करें, "वं" मंत्र बोलकर धेनुमुद्रा से अमृतीकरण, हुँ मंत्र से चुटकी बजाकर (चारों ओर) रक्षा करें। कलश पर बाँयां हाथ रखकर उस पर दाहिना हाथ रखकर मत्स्य मुद्रा बनावें और "वं" वरुण मंत्र का जाप करें।

पुष्पांजलिमादाय –

नमोनमस्ते स्फटिकप्रभाय, सुश्वेतहाराय सुमंगलाय ।
सुपाशहस्ताय झषासनाय, जलाधिनाथाय नमोनमस्ते ॥
पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मीनी जीवनायकम् ।
यावत्कर्म समापप्येत् तावत् त्वं स्थिरो भवेत् ॥

इसके बाद जल से पूजा सामग्री का प्रोक्षण करें –

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तान् ऊर्जेदधातन। महेरणाय चक्षसे।
योवः शिव तमोरसस्तस्य भाजयतेहनः । उशतीरिवमातरः ॥

इसके बाद भूमि पर जल छोडें।

तस्मा अरङ्गमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ् ।

(पुनः प्रोक्षण) — **आपोजन यथाचनः ।।**

दीपपूजनम् (हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करें)

ॐ अग्निर्ज्योति ज्योतिरग्नि स्वाहा। सूर्यो ज्योति ज्योतिः सूर्यः स्वाहा । अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा । सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्योज्योतिःस्वाहा।।

ॐ दिवे दिवि सदृशी रन्यमध्यकृष्ण अब्रधदप्सघ्न ओजा अहं दासा वृषभो वस्नपम् तोदव्रजे वार्तिनं शं वरं च।।

फिर दीपक को षोडशोपचार से पूजन एवं प्रार्थना करे।

भो दीप देवस्वरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत ।
यावत्पूजासमाप्ति स्यात्तावदत्र स्थिरो भव ।।

॥ गणपति पूजनम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

गजाननं भूतगणादि सेवितं
कपित्थ जम्बूफल चारुभक्षणम् ।
उमासुतं शोकविनाश कारकं
नमामि विघ्नेश्वर पाद पङ्कजम् ॥

श्री महागणाधिपतये रिद्धि सिद्धि लाभ शुभ सहिताय आवाह्यामि ।।

आवाह्यामि पूजार्थ रक्षार्थ च मम क्रतोः ।
इहागत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे ।।

(बांयी ओर की दो लकीरों में रिद्धि एवं लाभ, दाहिनी ओर की दो लकीरों में शुभ व बुद्धि का आवाहन करें। बीच की चार बिन्दुओं में अग्नि कोण में शिव, वायव्य मे दुर्गा, नैऋत्य में सूर्य, ईशान में विष्णु का आवाहन करें)

(**नोट** :— षोडशोपचार के वैदिक व पौराणिक दोनों मंत्र दिये है। सभी मंत्र पढ़ना अनिवार्य नहीं है, किसी एक मंत्र से सभी पूजा करा सकते है।)

आसनम् —

ॐ वर्स्मोऽस्मि समानानामुद्यता मिव सूर्यः ।

इमन्तमभितिष्ठामि यो माकश्चाभि दासति ॥
ॐ पुरुष एवेदः ठसर्वयद्भूतं यच्चभावव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्ने नातिरोहति ॥
विचित्र रत्न खचितं दिव्यास्तरण संयुक्तम् ।
स्वर्ण सिंहासनं चारु गृहाण गुहाग्रजः ॥
ॐ सिद्धि बुद्धि सहित श्री महागणपतये आसनं समर्पयामि॥

पाद्यम् –

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्चपुरुषः ।
पादोस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥
उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध संयुतम् ।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगह्यताम् ॥ पाद्यं स.॥

अर्घ्यम् –

ॐ त्रिपादूर्द्ध उदैत पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः ।
ततो विस्वङ व्यक्रामत् साशनानशनेऽअभि ॥
गणाध्यक्ष नमस्तेस्तु गृहाण करुणाकर ।
अर्घ्यं च फल संयुक्तं गंधमाल्याक्षतैर्युतम्॥अर्घ्यम् स. ॥

आचमनीयम् –

ॐ इमम्मे वरुण श्रुधीहवमदद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके ।
कर्पूर वासितं तोयं मंदाकिन्याः समाहृतम् ।
आचम्यतां जगन्नाथ मयादत्तं प्रयत्नतः ॥ आच. स.॥

स्नानम् –

तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूंस्ताश्चक्रे वायव्यान् आरण्यान् ग्राम्यांश्च ये ॥
पुष्कराद्यानि तीर्थानि गङ्गाद्याः सरितास्तथा ।
आवाहिता मया तुभ्यं कुरु स्नानं गणेश्वर ॥

पयः स्नानं –

ॐ पयसो रूपं यद्द्यवाद्दध्नो रूपङ्कर्कन्धूनि ।

सोमस्य रूपं वाजिन: सौम्यस्यरूप मामिक्षा ।।
ॐ पय: पृथिव्यां पय ओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधा।
पयस्वति: प्रदिश: सन्तु मह्ययम् ।।
कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् ।
तेज: पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थ प्रति गृह्यताम् ।।

फिर शुद्धोदक स्नान कराकर, पुन: आचमन करायें।

दधिस्नानम् –

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिन: ।
सुरभिर्नो मुखा करत्प्रण आयु ठ षितारिषत ।।
पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ।
दध्यानीतं मयोदेव स्नानर्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

पुन: शुद्धोदक स्नान एवं आचमन

घृत स्नान –

ॐ घृतेनांजन्त्सम्पथो देवयानान्प्रजान्वाज्यप्येतुदेवान ।
अनुत्वासप्ते प्रदिश: सचन्ता ठ स्वधा मस्मै यजमानाय धेहि।।१।।
ॐ घृतं घृतपावन: पिबतवसां वसापावान: पिबतांतरिक्ष हविरसि
स्वाहा: ।। दिश: प्रदिश आदिशो विदिशउद्दिशो दिग्भ्य: स्वाहा:।।२।।
नवनीतं समुत्पन्नं सर्व संतोषकारक ।
घृतं तुभ्यं प्रदस्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।३।।

(पुन: शुद्धोदक स्नान एवं आचमन करायें)

मधुस्नानं –

ॐ स्वाहा मरुद्भि: परिश्रीयस्व दिव
स ठ स्पृशस्पाहि मधु मधु मधु ।।१।।
ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिंधव: ।
माध्वीर्न: संत्वोषधी: मधुनक्त मुतोष सो मधु
मत्पार्थिव ठ रज: मधु द्यौरस्तुन: पिता ।।२।।

ॐ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ २ अस्तु सूर्यः ।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥३॥
पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुर मधु ।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥४॥

(पुनः शुद्धोदक स्नान एवं आचमन करायें)

शर्करा स्नानं –

ॐ अपां ठ रसमुद्दय सः ठ सूर्येसन्तः ठ समाहितम् ।
अपां ठ रसस्य यो रसस्तं वो गृहणाम्युत्तम मुपयाम ।
गृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृहाणम्येषते ।
योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टत्तमम् ॥१॥
इक्षुसारसमुद्भूतं शर्करा पुष्टिदा शुभा ।
मलापहारिका दिव्या स्नानर्थं प्रतिगृहताम् ॥२॥

(शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि । शद्धोदक स्नानान्ते आचनीयं सम.)

गंधोदक स्नानः –

ॐ गंधर्वस्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै ।
यजमानस्य – परिधि – रस्यग्निरिड ऽ ईडितः ॥१॥
चम्पकाशोक – वकुलं – मालती मोगरादिभि ।
वासितं स्निग्धता हेतु चारु प्रतिगृह्यताम् ॥२॥

(गंधोदक स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि । शुद्धो. स्ना.आचनीयं सम.)

कुशोदक स्नानम् –

ॐ शरासः कुशरासो दर्भासः सूर्याउत ।
ओजाअदृष्टा वैरिणा सर्वेसाकं न्यलिप्सत ॥

उद्वर्तन स्नानम् –

ॐ अ ठ शुनाते अ ठ शुः पृच्यतां पुरुषा परुः ।
गंधस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽ अच्युतः ॥

पुनः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि । शद्धोदक स्नान्ते आचनीयं सम.

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः ।
श्येतः श्येताक्षो रुणस्ते रुद्राय पशुपतये
कर्णायामा ऽ अवलिप्ता रौद्रा नभो रूपाः पार्जन्याः ॥

अभिषेक –

गणपति अथर्वशीर्ष से करायें या गणपतिध्यान मंत्रो से अथवा गणपति द्वादश मंत्रावलि से करायें।

शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि शुद्धोदक स्नान्ते आचनीयं सम.

वस्त्रम् (उपवस्त्र) –

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उश्रेयान् भवति जायमानः।
तं धीरा सः कवयऽउन्नयंति स्वाध्यो मनसा देवयंतः ।।१ ।।

यज्ञोपवीतं –

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ।
उपवीत मयादत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

(ॐ भू भुंवः स्वः सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणाधिपतये यज्ञो. स.)

देव देव नमस्तुभ्यं त्रायस्व भवसागरात् ।
ब्रह्मसूत्र मयादत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

यज्ञोपवितान्ते आचमनीयम् समर्पयामि

उपवस्त्र (पट्टवस्त्र) –

वसो पवित्रमसि शतधारं वसो पवित्रमसि
सहस्त्रधारं देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः
पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्ष्वः ।

गंधम् –

ॐ त्वां गंधर्वा अखनं स्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः ।
त्वामोषधे सोमोराजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत ।।१ ।।

श्रीखण्डं चंदनं दिव्यं गंधाढ्य सुमनोरहम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चंदनं प्रतिगृह्यताम् ॥२॥

अक्षताः –

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत ।अस्तोषत
स्वभानवो विप्रान विष्ठयामती योजान्विद्रते हरी ।।१॥
अक्षताधवलाशुभ्राः कुंकुमेन विराजिताः ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥२॥

सिन्दूर –

ॐ मध्याह्न चण्डार्क मरीचि सन्निभम् ।
विघ्नेश्वर श्रीहनुमद बहुप्रियम् । भो सिन्धु पुत्र्या
सह नंदनात्मज सिन्दूरचूर्णं परिगृह्यतां विभो ॥

पुष्प –

ॐ औषधीः प्रतिमोद्ध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।
अश्वा इव साजित्वरी वींरुधः पारयिष्णवः ॥
पत्रं पुष्पं फलं तोयं रत्नानि विविधानि च ।
गृहाणार्घं मयादत्तं देहि मे वांछित फलम् ॥

सुगन्धितद्रव्य –

ॐ अ ठं शुनाते अ ठं शुःपृच्यताम्परुषापरुः ।
गंधस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः ॥
ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिम् पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

(पुनः आचमनम् समर्पामि)

अबीर गुलाल –

ॐ अहिरिव भौगैः पर्य्येति बाहुञ्ज्यायाहेतिं परिबाधमानः ।
हस्तघ्नो विश्वावयुनानि विद्धान् पुमान् पुमा ठं संपरिपातु विश्वतः॥

धूपं –

ॐ अश्वस्यत्वा वृष्णः शक्ना धूपयामि देवयजने पृथिव्याः।
मखयत्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ।।१।।
ॐ धूरसि धूर्वधूर्वन्तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्वयं वयंधूर्वामः ।
देवानामसि वह्नितम ठंसस्नितमं प्रप्रित मङ्गुष्टतमं देवहूतमम्।।२।।
वनस्पति – रसोद्भूतो गंधाढ्यः सुमनोहरः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।। धूपं घ्रापयामि ।।

दीपं –

ॐ दिवे दिवे सदृशी रन्यमध्यकृष्णः अब्रध दप्सनघ्न ओजा ।
अहं दासा वृषभो वस्नपम् तोदव्रजे वार्तिनं शं वरं च ।।

दूर्वांकुर समर्पण –

ॐ काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ।।१।।
दूर्वे ह्यमृत संपन्ने शतमूले शतांकुरे ।
शत – पातक – संहन्त्री शतमायुष्य वार्धिनी ।।२।।
विष्णवादि सर्वदेवानां दूर्वे त्वं प्रीतिदासदा ।
क्षीरसागरसम्भूते वंशवृद्धिकरी भव ।।३।।

नेवैद्यम् –

ॐ अन्नपते ऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः ।
प्रप्रदातारं तारिष ऊर्जनो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ।।१।।
ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ठं शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २ अकल्पयन् ।।२।।
अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः समन्तिवतम् ।
नैवेद्यं गृह्यता देवः भक्ति मे ह्यचलां कुरु ।।३।। नै. स.

आचमनीयम्-

ॐ इममे वरूण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके ।।

शीतलं निर्मल तोयं कर्पूरेण सुवासितम् ।
आचम्यतां सुर श्रेष्ठ मयादत्तं च भक्तितः।। आ. स.

(पुनः नैवेद्यं पुनराचमनीयं समर्पयामि नमः)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ मतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मइध्मः शरद्धविः ।।

करोद्वर्तनम्—

करोद्वर्तनकं देवः सुगन्धैः परिवासितै ।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च पराङ्गतिम् ।।

(कराद्वर्तनार्थे सुगंधि जलम् समर्पयामि)

हस्त प्रक्षालनम् –

गंधतोयं समानीतं सुवर्ण कलशे स्थितम् ।
हस्तप्रक्षालनार्थाय पानीयं ते निवेदये ।।

ऋतु फलम् –

द्राक्षाखर्जूर कदली पनसाम्र कपित्थकम् ।
नारिकेलेक्षु जंबुवादि फलानि प्रतिगृह्यताम् ।।

मुखवासार्थे ताम्बुलं –

ॐ उतस्मादस्यद् द्रव तस्तुरण्यतः पर्णन्नवेरनुवाति प्रगर्द्धिनः ।
श्येनस्येवद्ध्रजतोऽअङ्कसंपरि दधिक्राव्णः सहोर्जातरित्रः स्वाहा ।।

पूगीफलम् –

ॐ याः फलिनिर्या अफला अपुष्पा याश्च्य पुष्पिणीः ।
बृहस्पति प्रसूतास्नो मुञ्चंत्व ठं हसः ।।२।।

दक्षिणा –

ॐ यद्दत्तं यत्परादानं यत्पूर्तं याश्च दक्षिणाः ।
तदग्नि वैंश्वकर्मणः स्वर्द्देवेषु नोदधत् ।।१।।
ॐ हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हिरण्यबीज विभवसो ।
अनंतपुण्यः फलदः सुख शांतिं प्रयच्छ मे ।।२।।

ॐ हिरण्य गर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकआसीत्।
सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमां कस्मैदेवाय हविषा विधेम ।।३।।

आरती –

ॐ आरात्रि पार्थिव ठं रजः पितुरप्रायिधामभिः ।
दिवः सदा ठं सिबृहतीवितिष्ठ सऽआत्वेषंवर्त्ततेतमः ।।१।।
ॐ इदर्ठहविः प्रजननमे अस्तु दशवीर ठंसर्वगणठंस्वस्तये।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्य भयसनि ।
अग्निः प्रजां बहुलां मेकरोत्वन्न पयोरेतो अस्मासुधत्तः ।।२।।
चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्नि स्तथैव च ।
त्वमेव सर्व ज्योतिषि आर्तिक्यं प्रतिगृहताम् ।।३।।

अर्घम् –

पान पर गंध अक्षत पुष्प जल दक्षिणा ले कर अर्घ देवें ।

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक ।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात ।।१।।
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुरग्रज प्रभो ।
वरद त्वं वरं देहि वांछित वांछितर्थदः ।।२।।

पुष्पांजलिम् –

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
नागाननाय श्रुति यज्ञ विभूषिताय
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ।।१।।
भक्तार्तिनाशन पराय गणेश्वराय
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय ।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय
भक्त पसन्न वरदाय नमो नमस्ते ।।२।।

॥ गौर्यादि मातृकाणां पूजनम् ॥

अग्निकोण में (उत्तराभिमुख पूजन करें तो स्वदक्षिण याने ईशानकोण में) रक्त वस्त्र पर गोधूमाक्षत पुञ्ज से षोडश कोष्ठक बनायें। फिर गणेश गौर्यादि का आवाहन करें।

आवाहन क्रम —अगर मध्य के चार कोष्ठक को एक भाग माने तो शेष १२ खाने उनके चारों ओर बन जातें है।

मध्य के चार कोष्ठक में वायव्य में गणेश, नैर्ऋत्य में गौरी, अग्नि कोण में पद्मा ईशानमें कुलदेवी का आवाहन करें।

स्वधा	मातरः	लोकमातरः	स्वाहा
देवसेना	कुलदेवी	पद्मा	सावित्री
जया	गणेश	गौरी	विजया
धृतिः पुष्टि	मेधा	शची	तुष्टि

यथा –

कुलदेवीं गणेशं च गौरीं पद्मासमन्विताम् ।
पूजयेन्मध्यमे कोष्ठे शेषा बाह्ये हि कोष्ठके ॥
गणेशं वायुकोणे च मध्यमे च कुलेश्वरीम् ।
गौरीं च नैर्ऋत्ये पूज्या पद्मा पावक कोणके ॥
शची च पश्चिमे स्थाप्या मेधा चैवद्वितीयके ।
सावित्री दक्षिणे पूज्या विजया च द्वितीयके ॥
जया च उत्तरे स्थाप्या देवसेना द्वितीयके ।
स्वाहाऽऽग्नेयां समभ्यर्च्या ईशानां च स्वधा तथा ॥
पूर्वतु मातरः पूज्यास्वदग्रे लोकमातरः ।
धृतिः पुष्टिर्वायुकोणे तुष्टिं च नैर्ऋते तथा ॥
एवं हि मातरः स्थाप्याः स्व स्वस्थाने पृथक् पृथक् ॥

गणपति आवाहन – (मध्य चतुर्कोष्ठे वायव्य कोणे)

ॐ गणानान्त्वाः मंत्रेण । ॐ गणेशाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

भो गणपते इहागच्छ इहतिष्ठ।

गौरी (मध्यचतुर्कोष्ठे नैर्ऋत्यकोणे) –

हिमाद्रितनयां देवीं वरदां भैरव प्रियाम् ।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम् ।।
ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमीद सदन्मातरं पुरः ।
पितरञ्च प्रयन्त्स्वः ।।१।। गौर्यै नमः। गौरीम् आ. स्था।

पद्मा (मध्य चतुर्ष्कोष्ठे अग्निकोणे) –

ॐ हिरण्य रूपा ऽउषसो विरोक ऽउभाविंद्रा ऽउदिथः
सूर्यश्च । आरोहतं वरुण मित्र मित्रगर्ततशचक्षाथा
मदितिं दितिं च मित्रोसि वरुणोऽसि ।।
सुवर्णाढ्यां पद्महस्तां विष्णोर्वक्षस्थले स्थिताम् ।
त्रैलोक्ये पूजितां देवीं पद्मामावाहयाम्यहम् ।।२।।

शची (पश्चिमे) –

ॐ कदाचनस्तरीरसिनेन्द्र सश्चसिदाशुषे ।
उपोपेन्नुमघवन्भूयऽइन्नुतेदानं देवस्य पृच्यतआदित्त्येभ्यस्त्वा ।।
उत्पलाक्षीं सुवदनां शचीं (शशि) कुंडल धारिणीम् ।
देवराज प्रियां भद्रां शचीमावाहयाम्यहम् ।।३।।

मेधा (पश्चिम वायव्यतः द्वितीय कोष्ठे)

मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः ।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधांधाताददातु मे स्वाहा ।।
वैवस्वत प्रफुल्लाभाममलेंदीवर स्थिताम् (सुगंधि पद्मवासिताम्)
बुद्धि प्रसादिनीं सौम्यां मेधामावाहयाम्यहम् ।।४।।

सावित्री : (दक्षिणे – अग्निकोण के नीचे द्वितीय कोष्ठक) –

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियोयोनः प्रचोदयात् ।।
जगत्स्रष्टीं जगद्धात्रीं पत्निं (पक्षि) रूपेण संस्थिताम् ।

ओंकाराक्षीं भगवतीं सावित्री माह्वायाम्यहम् ।।५।।

विजया (दक्षिणे – नैऋत्य से दूसरा कोष्ठक पूर्व की ओर) –

ॐ विज्यंधनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ ३ उत ।
अनेशन्नस्य या ऽइषव ऽआभुरस्य निषङ्गधिः ।।
दैत्यपक्ष – क्षयकरीं देवानां चाभयप्रदाम् ।
गीर्वाण वंदितां देवीं विजयामावाहयाम्यहम् ।।६।।

जया (उत्तरे वायव्य कोण से पूर्व की ओर द्वितीय कोष्ठक) –

ॐ याते रुद्र शिवातनूर घोरा पापकाशिनी
तयानस्तन्वा शंतमया गिरिशंताभि चाकशीहि ।।
विश्वभद्रां जयां रक्तां रक्तांबर धरांसदा (विष्णु रुद्रार्कशक्रादि
गीर्वाणेषुव्यस्थिताम्)त्रैलोक्यवंदितां देवींजयामावाहयाम्यहम्।।७।।

देवसेना (उत्तरे – वायव्यकोण से पूर्व की ओर तृतीय कोष्ठक)–

ॐ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवाना ठरातिरभिनोनिवर्त्तताम् ।
देवानां ठसख्य मुपसेदिमा व्वयन्देवानऽ आयुः प्रतिरंतु जीवसे ।।
मयूरवाहनारूढां शक्तिखड्ग धनुर्द्धराम् (धनुर्धराम्)
आवाहयेद्देवसेनां तारकासुरमर्दिनीम् ।।८।।

स्वधा (ईशाने) –

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधाः नमः। पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः
स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः ।
अक्षन्नपितरोऽमीमदंत पितरोतीतृपंतपितरः पितरः शुन्धध्वम् ।।
कव्यमादाय सततं पितृभ्यो या प्रयच्छति
पितृलोकार्चितां देवीं स्वधामावहयाम्याहम् ।।९।।

स्वाहा (अग्निकोणे) –

ॐ स्वाहा यज्ञंमनसः स्वाहोरोरंतरिक्षात्स्वाहा ।
द्यावा पृथिवीभ्या स्वाहा वातादार भे स्वाहा ।।
हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति ।

वह्निप्रिया तु स्वाहा समगच्छतु मे ऽध्वरे ।।
(स्वर्गे लोचते स्वाहे समागच्छममाध्वरे) ।।१०।।

मातरः (पूर्वे, ईशान से द्वितीय कोष्ठक अग्निकोण की ओर)–

ॐ आपोऽअस्मान्मातरः शुंधयंतु घृतेनो घृतप्वः पुनंतु ।
विश्वर्ठ हिरप्रम्प्रवहंति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरापूतऽएमि ।
दीक्षातपसो—स्तनूरसितान्त्वाशिवा ठंशग्माम्परि दधे भद्रंवर्णं ष्यन्।।
भूतग्राममिमं कृस्त्नं यया उत्पदितं पुरा (मया प्रीत्यादितं पुरा) ।
त्रैलोक्य पूजितां देवीं मातरं आवाहयाम्यहम् ।।११।।

लोक मातरः (मध्य चतुर्कोष्ठे – ईशाने)

ॐ स्वाहा यज्ञं वरुणः सुक्षत्रो भेषजं करत् ।
अतिच्छंदा ऽइन्द्रियं वृहद्वृहष भोगौर्नवयोदधुः ।।
ॐ भवतन्नः समनसौ सचेत सावरे पसौ ।
मा यज्ञ ठं हि ठं सिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौशिवौभवतमद्यनः।।
मावाहयेल्लोकमातरं जगत्पालन संस्थिताम् ।
शक्राद्यैर्वंदिता देवीं स्तोत्रपाठाभिचारकै(देवीं तत्रैत्यैश्च सुरैरपि)।।१२।।

धृति, पुष्टि (दोनों ही वायव्य कोण में) –

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्जाति रंतरमृतं प्रजासु ।
यस्मान्नऽऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ।।
नमस्तुष्टिकरीं (मनस्तुष्टिकरीं) देवीं लोकानुग्रह कारिणीम् ।
सर्वकाम समृद्ध्यर्थं धृतिमावाहयाम्यहम् ।।१३।।

पुष्टि –

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वंदमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहेडमानो वरुण हवोध्युरुश ठं समान ऽआयुः प्रमोषीः ।।

ॐ रयिश्चमे रायश्च मे पुष्टं च मे पुष्टिश्च मे विभुच मे प्रभुच मे। पूर्णं च मे पूर्णतरंच मे कुयवंच मे ऽक्षितं च मे ऽन्नं च मे ऽक्षुच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।। प्रणतानां (प्रणता या) हि लोकेऽस्मिन् पुत्र पुष्टि

सुख प्रदां। भक्तेभ्यश्चापि वरदां विद्युज्ज्वालार्क कुण्डला। (पुष्टिमावहयाम्यहम्) ।१४।।

तुष्टि (नैऋत्यकोणे बाह्य कोष्ठे) –

ॐ बृहस्पते परीदिया रथेन रक्षोहा मित्राँ २ अपबाधमानः ।
प्रभजन्त्सेनाः प्रमृणो युधाजयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम् ।।
त्वष्टा तुरीपोऽअद्भुत ऽइन्द्राणी (ग्नी) पुष्टि वर्द्धना ।
द्विपदाच्छंद इन्द्रिय मुक्षागौर्नवयोदधुः ।।
आवाहयामि तां तुष्टिं सर्वलोकेषु पूर्णताम्। संतोष भवनादीनां
रक्षणाायाध्वरे (रक्षणीयेऽध्वरे) मम ।१५।।

आत्मकुलदेवताः (मध्यकोष्ठे ईशान कोणे) –

प्राणाय स्वाहा, ऽपानाय स्वाहा, व्यानायस्वाहा चक्षुषेस्वाहा, श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा ।। अम्बे ऽ अम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन । ससस्त्य श्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम् ।।

त्वमात्मादिहितां (त्वमात्मा देहिना) देवी सर्वकाम फलप्रदाम् । वंश रक्षा करी गोत्री (कर्त्री) देवीमावाहयाम्ययहम् (आगच्छागच्छ मेऽध्वरे)।।

(पुनः अक्षत पुष्प हाथ में लेकर) –

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया । देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ।। धृति पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवताः । गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्चषौडश ।।

ततस्तासांप्रतिष्ठां कुर्यात् –

ॐ तदस्तु मित्रा वरुणा तदग्नेशंयोरस्मभ्यमिदमस्तु शस्तम् ।
अशी महिगाधमुत प्रतिष्ठान्नमो दिवे वृहतेसादनाय ।१।।
मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पति र्यज्ञमिमंतनोत्वरिष्टं यज्ञ ठं
समिमंदधातु । विश्वेदेवा स ऽइहमादयंतामों ३ प्रतिष्ठ ।।२।।
एषव प्रतिष्ठो नामयज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यन्ते

सर्वमेव प्रतिष्ठितंभवति ।।३।।

साधारणतः नवदुर्गा, सप्तमातरः, अन्य मातृकाओं का पूजन इस मंडल पर करा देते हैं। या प्रधान मंडल पर कराते हैं –

यथा – ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा । वाराही चतथेंद्राणी चामुण्डा सप्तमातरः।। प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी। तृतीयं चन्द्रघंटेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ।। पंचमं स्कंदमातेति षष्ठं कात्यायनीति च। सप्तमं कालरात्रिति महागौरीति चाष्टमम्।। नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः।

ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गाक्षमा शिवाधात्री स्वधा स्वाहा नमोस्तुते ।।

(अगर योगिनी क्षेत्रपाल का अन्य मंडल नहीं बनाया हो तो इसी मंडल पर आवाहन कर देना चाहिये।)

सर्वेषां मातृकेभ्यो मंडल दैव्यानां गंधादिभिः संपूज्य। पुष्पाञ्जली मादाय एवं सनारीकेल दक्षिणा सहिताय समर्पण कुर्यात् ।

पत्रं पुष्पं फलं तोयं रत्नानि विविधानि च ।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं देहि मे वांछित फलम् ।।
रूपं देहि जयं देहि भाग्यं भगवति देहि मे ।
पुत्रान देहि, धनं देहि सर्वान् कामान् प्रयच्छ मे ।।

॥ अथ सप्तघृत मातृका पूजनम् ॥

किसी पट्ट, शिला या दीवार पर सिन्दूर से बिंदिया नीचे से ऊपर की ओर ७,६,५,४,३,२,१ संख्या में बनावें उनके ऊपर १,१,१ क्रम से स्तूप बनावें (स्तूप में चार बिन्दु अगल—बगल में ३,३) बनावें इन मातृकाओं की बांयी ओर गणेश, गौत्र (नीचे ३ फिर २,१,१) तथा दाहिनी ओर कालाभैरव मन्दिर या नीचे ३ फिर २,१,१ आकृति बनावें। कुल ५२ बिन्दु होते है।

घृत देने का मंत्र –

३ॐ वसो पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्र धारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधरेण सुप्वा काम धुक्ष्वः ॥

तत्पश्चात् सातों बिन्दुओं को गुड से एकीकृत करें, कुंकुमादि से अलंकारित करें। हाथ में अक्षत लेकर एक—एक देवी की प्रतिष्ठा करें।

कीर्ति लक्ष्मी धृतिर्मेधा सिद्धिः प्रज्ञा सरस्वती । मांगल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैताः घृतमारः। अन्यच्चः श्रीश्च लक्ष्मीघृति मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती। मांगल्येषु प्रयूज्यन्ते.....। मतांतरे – श्रीश्च लक्ष्मी धृतिर्मेघा पुष्टि श्रद्धा सरस्वती। मांगल्येषु.....।

श्रीप्रतिष्ठापनम् –

३ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यसीमहि पशूना ठं रूपमन्नस्य रसोयशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा ।१॥

("मयि" पदभेदेन – रुपमन्नस्य मयि श्री श्रयतांयशः)

३ॐ भूर्भुवः स्व श्रियै नमः श्रियम् आवाह्यामि स्थापयामि।

लक्ष्मीप्रतिष्ठापनम् –

३ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्क्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौव्यात्तम इष्णन्निषाणा मुम्मऽइषण सर्वलोकम्मऽइषाण॥२॥

३ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्मै नमः । लक्ष्मीम् आवाह्यामि स्थापयामि।

धृतिप्रतिष्ठापनम् –

३ॐ भद्रंकर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रं पश्यमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा ठं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥३॥

ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यैंनमः। धृतिमावहयामि स्थपयामि।

मेधाप्रतिष्ठापनम् –

ॐ मेधाम्मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापति ।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधान्धाता ददातु मे स्वाहा ।।४।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः । मेधाम् आवाह्यामि स्थापयामि ।

स्वाहाप्रतिष्ठापनम् –

ॐ प्राणय स्वाहाः ऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे
स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा मनसे स्वाहा ।।५।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहाये नमः । स्वाहाम् आवाह्यामि स्थापयामि।

प्रज्ञाप्रतिष्ठापनम् –

ॐ आयंगौ पृश्निर क्रमीद सदन्मान्तरम्पुरः। पितरंचप्रयन्तस्वः ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रज्ञायै नमः प्रज्ञाम् आवाह्यामि स्थापयामि ।।५।।

सरस्वतीप्रतिष्ठापनम् –

ॐ पावमानः सरस्वतीवाजेमि र्वाजनीवति। यज्ञवष्टुधियावसुः ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सरस्वतै नमः । सरस्वतीम् आवाह्यामि स्थापयामि।

सामूहिक रूप से चावल चढाते हुये **निम्न मंत्रों से प्रतिष्ठा करें।** –

ॐ मनोजुतिर्जुषतामाज्यस्येती मनसावाऽइद ठ सर्वमाप्त तन्मनसेवैतत्सर्वमाप्नोति बृहस्पतिर्यामिमन्तो त्वरिष्टं यज्ञ ठ समीमंद घातृवीतीयद्विवृढंऽतत्संदधाती विश्वेदेवा सऽइहमादयंता मिति सर्वं वैविश्वेदेवाः सर्वेणैवै तत्संदधाति सयदि कामेयत्ब्रुयात्ब्रुयुः प्रतिष्ठेति। एषवै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्रैतेने यज्ञेनयजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठतं भवति।।

गणेश गौत्र प्रतिष्ठापनम् –

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेश गौत्र देवेभ्यो आवाह्यामि स्थापयामि।

भैरव प्रतिष्ठापनम् – वसोर्द्धारा के दाहिनी ओर **बं बटुकाय नमः। काल भैरवाय नमः। गौर भैरवाय नमः।** से प्रतिष्ठापन करें।

तत्पश्चात् सर्वेभ्यो देवेभ्यो गंधादिभिः पूजयेत्।

॥ अथ नान्दीश्राद्ध विधानम् ॥

नान्दीश्राद्ध का प्रयोग गर्भाधानादि कर्म संस्कारों में, गृहप्रवेश, तीर्थयात्रा, प्रतिष्ठाकर्म, जलाशयप्रतिष्ठा, सन्यासदीक्षा, वृषोत्सर्ग, श्रावणकर्म, नागबलि, इत्यादि में किया जाता है। विवाहादि समय व अन्य पर्व दिवसों में नान्दीश्राद्ध करने पर अशौचादि दोष नहीं लगता है। इससे शुद्धि रहती है। आश्विन पूर्णिमा तथा मार्गशीर्ष पूर्णिमा में शुद्धि हेतु पाक संस्था द्वारा नान्दीश्राद्ध कराया जाता है।

नान्दीश्राद्ध कर्म के कर्माङ्ग पूजन में **गौर्यादि मातृकाओं** का पूजन होता है।

इस कर्म से पितृ प्रसन्न हाते हं, वंशवृद्धि का आशीर्वाद देते हैं।

नान्दीश्राद्ध में कुछ बातें ध्यान रखने योग्य है –

१. इस श्राद्ध से स्वधा की जगह **"स्वाहा"** कर उच्चारण करें।

२. मूल रहित दर्भा ग्रहण करें।

३. सारे कर्म सव्य (दक्षिण यज्ञोपवित) से करना चाहिये।

४. नान्दी श्राद्ध पूजन समय यजमान अकेला पूजन करें पत्नि को दूर बिठायें।

५. ब्राह्मण, कुशा दर्भ दूर्वा प्रत्येक वस्तु युग्म हो।

६. इस कार्य मे यजमान उत्तराभिममुख हो तो ब्राह्मण पूर्वाभिमुख होवे। यजमान पूर्वाभिमुख हो तो ब्राह्मण उत्तराभिमुख बैठै।

७. इस श्राद्ध में पिण्डों के विषय में दही, मधु, दाख, आँवला, बेर, (मतांतर मे आम्रफल) काम में लिये जाते है।

८. लाल पुष्प माला काम में नहीं आती, मालती, कमल, केतकी, मल्लिका ग्राह्य है।

९. तिल व पितृतीर्थ जल काम में नहीं लिया जाता है। अपसव्य नहीं होता।

१०. श्राद्ध का अंगरूप तर्पण भी नहीं होता है।

११. नांदीश्राद्ध में पिता, दादा और षडदादा (प्रपितामह), माता, नाना, पडनाना, षडनाना (वृद्धप्रमातामह), का स्मरण कर उन्हें श्रद्धांजलि दी जाती है, जो जीवित हो उनका नाम नहीं बोलते है।

१२. कर्पूर से आरती नहीं होती है।

१३. सर्वत्र उच्चारण विषय में नाम व गौत्र का उच्चारण नहीं होता, गौत्र की जगह **"काश्यप गौत्र"** नाम की जगह **"नारायण"** नाम का उच्चांरण किया जाता है।

१४. प्रथमा विभक्ति को लगाकर अन्त में संकल्प किया जाता है।

१५. वर का द्वितीय विवाह होतो नांदिश्राद्ध वर स्वयं करे पिता नहीं करे।

१६. अष्टकादिश्राद्ध में नांदिश्राद्ध नहीं होता है।

१७. विधवा नांदीश्राद्ध संकल्प करे कर्म अन्य से या ब्राह्मणों से कराये।

१८. गौरी एवं मातृका पूजन का नांदीश्राद्ध अंग समझना इसके बिना मातृका पूजन यथेष्ट नहीं

१९. वोपदेव, कालदर्श, श्राद्ध कौमुदी, मत्स्यपुराण के अनुसार पुन्सवन, सीमान्त, व्रतनामकरण, अन्नप्राशन, चौल, उपनयन, आधान, अग्न्याधान, विवाह, यज्ञ, पुत्रजन्म, गृहप्रवेश, प्रतिष्ठा, पुत्र का प्रथममुख दर्शन, आश्रम स्वीकार, राज्याभिषेक, स्त्री के प्रथम रजोदर्शन पर, वृक्ष, जल एवं देवप्रतिष्ठा में तीर्थ यात्रा और वृषोत्सर्ग में नान्दीश्राद्ध वृद्धिश्राद्ध करना कहा है, परन्तु कामधेनु में कहा है कि जलाशय व माता पिता के वृषोत्सर्ग में नान्दीश्राद्ध नहीं करना चाहिये।

।। अथ नान्दीश्राद्ध प्रयोग ।।

यदि यजमान पूर्वाभिमुख हो तो दक्षिण जानु दबाकर पात्र दूने या पात्र में उत्तरमुख वाले दोब के युग्म चट स्थापित करें। वैश्वदेव के स्थान पर २ चटे व २ सुपारी। २ सुपारीयाँ व चटे २ सपत्निक पितृपार्वण के स्थान पर। २ सुपारीयाँ व २ चटे सपत्निक मातामह पार्वण के स्थान पर रखें।

क्षणदानं कुर्यात् –

(१) यव हाथ में लेकर निम्न मंत्र से विश्वेदेवा पर छोड़ें।

ॐ सत्यवसु संज्ञकानां विश्वेषां देवानां नान्दीमुखानाम् अद्य कर्तव्य प्रधान संकल्पोक्तकर्माङ्ग सांकल्पिक नान्दी श्राद्धे भवद्भ्यां क्षणः क्रियताम्।

यजमान ब्राह्मणों से कहें – **प्राप्नुतां भवन्तौ।**

ब्राह्मण प्रतिवचन कहें – **प्राप्नवाव**

(२) पुनः यव हाथ में लेवें – (गौत्राः)

गोत्राणां नान्दीमुखानां पितृ पितामह प्रपितामह प्रपितामहनां सपत्निकानाम् अद्य कर्तव्य प्रधान संकल्पोक्त कर्मांगसांकल्पित नान्दीश्राद्धे भवद्भ्यां क्षणः क्रियताम् (ऐसा कहकर यव छोडें)

यजमान ब्राह्मणों से कहें – **प्राप्नुतां भवन्तौ।**

ब्राह्मण प्रतिवचन कहें – **प्राप्नवाव**

(३) पुनः यव हाथ में लेवें –

द्वितीय गोत्राः (नाना, पडनाना, वृद्धनाना)

द्वितीय गोत्राणां नान्दीमुखानां मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानां सपत्निकानाम् अद्य कर्तव्य प्रधान संकल्पोक्त कर्मांग सांकल्पिक नान्दीश्राद्धे भवद्भ्यांक्षणः क्रियताम् ।

ऐसा कहकर यव छोडें ।

यजमान ब्राह्मणों से कहें – **प्राप्नुतां भवन्तौ।**

ब्राह्मण प्रतिवचन कहें – **प्राप्नवाव**

पाद्यदानम् –

एक तामड़ी या सुराई में दही, रोली, जौ, दूध, मधु व जल इकट्ठा करें तथा जल को दर्भा से हिलाते रहें, फिर जब **स्वाहानामयं च वृद्धिः** बोलें तब दूर्वांकुर या दर्भा के मोटक से जल चटों पर छोड़ते जायें।

(१) ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवा नान्दीमुखाः ॐ भर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं स्वाहानामयं च वृद्धिः।

गोत्राः –

(२) ॐ मातृ पितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादवनेजनं पादप्रक्षालनं स्वाहानामयं च वृद्धि । ॐ पितृपितामह प्रपितामहाः नांदीमुखा ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादवनेजनं पादप्रक्षालनं स्वाहानामयं च वृद्धि ।

द्वितीय गोत्राः –

(३) ॐ मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नांदीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादवनेजनं पादप्रक्षालनं स्वाहानामयं च वृद्धि ॥

रक्षाविधानम् – पहले पाद्य पात्र को हटालें तथा दूसरे कर्मपात्र की स्थापना करें। संकल्प इसी कर्म पात्र के जल से करें। कर्मपात्र में दूर्वा कुशादि धरें और **"शन्नोदेवी"** मंत्र से जल भरें। **"स्वस्ति न इन्द्रो"** इस मंत्र से यवाक्षत द्वारा रक्षा विधान करे।

यवप्रक्षेप –

यवोसि यव यास्मद् द्वेषोयव याराती‌दिवे त्वान्तरिक्षायत्वा पृथिव्यै त्वाशुन्धंतॉंलोका: पितृसदना: पितृसदनमसि ।

संकल्प –

अद्य पूर्वोच्चारित शुभपुण्यतिथौ साङ्कल्पितविधिना नान्दीश्राद्धंकरिष्ये।

आसन दानम् –

(१) ॐ सत्य वसुसंज्ञका: विश्वेदेवा: नान्दीमुखा: ॐ भर्भुव: स्व: इमे आसने वो नमोनम: नान्दी श्राद्धे क्षणौ क्रियेतां।

पूर्व की ओर मुंह करके यजमान कहें **प्राप्नुवन्तोभवत:**। ब्राह्मण कहें **प्राप्नुवाम:** ऐसा कह कर चट के नीचे डाब (दर्भा) या पुष्प का आसन दें। इसी तरह दानों गोत्रों को आसन देवें।

गोत्रा: –

(२) नान्दीमुखा: पितृ पितामह प्रपितामह प्रपितामहा: सपत्निका: इदं व: आसनं स्वाहानामयं च वृद्धि: ।

द्वितीय गोत्रा: –

(३) नान्दीमुखा: मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहा: सपत्निका: इदं व आसनम् स्वाहानामयं च वृद्धि: ।

एवं चन्दन पुण्य छोड़ें, दधिक्राण्णो मंत्र से दही डाले।

फिर यवाक्षत लेकर **"स्वस्तिनऽ इन्द्रो"** से पूर्वादि दिशाओं में दिग्बंधन करे।

गंधादिदानम् –

गंधदान में गंध चन्दन धूप अगरबत्ति, धूप(लगावे) ताम्बूल, पूगीफलं, वस्त्र, यज्ञोपवीत चटों पर चढ़ावे। निम्न मंत्र से पित्रों को दो–दो बार गंधादि दान करें –

यवोसि सोम देवत्यो गोवसे देवनिर्मित:। प्रत्नवद्भि: पत्त: पुष्ट्या नान्दीमुखान् पितृनिमॉंल्लोकान् प्रीणया हि न: स्वाहा न मम।

(१) ॐ सत्यवसुसंज्ञका: विश्वेदेवा: नान्दीमुखा: ॐ भू भुर्व: स्व: इदं गंधाद्यर्चन यथा विभागं स्वाहा संपद्यतां च वृद्धि:।

(2) गोत्रा: –

नान्दीमुखा: पितृ पितामह प्रपितामहा: सपत्नीका: इदं वो

गन्धाद्यार्चनं यथाविभागं स्वाहा सम्पद्यतां च वृद्धिः ।

(३) द्वितीय गोत्राः

नान्दीमुखाः मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः इदंवो गन्धाद्यार्चनं यथाविभागं स्वाहा सम्पद्यतां च वृद्धिः ।

(४) गणेशाम्बिकयोः ॐ भूर्भुवः स्वः वः इदं आसन गंधाद्युपचार कल्पनं स्वाहानामयं च वृद्धिः।

दीपकं – ज्योतिः सूर्योज्योतिः दीपकं ज्योतिः – दीपकं दर्शयामि स्वाहा नामयं च वृद्धिः। पाणिहोम करे तो **अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा। सोमाय पितृमते स्वाहा** इन दो आहुतियों से करे।

विश्वेदवाओं व पित्रों को साग्नि या आग्न्याधानरहित सबशाखा वाले अन्यपाक को अर्पण करे। दाख आंवला आदि चटों पर चढ़ावे।

भोजननिष्क्रयद्रव्यदानम् –

यजमान दो ब्राह्मणो से कहें कि आप हमारे घर पर यथारुचि तृप्त होकर भोजन करें।

ब्राह्मण कहें कि भोजन हुआ। भोजन दक्षिणा के साथ द्राक्षा आंवला भी देवे।

(१) ॐ सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवा नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तां निष्क्रयीभूतं किञ्चित् हिरण्यं दत्तम् अमृतरूपेण वः स्वाहानामयं च वृद्धिः।

(2) गोत्रा –

नान्दीमुखाः पितृ पितामह प्रपितामहाः सपत्नीकाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तां निष्क्रयी भूतं किञ्चित हिरण्यं दत्तम् अमृतरूपेण वः स्वाहानामयं च वृद्धिः।

(३) द्वितीय गोत्राः

नान्दीमुखाः मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तां निष्क्रयीभूतं किंचत् हिरण्यदत्तम् अमृतरूपेण इदं वः स्वाहा सम्पद्यतां च वृद्धि ।

(३) श्री गणेशाम्बिकयोः ॐ भू भुर्वः स्वः इदं वः युग्म ब्राह्मण

भोजनं पर्याप्तां निष्क्रयीभूतं किञ्चित् हिरण्यं दत्तम् अमृतरूपेण वः स्वाहानामयं च वृद्धिः।

इत्यष्ट ऋचः पठेत् –

(इस ऋचाओं को पढ़ सकें तो ठीक अन्यथा आगे का क्रम करें)

ॐ उपास्मैगायतानरः पवमानयोदेवे। अभिदेवाँ इयक्षते ।।१।। येत्वाहिहत्येमघवन्नुवर्द्धन्योशाम्मेहरिवोयेगविष्टौ । ये त्वानून मनुमदन्ति विप्राः पिबेन्द्र सोम ठ सगणो मरुद्भिः ।।२।। जनिष्ठा ऽउग्रः सहसे तुरायमन्द्र ओजिष्ठो बहुलाभिमानः । अवर्द्धनिंद्रं मरुतश्चिदत्र माता यद्वीरन्दधनिद्धनिष्ठा ।।३।। आतूनऽइन्द्र वृत्र हन्नस्माकमर्द्धमागाहि। महान्महीभिरूतिभिः ।।४।। त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि विश्वाऽअसिस्पृधः। अशस्ति हाजनिता विश्वतूरसि त्वन्तूर्य तरुष्णतः ।।५।। अनुतेशुष्मन्तुरयन्तमीयतुः क्षोणी शिशुन्नमातरा । विश्वास्तेस्पृधः श्रथयन्त मन्यवे वृत्रंयदिन्द्र तूर्वसि ।।६।। यज्ञो देवानाम्प्रत्येति सुम्नमादित्या सो भवता मृडयन्तः । आवोर्वची सुमतिर्वावृत्याद ठ होश्चिद्या वारिवोवित्तरासत् ।।७।। अदब्धेभिः सवितः पायुभिष्ट्व ठ शिवे भिरद्य परिपाहिनोगयम् । हिरण्य जिह्वः सुवितायनव्यसे रक्षामाकिर्नो अघशर्ठसऽईशत ।।८।।

सक्षीरयवमुदक दानम् (तत्पश्चात् चटों पर दूध जल पंचामृत चढ़ावें)

(१) ॐ सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् च वृद्धिः।

(२) (गोत्राः) नान्दीमुखाः पितृपितामह प्रपितामहाः सपत्नीकाः प्रीयन्ताम्।

(३) (द्वितीय गोत्राः) नान्दीमुखाः मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः प्रीयन्ताम् ।

ततो जलं दद्यात् (अंगुठे से ब्रह्मतीर्थ मुद्रा से चटों पर जल चढावें)

ॐ अघोराः पितरः सन्तु। सन्तु अघोराः पितरः (इति जलम्)

ततः पुष्पम् – ॐ सौमनस्यमस्तु (इति पुष्पम्)

ततः यवाः – ॐ अक्षतं चारिष्टं चाऽस्तु (इति यवाः)

बद्धांजलि आशीर्ग्रहणम् –

(यजमान हाथ जोड़कर पितरो से आशीर्वाद ग्रहण करें यजमान वचन माँगता जाये ब्राह्मण प्रतिवचन कहें)

गोत्रं नो वर्धताम् – वर्धताम् वो गोत्रम्।
दातारोनऽभिवर्द्धन्ताम् – अभिवर्द्धन्ता वो दातारः।
वेदाश्चनोऽभिवर्द्धन्ताम् – अभिवर्द्धन्ता वो वेदाः।
सन्ततिनोऽभिवर्द्धन्ताम् – अभिवर्द्धन्ता वःसंतति।
श्रद्धा च नो मा व्यगमत् – माव्यगमद्वः श्रद्धा।
बहुदेयं व नो अस्तु – अस्तु वो बहुदेयम्।
अन्नं च नो बहुभवेत् – भवतु वो बह्वन्नम् ।
अतिथींश्च लभेमहि – अतिथींश्च लभध्वम्।
याचितारश्च नः सन्तु – सन्तु वो या चितारः ।
एता आशिषः सत्याः सन्तु – सन्त्वेताः सत्या आशिषः।

दक्षिणादानम् –

(ब्राह्मणों को द्रव्य दक्षिणा, यव दाख आँवले फल पुष्प दक्षिणा देवें)

(१) ॐ सन्तु वसु संज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नांदीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षमलकयव मूल निष्क्रयीयभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे संपद्यतां वृद्धिः।

(2) गोत्रेभ्य –

नान्दीमुखेभ्यः पितृपितामह प्रपितामहेभ्य सपत्नीकेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयव मूल निष्क्रयीयभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे संपद्यतां वृद्धिः।

(3) द्वितीय गोत्रेभ्यः –

नान्दीमुखेभ्यः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयव मूल निष्क्रयीयभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे संपद्यतां वृद्धिः।

अर्घ्य –

फिर चट के आगे अर्घ्य दान करते हुये इन दो मंत्रों को पढ़ें।

ॐ उपास्मैगायतानरः पवमानायेन्देवे। अभि देवां ऽ इयक्षते ।।१ ।।

ॐ इडामग्नेपुरूद ठे स ठे सनिङ्गो शश्वत्तम ठे हवामनायसाध।
स्थान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने साते सुमतिर्भूत्वमस्ये ।।२ ।।

(अब यजमान कहें **नान्दीश्राद्ध संपन्नम्** । ब्राह्मण कहें – **सुसम्पन्नम्**।

यजमान कहें –

तेन श्रीकर्मांग देवताः प्रीयन्तां वृद्धिः। ॐ विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्।।

देवविसर्जनम् –

ॐ वाजे वाजे वतवाजिनो नो धनेषु विप्राऽअमृता ऽऋतज्ञाः ।
अस्यमद्ध्वः पिबतमादयध्वं तृप्तायातपिथभिर्देवयानैः ।।

इतना कहकर जल छोडें, पात्र टंकार करें या घंटा बजाते हुये विश्वदेवों का विसर्जन करें।

पितृविसर्जनम् –

ॐ आमावाजस्य प्रसवो जगम्यादेमेद्द्यावा पृथिवी विश्वरूपे ।
आमागन्तां पितरामातरा चामासोमो ऽअमृतत्वेगम्यात् ।।

(पितरो की चटों को पात्र टंकारते हुये विसर्जन करें)

यजमान हाथ में जल लेवें

मयाऽऽचरिते ऽस्मिन्सांकल्पिक नान्दीश्राद्धेन्यूनातिरिक्तो यो विधिः
स उपविष्ट ब्राह्मणानां वचनाच्छ्री नान्दीमुख
प्रासादाच्च सर्वः परिपूर्णोस्तु ।।

ब्राह्मण कहें – अस्तु परिपूर्णः । अनेन सांकल्पिक विधिनानांदीश्राद्धेन नान्दीमुखाः पितरः प्रीयन्ताम् ।

।इति नान्दीश्राद्ध प्रयोगः।।

॥ अथ पुण्याहवाचन रुद्रघट प्रधानघट स्थापनम् ॥

तीनों कलशों की स्थापना विधि एक ही है, निम्न क्रम से करें।

निम्न मंत्र से भूमि स्पर्श करें।

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री ।
पृथिवीं यच्छ पृथिवींदृ ठं ह पृथिवीं मा हि ठं सीः ।।१।।
ॐ महीद्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम् ।
पिपृतान्नो भरीमभिः ।।

कलश के नीचे धान्य के हाथ लगावें।

ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सहराज्ञा ।
यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त ठं राजन् पारयामसि ।।

फिर कलश स्थापना करें या कलश के हाथ लगाये।

ॐ आजिघ्र कलशंमह्या त्वा विशन्त्विन्दवः । पुनरूर्जा निवर्त्तस्वसानः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः।।

कलश में जल भरें –

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थो । वरुणस्य ऋत सदन्यसि वरुणस्य ऋत सदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद।।

कलश के हाथ लगाकर मंत्र पढ़ें –

ॐ आकलेशु धावति पवित्रे परिषिंच्यते । उक्थैर्यज्ञेषु वर्धते ।

तीर्थजल –

इमंमे गंगे यमुने सरस्वति शुतुद्रिस्तोमं सचतापरुष्ण्या ।
असिकन्या मरुद्वृथे वितस्तयार्जीकीये शृणुह्यासुषोमया ।।

सर्वोषधि डालें –

ॐ याः ओषधीः पूर्वाजाता देवभ्यस्त्रियुगंपुरा ।
मनैनु बभ्रूणामह ठं शतं धामानि सप्त च ।।

चंदनंप्रक्षेप –

ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।

ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।

सप्तधान्य, मूंग, साबुत हल्दी, साबुत धान आदि डालें –

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणायत्वो दानायत्वा व्यानात्वा । दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धान देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृहभ्णा त्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषेत्वा महीनाम्पयोऽसि ।।

पंचपल्लव –

ॐ अश्वत्थेवो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता । गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ।।

दूर्वा –

दूर्वेह्यमृत संपन्ने शतमूले शतांकुरे । शत पातक संहन्त्री शतमायुष्य वर्धिनी ।। विष्णुवादि सर्वदेवानां दूर्वे त्वं प्रितिदासदा । क्षीर सागर सम्भूते वंशवृद्धिकरी भव ।।१।। ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषपरि । एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ।।२।।

कुशाप्रक्षेप –

पवित्रस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । तस्यते पवित्र पते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम् ।

सप्तमृतिका प्रक्षेप –

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथाः ।।

पूगीफलप्रक्षेप –

ॐ या फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणी । बृहस्पतिः प्रसूतास्तानो मुञ्चंत्व ठं हसः ।।१।।

ॐ उतस्मास्यद्रवतस्तुरण्यत्तः पर्णन्नवेरनुवाति प्रगर्द्धिनः । श्येनस्ये वद्धजतोऽ अंक संपरिदधि क्राव्णः सहोर्जातरित्रतः स्वाहा ।।२।।

पंचरत्न –

ॐ सहिररण्यत्नानि दाशुषेसुवातिसविताभगः ।

तं भागं चित्रमीमहे।१।। ॐ परिवाजपति: कविरग्नि र्हव्यान्य क्रमीत । दधद्रत्नानि दाशुषे।।

हिरण्यप्रेक्षण –

ॐ हिरण्य गर्भ: समवर्त्तताग्रे भूतस्य जात: पतिरेक आसीत् । सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषाविधेम ।।

ॐ हिरण्य रूप: सहिरण्य सहगयान्नयात्सेदु हिरण्यवर्ण: । हिरण्य यात्परियोने निषद्या हिरण्यदा ददत्यन्तमस्मै ।

सूत्रेण वेष्टनम् –

युवा सुवासा: परिवीतऽआगात्स ऽउश्रेयान् भवति जायमान: । तं धीरा स: कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्योमनसा देवयन्त: ।।

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमादत्स्व: । वासो अग्ने विश्वरूप ठ सव्ययस्व विभावसो ।।

पूर्णपात्र – चावल से भरकर पूर्णपात्र कलश पर रखें।

ॐ पूर्णादर्विपरापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नेव विक्रीणाबहा ऽइषमूर्ज ठ शतक्रतो ।।

इसके बाद नारियल पर मोली या लाल वस्त्र लपेट कर कुंकुमादि लगाकर पूर्णपात्र पर रखें।

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणा मुम्मइषाण सर्वलोकम्मइषाण ।।

फिर कलश पर वरुण का ध्यान कर आवाहन करें।

ॐ अस्य तत्वायामीत्यस्य शुन: शेष ऋषि त्रिष्टुपृछन्द: वरुणो देवतावाहने विनियोग: ।।

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भि: । अहेडमानो वरुणे हवोद्ध्युरुश ठ समान आयु: प्रमोषी: ।।

मकरस्थं पाशहस्तमम्भसां पतिमीश्वरम् । आवाहये प्रतीचीशं वरुणं यादसा पतिम् ।।

देव दानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ ।
उत्पन्नोसि यदाकुंभ विधृतो विष्णुना स्वयं ।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ।
त्वयितिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठताः ।।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ।
आदित्या वसवोरुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ।।
त्वयितिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः काम फलप्रदाः ।
त्वत्प्रसादादिमं पूजा कर्तुमीहेजलोद्भव ।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ।।

ततो षोडशोपचारैः गंधादिभिः संपूज्य।

प्रार्थना –

कलशस्य मुखे विष्णुः ग्रीवायां च महेश्वरः ।
मूले चैव स्थितोब्रह्मा मध्येमातृगणाः स्मृताः ।।
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्थवणः ।
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ।
गायत्री चैव सावित्री शान्तिः पुष्टि करी तथा ।।
आयान्तु यजमानस्य दुरितक्षयकारकाः ।
सर्वेसमुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदानदाः ।
आयान्तु (मम) यजमानस्य दुरितक्षय कारकाः ।।

(एवं श्रीवरुणदेवताप्रसादात् सर्वविधेः परिपूर्णतास्तु)

अथ रुद्रकलशे रुद्रावाहनम्

कलश स्थापन पूर्व विधि से किया जा चुका है उस पर रुद्र का आवाहन करे।

ॐ असंख्याताः सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम् ।
तेषां ठ सहस्र योजने वधन्वानि तन्मसि ।।

अथ पुण्याहवाचनम्

संपूज्य गंधमाल्याद्यैर्ब्राह्मणान स्वस्ति वाचयेत्। धर्मकर्मणि मांगल्ये संग्रामे ऽद्भुतदर्शने। प्रथमं शांति पात्रं त्याज्यपात्रं च भूमौ स्थापयेत्।। यजमानः अवनिकृतजानुमण्डलः कमलमुकुल सदृशमञ्जलिं शिरस्याधाय आचार्य स्वदक्षिणेन पाणिना ताम्रकलशं यजमानाञ्जलौ धारयेत् ।

यजमान दोनों घुटनों को जमीन पर टेक देवें कहीं पर दक्षिण जानु ही टिकाया जाता है, पश्चात् कमल मुकुलाकार अंजलि करके उसमें ताम्रपात्र कलश, नारेल, पुष्प, दक्षिणा सहित धारण करें जिसका पूजन किया है।

निम्न मंत्र से सिर के लगायें — (स्वशिरसा एवं पत्नि शिरसा)

**ॐ त्रीणिपदाविचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः ।
अतो धर्माणि धारयन् ।।**

दक्षिण भुजा के लगाये —

**ॐ त्रीणित आहुर्द्दिवि बंधनानि त्रीण्यप्सुत्रीण्यन्तः समुद्रे ।
उतेव मे वरुणश्छन्त्स्यर्वन्यत्रात आहुः परमं जनित्रम् ।।**

वाम भुजा के लगावें —

**ॐ त्रयादेवा एकादशत्रयस्त्रिंशाः सुराधसः ।
बृहस्पति पुरोहिता देवस्य सवितुः संर्वे देवा देवैरवन्तुमा ।।**

हृदय के लगावें —

**ॐ दीर्घानागानद्यो गिरयास्त्रीणि विष्णुपदानि च ।
तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुस्त्वति । भवन्तो ब्रवन्तु।।
ब्राह्मण कहें — तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु ।।**

पश्चात् वामहस्तं दूरीकारयित्वा आचार्यो हस्ताभ्यां तं कलशं भूमौ स्थापयेत्।

फिर ब्राह्मणों के हाथों पर जल डालें — **(ब्राह्मणानां हस्ते सुप्रोक्षितमस्तु)**

शिवा आपो भवन्तु ताः ।। शिवाः आपः सन्तु।

ब्राह्मण कहें – सन्तु शिवा: आप:।

फिर यजमान, ब्राह्मण के हाथ में पुष्प देते हुये कहें –

यजमान –

लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे ।
सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं तथास्तु न: ।।

यजमान कहें – सौमनस्यमस्तु। ब्राह्मण कहें – **अस्तु सौमनस्यम् ।**

यजमान ब्राह्मणों के हाथ में अक्षत देते हुआ मंत्र बोलें –

यजमान – अक्षताश्चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम् ।
यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदामम ।।
अक्षता: पान्तु। अक्षतं चारिष्टं वास्तु।

ब्राह्मण – अस्त्वक्षतमरिष्टं च।

इसी तरह गंध, पुष्प, ताम्बूल दक्षिणा देवें ब्राह्मण पुन: शुभाशिर्वाद कहें।

यजमान – गंधा: पान्तु। **ब्राह्मण** – **सौमाङ्गल्यं चास्तु कहें।**

यजमान – पुष्पाणिपान्तु से पुष्प देवे। **ब्राह्मण – सौश्रियमस्तु** कहें।

यजमान – अक्षता: पान्तु से अक्षत देंवें। **ब्राह्मण – आयुष्यमस्तु** कहें।

यजमान – ताम्बूलानिपान्तु से पान देंवें। **ब्राह्मण–ऐश्वर्यमस्तु** कहें

यजमान – पूगीफलानि पान्तु **ब्राह्मण** – बहुफलमस्तु कहें।

यजमान – दक्षिणा: पान्तु से ब्राह्मणों को दक्षिणा देवें।

ब्राह्मण –

आरोग्यमस्तु। दीर्घमायु: श्रेय: शांति: पुष्टिस्तुष्टिचास्तु ।
श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं आरोग्यं चास्तु ।।

यजमान – यत्कृत्वा सर्वदिवयज्ञ क्रियाकरण कर्मारम्भ: शुभा: शोभना: प्रवर्तन्तेतमहमोंकारमादिं कृत्वा ऋग्यजु: सामाथर्वणाशीर्वचनं बह्वर्षि संमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञात: पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये ।

ब्राह्मण बोलें – वाच्यताम्।

अगर समय हो तो निम्न ऋचायें बोलें –

द्रविणोदा: पिपीषति जुहोत प्रचतिष्ठत नेष्ट्राद्तुभिरिष्यत ।। सवितात्वा

सवाना ठं सवितामग्नि गृहपतीना ठं सोमोवनस्पतीनाम् ।। बृहस्पतिर्वाच ऽइन्द्रो ज्यैष्ठ्यायरुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्मपतीनाम् ।।१।। ॐ नतद्रक्षा ठं सिन पिशाचास्तरंति देवानामोजः प्रथमज ठंह्येतत्। योबिभर्ति दाक्षायण ठं हिरण्य ठं सदेवेषु कृणुते दीर्घमायुः समनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ।।२।। उच्चातेजातमन्धसोदिवि सद्भूम्याददे। उग्रे ठं शर्ममहिश्रवः ।।३।।

यजमान – व्रतनियम तपः स्वाध्याय क्रतु दयादमदान विशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम् ।

ब्राह्मण – समाहितमनसः स्मः।

यजमान– प्रसीदन्तु भवन्तः। ब्राह्मण – प्रसन्नाः स्मः।

तत्पश्चात् पुण्याहवाचन कलश से जल यजमान के मस्तक पर डालें या हाथों को इस तरह रखें कि उनका जल प्रथम पात्र (कटोरी) में गिरता रहे एवं त्याज्य भूमि या दूसरे पात्र में करें।

ब्राह्मण निम्न मंत्र का उच्चारण करें एवं अभिषेक करें –

यजमान कहें – मम गृहे शांतिरस्तु।

ब्राह्मण – अस्त्विति प्रतिवचनं (इसी तरह सर्वत्र कहे)

हस्तयोः – शांतिरस्तु, पुष्टिरस्तु, तुष्टिरस्तु, वृद्धिरस्तु, ऋद्धिरस्तु, अविघ्नमस्तु, आयुष्यमस्तु, आरोग्यमस्तु, शिवमस्तु, शिवकर्मास्तु, कर्मसमृद्धिरस्तु, धर्मसमृद्धिरस्तु, वेदसमृद्धिरस्तु, शास्त्र समृद्धिरस्तु, पुत्रपौत्र समृद्धिरस्तु धन्यधान्य समृद्धिरस्तु इष्टसंपदस्तु।

द्वितीय पात्र में – अनिष्टनिरसनमस्तु, यत्पापं रोगमशुभमकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।

हस्तयोः – यच्छ्रेयस्तत्तदस्तु उत्तरेकर्मणि निर्विघ्नमस्तु, उत्तरोत्तरमहरहरभि वृद्धिरस्तु, उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः संपद्यन्तां तिथि करण मुहूर्त नक्षत्र ग्रह लग्नादि देवताः प्रीयन्ताम् । तिथिकरणे समुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदवते प्रीयन्ताम्।। दुर्गा पांचाल्यौ प्रीयन्ताम्। अग्नि पुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् इन्द्र पुरोगा मरुद्गणा

प्रियन्ताम्। वसिष्ठ पुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। माहेश्वरी पुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्। अरुंधतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। विष्णुपुरोगाः सर्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ब्रह्मपुरोगाः सर्ववेदाः प्रीयन्ताम्। आदित्य पुरोगाः सर्वेग्रहाः प्रीयन्ताम्। ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। अम्बिका सरस्वत्यौ प्रीयन्ताम्। श्रद्धामेधेप्रीयेताम् भगवति कात्यायनी प्रीयन्ताम्। भगवति माहेश्वरी प्रीयन्ताम्। भगवति ऋद्धिकरी प्रीयन्ताम्। भगवति वृद्धिकरी प्रीयन्ताम्। सिद्धिकरी प्रीयन्ताम्। भगवति तुष्टिकरी प्रीयन्ताम्। भगवतौ विघ्न विनायकौ प्रीयन्ताम्। सर्वाः कुलदेवता प्रीयन्ताम्। सर्वाग्रामदेवता प्रीयन्ताम्। सर्वाइष्ट देवताः प्रीयन्ताम्।

द्वितीय पात्रे (भूमौ) – हताश्च ब्रह्मद्विषः। हताश्चपरिपन्थिनः। हताश्चविघ्नकर्तारः। शत्रवः पराभवभवंयान्तु। शाम्यंतु घोराणि, शाम्यन्तु पापानि, शाम्यंत्वीतयः।

प्रथम पात्रे हस्तयोः – शुभानि वर्द्धन्ताम्। शिवा आपः सन्तु। शिवा ऋतवः सन्तु। शिवा अग्नयः सन्तु । शिवा आहुतयः सन्तु। शिवा ओषधय सन्तु। शिवा वनस्पतयःसन्तु । शिवा अतिथयः सन्तु। अहोरात्रे शिवे स्याताम्।

ॐ निकामे निकामेनः पर्जन्योवर्षतु फलवत्योनऽओषधयः। पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम्॥

शुक्राङ्गारक बुध बृहस्पति शनैश्चरराहुकेतुसोमसहिता आदित्य पुरोगाः सर्वेग्रहाः प्रीयन्ताम्। भगवान्नारायणः प्रीयन्ताम्। भगवानपर्जन्यः प्रीयन्ताम्। भगवानमहासेनः प्रीयन्ताम्। पुनुरुवाक्ययायत् पुण्यं तदस्तु याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।

प्रथम पात्र कटोरी के जल से यजमान का अभिषेक करके दूसरा त्याज्य पात्र किसी को देवें, द्रोण पात्र हो तो बाहर फेंक देवें।

यजमान कहें – ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादन कारकम् ।
वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रवन्तुनः ॥

भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे पाठ(होमे) पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण – ॐ पुण्याहम् ३। ॐ पुनन्तु मादेवजनाः पुनन्तुमनसाधियः पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनिहिमा।।

यजमान – पृथिव्यामृद्धतायान्तु यत्कल्याणं पुराकृतम्। ऋषिभिः सिद्ध गंधर्वैस्तकल्याणं ब्रुवन्तुनः। भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे कालसर्पशान्ति कर्मणे (होमे) कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मणाः – ॐ कल्याणं ३। यथेमांवाचं कल्याणी मावदानी जनेभ्यः ब्रह्म राजन्याभ्या ठ शुद्राय चार्याय च स्वायचारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिहभूया समयम्मेकामः समृद्धयता मुपमादो नमतु।।

यजमानः – सागरस्यतु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता। सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां तामृद्धिं ब्रवन्तु नः। भो ब्राह्मणाा मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य दुर्गापाठे होमे प्रतिष्ठाकाले ऋद्धिं भवंतो ब्रवंतु।।

ब्राह्मणः –ऋद्धयताम् ३। सत्रस्यऽऋद्धिरस्य गन्मज्योतिरमृताऽअभूम। दिवं पृथिव्याऽअद्धयारुहामाविदाम देवन्त्स्व ज्योतिः।

यजमानः – स्वस्तिस्तु या ऽविनाशाख्या पुण्य कल्याण वृद्धिदा। विनायक प्रिया नित्यंतातां स्वस्तिं ब्रुवन्तुनः।। भो ब्राह्मणः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे दुर्गापाठे होमे प्रतिष्ठाकाले स्वस्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मणः – ॐ स्वस्ति ३।

यजमानः – समुद्रमथनाज्जाता जगदानंदकारिका। हरिप्रिया च मांगल्यतां श्रियं च ब्रुवन्तुनः। भो ब्राह्मणा मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य श्रीरस्त्विवति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मणः – ॐ श्री ३।

फिर यजमान के तिलक करें।

ॐ स्वति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।

स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।।

यजमान के **रक्षासूत्र, कंकण बंधन** करें कहीं—कहीं इस मंत्र से व **अन्य ऋचाओं** से अभिषेक कर बाद में तिलक करते हैं। राखी बाँधते है।

मृकंड सूनोरायुर्यद ध्रुव लोमशायोस्तथा ।
आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम्। शतंजीवंतु भवंतः ।।३ ।।

अन्य ऋचाः

यजमान – शिव गौरी विवाहे याया श्रीः रामनृपात्मजे। धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं सास्तु सद्मनि।। भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य श्रीरस्तु इतीभवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मणः – ३ॐ अस्तु श्री ३। ३ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनाँरूपमन्नस्य रसोयशः श्रीः श्रयतांमयि स्वाहा।।१ ।। प्रजापति र्लोकपालो धाताब्रह्मासदेवराट्। भगवाञ्छाश्वतो नित्यं स नो रक्षतु सर्वतः।।

ब्राह्मणः – भगवान्प्रजापति प्रीयताम्।

यजमानः – प्रजापतेनत्व देतानन्यो विश्वारूपाणि परिताबभूव। यत्कामस्ते जुहुमस्तन्नो अस्त्वय ममुष्य पितासावस्य पितावय ठ स्यामपतयो रयीणा ꣳ स्वाहा।।१ ।। आयुष्यमते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे। कृता सर्वाशिषः संतु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः।।२।। देवेन्द्रस्य यथा स्वस्ति यथा स्वस्ति गुरोर्गृहे। एकलिंगे यथा स्वस्ति तथा स्वस्ति सदा मम ।।३।।

ब्राह्मणः – आयुष्यमते स्वस्ति ३।। ३ॐ स्वस्तये वायु मुप्रब्रवामहे सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः। बृहस्वपतिं सर्व गणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवंतु नः।।

यजमानः – ३ॐ प्रतिपन्थाम पद्महिस्वस्तिगामनेहसम्। ये न विश्वाः परिद्विषोवृणक्ति विन्दते वसु।।

ब्राह्मणः – ३ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न

ऽआसुव ।। (यजमान व पत्नि का अभीषेक करें पश्चात् ब्राह्मण कुछ अक्षत यजमान पर घुमाकर ईशान कोण में फेंके।)

मंत्रार्था: सफला: सन्तु पूर्णा: सन्तु मनोरथा: । (यजमान पर)
शत्रुणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्रणामुदयस्तव ।।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेद: सामवेदोऽप्यथर्वण: ब्रह्म ।
वक्त्रेस्थिता (ब्रह्म वक्त्रे सदा) नित्यं निघ्नंतु तवशात्रवान् ।।
(ईशाने पान्तु)

(इसके बाद यजमान दोनों हाथो की अगुलियों को पंजीकृत कर ब्राह्मणों के हाथों से अक्षत पुष्प ग्रहण करें। अक्षत पुष्प हृदय व मस्तक के लगाकर पीछे फेंक देवें।)

ब्राह्मण: —

अक्षतान्विप्र हस्तात्तु नित्यंगृहणयन्ति ये नरा ।
चत्वारितेषां वर्धते आयु: कीर्तिर्यशोबलम् ।।

यजमान: —

आयुष्यकामो यशस्कामो पुत्र पौत्रस्तथैवच ।
आरोग्यं धनकामश्च सर्वेकामा: भवन्तु मे ।।

ब्राह्मण: —

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानम्महीयते ।
धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायु: अस्तु ।।

स्वस्त्यस्तु ते कुशलमस्तु चिरायुरस्तु गोवाजिवृद्धि धनधान्य समृद्धिरस्तु। ऐश्वर्यमस्तु कुशलोऽस्तु रिपुक्षयोस्तु संतानवृद्धि सहिता हरिभक्तिरस्तु ।

आनन्दकाले स्थिरराज्यलक्ष्मी:, शिव प्रसादाद्बहुवाक्य सिद्धि: । वाचाकृतं शत्रुविनाशनं च दकारशब्दन्तु दरिद्रनाश ।।

इसके बाद यजमान पत्नि व यजमान के तिलक व मोली बंधन करें। यजमान पत्नि के राखी बंधन **"श्री श्चते लक्ष्मीश्चते"** मंत्र से या निम्न मंत्र से करें —

ॐ तम्पत्नीभिरनुगच्छेम देवा: पुत्रै र्भ्रातृभिरुत वाहिरण्यै: ।
नाकङ्गृभ्ण्णाना: सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे ऽअधिरोचने दिव: ।।

॥ अथ आचार्यादि–ऋत्विक् वरणम् ॥

एक पात्र में जल, दूध, कुशाग्र, दधि, चन्दन, अक्षत, दूर्वा, सरसों ये आठ वस्तुयें डालें, रक्तसूत्र से वेष्टन कर अर्घ्यपात्र बनाये।

यजमान तीन बार उच्चारण करें – ॐ पुण्याहमिति ३। यजमान पत्नि के हाथ में कलश देवें। दोनों ब्राह्मणों से प्रार्थना करें –

ब्राह्मण प्रार्थना – पावना: सर्ववर्णानां ब्राह्मणा ब्रह्मरूपिण:। अनुगृह्णन्तु मामद्य ग्रहशान्त्याख्य (मूर्ति प्रतिष्ठा, अनुष्ठान, शतचण्डी) कर्मणि।। स्वस्वकर्मरता नित्यं वेदशास्त्रार्थकोविदा:। श्रोत्रिया: सत्यवाचश्च ग्रह ध्यानरता: (देवीध्यानरता:) सदा। आपाद्विघ्न विनाशाय शत्रु बुद्धिक्षयाय च। आयुरारोग्य पुत्रादिसुख श्रीप्राप्तयेमम।। चतुर्भिश्चैव वेदैश्चरुद्रेण सहिता स्तथा। स्वागतं वो द्विज श्रेष्ठा मदनुग्रहकारका:।।

इसके बाद एक ब्राह्मण **अर्घ** बनाकर लेकर कहें – **अर्घोर्घोऽर्घ:**

यजमान कहें – "अर्घप्रतिगृह्यताम"। अह कह कर अर्घपात्र ब्राह्मण के हाथ में देवें या सम्मुख स्थापित करें। तब ब्राह्मण कहें – **"अर्घंप्रतिगृह्णामि"।**

इसी तरह **पाद्य** पात्र के लिये – **"ॐ पाद्यं पाद्यं पाद्यं"** कोई ब्राह्मण कहें।

यजमान कहें **पाद्यं प्रतिगृह्यतान।** यजमान पत्नि पाद्य पात्र से ब्राह्मणो के चरणों पर जल डालें और यजमान प्रक्षालन करें, पत्नि वाम भाग में रहें।

मंत्र –

यत्पुण्यं कपिलादाने कार्त्तिक्यां ज्येष्ठपुष्करे ।
तत्फलं पाण्डवश्रेष्ठ विप्राणां पादशौचने ।।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि तानितीर्थानि सागरे ।
ससागराणि तीर्थानि विप्रस्य दक्षिणपदे ।।

फिर ब्राह्मणों के मोली बांधे –

यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्य ठशतानीकाय सुमनस्य माना: ।
तन्म ऽआबध्नामि शत शारदा – युष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ।।

फिर यजमान हाथ में यज्ञोपवित, सुपारी, दक्षिणा वरण सामग्री लेकर दक्षिण

जानु ढालकर विप्र के दक्षिण जानु का आलंभन करें **स्वगोत्रादि** का उच्चारण कर कहे—

अमुकप्रवरान्विता अमुकगोत्रः शुक्ल यजुर्वेदम्नाय वाजि माघ्यन्दिनीय शाखाध्यायी "अमुक शर्मा यजमानोऽहम्" (ब्राह्मण का गोत्र) **शुक्ल यजुर्वेदाम्नाय वाजिमाध्यन्दिनीय शाखा स्वाध्यायिनममुकशर्माणं ब्राह्मण मस्मिन् कालसर्पयोग एवं ग्रहशांत्याख्ये, प्रतिष्ठापने, दुर्गापाठे, हवन कर्माणिवा आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे।**

ब्राह्मण — वरण सामग्री ग्रहण करें और कहें — **"वृतोऽस्मि" प्रतिवचनम्।**

ॐ व्रेतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नाति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा — श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया — सत्यमाप्यते ।।

आचार्य से यजमान कहें —

आवाहयाम्यहं विप्रमाचार्य यज्ञकारिणम् ।
पुराण — न्याय — मीमांसा — धर्म शास्त्रार्थ पारगम् ।।
आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः ।
ग्रहशांत्याख्य (प्रतिष्ठाया) यज्ञेऽस्मिन्नाचार्य स्त्वंतथाभव ।।
यावत्कर्म समाप्येत तावत्त्वमाचार्यो भव ।

आचार्यो वदेत् — भवामि।। ॐ बृहस्पते अतियदर्यो .....।

ब्रह्मावरणम् — पहले की तरह उच्चारण करें — **अस्मिन् कर्मणि त्वंब्रह्माभव**

ब्रह्मा कहें — भवामि । ॐ ब्रह्मजज्ञानं...।

यजमान —

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा स्वर्गे लोके पितामहः ।
तथा त्वंम यज्ञेस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम ।।

इसी विधि से अन्य ब्राह्मणों व ऋत्विजों का वरण करें।

ऋत्विजश्च यथा पूर्व शक्रादीनां मखेऽभवन् ।
यूयं तथा मे भवत ऋत्विजो द्विजसत्तमाः ।।

ॐ युञ्जंतिव्रध्नमरूपं चरतं परितस्तस्थुषः रोचते रोचनादिवि।
युञ्जत्यस्य काम्या हरि विपक्ष समथे शोणाधृष्णुवां हसा॥

इसके बाद **"स्वस्ति न इन्द्रो"** से शांति पाठ करें स्वस्ति सूक्त पेज ६९ से पढ़ें एवं अर्घपात्र की मोली से यजमान के कंकण बंधन कर यजमान का व्रत बंध करें, इस कंकण को यज्ञ सम्पन्न होने पर उतार कर दूसरा रक्षा कंकण सूत्र बांधते है।

रक्षासूत्र मंत्र –

येनबद्धो बलिराजा दानवेंद्रो महाबलः। तेनत्वाबधुबध्नामि रक्षेमाचल माचल ।।१।। ॐ त्वयंतिष्ठ दाशुषे नृपाहि शृणुधीगिरः रक्षातोकमुतन्मनाः ।।२।। दाक्षायणा शतानीकम बध्नन्सुहिरण्यकम् । आबध्नामि तदेवाहमायुष्यस्याभिवृद्धये ।।३।। (यजमान पत्नि के) **गृह यज्ञ फलावाप्त्यै कंकणं सूत्रनिर्मितम् । हस्ते बध्नामि सुभगे त्वं जीव शरदां शतम् ।।४।। ॐ तम्पत्नीभिरनुगच्छेदेवाः पुत्रैर्भर्तृभिरुत वाहिरण्यैः। नाकङ्गृबभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे ऽअधिरोचने दिवः ।।५।।**

॥ अथ नवग्रह स्थापनम् ॥

संकल्पं कुर्यात् :— तत्रादौ शुभपुण्यतिथौ ममात्मनः यजमानस्य वा जन्मराशेः नामराशेः सकाशाद्वा जन्मलग्नाद्, वर्षलग्नाद्वा, चतुर्थाष्टम् द्वादशादि अनिष्टस्थानस्थित तथा दशा अंतरदशा समये नवग्रह पीड़ा परिहारद्वारा कालसर्पजन्य दोष शान्ति द्वारा आयुष्यारोग्य प्राप्त्यर्थ सूर्यादि देवता सानुकूलता सिद्ध्यर्थ नवग्रह स्थापनं, अधिदेवता, प्रत्यधिदेवता स्थापनं चाहं करिष्ये।

सूर्य :— (रक्तपुष्पाक्षतै)

ॐ आकृष्णेन रजसावर्त्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यंच ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यप सगौत्र रक्तवर्ण भो सूर्य इहागच्छ इहतिष्ठ। मध्य मण्डल मध्ये आवाहयेत् ।

(ध्यानम्) शोणाम्भोरुह संस्थितं त्रिनयनं वेदत्रयीविग्रहं दानाम्भोज युगामयानि दधतं हस्तैः प्रवालप्रभम्। केयूराङ्गदहार कङ्कणधरं कर्णोल्लसत्-कुण्डलं लोकोत्पत्ति विनाशपालनकरं सूर्यं गुणाब्धिं भजे ॥

चन्द्रमा :— (अग्निकोणे – चन्द्राकृति ४ अंगुल लम्बा चोड़ा आयत अथवा यथा मंडल विभाग) श्वेत पुष्पाक्षतै

ॐ इमन्देवा ऽअसपत्न ठं सुबद्धम्महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते ज्यानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमम्ममुष्यै पुत्रममुष्यै पुत्रमष्यै विशऽएषवोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ७ राजा।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेय सगोत्र शुक्ल वर्ण चन्द्रमा देवतायै इहागच्छ इहतिष्ठ ।

कर्पूरस्फटिकावदातमनिशं पूर्णेन्दुबिंबाननं। मुक्तादाम विभूषितेन वपुषा निर्मूलयंते तमः ॥ हस्ताभ्यां कुमुदं वरं च दधतं नीलाल कोद्भासितं। स्वस्याङ्कस्थ मृगोदिताश्रयगुणं सोमं सुधाब्धिं भजे।

भौम :— (दक्षिणकोष्ठे) रक्तपुष्पाक्षतै

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम ।

अपां ॐ रेता ॐ सि जिन्वति ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिदेशोद्भव भारद्वाजसगोत्ररक्तवर्ण उर्ध्वमुखी (या दक्षिणमुखी) त्रिकोण मध्ये आवाहयेत् ।

(स्त्री देवता का त्रिकोण अधोमुखी, पुरुष देवता का उर्ध्वमुखी होता है।)

ध्यान :–

जपाभं शिवस्वेदजं हस्तपद्मैर्गदाशूल – शक्तिर्वरंधारयंतम् ।
अवंति समुत्थं सुमेषासनस्थं धरानंदनं रक्तवस्त्रं समीडे ॥

बुध :– (ईशानकोष्ठे) पीतपुष्पाक्षतै

ॐ उद्बुद्ध्य स्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्ठा पूर्ते स ॐ सृजेथा मयंच।
अस्मिन् सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ॥

ॐ उद्बुध्य ध्वं समनसः सखायः समग्निमिध्वं वहवः सनीलाः ।
दधिक्रामग्नि मुषसं च देवीमिन्द्रावतो बसे निकृयेव ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मगध देशोद्भव आत्रेय सगोत्र पीतवर्ण भो बुध इहागच्छ इहतिष्ठ (उदङ्मुखं ऐशान्यां दिशिवाणकारे चतुरंगुले मण्डले)

ध्यानः–

पीतांबरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दंडधरश्च सौम्यः ।
चर्मासिधृक सोमसुतः सदा मे सिंहाधिरूढो वरदो बुधश्च ॥

गुरु (उत्तर कोष्ठे) – पीतपुष्पाक्षतै

(६ अंगुली लम्बा २ अंगुल चौडा पीत खंड अथवा यथा रुचि)

ॐ बृहस्पतेऽअति यदर्यो ऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु
यद्दीदयच्छवस ॠत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धु देशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पते इहागच्छ इहतिष्ठ ।

रत्नाष्टापद वस्त्र राशिममलं दक्षात्किरतं ।
करादासीनं विपणौ करं निदधतं रत्नादिराशौ परम ॥
पीतालेपन पुष्प वस्त्रमखिलालंकार संभूषितं ।

विद्या सागर पारगं सुरगुरुं वंदे सुवर्ण प्रभम् ॥

शुक्र (पूर्वकोष्ठे) – (श्वेत वर्ण 9 अंगुल प्रमाण पंचकोण या षट्कोण बनाये) श्वेतपुष्पाक्षतै

ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ँ शुक्रमन्धस ऽइन्द्रस्येन्द्रिय मिदं पयोमृतम्मधु ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकोट देशोद्भव भार्गव सगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र इहागच्छ इहतिष्ठ ।

ॐ शुक्र ज्योतिश्च चित्र ज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्मांश्च । शुक्रंऋतपाश्चात्यर्ठहाः ।

श्वेतांभोज निषण्णमापणतटेश्वेतांबरलेपनं। नित्यं भक्तजनाय संप्रददतं वासोमणीन्हाटकम् ॥ वामेनैव करेण दक्षिण करे व्याख्यान मुद्राङ्कितं । शुक्रं दैत्यवरार्चितंस्मितमुखं वंदे सिताङ्गप्रभम् ॥

ॐ शुक्रते अन्यद्य जतंते अन्याद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि । विश्वाहिमाया अवसि स्वधावो भद्राते पूषन्निहरातिरस्तु ॥

शनि – (पश्चिम कोष्ठे) कृष्णपुष्पाक्षतै

(धनुषाकृति कृष्णवर्ण १०–११ अंगुल लम्बा २ अंगुल चौडा)

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय, आपोभवन्तु पीतये । शंय्योरभिस्रवन्तुनः ॥१॥ ॐ शमग्नि रग्निभिः करच्छनस्तपतु सूर्यः । शं वातो वाप्वारपा अपसिधः ॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्र देशोद्भव काश्यपगोत्रस कृष्णवर्ण भो शनैश्चर इहागच्छ इहतिष्ठ।

नीलद्युति शूलधरः किरीटी गजस्थित स्त्रासकरो धनुष्मान् । चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशांतः सदास्तु मह्यं वरदो महात्मा ॥

(नैर्ऋत्य कोणे शूर्प आकृति १२ × ८ अंगुल)

राहु – (शूर्पाकारे द्वादशंगुले मण्डले – नैऋत्यां) धुम्रपुष्पाक्षतै

ॐ कयानश्चित्र आभुवदूति सदावृधः सखा कयाशचिष्ठयावृता ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः राठिनापुरोद्भव (बर्बरके देशे संजातः) पैठिनसगौत्र नीलवर्ण भो राहो इहागच्छ इहतिष्ठ।

नीलांबरोनीलवपुः किरीटी कराल वक्त्रः करवालशूली ।
चतुर्भुजश्चर्मधरश्च राहुः सिंहासनस्थो वरदोस्तु मह्यम् ।।

केतुः –

(वायव्य कोष्ठे) – पताका आकृति ६ अंगुल कृष्ण वर्ण ।। धुम्रपुष्पाक्षतै

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्या ऽअपेशसे। समुद्भिरजायथाः ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अंतर्वेदि समुद्भव जैमिनिसगोत्र केतो इहागच्छ इहतिष्ठः।

धूम्रो द्विबाहुर्वरदो गदाभृद् गृधासनस्थो विकृताननश्च । किरीट केयूर विभूषितांबरः सदास्तु मे केतुगणः प्रशांतः।।

इसके बाद ग्रहों का षोडशोपचार पूजन कर पुष्पांजली देवें।

ब्रह्मा मुरारीस्त्रिपुरांतकारी भानुः शशीः भूमिसुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रशनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शांतिकराः भवन्तु ।।
ॐ ग्रहाऊर्जाहुत योव्यन्तो विप्रायमतिम्। तेषांविशिप्रियाणां वोहमिष मूर्जः समग्रभमुपयाम गृहीतो सीन्द्रायत्वाजुष्ट गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्रारयत्वाजुष्टतम्।।१ ।। ॐ सम्पृचौस्त्थः संमाभद्रेणपृङ्क्तं विपृचौस्थो विमापाभना पृङ्क्तम ।।२ ।।

ग्रहा राज्यं प्रयच्छंति ग्रहाराज्यं हरंति च। ग्रहैस्तु व्यापितं सर्व त्रैलोक्यं स चराचरम्।। कल्याणानि दिवामणिः सुललिता कान्ति कलानां निधि। लक्ष्मीक्ष्मा तनयो बुधश्च बुधता, जीवश्चिरञ्जीविताम्।। साम्राज्यं भृगुजोऽर्कजो विजयतो, राहुर्बलोत्कर्षतां। केतुर्यच्छतु वांछित फलं, सुख संपदाम्।।

सूर्यं शौर्यमथेन्दुरिन्द्रपदवीं सुमंगलं मंगलं सद्बुद्धिश्च बुधो गुरुश्च गुरुताम्। शुक्रः सुखं शं शनिः राहुर्बाहुबलं केतुश्च कुलोश्योन्नतिम्।।

(अनेन पूजनेन श्री नवग्रह देवता प्रीयन्ताम् कह कर जल छाड़ें)

॥ अथ नवग्रहमातृका पूजनम् ॥

ग्रहमातृका का क्रम पहले कहीं आया नहीं है, परन्तु पूजन करे तो ठीक ही है। **मेरुतंत्र** में विधान है। यथा –

नौ ग्रहों की नौमातृका सूर्यादि ग्रहों के मंडल पर यथा क्रम से स्थापित करें।

(१) मंगलायै नमः – सूर्य मंडल पर
(२) पिंगलायै नमः– चन्द्र मंडल पर
(३) धान्यायै नमः – भौम मंडल पर
(४) भ्रामर्यै नमः – बुध मंडल पर
(५) भद्रिकायै नमः– गुरु मंडल पर
(६) उल्कायै नमः – शुक्र मंडल पर
(७) सिद्धायै नमः – शनि मंडल पर
(८) संकटायै नमः – राहु मंडल पर
(९) विकटायै नमः– केतु मंडल पर

मेरु तंत्र में सूर्यादि ग्रहों की नौमाताओं का उल्लेख है अतः मातृका पूजन से ग्रहारिष्ट कम होता है।

मंगला पिङ्गला धान्या भ्रामरी भद्रिका तथा उल्का सिद्धा संकटा च विकटा गर्भ पालिका।

॥ अथ अधिदेवता आवाहनम् ॥

आवाहन स्थान – वैसे तो अधिदेवता क्रमशः सूर्यादि ग्रहों के दक्ष पार्श्व व प्रत्यधि देवता क्रमशः ग्रहों के वाम भाग में स्थापित करते है परन्तु कहीं–कहीं मतभेद है सो दोनों ही विधान दे रहें है।

शिव 1. (सुर्य के दक्ष पार्श्व में) –

ॐ त्र्यंबकम् यजामहे सुगन्धिम् पुष्टि वर्धनम् ।
उर्वारुक मिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शंभो इहागच्छ इह तिष्ठ।

उमा 2. (चन्द्रमा के दक्ष या अग्निकोणे दिशि) –

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ

व्यात्तम्। इष्णन्निषाणा मुम्मइषाण सर्वलोकम्मइषाण ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः उमे इहागच्छ इह तिष्ठ।

स्कंद 3. (भौम के दक्षिण भाग में या याम्य भाग में) –

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुतवापुरीषात् ।
श्येनस्यपक्षा हरिणस्यबाहू उपस्तुत्यं महिजाततंतेअर्वन् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कंद इहागच्छ इह तिष्ठ।

विष्णु 4. (बुधस्य दक्ष पार्श्वे या बुधस्य पूर्वे) –

ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णो ध्रुवोसि वैष्णव मसि विष्णवेत्वा ।

ॐ भूर्भुवः स्वः नारायण इहागच्छ इह तिष्ठ।

ब्रह्मा 5 . (गुरु के दक्षिण पार्श्व में) –

ॐ आ ब्रह्मन् ब्रह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योति व्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्ति पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः । सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतान्निकामे निकामेनः पर्जन्योवर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योग क्षेमो नः कल्पताम् ।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ।

इन्द्र 6. (शुक्र के दक्षपार्श्व या पूर्व में) –

ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमंपिबवृत्रहा शूर विद्वान ।
जहि शत्रुँ३रपमृधोनुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतोनः ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ।

यम 7. (शनि के दक्ष पार्श्व या पश्चिम में) –

ॐ यमायत्वा मखायत्वा सूर्यस्य त्वा तपसे देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः स ७ स्पृशस्पाहि अर्चिरसि शोचिरसि तपोसि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमः इहागच्छ इह तिष्ठ।

कालः 8. (राहु के दक्ष पार्श्व में) –

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाः ऽक्षित्या उन्नयामि

समापो ऽअद्भिरग्मतसमोषधीभिरोषधी ॥

ॐ भूर्भुव: स्व: काल: इहागच्छ इह तिष्ठ।

चित्रगुप्त 9. (केतु के दक्ष पार्श्व में या नैर्ऋत्य भाग में) –

ॐ चित्रावसो स्वस्तिते पारमशीय ।

ॐ भूर्भुव: स्व: चित्रगुप्त इहागच्छ इह तिष्ठ।

॥ अथ प्रत्यधिदेवतानाम आवाहनम् ॥

अग्नि 1. (सूर्य के वाम वार्श्व में या शिव के आगे) –

ॐ सन: पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनोभव। सचस्वान: स्वस्तये।

ॐ भूर्भुव: स्व: अग्नि इहागच्छ इह तिष्ठ॥

(या) अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँ २ आसादयादिह ॥ मंत्रेण.

आप 2. (चन्द्रमा के वाम पार्श्वे या उमाके नैऋत्य में) –

ॐ अपोअद्यान्वचारिष ठं रसेन समसृक्ष्महि । पयस्वानग्नऽआगमंतम्मास ठं सृजवर्चसा प्रजया च धनेन च ॥

ॐ भूर्भुव: स्व: आप इहागच्छ इह तिष्ठ।

धरा: 3. (मंगल के वामपार्श्वे या स्कंद के वायुकोण में) –

ॐ चिदसि तया देवतयांगिरस्वद् ध्रुवासीद । परिचिदसि तया देवतयांगिरस्वद् ध्रुवासीद ।

ॐ भू र्भुव: स्व: धरे इहागच्छ इह तिष्ठ। या श्योनापृथिवी. मंत्रेण॥

विष्णु 4. (बुध के वामपार्श्वे या नारायण के उत्तर में) –

ॐ इदं विष्णु र्विचक्रमे – त्रेधानिदधेपदम् । समूढमस्यपा ँ सुरे स्वाहा ॥

ॐ भूर्भुव: स्व: विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ।

इन्द्र 5. (गुरु के वामपार्श्वे या ब्रह्मा के उत्तर में) –

ॐ इन्द्र आसन्नेता बृहस्पति र्दक्षिणा यज्ञ: पुरऽएतु सोम: ।

देवसेना नामभिभंजतीनां जयंतीनां मरुतोयं त्वग्रम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ।

इ द्राणी 6. (शुक्र के वामपार्श्वे या इन्द्र के पश्चिम में शुक्र मंडल पर) –

ॐ इन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽ भवन्यथेन्द्र दैवी र्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन् । एवमिमं यजमानन्दैवीश्च विशोमानुषीश्चानु वर्त्मानो भवंतु ।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राणि इहागच्छ इह तिष्ठ।

प्रजापति 7. (शनि के वामपार्श्वे या यम के पश्चिम में) –

ॐ प्रजापतेनत्व देतान्यन्यो विश्वारूपाणि परिताबभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्त्वयममुष्य पितासावस्य पिताव्यय ँ स्याम पतयोरयीणा ँ स्वाहा । रुद्रयत्ते क्रिविपरन्नाम तस्मिन् हुतमस्येष्टमसि स्वाहा ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापते इहागच्छ इह तिष्ठ।

पन्नगा 8. (राहु के वामपार्श्वे या काल के पश्चिम में) –

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु । ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पन्नगा इहागच्छ इह तिष्ठ।

ब्रह्मा 9. (केतु के वामपार्श्व में या चित्रगुप्त के ईशान में)

ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽआवः । सबुध्न्या उपमाऽअस्य विष्ठा सतश्च योनिमसतश्च विवः ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मा इहागच्छ इह तिष्ठ।

॥ अथ पञ्चलोकपाल स्थापनम् ॥

लोकपाल में स्थापना स्थान के बारे में मतभेद है। एक मत में कहा है कि शनैः केतोश्च पूर्वेण, गुरोः सूर्यस्य पश्चिमे अन्य मत से राहु के उत्तर में गणपति तथा राहु के दक्षिण में अंतरिक्ष, शनि के उत्तर में दुर्गा, रवि के उत्तर में वायु, केतु के दक्षिण में अश्विन का स्थान कहा है।

गणपति – 1. (राहु के उत्तर में या सूर्य के वायव्य कोण में)

ॐ गणानां त्वा गणपति ठं ऽहवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ठं हवामहे निधीनांत्वा निधिपति ठं हवामहे । वसोमम आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपते इहागच्छ इह तिष्ठ।

दुर्गा – 2. (शनि के उत्तर में या गुरु के उत्तर में)

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोम मरातीयतो निदहाति वेदः । सनः परिषदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यंग्निः ।

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गे इहागच्छ इह तिष्ठ।

वायु – 3. (रवि के उत्तर में)

ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथा सस्ते भिरागहि नियुत्वान्त्सोमपीतये।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छ इह तिष्ठ।

अंतरिक्ष 4. (राहु के दक्षिण में या शनि के पश्चिम में)

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतांतरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश ऽआदिशो विदिश ऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अंतरिक्ष इहागच्छ इह तिष्ठ।

अश्विन्य – 5. (केतू के दक्षिण में या सूर्य के पूर्व में)

ॐ यावां कशा मधुमत्यश्विना सून्रृतावती तया यज्ञं मिमक्षतम्।

ॐ भूभुर्वः स्वः अश्विनाविहागच्छतम् इहागच्छ इह तिष्ठ।

क्षेत्रपाल (गुरु के उत्तर में)

ॐ नहि स्पशमविदनन्यमस्माद् वैश्वानात्पुर एतारमग्नेः । एमे नम वृधन्नमृता अमृर्त्यं वैश्वानरङ्ग क्षेत्र जित्याय देवाः ॥

वास्तु (क्षेत्रपाल के उत्तर में)

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् त्स्वावेशो ऽअनमीवो भवानः । यत्व महे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नोभव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥

॥ अथ नक्षत्र स्थापनम् ॥

ॐ अश्विनाम्य सप्त विंशति नक्षत्रेभ्यो नमः।

प्रत्येक के नाम के साथ चतुर्थी लगाकर स्थापन करें नाम इस प्रकार है।

ॐ अश्विनेभ्य नमः। ॐ भरण्यै नमः। ॐ कृतिकायै नमः। ॐ रोहिण्यै नमः। ॐ मृगशीर्षायै नमः। ॐ आद्रायै नमः। ॐ पुनर्वसुयायै नमः। ॐ पुष्याय नमः। ॐ आश्लूषायै नमः। ॐ मघायै नमः। ॐ पूर्वाफाल्गुनाय नमः। ॐ उत्तराफाल्गुनीयाय नमः। ॐ हस्तायै नमः। ॐ चित्रायै नमः। ॐ स्वात्यायै नमः। ॐ विशाखायै नमः। ॐ अनुराधायै नमः। ॐ ज्येष्ठायै नमः। ॐ मूलायै नमः। ॐ पूर्वाषाढायै नमः। ॐ उत्तराषाढायै नमः। ॐ नमः। ॐ अभिजितायै नमः। ॐ श्रवणायै नमः। ॐ धनिष्ठायै नमः। ॐ शतभिषायै नमः। ॐ पूर्वाभद्रपदायै नमः। ॐ उत्तराभद्रपदायै नमः। ॐ रेवत्यायै नमः।

योग – **ॐ योगे योगेतवस्तरं वाजे हवामहे। सखाय इन्द्रमूर्तये। सप्तविंशति योगेभ्यो नमः।**

करण – **ॐ भद्रकर्णेभि श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ठं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।**

ॐ एकादश करणा इहागच्छ इह तिष्ठ।

अन्य देवताओं का आवाहन करें।

ॐ ध्रुवाय नमः। सप्तसागरेभ्यो नमः। पञ्च नदीभ्य नमः। सप्तऋषये नमः। पर्वतेभ्य नमः। रैवन्ताय नमः। सुपर्णाय नमः। चतुर्वेदाय नमः। इन्द्रादि दश दिक्पालेभ्य नमः।

॥ अथ वास्तु मण्डल पूजनम् ॥

उत्पत्ति :– एक बार अन्धक नामक राक्षस व भगवान शंकर में युद्ध हुआ दोनों के पसीने की बूंदे एक साथ पृथिवी पर गिरी उससे दोनों के बीच एक विशाल देव उत्पन्न हुआ, जो वास्तु पुरुष के नाम से विख्यात हुआ। भगवान विश्वकर्मा ने आकर युद्ध रुकवाया एवं **वास्तु पुरुष** को अपने साथ ले गये और इसे भूमि के नीचे के अष्टदोषों को शांत करने का काम सौपा। **अतः भूमि निर्माण, गृहप्रवेश, यज्ञकर्म में तथा एक हजार से ज्यादा आहुति हो वहाँ वास्तु पूजन का उल्लेख है।**

वास्तु मंडल स्वरूप :– इस मंडल के निर्माण हेतु श्वेत वस्त्र पर कुंकुम से या रंग से १० रेखा पूर्व से पश्चिम व १० रेखा दक्षिण से उत्तर की ओर सुवर्ण या रजत सलाका से खींचे इससे ८१ कोष्ठक बन जायेंगें। उनमें चित्र के अनुसार अक्षत पुंज रखें।

इसमें स्थापना में **ब्राह्मण विशेषकर जो त्रुटि करते है वे शिखने नमः** नैर्ऋत्य कोष्ठक से प्रारंभ कर एक–एक कोष्ठक में एक–एक देवता के हिसाब से आवाहन कर नैर्ऋत्य से अग्निकोण तक करते है, फिर दूसरे कोष्ठक से पूर्व की ओर करते है।

ध्यान देने लायक बात यह है कि **शिखिनेनमः वास्तु का शिर है वह ईशान कोण से प्रारंभ होता है,** इसके बाद दक्षिण की ओर एक कोष्ठक याने एक पद (पीत रंग) पर्जन्य (द्विपद यानि दो कोष्ठक) उसके आगे इसी तरह अग्नि कोण तक, अग्नि कोण से नैर्ऋत्य कोण, नैर्ऋत्य से वायव्यकोण, वायव्य कोण से ईशान कोण तक इसी क्रम में नवपद ब्रह्मा के चारों ओर आवाहन कर ४५ वें श्लोक पर मध्य में नवपद पर ब्रह्मा का आवाहन करें। पैतालीसवाँ श्लोक पूरा होने पर वास्तु का पूरा रूप बनता है, तदंतर **वास्तु मंत्रो** से २ या ५ मंत्रो से आवाहन करें एवं **अंघोर मंत्र** से शिव का आवाहन करें। श्वेत परिधि पर चरक्यै आदि ८ देवियों व देवों का आवाहन करें। रक्त परिधि पर दशों दिक्पालों का आवाहन, कृष्ण परिधि पर पूर्वादि क्रम से हेतुकाय आदि देवो का आवाहन करें।

॥ अथ ८१ पद वास्तुमण्डल देवानां पूजनम् ॥

चार लोहे की नागफणी बनावें या लाहे की कीलें लेंवें, वास्तु मंडल के चारों कोणों में या सिकोरे या गिलास में धान्यादि भरकर उनमें ये लोहे के शंकु स्थापित करें ३ या ५ सूत्रों से अग्निकोण से प्रारंभ कर चारों कोणों में शंकुओ को वष्टित करें दूसरा भाग वास्तु मूर्ति से सम्बन्ध कर देवें। चारों शंकुओ का पूजन कर बलि देवें। (**द्विगुणीकृत सूत्रेण वेष्टनं कुर्यात्** ऐसा भी लिखा है।)

विशन्तु भूतले नागा लोकापालाश्च सर्वतः ।
अस्मिन् गृहे ऽवतिष्ठन्तु ह्ययुर्बलकराः सदा ॥

ततो त्रिसूत्रेण सर्वशंकुवेष्टनं कृत्वा माषभक्तदध्योदन बलिं स्थापयेत् तदो वदेत्।

उड़द, चावल, दधि ओदन, नमकीन, पापड़ पायस, मिठाई से बलि समर्पण करें।

ॐ अग्नये नमः इमं बलि समर्पयामि। नैऋत्ये नमः इमं बलिं समर्पयामि। वायवे नमः इमं बलिं सम.। ईशानाय नमः इमं बलिं सम.।

पश्चाद्दशरेखादेवीश्च नाममंत्रेण पूजयेत् **यथा पश्चिम से पूर्व की ओर :– ॐ शांत्यैनमः, यशोवत्यैनमः, कांत्यैनमः, विशालायैनमः, प्राणवाहिन्यैनमः। सत्यैनमः, सुमत्यैनमः, नंदायैनमः, सुभद्रायैनमः, सुरथायैनमः।**

तथैव दक्षिणारंभ उदगन्ताः (याम्योत्तर) रेखा पूजनम् **यथा हिरण्यायै, सुव्रतायै, लक्ष्म्यै, विभूत्यै, विमलायै, प्रियायै, जयायै, ज्वालायै (कालयै) विशोकायै (विशालायै), इडायै (इन्द्रायै) नमः॥ आ. स्था. यथा शक्ति पूजयेत्।** ये ८१ पद के वास्तु में **शिरा** कही जाती है।

64 पद के वास्तु में मतान्तरे – पूर्वापर की रेखाओं में श्रियै, **यशोवत्यै, कान्तायै, सुप्रियायै, यशैः, शिवायै, शोभनायै, सधनायै, इडायै नमः।**

याम्योत्तर रेखाओं के नाम – **धन्यायै, धरायै, विशालायै, स्थिरायै, रूपायै, गदायै, निशायै, विभावायै, प्रभावायै नमः।**

अब ८१ खानों में ईशानकोण से पूजन प्रारंभ करें जहाँ एक पद है वहाँ १ कोष्ठक में, द्विपद हो तो दो कोष्ठक में, अर्थात् अगर पूजन पूर्व दिशा में है तो

पूर्व के कोष्ठक के नीचे का क़ोष्ठक सहित, दक्षिण दिशा में द्विपद हो दूसरा पद उत्तर का, पश्चिम में पूजन हो तो दूसरा पद पूर्व दिशा का, उत्तर दिशा में हो तो दूसरा पद दक्षिण दिशा का होगा।

अधिकांशत: ८१ खानों के बाहर श्वेत, रक्त, श्याम परिधियाँ बना देते है। ब्रह्मा के बाद अन्य देवताओं का पूजन इन परिधियों में होगा। हो सके तो बाहर की परिधियों में चरकी आदि आठ देवता, दिक्पालों व हेतुकाय आदि देवों के अलग—अलग रंग पुंज रखें।

नाम के आगे **ॐ भूर्भुव: स्व:** एवं चतुर्थी लगाकर आवाहन तथा प्रथमा से स्थापन करें।

ईशान कोण से अग्नि कोण की ओर (१) ऐशान कोण पदे – (रक्त १) **ॐ भूर्भुव: स्व: शिखने नम: शिखिन आ. स्था.** – इसी विधि से सभी का आवाहन करें। **(२) तद् दक्षिणैक पदै.—पर्जन्याय.** (पीत १) **(३) तद्द दक्षिण पदद्वयै—जयन्ताय.** (पीत २) **(४) तद् दक्षिण पदद्वये—कुलिशायुधाय.** (पीत २) **(५) तद् दक्षिण पदद्वये—सूर्याय.** (रक्त २) **(६) तद् दक्षिण पदद्वये—सत्याय.** (श्वेत २) **(७) तद्द दक्षिण पदद्वये—भृशाय** (कृष्ण २) **(८) तद्द दक्षिणैक पदै—आकाशाय.** (कृष्ण १) **(९) तद्द दक्षिणाग्नेयकोणपदे —वायवे नम:** (धूम्र १ पद)।।

अग्नि कोण से नैर्ऋत्य कोण की ओर (१०) तत्पश्चिमैक पदे पूष्णे. (रक्त १) **(११) तत्पश्चिम पदद्वये—वितथाय.** (श्वेत २) **(१२) तत्पश्चिमे—पदद्वये गृहक्षताय.** (पीत २) **(१३) तत्पश्चिमे पदद्वये—यमाय** (कृष्ण २) **(१४) तत्पश्चिमे पदद्वये—गंधर्वाय नम:** (रक्त २) **(१५) तत्पश्चिमे पदद्वये— भृङ्गराजाय.** (कृष्ण २) **(१६) पश्चिमौ परिस्थितैक पदे मृगाय** (पीत १) **(१७) तत्पश्चिमे नैऋत्य कोण पदे पितृभ्यो नम:** (रक्त १) ।।

नैर्ऋत्य कोण से वायव्य की ओर (१८) तदुत्तरैकपदे – दौवारिकाय. (रक्त १) **(१९) तदुत्तरेपदद्वये – सुग्रीवाय.** (श्वेत २) **(२०) तदुत्तरपदद्वये – पुष्पदन्ताय.** (रक्त २) **(२१) तदुत्तरोपदद्वये – वरुणाय** (श्वेत २) **(२२) तदुत्तरेपदद्वये – असुराय.** (पीत २) **(२३) तदुत्तरेपदद्वये – शोषाय**

नमः (कृष्ण २) **(२४) तदुत्तरोपरिस्थितैक पदे पापायै नमः** (पीत १) **(२५) तदुत्तरे वायव्यकोणपदे रोगाय नमः** (रक्त १)।।

वायव्य कोण से ईशान कोण की ओर (२६) तत्प्रागेकपदे – अहये. (रक्त १) **(२७) तत्प्राक्पदद्वये – मुख्याय.** (रक्त २) **(२८) तत्प्राक्पदद्वये – भल्लाटाय.** (कृष्ण २) **(२९) तत्प्राक्पदद्वये – सोमाय.** (श्वेत २) **(३०) तत्प्राक्पदद्वये – सर्पाय.** (कृष्ण २) **(३१) तत्प्राक्पदद्वये – अदित्यै.** (पीत २) **(३२) तत्प्रागुपरिस्थितैकपदै – दित्यै नमः** (पीत १)।।

अब मध्य कोष्ठको में ब्रह्मा के चारों कोण ईशानादि में दो–दो पद रहेंगें एवं पूर्वादि क्रम में तीन–तीन पद प्रत्येक देवता का पूजन होगा।

दिति के दक्षिण व शिखिने के नीचे एक पद में (३३) आपाय. (श्वेत १) **(३४) मध्येनवपदात् ईशाने–एक पदे– आपवत्साय.** (श्वेत १) **(३५) मध्येनवपदात्पूर्वे पदत्रये – अर्यम्णे.** (कृष्ण ३) **(३६) नवपदात् आग्नेयेक पदे – सावित्रे.** (रक्त १) **(३७) सावित्री वायोर्मध्येक पदे अग्निकोणे – सावित्राय.** (श्वेत १) **(३८) नवपदात् दक्षिणे पदत्रये – विवस्वते नमः** (श्वेत ३) **(३९) तत्पश्चिम नैऋत्य कोणेकपद विबुधाय** (रक्त १) **(४०) तत् नैऋत्यै – विबुध पितृमध्ये – जयंताय.** (श्वेत १) **(४१) नवपदात्पश्चिमे – मित्राय.** (श्वेत ३) **(४२) तदुत्तर वायव्य कोणेक पदे – राजयक्ष्मणे.** (रक्त १) **(४३) तत्वायवे – राजयक्ष्मणे – रोगात् मध्ये –रुद्राय.** (रक्त १) **(४४) नवपदातुत्तरे पदत्रये पृथिवीधराय नमः** (रक्त ३) **(४५) मध्ये नवपदेषु – ब्रह्मणे नमः** (श्वेत ३ पीत ६)।।

इन देवताओं के आवाहन पर वास्तु का अंग पूर्ण बन चुका है अतः यज्ञादि में **"मयुख ग्रंथों"** में इसके बाद का ५ ऋचाओं से पूजन, आवाहन, हवन करें फिर शिव पुत्र होने के कारण अघोर मंत्र से हवन का विधान लिखा है **चरक्यादि** का इसके बाद में पूजा हवन होता है। (प्रतिष्ठा मयूख)

साधारणतया ब्रह्मा के बाद के सभी देवताओं की पूजा एक साथ ही करातें है और बाद में वास्तु मूर्ति की पूजा कराते है।

मैं हवनोक्त पद्धति के आधार पर वास्तु मूर्ति पूजा कलश स्थापन विधान

करना यही उचित समझता हूँ। आचार्य अपनी सुविधानुसार करें या जो उचित समझें वही करें।

कलश में वरुण देवता का आवाहन करें जल से भरें और उसमें सर्वोषधि, सप्तमातृका, पंचपल्लव, पंचकषाय छोड़ देवें उस पर पूर्णपात्र स्थापित करें एवं **वास्तु पुरुष की मूर्ति को अग्न्युत्तारण एवं प्राण प्रतिष्ठा (पृष्ठ ५२५) करके स्थापित करें इसके बाद पुष्पाक्षत लेकर निम्न ऋचाओं से आवाहन करें –**

१. ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानी ह्यस्मान त्स्वावेशो ऽअनमीवो भवानः यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।

२. ॐ वास्तोष्पते प्रतरणो न एधिगयस्फानो गोभि रश्वेभिरिंदोः अजरासस्ते सख्ये स्याम् पितेव पुत्रान् प्रतितन्नो जुषस्व। शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।

३. ॐ वास्तोष्पते शग्मया सर्ठ सदाते सक्षीम हिरण्यमया गातु मत्या याहिक्षेम उतयोगे वरन्नो यू यं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।

४. ॐ अमी वहा वास्तोष्पते विश्वरूपाण्या विशन् सखा सुशेव एधिः नः।।

५. ॐ वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणां सत्रं सौम्यानां द्रप्सोभेत्ता पुरां शाश्वती ना मिक्षे मुनीनां सखा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भो वास्तु पुरुष इहागच्छेह तिष्ठ।।

शिव पुत्र होने के कारण शिव का ध्यान करें –

ॐ अघोरेभ्यो ऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ।
सर्वेभ्य सर्व सर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ।।

श्वेत परिधौ (६) ईशान्याम् (धूम्रवर्ण पुंजेषु) **चरक्यै.। (४७) आग्नेय्याम्** (रक्त पुंजेषु) **विदार्यै (४८) नैऋत्यां** (पीत पुंजेषु) **पूतनायै। (४९) वायव्याम्** (कृष्ण पुंजेषु) **पापराक्षस्यै.। (५०) पूर्वे** (रक्त पुंजेषु) **स्कंदायँ. । (५१) दक्षिणे** (कृष्ण पुंजेषु) **अंर्यम्णे.। (५२) पश्चिमे** (रक्त पुंजेषु) **जृम्भकाय.। (५३) उत्तरे** (पीत पुंजेषु) **पिलिपिच्छाय.।**

मण्डलाद्वहि द्वितीय रक्त परिधौ – (५४) पूर्वे इन्द्रायः (५५)

आग्नेयाम्—अग्नेये. (५६) दक्षिणे—यमाय (५७) नैर्ऋत्याम्—निर्ऋत्ये. (५८) पश्चिमे—वरुणाय. (५९) वायव्यां—वायवे (६०) उत्तरे—कुबेराय. (६१) ईशान्याम्—ईश्वराय. (६२) पूर्वशानयोर्मध्ये—ब्रह्मणे (६३) निर्ऋतिपश्चिमयो र्मध्ये—अनंताय.

(६४) पूर्वेइन्द्रादुत्तरत: (शुक्ल पुंजेषु) उग्रसेनाय: (६५) दक्षिणे यमादुत्तरत: (कृष्ण पुंजेषु) डामराय. (६६) पश्चिमे वरुणादुत्तरत: (कृष्ण पुंजेषु) महाकालाय. (६७) उत्तरे सोमादुत्तरत (पीत पुंजेषु) पिलिपिच्छाय.।

मण्डलाद्वहि तृतीय कृष्ण परिधौ — (पूर्वादि क्रमेण) (६८) पूर्वे कृष्ण पुंजेषु—हेतुकाय. (६९) अग्निकोण कृष्ण पुंजेषु—त्रिपुरान्तकाय (७०) दक्षिणे कृष्ण पुंजेषु—अग्नि वैतालय. (७१) नैर्ऋत्य कोणे (पीत पुंजेषु)—असिवैतालाय. (७२) पश्चिमे (कृष्ण वर्णे) —कालाय. (७३) वायव्ये (रक्त वर्णे)—करालाय. (७४) उत्तरे (पीतवर्णे)—एकपादाय. (७५) ईशान्याम् (रक्त वर्णे)—भीमरूपाय (७६) पूर्वईशानमध्ये (पीत वर्ण) रवेचराय. (७७) नैर्ऋत्य वरुणमध्ये (पीत वर्ण)—तलवासिने नम:।

गंधाक्षत पुष्प हाथ में लेकर ऋचायें पढ़ें — ॐ वास्तोस्पते प्रतिजानीह्यमान्स्वावेशो अनमीवो भवान:। यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे।१ ।।ॐ अमीवहा वास्ताष्पते विश्वरूपाण्या विशन् सखा सुशेवऽएधिन:।

ॐ वास्तवे नम: ॐ भूर्भुव: स्व: सर्वेवास्तुमण्डलदेवता इहागच्छन्तु इहतिष्ठन्तु। सर्वेषां देवानां षोडशोपचारै प्रपूजयेत। बलिम् दद्यात्।

वैसे तो सब देवताओं के अलग—अलग बलिद्रव्य है परन्तु सामुहिक रूप से दधि माष, चर्वण(नमकीन), पय, मिष्ठान्न व सुवर्ण की बलि प्रदान करें। गंधाक्षत करें।

भो वास्तुमंडल देवताया दिशं रक्ष बलिं भक्षय मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुकर्तार: क्षेमकर्तार: तुष्टिकर्तार: वरदा: भवत।।

क्षमा प्रार्थना — वास्तुदेव नमस्तेऽस्तु भूशय्याभिरत प्रभो। मद्गृहे धनधान्यादि समृद्धिं कुरु सर्वदा।।ॐ भूर्भुव: स्व: वास्तु पुरुष महाबल पराक्रम सर्वदेवाश्रित शरीर। ब्रह्मपुत्र सकलब्रह्माण्डधारक संकटेभ्यो मां रक्ष रक्ष।

॥ अथ चतुष्षटि योगिनी स्थापनम् ॥

साधारण क्रम में अगर मंडल नहीं बनाये तो मातृका मंडल पर प्रत्येक कोष्ठक में चार चार का आवाहन करें।

अलग मंडल बनायें तो ६४ खानो का मंडप वस्त्र पर वायव्य कोण में मंडल बनावें। कई पद्धितियों में नैऋत्य से अग्निकोण याने पश्चिम से पूर्व के ओर क्रमश: कोष्ठक में स्थापित करने की लिखी है परन्तु तंत्र के अनुसार प्रत्येक योगिनी दिशा के दृष्टिकोण से सही नहीं बैठता है अत: रक्त वस्त्र पर पहले नव कोष्ठक वनायें, मध्य कोष्ठक में योनि बनायें।

मध्य कोष्ठक के बाहर सब अष्ट कोष्ठो में अष्टदल बनायें एवं पूर्वादि क्रम से हर कोष्ठक में अष्टयोगिनियों की स्थापना करें।

वैसे तो वास्तु योगिनी क्षेत्रपाल आदि के प्रत्येक देवताओं के चारों वेदों के चार—चार मंत्र है पहले केवल नाम मात्र से आवाहन फिर वेदमंत्र से आवाहन पूजा क्रम दिया गया है। आवाहन चतुर्थी से व स्थापना प्रथमा से करें।

मध्यकोष्ठे कलश पूर्णपात्रोपरि योनिमध्ये –

ॐ भूर्भुव: स्व: महाकाल्यै नम: महाकाल्यै नम: महाकाली आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ भूर्भुव: स्व: महालक्ष्म्यै नम: आ. स्था.। ॐ भूर्भुव: स्व: महासरस्वत्यै नम: आ. स्था.॥

पूर्वे अष्टदलेषु –

।१॥ गजाननायै. ॥२॥ सिंहमुख्यै. ॥३॥ गृध्रास्यायै. ॥४॥ काकतुण्डै. ।५॥ उष्ट्रग्रीवायै. ॥६॥ हयग्रीवायै. ॥७॥ वाराह्यै. ॥८॥ शरभाननायै।

आग्नेयां अष्टदलेषु –

॥९॥ उलूकिकायै. ।१०॥ शिवारावायै. ।११॥ मयूर्यै. ।१२॥ विकटाननायै. ।१३॥ अष्टवक्रायै. ।१४॥ कोटराक्ष्यै. ।१५॥ कुब्जायै. ।१६॥ विकटलोचनायै॥ आ. स्था.।

दक्षिणस्याम् अष्टदलेषु –

।१७॥ शुष्कोदर्यै. ।१८॥ लल्लजिह्वायै. ।१९॥ अश्वदंष्ट्रायै. ॥२०॥ वानराननायै. ॥२१। रुक्षाक्ष्यै. ॥२२॥ केकराक्ष्यै. ॥२३॥

बृहत्तुण्डायै. ।।२४।। सुराप्रियायै. ।। आ. स्था.।।

नैर्ऋत्यां अष्टदलेषु –

।।२५।। कपालहस्तायै. ।।२६।। रक्ताक्ष्यै. ।।२७।। शुक्यै. ।।२८।। श्वेन्यै. ।।२९। कपोतिकायै. ।।३०।। पाशहस्तायै. ।।३१।। दण्डहस्तायै. ।।३२।। प्रचण्डायै. ।। आ. स्था.।।

पश्चिम्यां अष्टदलेषु –

।।३३।। चण्डविक्रमायै. ।।३४।। शिशुघ्न्यै. ।।३५।। पापहन्त्र्यै. ।।३६। काल्यै. ।।३७।। रुधिरपायिन्यै. ।।३८।। वसाधयायै. ।।३९।। गर्भभक्षायै. ।।४०।। शवहस्तायै. ।। आ. स्था.।।

वायव्यां अष्टदलेषु –

।।४१।। आमन्त्रमालिन्यै. ।।४२।। स्थूलकेश्यै. ।।४३।। बृहत्कुक्ष्यै. ।।४४।। सर्पास्यायै. ।।४५।। प्रेतवाहनायै. ।।४६।। दन्दशूककरायै. ।।४७।। क्रोञ्च्यै. ।।४८। मृगशीर्षायै. ।। आ. स्था.।।

उत्तरे अष्टदलेषु –

।।४९।। वृषाननायै. ।।५०।। व्यात्तास्यायै. ।।५१।। धूमनिःश्वासायै. ।।५२। व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे. ।।५३।। तापिन्यै. ।।५४।। शोषणीदृष्ट्यै. ।।५५।। कौटर्यै. ।।५६।। स्थूलनासिकायै. ।। आ. स्था.।।

ईशाने अष्टदलेषु –

।।५७ विद्युत्प्रभायै. ।।५८।। बलाकास्यायै. ।।५९।। मार्जायै. ।।६०।। कटपूतनायै. ।।६१।। अट्टाट्टहासायै. ।६२।। कामाक्ष्यै. ।।६३। मृगाक्ष्यै. ।।६४।। मृगलोचनायै. ।। आ. स्था.।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ह्रीं सर्वार्थ सिद्धिदात्रि योगिन्यै नमः गजनानादि चतुःषष्टि योगिनी सहिताय इहेगच्छेह तिष्ठ।

ततो सर्वेषां गंधादिना संपूजयेत्।। बलिं दद्यात्।।

॥ अथ एकपञ्चाशत क्षेत्रपाल स्थापनम् ॥

वायव्य कोण में कृष्ण अथवा रक्त वा श्वेतवस्त्र पर नवकोष्ठक बनायें मध्य कोष्ठक में अष्टदल या उर्ध्वमुखी त्रिकोण बनाये, कलश स्थापन करें। बाकी आठों कोठों में षट्दल बनायें।

मध्ये स्थापित कलशोपरि पूर्णपात्रे –

॥१॥ ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं। ॐ भूर्भुवः स्वः बटुकाय, क्षेत्रपालाय नमः, आवाहयामि स्थापयामि। भो क्षेत्रपाल इहागच्छ इह तिष्ठ।

पूर्वे षड्दलेषु –

॥२॥ अजराय. ॥३॥ व्यापकाय. ॥४॥ इंद्रचौराय. ॥५॥ इंद्रमूर्तये. ॥६॥ उक्षाय. ॥७॥ कृष्माण्डाय.

आग्नेयदिकोष्ठे षडदले –

॥८॥ वरुणाय. ॥९। बटुकाय. ॥१०॥ विमुक्ताय. ॥११॥ लिप्तकाय. ॥१२॥ लीलाकाय. ॥१३॥ एकद्रष्ट्राय. ।

दक्षिणदिकोष्ठे षड्दले –

॥१४॥ ऐरावताय. ॥१५॥ ओषधिघ्नाय. ॥१६॥ बंधनाय. ॥१७। दिव्यकाय. ॥१८॥ कंबलाय. ॥१९। भीषणाय. ।

नैर्ऋत्यदिषड्दले –

॥२०॥ गवयाय. ॥२१॥ घण्टाय. ॥२२॥ व्यालाय. ॥२३॥ अणवे ॥२४॥ चन्द्रवारुणाय. ॥२५॥ पटाटोपाय. ॥

पश्चिमदिषड्दले –

॥२६॥ जटालाय. ॥२७॥ क्रतवे ॥२८॥ घंटेश्वराय. ॥२८॥ विटङ्काय. ॥३०॥ मणिमानाय. ॥३१॥ गणबन्धवे.।

वायव्यदिषड्दले –

॥३२॥ डामराय. ॥३३॥ दुण्ढिकर्णाय. ॥३४॥ स्थविराय. ॥३५॥ दन्तुराय. ॥३६॥ धनदाय. ॥३७॥ नागकर्णाय. ।

उत्तरदिषड्दले –

।।३८।। महाबलाय. ।।३९।। फेत्काराय. ।।४०।। चीकराय. (चीत्काराय) ।।४१।। सिंहाय: ।।४२।। मृगाय. ।।४३।। अंतिमृदले अर्धभागे– यक्षाय. ।।४४।। अंतिमृदले उत्तरार्धभागे मेघवाहनायै.।

ईशानदिषड्दले –

।।४५।। तीक्ष्णोष्ठाय. ।।४६।। अनलाय. ।।४७।। शुक्ल तुण्डाय. ।।४८।। सुधापालाय. ।।४९।। बर्बरकाय. ।।५०।। अन्तिमददलार्धे – पवनाय. ।।५१।। अन्तिम दलार्धे पवनादुत्तरत: – पावनाय.। ॐ भूर्भूव: स्व: सर्वेभ्यो क्षेत्रपालेभ्यो नम:। गंधादिभि: संपूज्य बलिं दद्यात्।

॥ अथ सर्वतोभद्र मण्डल देवता स्थापनम् ॥

सर्वतो भद्रमंडल में मध्य में चार श्वेत पद में ब्रह्मा का स्थान है उसके चारों ओर १२ रक्त पद है, उनके चारों ओर पीतवर्ण के २० पद है जिसको कर्णिका कहते है। परिधि समीप चारों कोणों में श्वेत पुंज त्रिपद खण्ड है। कर्णिका व परिधि के बीच चारों दिशा में श्वेत पुंज की २४ पद की वापी है। हर वापी के दोनों ओर रक्त पुंज के ९ पद के भद्र है, कुल आठ भद्र है बनते है। ब्रह्मा से ईशानादि चतुष्कोणों में कृष्ण वर्ण की ५ पद की बल्लियाँ है, प्रत्येक बल्लि के दोनो ओर हरित श्रृंखला है।

हस्ते पुष्पाक्षत मादाय – मध्ये कलशोपरि

१. ॐ ब्रह्मणे नमः ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन्निहागच्छ इहतिष्ठ।

दिक्पाल स्थापनम् —परिधि समीप श्वेत खण्डो में उत्तर से वायव्यतक।

२. ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः सोम इहागच्छ इहतिष्ठ (उत्तरे)।

३. ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानााय नमः ईशान इहागच्छ इहतिष्ठ (खण्डेंदौ)।

४. ॐ भूर्भुवः स्वः इंद्राय नमः इंद्र इहागच्छ इहतिष्ठ (पूर्वे)।

५. ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः अग्निम् इहागच्छ इहतिष्ठ (खण्डेंदौ)।

६. ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः यमेहागच्छ इहतिष्ठ (दक्षिणे)।

७. ॐ भूर्भुवः स्वः नैर्ऋतये नमः नैर्ऋत्येहागच्छ इहतिष्ठ (नैऋत्ये, खण्डेंदौ)।

८. ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः वरुण इहागच्छ इहतिष्ठ (पश्चिमे)।

९. ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायो इहागच्छ इहतिष्ठ (वायव्ये, खण्डेंदौ)।

भद्रमंडले स्थापनम् – (रक्त पुंजेषु)

10 वायु सोमयोर्मध्ये –

ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः अष्टवसु आ. स्था.।

11. सोमईशानयोर्मध्ये–

ॐ भूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः एकादशरुद्रान् आ. स्था.।

12. ईशानपूर्वयोर्मध्ये–

ॐ भूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः द्वादिशादित्यान् आ. स्था.।

13. इन्द्र0ाग्नयोर्मध्ये–

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विनाभ्यां नमः अश्विनौ आ. स्था.।

14. अग्नियमयोर्मध्ये–

ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वेभ्यो देवेभ्यो पितृभ्यो नमः विश्वेदेवा स पितरान् आ. स्था।

15. यमनिर्ऋतिर्मध्ये–

ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः सप्तयक्षान् आ. स्था.।

16. निर्ऋति वरुणयोर्मध्ये–

ॐ भूर्भुवः स्वः भूतनागेभ्यो सर्पेभ्यों नमः भूतनागान्, सर्पान् आ. स्था.।

17. वरुणवाय्वोर्मध्ये–

ॐ भूर्भुवः स्वः गंधर्वाप्सरोभ्यो नमः गंधर्वाप्सरसः आ. स्था.।

18 उत्तरे – (ब्रह्म सोमयोर्मध्ये श्वेत २४ पुंजेषु वाप्याम् कर्णिका के समीप में)

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कंदाय नमः स्कन्द इहागच्छेह तिष्ठ।

19. स्कंद के उत्तर में –

ॐ भूर्भुवः स्वः नन्दिने नमः नंदीश्वर इहागच्छेह तिष्ठ(वाप्याम्)।

20. नंदी के उत्तर में (वाप्याम्)

ॐ भूर्भुवः स्वः शूलमहाकालाभ्यां नमः शूलमहाकालौ आ. स्था.।

21. ब्रह्मेशानयोर्मध्ये (कृष्ण पुंजेषु वल्लायाम्)

ॐ भू दक्षादिसप्तगणेभ्यो नमः – दक्षादिसप्तगणान् आ. स्था.।

22 ब्रह्मेन्द्रयोर्मध्ये वाप्याम् –

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः दुर्गा आ. स्था.।

23. तत्रैव दुर्गापूर्वे –

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णो इहागच्छेह तिष्ठ।

24. ब्रह्माग्न्योर्मध्ये वल्लायाम् –

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः स्वधा आ. स्था.। (कही कहीं पर

पितरो का आवाहन का भी उल्लेख है)

25. ब्रह्मयमयोर्मध्ये वाप्याम् –

ॐ भूर्भुवः स्वः मृत्युरोगाभ्यां नमः मृत्युरोगौ आ. स्था.।

26. ब्रह्मनिर्ऋत्योर्मध्ये वल्लयाम् –

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः गणपतिम् इहागच्छेह तिष्ठ।

27. ब्रह्मवरुणयोर्मध्ये वाप्याम् –

ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः आपः आ. स्था.।

28. ब्रह्मवाय्वोर्मध्ये वल्लाम् –

ॐ भूर्भुवः स्वः मरुद्भ्यो नमः मरुतः आ. स्था.।

29. ब्रह्मणः पादमूले कर्णिकायाम् –

ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः पृथिवीम् आ. स्था.।

30. तत्रैव पृथिव्या उत्तरतः –

ॐ भूर्भुवः स्वः गंगादिभिसरितेभ्यो नमः गंगादिव सप्तसरितः आ. स्था.।

31. तत्रैव गंगात्तद्युतरे –

ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः सप्तसागरान् आ. स्था.।

32. ब्रह्मणः मस्तके कर्णिकोपरि –

ॐ भूर्भुवः स्वः मेरवे नमः मेरुम् आ. स्था.।

३३. उत्तरेसोमसमीपे—ॐ भूर्भुवः स्वः गदायै नमः गदाम् आ. स्था।।

३४. ईशानसमीपे – ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिशूलाय नमः त्रिशूलं आ. स्था।।

३५. इन्द्रसमीपे – ॐ भूर्भुवः स्वः वज्राय नमः वज्रं इहागच्छेह तिष्ठ।

३६. अग्निसमीपे – ॐ भूर्भुवः स्वः शक्तये नमः शक्तिम् आ. स्था।।

३७. यमसमीपे—ॐ भूर्भुवः स्वः दण्डाय नमः दण्डं इहागच्छेह तिष्ठ।

३८. नैर्ऋतिसमीपे— ॐ भूर्भुवः स्वः खड्गाय नमः खड्गम् आ. स्था।

39. पश्चिमेवरुण समीपे –

ॐ भूर्भुवः स्वः पाशाय नमः पाशम् आ. स्था.।

40. वायव्यां वायुसमीपे –

ॐ भूर्भुवः स्वः अंकुशाय नमः अंकुशम् आ. स्था.।

(मंडल के बाहरी ओर रक्तपरिधि में उत्तर से वायव्य पर्यन्त)

४१. उत्तरे — ॐ भूर्भुवः स्वः गौतमाय नमः गौतमम् इहागच्छेह तिष्ठ।

४२. ऐशान्याम्—ॐ भूभुर्व. भारद्वाजाय नमः भारद्वाजं इहागच्छ इहतिष्ठ।

४३. पूर्वे—ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वामित्राय नमः विश्वामित्रं इहागच्छेहतिष्ठ।

४४. आग्नेयाम् — ॐ भूर्भुवः स्वः कश्यपाय नमः कश्यपं इहागच्छेहष्ठि।

४५. दक्षिणे—ॐ भूर्भुवः स्वः जमदग्ने नमः जमदग्निं इहागच्छेह तिष्ठ।

४६. निर्ऋते—ॐ भूर्भुवः स्वः वसिष्ठाय नमः वसिष्ठं इहागच्छेह तिष्ठ।

४७. पश्चिमे — ॐ भूर्भुवः स्वः अत्रये नमः अत्रिं इहागच्छेह तिष्ठ।

४८. वायव्यां—ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धत्यै नमः अरुन्धतिं इहागच्छेहतिष्ठ।

ततो (मण्डल के बाहर कृष्ण परिधि में पूर्वादि क्रमेण)

४९. पूर्वे — ॐ भूर्भुवः स्वः ऐन्ध्रै नमः ऐन्द्रीम् आ. स्था.।

५०. आग्नेयाम्—ॐ भू र्भुवः स्वः कौमार्यै नमः कौमारीम् आ. स्था.।

५१. दक्षिणे — ॐ भूर्भुवः स्वः ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीम् आ. स्था.।

५२. निर्ऋत्ये — ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः वाराहीम् आ. स्था.।

५३. पश्चिमे — ॐ भूर्भुवः स्वः चामुण्डायै नमः चामुण्डाम् आ. स्था।

५४. वायव्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः वैष्णव्यै नमः वैष्णवीम् आ. स्था.।

५५. उत्तरे— ॐ भूर्भुवः स्वः माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरीम् आ. स्था।

५६. ईशाने— ॐ भूर्भुवः स्वः वैनायक्यै नमः वैनायकीम् आ. स्था।

॥ अथ चतुर्लिंगतोभद्र मण्डल देवता स्थापनम्॥

यह विधान पृष्ठ संख्या १७१ पर दिया गया है।

हवन खण्ड

॥ अथ हवन विधानम् ॥

हवन के दिन अग्निस्थापन के बाद नवग्रह, ब्रह्मा, आचार्य, पूजन किया जाता है। जिस दिन हवन नहीं करना है उस दिन गणेश, मातृका, नवग्रह, रुद्रकलश व प्रधान देवता का पूजन करते हैं।

नाग पूजन करते समय नाग मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा करनी चाहिये।

॥ वेदी विधान एवं पात्रासाधन ॥

विशिष्ट हवन पद्धति हमारी पुस्तक सुबोध दुर्गासप्तशती एवं यागविधान तथा सर्वकर्म अनुष्ठान प्रकाश भाग-१ में दी गई है यहां पर हवन का समान्य क्रम दिया जा रता है।

२४ अङ्गुल प्रमाण की अथवा डेढ फुट की वर्गाकार वेद वेदी बायें। बीच में कछुए की पीठ के समान ऊँची रखें। अथवा दक्षिण पश्चिम में ऊँची हो तथा उत्तर पूर्व में ढलवाँ होवे।

दर्भा से वदी का पश्चिम से पूर्व की ओर परिसमन करें। उन कुशाओं को ईशान में फेंक देवें।

वेदी का जल से मार्जन करें, गोमय से लेपन करें स्रुव के मूल भाग से दक्षिण से उत्तर की ओर तीन रेखायें पश्चिम से पूर्व की ओर बढती हुई खींचे।

इन रेखाओं की मिट्टी उठाकर ईशान में फेंक देवें।

इन रेखाओं का "**ब्रह्मा, वैवस्वत तथा चन्द्रमा**" के नाम से पूजन करें।

॥ अथ अग्निस्थापनम् ॥

अग्निकोण से अग्नि लाकर नैऋत्य में उसका कुछ अंश "**क्रव्यादाग्नि**" नाम से त्याग करें तथा अग्नि को वेदी के चारों ओर ३ बार घुमाकर पात्र का मुख अपनी

ओर रखते हुये अग्नि स्थापन करें। पश्चात् कुछ हवन काष्ट उस पर रखकर अग्नि को प्रज्वलित करें।

वेदी के उत्तर में ''**प्रणितापात्र**'' रखें उसके उत्तर में ''**प्रोक्षणीपात्र**'' रखें उनमें जल डालें। प्रणितापात्र पर दो कुशा रखें। प्रणिता का जल ब्रह्मा को दिखाकर अपने स्थान पर रखें। प्रणिता का जल ३ बार प्रोक्षणी पात्र में ड़ालें। कुशा से पोक्षणी पात्र का जल ३ बार ऊपर उछालें तथा उस जल से पूजन सामग्री को भी शुद्ध करें।

स्त्रुव का मार्जन करें। ३ बार स्त्रुव को अग्नि में तपाकर गन्धाक्षत करें। प्रश्चात् कुशा को प्रणिता पर रखें तथा प्रोक्षणी पात्र को वायव्य कोण में प्रोक्षण त्याग के लिये रखें। घृत को अग्नि पर तपाये तथा कुशा से ३ बारी घ ऊपर उछाल कर रख देवें।

ब्रह्मा से यजमान का मोली से अनारब्ध करें।

खड़े होकर समिधा की आहुति देवें –**ॐ समिधोभ्यादाय स्वाहा।**

इसके बाद दो आहुति आधार होम की देवें तथा आहुति के बाद स्त्रुव के घी का प्रोक्षणी में त्याग कर कहें ''**इदं न मम**''।

॥ अथ आधार होम:॥

(मनसा उच्चारण करें) – **ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापते, इदं न मम। ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय, इदं न मम।**

पुन: आहुति देवें –

ॐ अग्न्ये स्वाहा। इदमग्नये , इदं न मम। ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय, इदं न मम। ॐ अग्निसोमाभ्यां स्वाहा। इदं अग्निसोमाभ्यां, इदं न मम। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदं अग्निस्विष्टिकृते, इदं न मम। ॐ भू: स्वाहा। इदमग्नये , इदं न मम। ॐ भुव: स्वाहा। इदं वायवे, इदं न मम। ॐ स्व: स्वाहा। इदं सूर्याय, इदं न मम।

बिना अनारब्ध के आहुति देवें –

ॐ प्रजापते स्वाहा। इदं प्रजापतये, इदं न मम।

अग्नि का ''**वरदानाम्ने अग्नये नम:**'' से पूजन करें।

॥ अथ पञ्चवारुणी होम:॥

पुन: ब्रह्मा से अनारब्ध करके ''**पञ्चवारुणी होम**'' करें। ५ बार घी से होम करें।

ॐ वरुणस्योत्तंभनमसि वरुणस्यस्कंभ सर्जनीस्थौ वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद ॐ वरुणाय स्वाहा। इदं वरुणाय, इदं न मम।

ॐ त्वन्नो अग्नेवरुणस्य विद्वान देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठः यजिष्ठोवह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषांसि प्रमुमुग्धस्मत् स्वाहा। इदं अग्निवरुणाभ्यां, इदं न मम॥१॥

ॐ सत्वन्नो ऽअग्नेवमो भवेतिनेदिष्ठो अस्या ऽउषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नौ वरुण ठंरराणो वीहि मृडीक ठं सुहवो न एधि स्वाहा। इदं अग्निवरुणाभ्यां, इदं न मम॥३॥

ॐ अयाश्चाग्ने ऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमिव मया असि अयानो यज्ञं वहास्य यानो धेहि भेषज ठं स्वाहा। इदं अग्नये, इदं न मम॥३॥

ॐ ये ते शतं वरुण यै सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा विततामहान्तः तेभिर्नो ऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वेमुञ्चतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यां देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च, इदं न मम॥४॥

ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्मद वाधमं विमध्यय ठं श्रथाय अथवय मादित्य व्रते तवा नागसोऽदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणादित्यामादितये, इदं न मम॥५॥

इसके बाद ब्रह्मा से अनारब्ध हटा लेवें।

॥ अथ गणपति होमः॥

हरि ॐ गणानांत्वा गणपति ठं हवाऽमहे प्रियाणांत्वा प्रियपति ठं हवामहे वसोमम ऽआहमजानिगर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्। ॐ भूर्भुवः स्वः गं गणपतये स्वाहा। इदं गणपतये, इदं न मम।

ॐ अम्बे अम्बिके म्बालिके नमानयत्ति कश्चन । ससस्त्य श्वक सुभद्रिकाङ्काम्पील वासनीम् स्वाहा।

इदं अम्बिकायै, इदं न मम।

॥ अथ नवग्रह होम ॥

ग्रह होम मन्त्र सहित करें तो मन्त्र पूजन प्रकरण में दिये गये हैं उनका अवलोकन करें। नामावलि से हवन निम्न प्रकार से करें -

(अर्कसमिध) ॐ भूर्भुवः स्वः आकृष्णेन । ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्याय स्वाहा

इदं सूर्याय इदं न मम॥

(पलाश समिध) **ॐ इमन्देवा.। ॐ भू. सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदं न मम॥** (खैर समिध) **ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिव:.। ॐ भू. भौमाय स्वाहा। इदं भौमाय इदं न मम॥** (अपामार्ग-आंधीझाडा) **ॐ उद्‌बुध्यास्वाग्रे.। ॐ भू. बुधाय स्वाहा। इदं बुधाय इदं न मम॥** (पिप्पल समिध) **ॐ बृहस्पते.। ॐ भू. बृहस्पतये स्वाहा। इदं बृहस्पतये इदं न मम॥** (गूलर) **ॐ अन्नात् परिस्रुतो.। ॐ भू. शुक्राय स्वाहा। इदं शुक्राय इदं न मम॥** (शमी खेजड़ी) **ॐ शन्नो देवी.। ॐ भू. शनैश्चराय स्वाहा। इदं शनै. इदं न मम॥** (दूर्वा समिध) **ॐ कयानश्चित्र.। ॐ भू. राहवे स्वाहा। इदं राहवे इदं न मम॥** (कुशा. डाभ) **ॐ के तुं कृण्वन्नकेतवे.। ॐ भू. केतवे स्वाहा। इदं केतवे इदं न मम॥**

(जल छाड़ें) **अनेन हवनेन श्री नवग्रह देवता प्रीयन्ताम् न मम।**

॥ अथ षोडशमातृका होम:॥

वैदिक मंत्रों से आहुति देवे तो मंत्र के बाद स्वाहा से हवन करे एवं इदं अमुक देवतायै इदं न मम से प्रोक्षणी में त्याज करे। अथवा नामावलि के हवन करे। प्रारंभ में **ॐ** या **व्याहृति** लगावे।

॥१॥ गौर्यै स्वाहा ॥२॥ पद्मायै स्वाहा ॥३॥ शच्यै स्वाहा॥४॥ मेधायै स्वाहा॥५॥ सावित्र्यै स्वाहा॥६॥ विजयायै स्वाहा॥७॥ जयायै स्वाहा॥८॥ देवसेनायै स्वाहा॥९॥ स्वधायै स्वधा। ॥१०॥ स्वाहायै स्वाहा (जिस मंत्र के अंत में स्वाहा हो उसके अंत में वाट् बोलकर स्वाहा बोलने का भी विधान मिलता है)

(स्वधा व पितृ होमान्ते मे स्वाहा की जगह स्वधा से होम होना चाहिये अत: स्वधायै स्वधा)

॥११॥ मातृभ्य: स्वाहा ॥१२॥ लोकमातृभ्य: स्वाहा ॥१३॥ धृत्यै स्वाहा ॥१४॥ पुष्ट्यै स्वाहा॥१५॥ तुष्ट्यै स्वाहा॥१६॥ प्रणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा। ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन ससस्त्यश्वक: सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीं स्वाहा। इदं आत्मकुलदेव्यै इदं न मम॥

जल छोड़ें - **अनेन हवनेन श्री षोडशमातृका देवता प्रियन्ताम् न मम॥**

॥ अथ वसोर्द्धारा होमः॥

ॐ वसो पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्ष्वः स्वाहा॥

॥ विशेष नवाहुतयः॥

॥१॥ ॐ अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँ ३ अवसादयादिह स्वाहा॥

॥२॥ ॐ अप्स्वग्ने सधिष्ठवसौषधी - रनुरुध्यसे। गर्भेसञ्जाय से पुनः स्वाहा॥

॥३॥ ॐ स्योनापृथिविनो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथा स्वाहा॥

॥४॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम्। समूढ मस्यपा ठ सुरे स्वाहा॥

॥५॥ ॐ महाँ ३ इंद्रोवज्रहस्तः षोडशी शर्मयच्छतु हन्तुपाप्मानं योस्मान्द्वेष्टि। उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैषते योनिरिन्द्राय यत्व स्वाहा॥

॥६॥ ॐ शुक्र ज्योश्चि चित्र ज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्मांश्च शुक्रश्चऋत पाश्चात्य ठ हाः स्वाहा॥

॥७॥ ॐ प्रजापतेनत्व देतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परितावभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोअस्तु वय ठ स्याम पतयो रयीणां स्वाहा।

॥८॥ ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरंचप्रयन्त्स्वः स्वाहा।

॥९॥ ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेनआवः सबुध्न्याउपमाअस्य विष्ठाः सतश्चयोनि मसतश्चाविवः स्वाहा।

॥ अथ अधिदेवानां होमः॥

प्रत्येक देवता की ४ या ८ या २८ आहुति देवें।

होम समय सभी जगह रुद्र तथा सर्प का त्याग ईशान में, अग्नि व पितर का अग्नि कोण में, यम, काल व चित्रगुप्त का दक्षिण में, नैऋति का नैऋत्य में त्याग करें। एवं प्रणिता जल से स्रुव का प्रोक्षण करें। यजमान के छींटें देवें।

मंत्र यथा - वाण प्रहाराण कवचं....वारणं स्मतम्। तथा देवोपघातानां शान्ति भवति वारणम्।

॥१॥ ॐ रुद्राय स्वाहा॥२॥ ॐ श्रियै स्वाहा॥३॥ ॐ स्कंदाय स्वाहा॥४॥

ॐ विष्णवे स्वाहा ।।५ ।। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा ।।६ ।। ॐ इंद्राय स्वाहा ।।७ ।। ॐ यमाय स्वाहा ।।८ ।। ॐ कालाय स्वाहा ।।९ ।। ॐ चित्रगुप्ताय स्वाहा

जल छोड़ें – **अनेन हवनेन् अधिदेवतानां प्रियन्ताम् न मम ।।**

।। प्रत्यधिदेवानां होम: ।।

प्रत्येक देवता की ४ या ८ या २८ आहुति देवें।

।।१ ।। ॐ अग्नये स्वाहा ।।२ ।। ॐ अद्भ्य: स्वाहा ।।३ ।। ॐ पृथिव्यै स्वाहा ।।४ ।। ॐ विष्णवे स्वाहा ।।५ ।। ॐ इंद्राय स्वाहा ।।६ ।। ॐ इंद्राण्यै स्वाहा ।।७ ।। ॐ प्रजापतये स्वाहा ।।८ ।। ॐ सर्पेभ्य: स्वाहा ।।९ ।। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा ।

।। पञ्चलोकपाल होम: ।।

प्रत्येक देवता की २ या ४ या ८ आहुति देवें।

।।१ ।। ॐ गणपतये स्वाहा ।।२ ।। ॐ दुर्गायै स्वाहा ।।३ ।। ॐ वायवे स्वाहा ।।४ ।। ॐ अंतरिक्षाय स्वाहा ।।५ ।। ॐ अश्विन्यां स्वाहा इदं. ।।

जल छोड़ें – **अनेन हवनेन पंचलोकपाल देवतां प्रियन्ताम न मम**

।। नक्षत्र होम: ।।

प्रत्येक देवता की २ या ४ या ८ आहुति देवें।

समस्त नामावलियों के नाम उच्चारण के बाद प्रत्येक नाम के साथ स्वाहा बोलकर हवन करे। इदं से त्याग करें।

।।१ ।। ॐ अश्विन्यै ।।२ ।। ॐ भरण्यै ।।३ ।। ॐ कृत्तिकायै ।।४ ।। ॐ रोहिण्यै ।।५ ।। ॐ मृगशिरसे ।।६ ।। ॐ आर्द्रायै ।।७ ।। ॐ पुनर्वसवे ।।८ ।। ॐ पुष्याय ।।९ ।। ॐ अश्लेषाय ।।१० ।। ॐ मघायै ।।११ ।। ॐ पूर्वाफाल्गुन्यै ।।१२ ।। ॐ उत्तराफाल्गुन्यै ।।१३ ।। ॐ हस्तायै ।।१४ ।। ॐ चित्रायै ।।१५ ।। ॐ स्वात्यै ।।१६ ।। ॐ विशाखायै ।।१७ ।। ॐ अनुराधायै ।।१८ ।। ॐ ज्येष्ठायै ।।१९ ।। ॐ मूलायै ।।२० ।। ॐ पूर्वाषाढायै ।।२१ ।। ॐ उत्तराषाढायै ।।२२ ।। ॐ अभिजिते ।।२३ ।। ॐ श्रवणाय ।।२४ ।। ॐ धनिष्ठायै ।।२५ ।। ॐ शतभिषायै ।।२६ ।। ॐ पूर्वाभाद्रपदायै ।।२७ ।। ॐ उत्तराभाद्रपदायै ।।२८ ।। ॐ रेवत्यै स्वाहा ।।

जल छोड़ें – **अनेन् हवनेन सवेभ्यो नक्षत्रेभ्यो प्रीयन्ताम् न मम ।**

ॐ योगे योगे तवस्तरं वाजे वाजे हवामहे। सखाय इंद्रमूर्तये। ॐ सप्तविंशति योगेभ्यः स्वाहा॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येम्माक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टवा ठ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ ॐ एकादश करणेभ्यः स्वाहा॥

ॐ यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधया मेधाविनं कुरु॥ ॐ मेधायै स्वाहा॥

॥ अथ विशेष देवानां होमः॥

प्रत्येक देवता की ८ आहुति देवें।

॥१॥ **ॐ सहस्त्रशीर्षा. विष्णवे स्वाहा ॥२॥ असंख्याताः सहस्त्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम्। तेषा ठ सहस्त्रयोजने वधन्वानि तन्मसि॥ ॐ एकादश रुद्रेभ्यः स्वाहा ॥३॥ ॐ वरुणस्योत्तभनमसि.। ॐ कलशस्थ देवेभ्यः स्वाहा ॥४॥ ॐ वास्तोष्पते.। वास्तुपुरुषाय स्वाहा। ॐ अमीवहा वास्तोष्पते विश्वारूपाण्या विशन्सखा सुशेव एधिनः ॥ ॐ वास्तवे स्वाहा ॥५॥ ॐ गणानांत्वा.। ॐ गणपतये स्वाहा ॥६॥ ॐ नमोस्तुसर्पेभ्यो. क्षेत्रपालाय स्वाहा ॥७॥ ॐ जातवेदसे.। ॐ चामुण्डायै स्वाहा ॥८॥ ॐ योव शिवतमो. गौर्यै स्वाहा ॥९॥ ॐ चतुर्वेदभ्यः स्वाहा ॥१०॥ ॐ ध्रुवोसि. ॐ ध्रुवाय स्वाहा ॥११॥ ॐ पंचनद्य. सरितायै पंचनदीभ्यः स्वाहा ॥१२॥ ॐ चतुःषष्टियोगिनीभ्यः स्वाहा ॥१३॥ ॐ पंचभूतेभ्यः स्वाहा ॥१४॥ ॐ सप्तऋषिय प्रतिहिता. सप्तऋर्षिभ्य स्वाहा ॥१५॥ ॐ इमंम्मे वरुण. सप्तसागरेभ्य स्वाहा ॥१६॥ ॐ प्रपर्वतस्य वृषभथ. ॐ पर्वतेभ्य स्वाहा ॥१७॥ ॐ जवायस्ते. ॐ रेवन्ताय स्वाहा ॥१८॥ ॐ सुपर्णोसि. ॐ गरुड़ाय स्वाहा ॥१९॥ ॐ अष्टवसुभ्य स्वाहा ॥२०॥ ॐ द्वादशादित्येभ्यः स्वाहा ॥२१॥ ॐ एकोन पंचाशन्मरुद्भ्यः स्वाहा ॥२२॥ ॐ अष्टनागकुलेभ्यः स्वाहा ॥२३॥ ॐ पितृभ्य स्वधा ॥२४॥ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ॥२५॥ ॐ विश्वकर्मणे स्वाहा।**

॥ अथ दिक्पाल होमः॥

प्रत्येक देवता की २, ४, या ८ आहुति देवें।

॥१॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा ॥२॥ ॐ अग्नये स्वाहा ॥३॥ ॐ यमाय स्वाहा ॥४॥ ॐ नैर्ऋत्याय स्वाहा ॥५॥ ॐ वरुणाय स्वाहा ॥६॥ ॐ वायवे स्वाहा ॥७॥ ॐ धनदाय स्वाहा ॥८॥ ॐ ईशानाय स्वाहा ॥९॥ ॐ अंतरिक्षाय स्वाहा ॥१०॥

ॐ धरायै स्वाहा

जल छाड़ें – **अनने हवनेन् इंद्रादि लोकपाल देवता प्रियन्ताम न मम।**

॥ अथ वास्तु होम:॥

यदि वास्तु हवन करना चाह्वें तो देवतओं के नाम व मन्त्र पृष्ठ संख्या ३४१ से वास्तु पूजन में देखें।

॥ अथ सर्वतोभद्र होम:॥

प्रत्येक देवता की ८ आहुति

ॐ मूलमंत्रेण: ॐ विष्णवे स्वाहा। प्रधान देवतायै स्वाहा॥

नामावलि के प्रत्येक मंत्र के बाद स्वाहा बोलकर होम करे। और **इदं न मम से त्याग करे।** वैसे प्रत्येक देवता की ८ आहुति का विधान है।

नोट :- पितृ का स्वधा से त्याग करें, अग्नि व यम के मध्य में त्याग करें। रुद्र का ईशान में यम रोगमृत्यु का त्याग दक्षिण दिशा व नैर्ऋति का नैर्ऋत्य में त्याग करें तथा प्रणीता जल से स्रुव व यजमान का प्रोक्षण करे, **'यथा बाणप्रहाराणां'** मंत्र से छींटें देवे। ॐ या व्याहृति सहित हवन करें।

॥१॥ ॐ ब्रह्मणे ॥२॥ ॐ सोमाय ॥३॥ ॐ ईशानाय ॥४॥ ॐ इंद्राय ॥५॥ ॐ अग्नये ॥६॥ ॐ यमाय ॥७॥ ॐ नैर्ऋतये ॥८॥ ॐ वरुणाय ॥९॥ ॐ वायवे ॥१०॥ ॐ अष्टवसुभ्य: ॥११॥ ॐ एकादशरुद्रेभ्य: ॥१२॥ ॐ द्वादशादित्येभ्य: ॥१३॥ ॐ अश्विनिभ्यां ॥१४॥ ॐ विश्वेदेवेभ्य: ॥१५॥ ॐ पितृभ्य: स्वधा ॥१६॥ ॐ यक्षेभ्य: ॥१७॥ ॐ भूतनागेभ्य:

॥१८॥ ॐ सर्पेभ्य: ॥१९॥ ॐ गंधर्वेभ्य: ॥२०॥ ॐ अप्सरोभ्य ॥२१॥ ॐ स्कंदाय. ॥२२॥ ॐ नन्दीश्वराय. ॥२३॥ ॐ शूलमहाकालाभ्यां ॥२४॥ ॐ प्रजापतिभ्य: ॥२५॥ ॐ दुर्गायै. ॥२६॥ ॐ विष्णवे. ॥२७॥ ॐ पितृभ्य: स्वधा ॥२८॥ ॐ मृत्युरोगेभ्य: ॥२९॥ ॐ गणपतये.॥३०॥ ॐ अद्भ्य: ॥३१॥ ॐ मरुद्भ्य: ॥३२॥ ॐ पृथिव्यै. ॥३३॥ ॐ सरिद्भ्य: ॥३४॥ ॐ सप्तसागरेभ्य: ॥३५॥ ॐ मेरवे.॥

आयुध होम विषय में सामान्यतया तिल व आज्य की आहुति सभी देवताओं केसमान व सभी हवन कुण्डों में करते है। वैसे प्रत्येक देवता की ८ आहुतियां है इनकी भी ८ होगी। आठ आहुतियों का विधान पंचकुण्डी व नवकुण्डी यज्ञ में हम

- पहिले मयूष मत के अनुसार लिख चुके है। परन्तु ऐसा करते नहीं है सभी कुण्डों में आहुतियां देते है जिससे ५ व ९ आहुतियां होती है दूसरी आवृति करेंगें तो १० या १८ आहुतियां होगी

इसी तरह आयुध होम की ८ आहुतियां आचार्य कर्तृक मानी गयी है अर्थात् ऋत्विक कर्तृक नहीं है। अर्थात केवल घी की आहुति होगी तिलादि की नहीं । (प्रतिष्ठा मयुख)

कहीं यह मत है कि पंचकुंडी पक्ष में यह होम आचार्य कुंड में करे अन्य कुण्डों के होता बैठे रहें या केवल घी की आहुति देवें।

अंग होम विषय में भी "**प्रतिष्ठा मयुख**" में होम आचार्य कर्तृक माना है। **ऋत्विक कर्तृक नहीं**। पंचकुण्डी में अंग हवन में - **पूर्वकुण्ड में हृदयाय स्वाहा**। दक्षिण कुण्ड में - **शिरसे स्वाहा**। पश्चिम कुण्ड में - **शिखायै वषट् स्वाहा**। उत्तर कुण्ड में - **कवचाय हुँ स्वाहा**। आचार्य कुण्ड में - **नेत्रत्रयाय वौषट्**। पूर्व कुण्ड में पुनः **अस्त्राय फट् स्वाहा**।

तथा प्रत्येक अंग होम में २० बार घृत से हवन करें।

॥३६॥ ॐ गदायै स्वाहा ॥३७॥ ॐ त्रिशूलाय स्वाहा ॥३८॥ ॐ वज्राय स्वाहा ॥३९॥ ॐ शक्त्यै स्वाहा ॥४०॥ ॐ दण्डायै स्वाहा ॥४१॥ ॐ खड्गाय. ॥४२॥ ॐ पाशाय. ॥४३॥ ॐ अंकुशाय.

अब तिलादि से आहुती देवे **॥४४॥ ॐ गौतमाय ॥४५॥ ॐ भारतद्वाजाय ॥४६॥ ॐ विश्वामित्राय ॥४७॥ ॐ कश्यपाय ॥४८॥ ॐ जमदग्नेये ॥४९॥ ॐ वशिष्ठाय ॥५०॥ ॐ अत्रये ॥५१॥ ॐ अरुन्धत्यै ॥५२॥ ॐ ऐन्द्र्यै ॥५३॥ ॐ कौमार्यै ॥५४॥ ॐ ब्राह्मयै ॥५५॥ ॐ वाराह्यै ॥५६॥ ॐ चामुण्डायै ॥५७॥ ॐ वैष्णव्यै ॥५८॥ ॐ माहेश्वर्य्यै ॥५९॥ ॐ वैनायक्यै स्वाहा ॥६०॥ ॐ इंद्रादिलोकपालेभ्यः स्वाहा॥**

जल छोड़ें - **अनेन होमेन सर्वतोभद्र देवताः प्रीयन्ताम न मम॥**

॥ अथ १८ रेखात्मक चतुर्लिङ्गतोभद्र देवानां होमः॥

प्रत्येक नाम मंत्र से पहले ॐ अथवा व्याहृति व नाम के बाद "**स्वाहा**" का उच्चारण करते हुये हवन करे। अस्त्र का होम आचार्य कुण्ड में अन्य कुण्डों में घृत आहुति से होगा।

॥१॥ **वीरभद्राय** ॥२॥ **शंभवे** ॥३॥ **अजैकपदे** ॥४॥ **अहिर्बुध्न्याय** ॥५॥ **पिनाकिने** ॥६॥ **शूलपाणये** ॥७॥ **भुवनाधीश्वराय** ॥८॥ **कपालिने** ॥९॥ **दिकपतये** ॥१०॥ **रुद्राय** ॥११॥ **शिवाय** ॥१२॥ **महेश्वराय।**

॥१३॥ **असितांग भैरवाय** ॥१४॥ **रुरु भैरवाय** ॥१५॥ **चण्डभैरवाय** ॥१६॥ **क्रोधभैरवाय** ॥१७॥ **उन्मत्त भैरवाय** ॥१८॥ **कपाल भैरवाय** ॥१९॥ **भीषण भैरवाय** ॥२०॥ **संहार भैरवाय** ॥२१॥ **भवाय** ॥२२॥ **शर्वाय** ॥२३॥ **रुद्राय** ॥२४॥ **पशुपतये** ॥२५॥ **महते** ॥२६॥ **भीमाय** ॥२७॥ **ईशानाय** ॥२८॥ **अनंताय** ॥२९॥ **तक्षकाय** ॥३०॥ **वासुकीये** ॥३१॥ **कुलिशाय** ॥३२॥ **कर्कोटकाय** ॥३३॥ **शंखपालाय** ॥३४॥ **कंबलाय** ॥३५॥ **अश्वतराय** ॥३६॥ **शूलिने** ॥३७॥ **चन्द्रमौलिने** ॥३८॥ **चन्द्रमसे** ॥३९॥ **वृषभध्वजाय** ॥४०॥ **त्रिलोचनाय** ॥४१॥ **शक्तिधराय** ॥४२॥ **महेश्वराय** ॥४३॥ **शूलधारिणे** ॥४४॥ **स्थाणवे** ॥४५॥ **ब्रह्मणे** ॥४६॥ **सोमाय** ॥४७॥ **ईशानाय** ॥४८॥ **इंद्राय** ॥४९॥ **अग्नियें** ॥५०॥ **यमाय** ॥५१॥ **निर्ऋतये** ॥५२॥ **वरुणाय** ॥५३॥ **वायवे** ॥५४॥ **अष्टवसुभ्यो** ॥५५॥ **एकादशरुद्रभ्यो** ॥५६॥ **द्वादशादित्येभ्यो** ॥५७॥ **अश्विभ्यां** ॥५८॥ **विश्वेभ्यो देवेभ्यो** ॥५९॥ **सप्तयक्षेभ्यो** ॥६०॥ **भूतनागेभ्यो** ॥६१॥ **गंधर्वाप्सरोभ्यो।**

॥६२॥ **स्कंदाय** ॥६३॥ **नंदीश्वराय** ॥६४॥ **शूलमहाकालाय** ॥६५॥ **दक्षादिसप्तकाय** ॥६६॥ **दुर्गायै** ॥६७॥ **विष्णवे** ॥६८॥ **स्वधायै** ॥६९॥ **मृत्युरोगाभ्यां** ॥७०॥ **गणपतये** ॥७१॥ **अद्भ्यो** ॥७२॥ **मरुद्भ्यो** ॥७३॥ **पृथिव्यै** ॥७४॥ **गंगादिनदीभ्यो** ॥७५॥ **सप्तसागरेभ्यो** ॥७६॥ **मेरवे** ॥७७॥ **सद्योजाताय** ॥७८॥ **वामदेवाय** ॥७९॥ **अघोराय** ॥८०॥ **तत्पुरुषाय** ॥८१॥ **ईशानाय** ॥८२॥ **परिधवे** ॥८३॥ **चतुःपुरीभ्यो** ॥८४॥ **ऋग्वेदाय** ॥८५॥ **यजुर्वेदाय** ॥८६॥ **सामवेदाय** ॥८७॥ **अथर्ववेदाय स्वाहा**

॥८८॥ **भवाय** ॥८९॥ **शर्वाय** ॥९०॥ **पशुपतये** ॥९१॥ **ईशानाय** ॥९२॥ **उग्राय** ॥९३॥ **रुद्राय** ॥९४॥ **भीमाय** ॥९५॥ **महते** ॥९६॥ **भवान्यै** ॥९७॥ **शर्वाण्यै**

॥९८॥ **पशुपत्यै** ॥९९॥ **ईशानाय** ॥१००॥ **उग्राय** ॥१०१॥ **रुद्राण्यै** ॥१०२॥ **भीमाय.** ॥१०३॥ **महत्यै.** ॥१०४॥ **पृथिवी तत्वाय.** ॥१०५॥ **जलतत्वाय** ॥१०६॥ **तेजस्तत्वाय** ॥१०७॥ **वायुतत्वाय** ॥१०८॥ **आकाशतत्वाय** ॥१०९॥ **गदायै** ॥११०॥ **त्रिशूलायै** ॥१११॥ **वज्राय** ॥११२॥ **शक्त्यै** ॥११३॥ **दण्डाय** ॥११४॥ **खड्गाय** ॥११५॥ **पाशाय** ॥११६॥ **अंकुशाय।**

॥११७॥ **गौतमाय** ॥११८॥ **भारद्वाजाय** ॥११९॥ **विश्वामित्राय** ॥१२०॥ **कश्यपाय** ॥१२१॥ **जमदग्नये** ॥१२२॥ **वशिष्ठाय** ॥१२३॥ **अत्र्ये** ॥१२४॥ **अरुन्धत्यै** ॥१२५॥ **ऐन्द्र्यै** ॥१२६॥ **कौमार्यै** ॥१२७॥ **ब्राह्म्यै** ॥१२८॥ **वाराह्यै** ॥१२९॥ **चामुण्डायै** ॥१३०॥ **वैष्णव्यै** ॥१३१॥ **माहेश्वर्यै** ॥१३२॥ **विनायिक्यै।**

इसके बाद प्रधान की आहुतियां दिलायें।

अनेन हवनेन श्रीचतुर्लिंगतोभद्र देवाताः प्रीयन्ताम् न मम।

॥ अथ चतुष्षष्टि योगिनी होमः॥

प्रत्येक नाम मंत्र से पहले **ॐ या व्याहृति** व नाम के बाद **"स्वाहा"** का उच्चारण करते हुये हवन करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाकाल्यै स्वाहा इदं महाकाल्यै न मम ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै स्वाहा इदं महालक्ष्म्यै न मम ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः महासरस्वत्यै स्वाहा इदं महासरस्वत्यै न मम ॥

॥१॥ **ॐ गजाननायै स्वाहा** ॥२॥ **सिंहमुख्यै** ॥३॥ **गृध्रास्यायै** ॥४॥ **काकतुण्डै** ॥५॥ **उष्ट्रग्रीवाय** ॥६॥ **हयग्रीवायै** ॥७॥ **वाराह्यै** ॥८॥ **शरभाननायै** ॥९॥ **उलूकिकायै** ॥१०॥ **शिवारावायै** ॥११॥ **मयूर्यै** ॥१२॥ **विकटाननायै** ॥१३॥ **अष्टवक्रायै** ॥१४॥ **कोटराक्ष्यै** ॥१५॥ **कुब्जायै** ॥१६॥ **विकटलोचनायै** ॥१७॥ **शुष्कोदर्यै** ॥१८॥ **लल्लज्जिह्वायै** ॥१९॥ **अश्वद्रंष्ट्रायै** ॥२०॥ **वानराननायै** ॥२१॥ **रुक्षाक्ष्यै** ॥२२॥ **केकराक्ष्यै** ॥२३॥ **बृहत्तुण्डायै** ॥२४॥ **सुराप्रियायै** ॥२५॥ **कपालहस्तायै** ॥२६॥ **रक्ताक्ष्यै** ॥२७॥ **शुक्यै** ॥२८॥ **श्येन्यै** ॥२९॥ **कपोतिकायै** ॥३०॥ **पाशहस्तायै** ॥३१॥ **दण्डहस्ताय** ॥३२॥ **प्रचण्डायै** ॥३३॥ **चण्डविक्रमाय** ॥३४॥ **शिशुघ्न्यै** ॥३५॥ **पापहन्त्र्यै** ॥३६॥ **काल्यै** ॥३७॥ **रुधिरपायन्यै** ॥३८॥ **वसाधयायै** ॥३९॥ **गर्भभक्षकायै** ॥४०॥ **शवहस्तायै** ॥४१॥ **आन्त्रमालिन्यै** ॥४२॥ **स्थूलकेश्यै** ॥४३॥ **वृहत्कुक्ष्यै** ॥४४॥ **सर्पास्यायै** ॥४५॥ **प्रेतवाहनायै** ॥४६॥ **दन्दशू-ककरायै** ॥४७॥ **क्रौञ्च्यै** ॥४८॥

मृगशीर्षायै ।।४९।।वृषाननायै।।५०।।व्यात्तास्यायै ।।५१।।धूमनिश्वासायै ।।५२।। व्योमचरणोर्ध्वदृशे ।।५३।। तापिन्यै ।।५४।। शोषणीदृष्ट्यै ।।५५।। कोटर्यै ।।५६।। स्थूलनासिकायै ।।५७।। विद्युतप्रभायै ।।५८।। बलाकास्यायै ।।५९।। मार्जायै ।।६०।। कटपूतनायै ।।६१।। अट्टाट्टहासायै ।।६२।। कामाक्ष्यै।।६३।। मृगाक्ष्यै ।।६४।। मृगलोचनायै।

ॐ ह्रीं सर्वार्थसिद्धिदात्रि योगिन्यै स्वाहा।

जल छाड़ें - अनेन हवनेन श्रीचतुषष्ठी योगिनी देवता प्रीयनताम् नमम।

।। अथ एकपञ्चाशत् क्षेत्रपाल होम:।।

ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं स्वाहा। इदं बटुकाय न मम।

१. ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षौं क्षः क्षेत्रपालाय स्वाहा। इदं क्षेत्रपालाय न मम।

प्रत्येक नाम मंत्र से पहले ॐ अथवा व्याहृति व नाम के बाद ''स्वाहा'' का उच्चारण करते हुये हवन करे।

(२) अजराय (३) व्यापकाय (४) इंद्रचौराय (५) इंद्रमूर्तये (६) उक्षाय (७) कुष्माण्डाय (८) वरुणाय (९) बटुकाय (१०) विमुक्ताय (११) लिप्तकाय (१२) लीलाकाय (१३) एकद्रंष्ट्राय (१४) ऐरावताय (१५) ओषधिघ्राय (१६) बंधनाय (१७) दिव्यकायाय (१८) कंबलाय (१९) भीषणाय (२०) गवयाय (२१) घण्टाय (२२) व्यालाय (२३) अणवे (२४) चन्द्रवारुणाय (२५) पटाटोपाय (२६) जटालाय (२७) क्रतवे (२८) घंटेश्वराय (२९) विटङ्काय (३०) मणिमानाय (३१) गणबन्धवे (३१) डामराय (३३) ढुण्डिकार्णाय (३४) स्थविराय (३५) दन्तुराय (३६)धनदाय (३७) नागकर्णाय (३८) महाबलाय (३९) फेतकराय (४०) चीत्काराय (४१) सिंहाय (४२) मृगाय (४३) यक्षाय (४४) मेघवाहनाय (४५) तीक्ष्णोष्ठाय (४६) अनलाय (४७) शुक्लतुण्डाय (४८) सुधापालाय (४९) बर्बरकाय (५०) पवनाय (५१) पावनाय स्वाहा

जल छाड़ें - अनेन् हवनेन् श्रीपंचाशत क्षेत्रपाल देवता प्रीयनताम् नमम।

॥ अथ नाग देवता होमः॥

१. सर्प पीठ में जिन जिन देवताओं की पूजा की है उन सभी के नाम से आहुतियाँ देवें।

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु ।

ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यो सर्पेभ्यो नमः। स्वाहा॥

इदं सर्पेभ्यो न मम।

२. नवनाग का नाम सहित हवन करें।

ॐ अनन्ताय स्वाहा। ॐ शेषाय स्वाहा। ॐ वासुकये स्वाहा। ॐ शङ्खाय स्वाहा। ॐ पद्माय स्वाहा। ॐ कंबलाय स्वाहा। ॐ कर्कोटकाय स्वाहा। ॐ तक्षकाय स्वाहा। ॐ शङ्खपालाय स्वाहा। ॐ कालीया स्वाहा। ॐ अश्वतराय स्वाहा। ॐ धृतराष्ट्राय स्वाहा। ॐ कपिलाय स्वाहा।

नागशक्तियों का हवन करें - **ॐ जरत्कारवै स्वाहा। ॐ जगद्गौर्यै स्वाहा। ॐ मनसायै स्वाहा। ॐ सिद्धियोगिन्यै स्वाहा। ॐ वैष्णव्यै स्वाहा। ॐ नागभामिन्यै स्वाहा। ॐ शैव्यै स्वाहा। ॐ नागेश्वर्यै स्वाहा। ॐ जरत्कारुप्रियायै स्वाहा। ॐ आस्तीकमातायै स्वाहा। ॐ विषहरायै स्वाहा। ॐ महाज्ञानयुतायै स्वाहा।**

३. **सर्प सहस्त्र नामावलि** से होम करें। अथवा सर्प मन्त्र के जप करायें हो तो उनका दशांश होम करें। पृष्ठ संख्या २१५ पर अवलोकन करें।

४. राहु मन्त्र जप कराये हो तो उनका दशांश होम करें अथवा **राहु-केतु की १०८ नामावलि** से स्वाहा लगाकर होम करें।

५. **मृत्युञ्जय** जप कराये हो तो उनका दशांश होम करें।

६. **काल, मृत्यु एवं व्याधि** की आहुतियाँ देवें -

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि ।
समापो अद्भिरग्मत समोषधी भिरोषधीः॥

ॐ कालाय स्वाहा। इदं कालाय न मम।

ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे देवस्त्वा सविता मध्वानवतु पृथिव्याः स ठं स्पृशस्याहि अर्चिरसि शोचिरसि तपोसि।

ॐ यमाय स्वाहा। इदं यमाय न मम।

ॐ चित्रोवसो स्वस्तिते पारमशीय।

ॐ चित्रगुप्ताय स्वाहा। इदं चित्रगुप्ताय न मम। (सभी नामावली के साथ इदं न मम उच्चारण करें) ॐ मृतवे स्वाहा। ॐ अन्तकायत्र स्वाहा। ॐ ववस्वताय स्वाहा। ॐ सर्वभूतक्षयाय स्वाहा। ॐ औदुम्बराय स्वाहा। ॐ दघ्नाय स्वाहा। ॐ नीलाय स्वाहा। ॐ परमेष्ठिने स्वाहा। ॐ वृकोदराय स्वाहा।

७. गरुड होमः

ॐ सुपर्णोसि गुरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरोगायत्रं चक्षुर्बृहद्रथंतरे पक्षौ। स्तोम आत्माछन्दा ऽस्यंगानियजू ठं षि नाम साम ते तनूर्वामदेव्यं यज्ञा यज्ञियं पुष्छंधिष्ण्याः शफाः सुपर्णोसिगरुत्मान् दिनङ्गच्छस्वः पत।

ॐ सुपर्णाय स्वाहा। इदं सुपर्णाय न मम।

॥ अथ पूर्णाहुति क्रमः॥

गुग्गलुहोमः- गुग्गुल व जायफल से विघ्न निवारण व मृत्युंजय मंत्र से गुग्गल आहुति लिखी है, परन्तु मृयुञ्जय को जायफल प्रिय है। अतः जायफल से मृत्युंजय की आहुति देवें। कहीं कहीं पिशाच बाधा निवारण हेतु देते है।

शत्रुनाश हेतु सरसों तथा रोगनाशहेतु कालीमिर्च का हवन करें। लक्ष्मी प्राप्ति हेतु मावा, क्षीरान्न से श्रीसूक्त कर आहुतियाँ देवें।

ॐ अद्यपूर्वोच्च - तिथि-मम गृहे भूतप्रेत पिशाच दोष परिहार्थ- ॐ जातवेदसे मंत्रेण गुग्गलु होम करिष्ये।

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातियतो निदहातिवेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिंधु दुरितात्यग्निः॥

जातिफलेनहोमः :-**ॐ अद्यपूर्वोच्च - तिथौ मम सकुम्बस्य सपरिवारकस्य आयुरारोग्यादि वृद्ध्यर्थे श्रीमृत्युंजय देवता प्रीत्यर्थे हवने विनियोग।**

ॐ त्र्यंबकं यजामहे - मंत्रेण हवनं कृत्वा। (जायफल)

सर्षपहोमः - **अद्यपूर्वोच्च - तिथौ मम गृहे सर्वारिष्ट परिहार्थ सर्व शत्रुक्षयार्थे सर्षप होममहं करिष्ये।**

ॐ सजोषाऽइंद्र सगणो मरुद्भिः सोमम्पिव वृत्रहा शूर विद्वान्।
जहि शत्रूँ ३ऽरपमृधो नुद स्वाथाभयङ्कृणुहि विश्वतोनः स्वाहा॥

मरीचिहोमः - **अद्यपूर्वोच्च - तिथौ मम शत्रु क्षयार्थे मरीचि होम महं करिष्ये।**

ॐ सर्वाबाधा प्रशमनं.......इति मंत्रेण।

रोग निवारण हेतु 'रोगान शेषान्' मंत्र से सर्षप होम करे

लक्ष्मीहोमः- लक्ष्मी हवन के लिये क्षीर, दूर्वा, दाडिम, सीताफल, मधु, शर्करा शमीपत्र, बिल्वपत्र, तंदुल, कदलीफल, आज्य सहति यथा उपलब्ध द्रव्यों के मिश्रण से हवन करे। श्रीसूक्त से हवन करें।

अगर दूर्वांकुर अधिक मात्रा में सुखाकर रखी हो तो समिद् के रूप में काम आ सकती है। दुर्वांकुर अधिक ठीक है, दुर्वा होम से आयुवृद्धि होती है।

अतः दुर्वा समिद्, क्षीर, आज्य से ३ होता हवन करें घी से हवन करे।

व्याहृतिहोम – यजमानः हस्ते जलमादाय। अद्यपूर्वोच्च-तिथौ अस्मिन् याख्ये कर्मणि देशतः कालस्तन्त्रतो मंत्रवाज्ञानतोऽज्ञानतोवा अयथाकरण-न्यूनकरण चतुर्विध कर्मातिरिक्तकरण भेषजात प्रत्यवाय परिहार द्वारा कर्मसाद्‌गुण्य सिद्ध्ये तथा प्रधान देवताश्चमध्ये गमने होम स्वाहा-कारयो पूर्वापराभावे अग्नि मध्ये हविर्गत कीटाद्युपघाते समिच्चरु तिलाज्य मध्ये कृमि कीटकादि संयोगे केशादिभिर्हव होमे पठन समये स्वरवर्णादि विस्मृतौ ज्ञाताज्ञात दोष परिहारार्थं घृताक्ततिल द्रव्येण व्यस्त समस्त व्याहृत्त्या अष्टोत्तरशतैरष्टाविंशतिराहुतिभिर्वा होम चाहं करिष्ये।

पुनर्जलमादाय - भूर्भुवः स्वरिति तिसृणां महाव्याहृत्तीनां प्रजापतिर्ऋषिः गायत्र्युष्णिनुष्टप्छन्दासि अग्नि वायु सूर्या देवताः सर्वासां वा प्रजापतिर्देवता प्रायश्चित्त होम विनियोगः।

(१) ॐ भूः स्वाहा (२) ॐ भुवः स्वाहा (३) ॐ स्वः स्वाहा (४) ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। (एवं सप्तवारं होमे अष्टाविंशत्या हुतयो भवन्ति)

॥ अथ स्विष्टकृत होमः॥

ॐ यदस्य कर्मणो ऽत्यरीरिचं यद्वान्युनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद्विद्यात् सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। ॐ अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्व प्रायश्चित्ताहुतिनां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान् समर्द्धय

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम। उदकोपस्पर्शः॥

अथ नवाहुति होमः :- (ब्रह्मणा अन्वारब्धः)

(१) ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये न मम (२) ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे न मम (३) ॐ स्वः स्वाहा । इदं सूर्याय न मम। (४) ॐ त्वन्नो अग्ने ॐ अग्निवरुणाभ्यां स्वाहा। इदं अग्निवरुणाभ्यां न मम (५) ॐ सत्वन्नो ॐ अग्निवरुणाभ्यां स्वाहा। इदं अग्निवरुणाभ्यां न मम (६) ॐ अयाश्चाग्ने ॐ अग्नयेऽयसे स्वाहा। इदं अग्निभेषजाय न मम (७) ॐ ये ते शतं वरुण ॐ वरुणादिभ्य स्वाहा। इदं वरुणाय, सवित्रे, विष्णवे, विश्वेभ्यो, मरुद्भ्यः स्वर्केभ्य(८) ॐ उदुत्तमं वरुण ॐ वरुणादितिभ्यः स्वाहा। इदं वरुणायादित्यादितये इदं न मम। (९) (मनसा) - ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।

॥ अथ बलिदान प्रयोगः॥

विनियोगः – (हस्ते जलमादाय) **अस्मिन् हवनाख्यकर्मणः साङ्गता सिद्ध्यर्थं दिक्पाल देवतानां, स्थापितदेवतानां पूजनं पूर्वकं बलिदानं करिष्ये।**

(१) यज्ञ वेदी के पास दशों दिशाओं में, पात्र में या दीपक में या ताम्बूलपत्रादि पर दधिमाष, चावल, पुष्प, बलि रखें। सिन्दूर से चर्चित करें, वर्ति रखें प्रज्वलित करें। इसी तरह सब मंडलों के आगे बलि रखें।

ब्रह्मादि देवताओं के लिये प्रतिष्ठाभास्कर व रुद्रकल्पद्रुम, प्रतिष्ठामयूख में पायस बलि का विधान लिखा है। परंन्तु आजकल बलि की उपेक्षा कर देते है।

(२) दिक्पाल देवता बलिदान – सभी देवताओं के नाम मंत्र या वैदिक मंत्रों से पूजन करें। **अमुक अमुक देवताया बलिद्रव्याय नमः।**

पूर्वादि क्रमेण कुण्ड की दशों दिशाओं में हाथ में जल लें लेवें और **अनामिका व अंगुष्ठ के संयोग से जल छोड़ें।** (प्रत्येक बलि पर)

पूर्वे – **ॐ इंद्राय सांगाय सपरिवाराय सवाहनाय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाष भक्त बलिं समर्पयामि।** (हाथ में गंधाक्षत पुष्प लेकर) **भो इंद्र स अनुचरेभ्यो नमः। दिशं रक्ष बलिं भक्षय मम सकुटुम्बस्याभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता, क्षेमकर्ता, शांतिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता, निर्विघ्नकर्ता वरदो भव।** (इस विधी से सर्वत्र करें)

आग्नेयां – **अग्नि सांगं. सप. सवा. नमः। भो अग्ने. अग्नेरनुचरेभ्यो दिशं रक्ष...॥**

दक्षिणस्यां – **यमाय नमः, यमाचनुरेभ्यो नमः। भो यम दिशं रक्ष...।**

नैऋत्यां – **नैर्ऋतये नमः, नैऋतेरनुचरेभ्यो नमः। भो नैऋते दिशं रक्ष..।**

पश्चिमायां – **वरुणाय नमः, वरुणस्यानुचरेभ्यो नमः। भो वरुण दिशं रक्ष...।**

वायव्यां – **वायवे नमः, वायोनुचरेभ्यो नमः। भो वायो दिशं रक्ष...।**

उत्तरस्यां – **कुबेराय नमः, कुबेरानुचरेभ्यो नमः। भो कुबेर दिशं रक्ष...।**

ऐशान्यामीश्वराय नमः, ईश्वरानुचरेभ्यो नमः। भो ईश्वर दिशं रक्ष...।

पूर्व ईशानमध्ये – **ब्रह्मणे नमः, ब्रह्मोनुचरेभ्यो नमः। भो ब्रह्म दिशं रक्ष...।**

पश्चिम निर्ऋति मध्ये - विष्णवे नमः, विष्णोनुचरेभ्यो नमः। भो विष्णो दिशं रक्ष...।

गणेश बलिं - गणपतिं सांग सप. नमः। भो गणपते दिशं रक्ष...।

मातृका बलिं - वसोर्द्धारा सहित सगणेश गौर्याद्यावाहित मातृभ्यः साङ्ग. सप. सश. नमः। एतेभ्यो सर्वेभ्यो मातृभ्यो इमं बलिं गृहित मम सकुटुम्बस्याभ्युदयं कुरु आयुकर्ता तुष्टि...।

ग्रहबलिं - भो भो आदित्याद्यावाहित देवताः इमं बलि गृहित मम सकुटुम्बस्या.....॥

ग्रह बलिम् - सूर्याय गुडौदनम्। सोमायघृतपायसम्। कुजाय मसून्नम्। बुधाय क्षीरौदनम्। बृहस्पतये दध्योदनम् शुक्राय घृतौदनम्। शनैश्चराय तिला पिष्टं कृच्छान्ना वा। राहवे पायसम। केतवे चित्रौदनम्। अन्येभ्य पायस बलीन्दद्यात्।

वास्तु बलिं - भो वास्तुपुरुषाद्यावाहित देवताः इमं बलिं गृहीत मम सकुटुम्बस्य सप. आयुकर्ता पुष्टि....।

योगिनी बलिं - भो चतुषष्टियोगिन्यै नमः इमं बलिं गृहीत मम सकुटुम्बस्य सप. आयुकर्ता पुष्टि....।

॥ क्षेत्रपाल बलिं ॥

हस्तेजलमादाय-यद्याख्य हवन कर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं क्षेत्रपालाय पूजन पूर्वकं बलिदानं करिष्ये।

एक बड़े मृतिका पात्र को लेकर प्रोक्षण करें उसमें सिन्दूर से त्रिकोण षट्कोण बनायें बलिद्रव्य रखें। चौमुखा बनायें दीप प्रजवलित करें। सुपारी रखें उस पर क्षेत्रपाल का आवाहन करें पूजन करें बलि द्रव्य संस्थाप्य करें।

प्रार्थना - ॐ नमामि क्षेत्रपाल त्वां भूतप्रेतगणाधिप। पूजां बलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा॥ आयुरारोग्यम्मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा। मां विघ्नं माऽस्तु मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः॥ सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः॥

यं यं यं यक्षरूपं दशशिव वदनं भूमिकम्पायमानं। सं सं सं संहार मूर्ति शिर मुकुट जटा शेखरं चन्द्रबिम्बम्॥ दं दं दं दीर्घकेशं विकृत नखमुखं चोर्ध्वरेखाकपालं। पं पं पं पापनाशो प्रणतपशुपतिं भैरवं क्षेत्रपालं॥ ॐ नमः

क्षेत्रपाल चित्र तुरङ्गवाहन सर्वभूत प्रेत पिशाच शाकिनी डाकिनी बेतालादि परिवृत दध्योदन प्रिय सकल शक्तिसहित इमां पूजां गृहाण।

कौलीरे चित्रकूटे हिमगिरिशिखरे कान्त जालन्धरे वा। सौराष्ट्रे सिन्धुदेशे मगधपुरवरे कौसले वा कलिंगे। कर्णाटेकौंकणे वा भृगुषु पुरवरे कान्यकुब्जे स्थिता वा। ते सर्वे यज्ञ रक्षां करण कृतिधियः पान्तु वः क्षेत्रपालाः।

ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं ॐ।

पुनः प्रार्थना करे – **ॐ क्षेत्रपालाय शाकिनी डाकिनी भूतप्रेत बैताल पिशाच सहिताय इमं बलिं समर्पयामि।**

भोः क्षेत्रपाल दिशं रक्ष बलिं भक्षय मम यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदोभव॥

अब पात्र को उठाकर यजमान की ओर ७ बार आवृत्त कर बिना पीछे मुड़े बाहर पात्र को चौराहे पर रखावें और उसके पीछे एक ब्राह्मण द्वार तक जल के छींटें देवें शांति पाठ करें। पात्र रखकर आनेवाला हाथ पैर धोकर आवे।

रुद्रकलश व ब्रह्मा बलिं – इनके पायस बलि प्रदान करे।

भो रुद्रकलश देवेभ्यो दिशं रक्षं बलिं भक्षय मम सकुटुम्बस्य आयुकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदा भव॥

भो ब्रह्मादि देवेभ्यो दिशं रक्ष बलिं भक्षय मम सकुटुम्बस्य आयुकर्ता तुष्टिकता पुष्टिकर्ता वरदा भव॥॥

प्रधान बलिं – रुद्र विष्णु दुर्गादि मंडलों पर पायस बलि देवें। दुर्गा होमविशेष में कुष्माण्ड बलि देवे।

शत्रु की माषपिष्ठी से आकृति बनायें। गेहूं या मेदे के आटे से पशु आकृति तेल में पकाकर बनायें व उसको लाल रंग की शक्कर की चासनी में डुबोकर तैयार करें। या कुष्माण्ड पर सिन्दूर से मुख आदि आकृति बनायें। पात्र में ढककर लायें। वस्त्र हटा लें, स्मरण रहे देवी के सामने रखते समय बलि से पहले अंग भंग नहीं होना चाहिये अन्यथा अनिष्ट हो जायेगा।

॥ अथ पूर्णाहुतिहोम:॥

पूर्णाहुति में मृडनाम की अग्नि का पूजन होता है पहले नहीं किया हो तो इस समय करें। **ॐ मृडानाम्ने वैश्वानराय नमः॥ इति मंत्रेण॥** पूर्णाहुति से पहले स्रुव, स्रुक को तपाये, कुशाओं से मार्जन करें। प्रणीता के जल से प्रोक्षण करें पुनः तपायें।

विनियोग – अद्य पूर्वोच्चारित तिथौ कृतस्य इदं यज्ञ हवनाख्यस्य संपूर्णता सिद्धयर्थं वसोर्द्धारा समन्वित पूर्णाहुति होमं चाहं करिष्ये।

अब स्रुक में स्रुव से चार बार घी भरें उस पर नारिकेल में छेद करके रखें उसमें घी भरें तथा लाल वस्त्र लपेटें, मोलि बांधें, सुपारी रखें एवं स्रुव को उल्टा रखें। स्रुक को बायें हाथ में व स्रुव को दाहिने हाथ में पकड़ें। **उनमें मरुद्गणों** का पूजन करें। **ॐ एकोनपंचाशन्मरुद्गणेभ्यो नमः।** गंध, अक्षत, पुष्प माला आदि से पूजन करें। कहीं कही स्रुक् में घी भरकर उसमें सुपारी रखकर वस्त्र मोली से वेष्ठितकर उस पर नारिकेल रखते है। तिलादि द्रव्य रखें। अवशेष को अन्य होताओं को देवें।

पूर्णाहुति व वसोर्द्धारा के कहीं कहीं १५-१६ व १२-१३ मंत्र में है परन्तु सामान्य क्रम निम्न मंत्रों से पूर्णाहुति करें।

विनियोग – ॐ मूर्द्धानमिति मन्त्रस्य भारतद्वाज ऋषि वैश्वानरोदेवता त्रिष्टुपछंदः पूर्णाहुति होमे विनियोगः।

ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्।
कवि ठं साम्राज्यमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥१॥

ॐ समुद्द्रा दूर्म्मिर्म्मधुमाँ २ ऽउदारदुपा ठं शुनासममृतत्त्वमानट्।
घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वादेवाना ममृतस्य नाभिः ॥२॥

वयन्नाम प्रब्रवामा घृतस्यस्मिन् यज्ञे धारयामानमीभिः।
उपब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुःशृङ्गोवमीदगौर एतत् ॥३॥

एताअर्षन्ति हृद्यात् समुद्राच्छत वज्रा रिपुणानावचक्षे।
घृतस्य धाराअभिचाकशीमि हिरण्ययो वेतसोमध्य आसाम् ॥४॥

ॐ चित्तिं जुहोमि मनसा घृतेन यथा देवा इहागमन्वीति

होत्रा ऋता वृधः । पत्ये विश्वस्य भूमनो जुहोमि विश्कर्मणे विश्वाहा दाभ्य ठं हविः ॥५॥
ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नैव विक्रीणावहा । इषमूर्ज ठं शतक्रतो। पुनस्त्वादित्याः रुद्राः वसवः समिन्धताम् ॥६॥
पुनर्ब्रह्मणो वसुनीथयज्ञैः । घृतेन त्वं तन्वं वर्द्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः सर्व वै पूर्ण ठं स्वाहा ॥७॥

(श्रीफल को यजमान के सम्मुख करते हुये होम देवें)

वसोर्द्धाराहोमः – औदुम्बर की बनी वसोर्द्धारा पर स्रुक काअग्रभाग रखें, आज्यपात्र से स्रुचि में घी ड़ालते हुये वसोर्द्धारा देवें। **(अग्न्युपस्थान के कुछ श्लोक भी वसोर्द्धारा होम के समय बोलते है। श्लोक अगले पृष्ठ पर दिये गये है।)**

ॐ सप्तते अग्ने समिधः सप्तजिह्वाः सप्तऋषयः सप्तधामप्रियाणि सप्तहोताः सप्तधात्वा यजन्ति सप्तयोनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा ॥१॥

शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिमाँश्च। शुक्रश्च ऋतपाश्चात्य ठंहाः ॥२॥

वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्ष्वः स्वाहा ॥३॥

स्त्रुक शेषं पश्चात् रुद्रकलशे त्यजेत्। इममिन्द्राय न मम। आज्य स्थली में जल डाल देवें। अग्नि की प्रदक्षिणा करें। एवं अपने स्थान पश्चिम दिशा में खडें होकर प्रार्थना करें।

त्राहिमां पुण्डरीकाक्ष न जाने परमं पदम्। कालष्वपि च सर्वेषु दिक्षु सर्वासु चाच्युत ॥१॥ अकाल कलुषं चित्तं मम ते पादयोः स्थितम्। कामये विष्णुपादौ तु सर्व जन्मसु केवलम् ॥२॥

स्त्रुवेण भस्मानीय दक्षिणकरानाकमकया गृहीत भस्मना त्र्यायुषं कुर्यात्। त्र्यायुषंजमदग्नेः इति ललाटे ॥

ॐ कश्यपस्यत्र्यायुषमिति ग्रीवायाम्॥**यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिण** बाहुमूले **एवं** वाम बाहूमूले॥ **ॐ तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषमिति–हृदये॥**

यज्ञरुपुरुष की आरती करें। पुष्पांजलि देवें॥ (या अग्नि उपस्थान के बाद आरती करें)

॥ अग्न्युपस्थानम् ॥

(हाथ जोड़कर अग्नि का ध्यान करें)

ॐ इंद्रं दैवीर्विशो मरुतोनुवत्मानोऽभवन् यथेन्द्रंदैवीर्विशो मरुतोनुव र्त्मानोऽभवन। एवभिमं यजमानं दैवीश्चव्विशोमानुषी श्चानुवर्त्मानो भवन्तु ॥१॥

सिंधोरिवप्राद् ध्वने शूघनासी व्वात प्रमियः पतयंतियह्वाः। घृतस्यधारा अरुषोनव्वाजी काष्ठाभिंदन्नर्मिभिः पिन्वमानः ॥२॥

ॐ चत्वारि श्रृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तासो अस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महोदेवोमर्त्यां २ आविवेश ॥३॥

धामंते विश्वं भुवन मधिश्रितमंतः समुद्रेहृद्यंतरायुषि। अपामनीके समिथेयऽ आमृतस्तमस्याम मधुमंतंतऽऊर्मिम् ॥४॥

चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पंचभिरेव च। हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः ॥५॥

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि मन्त्र कर्म क्रिया विधिः।
संपूर्ण कुरु यज्ञेश गार्हपत्य नमोस्तु ते ॥१॥

स्वस्ति श्रद्धां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियं बलम्।
आयुष्य चैवमारोग्यं देहि मे वांछित फलम् ॥२॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रिया दिषु।
न्यूनं संपूर्णतां याति सद्यो वंदे तमच्युतम् ॥३॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वानुसृतस्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि ॥४॥

प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥५॥

ॐ यज्ञ पुरुषाय नमः ॥

ततो होम सङ्कल्पः - ॐ तत्सदद्य तिथौ अमुक गोत्रेणामुकशर्मणा

मया आधारादि पूर्णाहुति पर्यंत यद्यद्द्रव्यं यावद्यावत्संख्या केन येन येन मंत्रेण यया यया कामनाया यस्यै यस्यैदेवतायै हुतं सा सा देवता प्रीयन्ताम्॥ ते देवाः शांतिदाः पुष्टिदास्तुष्टि दा वरदा भवंतु ॥

ततः संस्रवप्राशनं आचमनम् ॥

(प्रोक्षणी में हवन करते समय घी छोड़ा गया था उसको भक्षण करें, आचमन करें या सूँघें एवं प्रोक्षणी पात्र को ईशान दिशा में उल्टा रख दें)

ब्रह्मणोपूर्णपात्र दानम् - (प्रणीतोदकेन संकल्प) कृतस्य हवनाख्य कर्मणः - न्यूनातिरिक्तदोष परिहारार्थं साङ्गता सिद्ध्यर्थं ब्रह्मन् इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणाकं तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

यजमानो वदेत् :- प्रतिगृह्यताम्॥ बह्मा - प्रतिगृह्णामि - ॐ द्यौस्त्वाददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु ॥

इसी तरह से तिल, घृत, शर्करा, तुण्डुलादि से पूर्णपात्र सदक्षिणा ब्राह्मणों को देवें।

ततो ब्रह्मग्रंथि विमोकः॥ अग्नि पश्चात् प्रणीता विमोकः - ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्॥ ॐ सुमित्रिया न आपः ओषधयः सन्तु।

इन मंत्रों से पवित्रयों के द्वारा प्रणीता के जल से यजमान के सिर पर जल छिड़कें -

ॐ दुर्म्मित्रियास्तस्मै संतु योस्मान् द्वेष्टियं च वयं द्विष्मः॥ (इस मंत्र से प्रणीता को ईशान में औंधा करके पवित्रे को अग्नि में डाल देवे। उसके बाद चारों ओर बिछी हुई दर्भा को उसी क्रम में उठाकर घी में भीगोकर होम देवें)

मंत्र -ॐ देवागातु विदोगातुंवित्वागातुमित। मनसस्पत इमं देव यज्ञ ठं स्वाहा वातेधाः स्वाहा ॥

प्रोक्षणी पात्र में से घृत का मुँह में प्रोक्षण कर पात्र को ईशान में उल्टा रख देवें।

॥ यजमानोभिषेक च श्रेयदानम् ॥

अग्नि को ३ बार अर्घ देकर उसी जल से अपने नेत्रों को स्पर्श करें।

नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वंग्नये नमः पृथिव्यै नमः ओषधीभ्यः।
नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे बृहते करोमि ॥

भूयसी दक्षिणा ब्राह्मणों को देवें। क्योंकि पहले पुण्याहवाचन हो चुका है अतः **यजमान पत्नि को वाम भाग में बिठाकर वैदिक या पौराणीक मंत्रो से शिरों पर अभिषेक रुद्रकलश के जल से करें। पावमानसूक्त, शांतिसूक्त पढ़ें।**

(शिरसि) ॐ आपोहिष्ठामयो भुवस्तान उर्ज्जेदधातन महेरणाय चक्षसे ॥१॥ योवः शिवतमोरसस्तस्य भाजयतेहनः। उशीतीरिव मातरः ॥२॥ (भूमौ) तस्मा अरंग मामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ। (शिरसि) आपोजन यथाचनः ॥३॥ देवस्यात्वा सवितुः प्रसेवश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां। सरस्वत्यै वाचौ यन्तुर्यंत्रि येदधामि बृहस्पतेष्ट्वासाम्राजयेना- भिषिञ्चामि ॥४॥ पुनंतु मा देवजनाः पुनंतुमन साधियः। पुनंतुव्विश्वा- भूतानिजातवेदः पुनीहिमा ॥५॥ द्यौ शांतिरिक्ष ठे.... ॥६॥ श्रीर्वर्चस्वमायुष्य मारोग्यमाविधात्पवमानं महिते। धनं धान्यं पशुं पुत्रलाभं शत संवत्सरं दीर्घमायुः ॥७॥

॥ अथ आयुष्यमन्त्राः ॥

आशीर्वाद, कंकण बंधन, रक्षाबंधन, ग्रंथिबंधन आदि निम्न मंत्रों के प्रयोग से करें।

ॐ आयुष्यं वर्चस्य ठे रायस्पोष मौदिद्भदम्।
इदं ठे हिरण्यं वर्चस्वजैत्राया विशतादुमाम ॥१॥

नतदद्रक्षा ठे सि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमज ठे ह्येतत्।
यो विभर्ति दाक्षायण ठे हिरण्य ठे सदेवेषु कृणुते दीर्घमायु ॥२॥

यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्य ठे शतानीकाय सुमनस्यमानाः।
तन्म आबध्नामि शतशारदाया युष्मान जरदष्टिर्यथासम् ॥३॥

दीर्घायुस्त ऽओषधे खनितायस्मै च त्वा खनाम्यहम्।
अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात् ॥४॥

द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्रचतिष्ठत। नेष्ट्रा दृतुभिरिष्यत ॥५॥

द्रविणोदा द्रविण सस्तुरस्य द्रविणोदाः सनरस्य प्रयंसत् ।
द्रविणो दावीर वतीमिषंनो द्रविणो दारासते दीर्घमायुः ॥६॥
नवो नवो भवति जायमानो ह्ला केतुरुष सामेत्यग्रम् ।
भागं देवेभ्यो विदधात्यायन्प्र चन्द्रमास्तिरते दीर्घमायु ॥७॥
उच्चादिवि दक्षिणावन्तो ऽअस्थुर्ये ऽअश्वदाः सहते सूर्येण ।
हिरण्यदाऽ अमृतत्वं भजंते वासोदाः सोमप्रतिरंत आयुः ॥८॥

॥ पौराणिक अभिषेक मन्त्राः ॥

(सर्वेषु शांतिकार्येषु राज्याभिषेकेषु, दीक्षायां)

शक्राद्या देवताः सर्वा ब्रह्मविष्णु महेश्वराः ।
सुरास्त्वामभिषिंचंतु प्रयच्छंतु धनानि च ॥१॥
नारायणो जगन्नाथ स्तथा संकर्षणो विभुः ।
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च ऋद्धिं यच्छंतु ते सदा ॥२॥
इन्द्रो वह्निर्यमश्चैव नैऋतो वरुणस्तथा ।
वायुः कुबेरो रुद्रश्च दिक्पालाः पांतु व सदा ॥३॥
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधो जीवः सितोर्कजः ।
ग्रहास्त्वामभिषिंचंतु राहुः केतुस्तथैव च ॥४॥
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वे देवामरुद्गणाः ।
लोकपालाः प्रयच्छंतु मंगलानि प्रियं यशः ॥५॥
नारदाद्या ऋषिगणाः ये चान्ये च तपोधनाः ।
भवंतु यजमानस्य आशीर्वाद परायणाः ॥६॥
गायत्री चैव सावित्री शची लक्ष्मीः सरस्वती ।
मृडानी मातरः सर्वा भवंतु वरदास्तव ॥७॥
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धाक्रियामतिः ।
बुद्धिर्लज्जावपुः शांतिस्तुष्टिः क्षांतिस्त्रयोदशा ॥८॥

एतास्त्वामभिषिंचंतु देवपत्न्यः समावृताः ।
देवदानवगंधर्वा यक्ष राक्षसपन्नगाः ॥९॥

ऋषयो मानवा गावो देवमातर एव च ।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसांगणाः ॥१०॥

अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च ।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये ॥११॥

सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदान्नदाः ।
एते त्वामभिषिंचंतु सर्वकार्यार्थ सिद्धये ॥१२॥

श्रेयोदानम् - (आशिका देना) ब्राह्मण अक्षत लेकर यजमान पर घुमाकर ईशान कोण में फेंकें। यजमान पूर्वमुख आचार्य उत्तर मुख बैठे।

मंत्रार्थाः सफलासन्तु पूर्णाः सन्तुमनोरथाः ।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्रणामुदयोऽस्तु नः ॥१॥

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यर्वणः ।
ब्रह्मवक्त्रे सदा नित्यं निघ्नंतु तव शात्रवान ॥२॥

(यजमान पर घुमाकर ईशान में फेंकें)

इसके बाद यजमान दोनों हाथों की अंगुलियों को पंजीकृत कर ब्राह्मणों के हाथों से पुष्पाक्षत ग्रहण करें। निम्न मंत्र पढ़ें -

पुष्पाक्षत् हृदय व मस्तक के लगायें पीछें फेंक दें।

अक्षतान् विप्र हस्तात्तु नित्यं गृह्णन्ति ये नराः ।
चत्वारि तेषां वर्धंते आयुः कीर्तियशोबलम् ॥१॥

श्रेयदान - आचार्य सब ब्रह्माणों को वरण में सुपारियां इकट्ठी करें जल अक्षत पुष्प लेवें कहें।

भवन्नियोगेने अस्मिन् यज्ञाख्ये कर्मणि यत्कृतम् मंत्र जाप, दुर्गापाठ, वेदपाठ, यज्ञकर्मणि पाठ आचार्यत्वं तथा च एभिर्ब्राह्मणैः सह यत्कृतं ब्रह्मत्वं गाणपत्यं सादस्यं च यः कृतो होमस्मात् ब्रह्मत्वात् गाणपत्यात् मंत्रजाप दुर्गापाठ वेदपाठ सादस्यात् होमात् यदुत्पन्नं श्रेयं फलम् तत्तुभ्यमहं सम्प्रददे। तेन श्रेयसा त्वं

श्रेयस्वीभव॥

यजमान कहें - (प्रतिगृह्य) भवामि।

दक्षिणादानम् - हस्ते जलमादाय - अद्यपूर्वाच्च तिथौ मया आचरितस्य यज्ञाख्य कर्मणः साङ्गता सिद्धये आचार्यादिवृतेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः पूजन पूर्वकं दक्षिणा प्रदानं करिष्ये।

आचार्यादि के पाद्य अर्घादि प्रदान देवे। **ब्रह्मणों के चरण प्रक्षालन समय में पत्नी वाम भाग में रहें।**

देवविसर्जनम् - यजमान ब्रह्मणों की वंदना कर अग्नि तथा ग्रहों व देवों की प्रदक्षिणा करके वेदी समीप जाकर श्रीफलादि भेंट करें। पुष्प हाथ में लेकर कर कहें-

ॐ समुद्रं गच्छ स्वाहांतरिक्ष गच्छ स्वाहा देव ठं सवितारं गच्छ स्वाहा मित्रा वरुणौ गच्छ स्वाहा ऽहोरात्रे गच्छ स्वाहा छंदा ठं सिगच्छ स्वाहा। द्यावा पृथिवी गच्छ स्वाहा यज्ञं गच्छ स्वाहा सोमं गच्छ स्वाहा। दिव्यं नभोगच्छ स्वाहा ऽग्निं वैश्वानरंगच्छ स्वाहा। मनोमेहार्द्दियच्छ दिवंते धूमोगच्छतु स्व र्ज्योतिः पृथिवीं भस्मनापृण स्वाहा ॥१॥ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयंतस्वे महे। उपप्रयंतुमरुतः सुदानवऽइन्द्र प्राशु र्भवा सचा॥२॥

यांतु देवगणांः सर्वेपूजामादाय याज्ञिकम्। इष्ट कामाना समृद्धयर्थं पुनरागमनाय च ॥३॥

यह पढ़कर सब मंडलों पर अक्षत फेंकें।

ब्राह्मण भोजन, कन्या भोजन, बटुक भोजन करायें। पुत्रवती सुवासिनियों से यजमान की आरती करावें। मंत्रः-

ॐ अनाधृष्टा पुरस्तादग्नेराधिपत्य आयुर्मेदाः पुत्रवती दक्षिणत इन्द्रस्याधिपत्ये प्रजामेदाः। सुषदा पश्चाद्देवस्य सवितुरधिपत्ये चक्षुर्मेदा आश्रुतिरुत्तरतो धातुरधिपत्ये रायष्पोषम्मेदाः।

॥ नाग पूजा विसर्जनम् ॥

कालसर्प दोष शान्ति के कई विधान हैं जिससे जितना हो सके कराये। नाग विसर्जन हेतु सर्प पूजा विशेष है। यदि नाग पीठ मण्डल की यन्त्र पूजा नहीं करें तो शिवलिङ्ग के पास उनका अर्चन अवश्य करें।

नाग एवं नागनी का जोड़ा बनायें। आठ नाग जोड़े शिवलिङ्ग की आठों दिशाओं में रखें तथा एक जोड़ा शिवलिङ्ग के पास में रखें।

आठ जोड़े चान्दी के बनाये हो तो नोवां जोड़ा स्वर्ण का बनायें। स्वर्ण सर्प का पूजन व दान से विशेष फल होता है। आठ जोड़े ताम्बे के बनाये हो तो नोवां जोड़ा रजत का बनायें।

नागपीठ दल बनाया होतो उन सर्पों को अष्ट दल में रखें। अन्यथा शिवलिङ्ग के पास रखें।

नागों की उनके नाम से पूजा करें ञ

उनके ध्यान चित्र प्रधान देवता पीठ पूजन में दिये गये हं। मध्य में अनन्त या कालीया नाग का सपत्निक आवाहन करें।

मध्ये - **ॐ सशक्तिं अनन्ताय नमः।** पूर्वे - **ॐ सशक्तिं शेषाय नमः।** आग्नये - **ॐ सशक्तिं वासुक्यै नमः।** दक्षिणे - **ॐ सशक्तिं तक्षकाय नमः।** नैऋते - **ॐ सशक्तिं कर्कोटकाय नमः।** पश्चिमे - **ॐ सशक्तिं शङ्खपालाय नमः।** वायवे - **ॐ सशक्तिं नीलाय नमः।** उत्तरे - **ॐ सशक्तिं कंबलाय नमः।** ईशाने - **ॐ सशक्तिं महापद्माय नमः।**

रुद्राभिषेकादि कर्म करके सर्प विसर्जन करें -

नागस्तोत्र का पाठ कर स्तुति करें।

वापस आकर शुद्ध होकर शिव का पञ्चोपचार पूजन करें।

ब्राह्मण यजमान का स्वतिवाचन कर अभिषेक करें। कंकण बन्धन करें।

श्रेयदान (ब्राह्मणों द्वारा किये गये कार्यों का दान) यजमान को अर्पण कर पूगीफल पुष्पादि देवें।

॥ कालसर्प शांति अभिषेक मंत्राः ॥

नागयंत्र पर, मृत्युञ्जय मंत्र प्रयोग अथवा अन्य प्रयोग समय प्रधान घट के जल से यजमान पर अभिषेक करे।

प्रत्येक मंत्र के प्रारम्भ में देवता के नाम के साथ जल हाथों पर या मस्तक पर डाले अथवा किसी पात्र में डाले। **"पीड़ा व्यपोहतु"** इस शब्द के आने पर जल दूसरे पात्र में डाले या भूमि पर डाले।

यो सौ वज्रधरो देवः आदित्यानां प्रभुर्मतः ।
सहस्त्रनयनः शक्रो राहु पीड़ां व्यपोहतु ॥१॥
मुखं यः सर्वदेवानां सप्तार्चि रश्मितद्युतिः ।
कालसर्प कृतो दोष तस्य पीड़ां व्यपोहतु ॥२॥
यः कर्मसाक्षी लोकानां धर्मोमहिषवाहनः ।
राहुकाल कृतां पीडां सर्वपीड़ां व्यपोहतु ॥३॥
रक्षोगणाधिपः साक्षान्नीलाञ्जन समप्रभः ।
खड्गहस्तोति भीमश्च ग्रहपीड़ां व्यपोहतु ॥४॥
नागपाशधरो देवः सदा मकर वाहनः ।
सजलाधिपतिर्देवो राहुपीड़ां व्यपोहतु ॥५॥
प्राणरूपोहि लोकानां सदाकृष्णमृगप्रियः ।
कालसर्पोद्भवां पीडां ग्रहपीड़ां व्यपोहतु ॥६॥
यो सौ निधिपतिर्देवः खड्गशूल गदाधरः ।
कालसर्पस्य कलुषं देवः धनदोऽत्र व्योपहतु ॥७॥
यो साविन्दुधरो देवः पिनाकी वृषवाहनः ।
राहुकेतुकृतं दोष स नाशयतु शंकरः ॥८॥

प्रथम पात्र के जल या हाथों के जल से नेत्राभिषेक करे॥ दूसरे अनिष्ट दोष वाले पात्र को बाहर फेंक देवें।

॥ विविध शान्तिपाठ एवं सूक्ताध्याय: ॥

॥ शान्ति पाठ ॥

यह शांतिपाठ यज्ञादि में आचार्यादिवरण समय किया जाता है।

आयु आरोग्य पुत्रादि सुख श्री प्राप्तये मम ।
आपद् विघ्न विनाशाय शत्रु बुद्धि क्षयाय च ॥
विशेष काम्य होमेन सहितं समिधादिभिः ।
आदित्याद्या ग्रहाः सर्वे राहुकेतु पुरः सराः ॥
ग्रह देवाधि देवश्च नक्षत्राणां सु दैवतेः ।
इन्द्रादिभिश्च दिग्पालैर्ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वरः ॥
वास्तु दुर्गा गणेशैश्च क्षेत्रपालादि संयुतै ।
भूम्यंतरिक्ष देवेश्च कुल देव्यैश्च मातृभिः ॥
चतुर्भिश्च वेदेश्च रुद्रेण सहितास्तथा ।
सागरादीप पातालान्यूर्ध्व लोकाः सुरै सह ॥
पर्वता ऋषयः सर्वे गंगाद्या सरितो ध्रुवम् ।
आदित्याद्या ग्रहैर्यज्ञैर्यूयं कर्तुं प्रसीदत ॥
मम क्षेमायुरारोग्यं परम श्री सुखाप्तये ।
स बंधुं सुत भार्यस्य वांछितार्थस्य सिद्धये ॥
आधिव्याधि जरामृत्यु भयशोकापत् हूतये ।
भूतभव्य भविष्येति त्रिविधोत्पातशान्तये ॥
सर्व सौभाग्य संपत्यनिष्पत्यै अस्य कर्मणः ॥

॥ पुरुष सूक्तम् (ऋग्वेदोक्त) ॥

ॐ सहस्त्रशीर्षापुरुष सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् ।
सभूमिं ठ विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम् ॥१॥
पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम् ।

उतामृतत्वस्येशानो यदन्ने नाति रोहति ॥२॥
एतावानस्य महिमा तो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥३॥
त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहा भवत्पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्सा शना नशनेऽअभि ॥४॥
तस्माद्विराड जायत विराजो अधिपूरुषः ।
सजातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरः ॥५॥
यत्पुरुषेण हविषा देवायज्ञ मतन्वत ।
वसंतो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥६॥
तं यज्ञं वर्हिषि प्रोक्षन्पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवाऽअयजंत साध्याऋषयश्चये ॥७॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतंपृषदाज्यम् ।
पशून्तांश्चक्रे वायव्या-नारण्यान्ग्राम्याश्चये ॥८॥
तस्माद्य-ज्ञात्सर्वहुत ऋचः. सामानि जज्ञिरे ।
छंदासि ठं जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्मादजायत ॥९॥
तस्मादश्वा ऽअजायंत येकेचोभयादतः ।
गावोहजज्ञिरे तस्मात्तस्मा-ज्जाता अजावयः ॥१०॥
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधाव्य कल्पयन् ।
मुखं किमस्य कौ (किं) बाहू का उरू पादा उच्येते ॥११॥
ब्राह्मणोस्य मुखमासीद बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽअजायत ॥१२॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत ।
मुखादिन्द्रश्च अग्निश्च प्राणाद् वायुरजायत ॥१३॥
(अन्यच्च – श्रोत्राद् वायुश्च प्राणाद् मुखादग्निश्च जायत)
नाभ्या आसीदन्तरिक्षं ठं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २ अकल्पयन् ॥१४॥
सप्तास्या सन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः ।

देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषं पशुम् ॥१५॥
यज्ञेन यज्ञमय जंत देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
तेह नाकं महिमानः सचंत यत्र पूर्वे साध्याः संति देवाः ॥१६॥

॥ इति पौरुषसूक्तम् ॥

॥ जातवेद सूक्तम् ॥

ॐ समास्त्वाग्न ऋतवो वर्धयन्तु संवत्सरा ऋषयोयानि सत्या ।
सं दिव्येन दीदिहरोचने न विश्वा आभाहि प्रदिशश्चतस्त्रः ॥१॥
सं चेध्यस्वाग्ने प्रचबोधयै नमुच्च तिष्ठ महतें सौभगाय ।
माचरिष दुपसत्ताते अग्ने ब्रह्माणस्ते यशसः सन्तुमान्येः ॥२॥
त्वामग्ने वृणते ब्राह्मणा इमे शिवो अग्ने संवरणे भवानः ।
सपत्नहा नो अभिमाति जिच्चस्वेगये जागृह्य प्रयुच्छन् ॥३॥
इहैवाग्ने अधिधारया रयिं मात्वा निक्रन्पूर्व चितोनि कारिण ठं क्षत्रमग्ने ।
सुयममस्तु तुभ्यमुपसत्ता वर्धतांते अनिष्टतः ॥४॥
क्षेत्रेणाग्ने स्वायुः स ठं रभस्व मित्रेणाग्ने मित्रधेये यतस्व ।
सजातानां मध्यमस्था एधि राज्ञामग्ने विहव्योदीदिहीह ॥५॥
अतिनिहो अतिस्त्रधोत्य चित्तिमत्यराति मग्ने ।
विश्वाह्यग्ने दुरिता सहस्वाथास्मभ्य ठं सहवीरां ७ रयिंदाः ॥६॥
अनाधृष्यो जातवेदाः अनिष्टतो विराडग्ने क्षत्रभृद्दीदिहीह ।
विश्वाआशाः प्रमुञ्चं मानुषीभिर्यः शिवेभिरद्य परिपाहि नो वृधे ॥७॥
बृहस्पते सवितः बोधयैन ठं सठं शितं चित्संतरा ७ स ठं शिशाधि ।
बुर्धयैनं महते सौभगाय विश्व एन मनु मदन्तु देवाः ॥८॥
अमुत्र भूयादध यद्यमस्य बृहस्पते अभि शं स्तेरमुञ्चः ।
प्रत्यौहता - मश्विनामृत्यु - मस्माद्देवानामग्नेभिषजा शचीभिः ॥९॥
उद्वयं तमसस्परिस्वः पश्यन्त उत्तरम् ।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म - ज्योतिरुत्तमम् ॥१०॥

॥ रौद्रसूक्तम् ॥

ॐ इमारुद्रायतवसेकपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहेमतीः ।
यथा शम स द्विपदे शं चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम् ॥१॥
मृडानो रुद्रोतनो मयस्कृधिक्षय द्वीराय न मसाविधेमते ।
यच्छं च योश्चमनु रायजे पितातदश्याम तवरुद्र प्रणीतिषु ॥२॥
अश्यामते सुमतिं देवयज्यया क्षयद्वीरस्य तवरुद्रमीढ्वः ।
सुम्नायं निद्विशोऽअस्माकमाचरारिष्टवीरा जुहवामतेहविः ॥३॥
त्वेषं वयं रुद्रं यज्ञसाधवं कुंकवि मवसे निह्वयामहे ।
आरे अस्मद्दैव्यं हेडो अस्यसुमतिमिद्वय मस्या वृणीमहे ॥४॥
दिवो वराह मरुषं कपर्दिन त्वेषं रूपं नमसानि ह्वयामहे ।
हस्ते बिभ्रद्भेष जावा र्याणि शर्म वर्मच्छर्दि-रस्मभ्यं यंसत् ॥५॥
इदं पित्रे मरुता मुच्यते वचः स्वादोः स्वादीयो रुद्राय वर्धनम् ।
रास्वाचनोऽमृतमर्त भोजनंत्मने तोकाय तनयायमृड ॥६॥
मानो महन्त मुतमानोऽर्भकंमानऽउक्षन्त मुतमान ऽउक्षितम् ।
मानोवधीः पितरं मोतमातरंमानः प्रियास्तन्वो रुद्ररीरिषः ॥७॥
मानस्तोक तनयेमान आयुषिमानो गोषुमानो अश्वेषुरीरिषः ।
वीरान्मानो रुद्रभामितो वधीर्हविष्मंतः सदमित्त्वा हवामहे ॥८॥
उपतेस्तोमान्पशुपा इवाकरं रास्वापितरर्मरुतां सुम्नमस्मे ।
भद्राहिते सुमतिर्मृड यत्तमाथा वयम व इत्ते वृणीमहे ॥९॥
आरेते गोघ्न मुत पूरुषघ्नं क्षय द्वीराय सुम्नस्मेतेऽअस्तु ।
मृडाचनो अधि च ब्रूहि देवा धाचनः शर्मयच्छ-द्विबर्हाः ॥१०॥
अवो चायनमोऽअस्मा अवस्यवः शृणोतुनोहवं रुद्रोमरुत्वान् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहंता मदितिः सिन्धुः पृथिवी उतद्यौः ॥११॥

॥ रौद्रसूक्तम् ॥

(यजुर्वेदोक्त)

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षय द्वीराय प्रभरा महेमतीः ।
यथा शम सद्विपदेचतुष्पदे विश्वं पुष्टङ्ग्रामेअस्मिन्ननातुरम् ॥१॥
या ते रुद्र शिवातनूः शिवा विश्वाहा भेषजी ।
शिवारूतस्यभेषजी तयानो मृड जीवसे ॥२॥
परिणो रुद्रस्य हेत्रि वृंणक्तु परित्त्वेषस्य दुर्मतिरघायोः ।
अवस्थिरा मघवभ्द्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड ॥३॥
मीढुष्टम शिवतम शिवोनः सुमना भव । परमेवृक्ष
आयुधं निधाय कृतिंवसान आचर पिनाकम्बिभ्रदागहि ॥४॥
विकिरिद्र विलोहित नमस्ते ऽअस्तु भगवः ।
यास्त सहस्त्र हेतयोन्यमस्मान्निव पन्तुताः ॥५॥
सहस्त्राणि सहस्त्र शो बाव्होस्तव हेतयः ।
तासामीशानो भगवः पराचीना मुखकृधि ॥६॥

॥ रक्षोघ्नसूक्तम् ॥

ॐ कृणुष्वपाजः प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजेवामवाँ २ इभेन ।
तृष्वीमनु प्रसितिंदूणानोऽस्तासि विद्धय रक्षसस्तपिष्ठैः ॥१॥
तव भ्रभास आशुया पतन्त्यनु स्पृश धृषता शोशुचानः ।
त पूंष्यग्रे जुह्वा पतगङ्गान संदितो विसृज विश्वगुल्काः ॥२॥
प्रतिस्पशो विसृज तूर्णितमो भवापायुर्विशो अस्या अदब्धः ।
यो नो दूरे अघशं सो यो अन्त्यग्रे माकिष्टे व्यथिरा दधर्षीत् ॥३॥
उदग्रेतिष्ठ प्रत्या तनुष्वन्य मित्राँ ओषता त्तिग्महेते ।
यो नो अरातिं समिधान चक्रे नीचा तंधक्ष्यत संनशुष्कम् ॥४॥
उर्ध्वो भवप्रति विद्धयाद्यस्मदा विष्कृणुष्व दैव्यान्यग्रे ।
अवस्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिमजामिं प्रमृणीहि शत्रून् ॥५॥

॥ इति रक्षोघसूक्तम् ॥

॥ अथ ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र प्रयोगः ॥

पुराणों में ज्येष्ठा लक्ष्मी को दुःख दरिद्रता की अधिष्ठात्री माना है इसके निवास को क्लेश कारक माना है परन्तु यहाँ ध्यान मंत्र में इसका स्वरूप कुंभ-धनपात्र युक्त कमल पर विराजमान कहा है। अतः **साधक को मंत्र जप करते समय भावना करनी चाहियें कि क्लेश, चिन्ता, दुःख, दरिद्रता हमारे घर से विदा हो रहे है एवं लक्ष्मी जी हमें धन धान्य तथा अभय प्रदान कर रही है।** भाद्रपद शुक्ला अष्टमी- ज्येष्ठा नक्षत्र को इसकी पूजा का विशेष महत्व है।

मंत्र महोदधि में वसुधा लक्ष्मी के विनियोग में भी **ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्रस्य**.....प्रयुक्त किया गया है।

मंत्र- ऐं ह्रीं श्रीं ज्येष्ठालक्ष्मि स्वयंभुवे ह्रीं ज्येष्ठायै नमः।

विनियोगः- अस्य ज्येष्ठालक्ष्मी मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अष्टिश्छन्दः, ज्येष्ठालक्ष्मी देवता, ह्रीं बीजम्, श्रीं शक्तिः, ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः- ब्रह्मऋषये नमः शिरसि। अष्टिच्छन्दसे नमो मुखे। ज्येष्ठालक्ष्मी देवतायै नमः हृदि। ह्रीं बीजाय नमः लिङ्गे। श्रीं शक्तये नमः पादयोः। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

मंत्र	करन्यासः	अङ्गन्यासः
ऐं ह्रीं श्रीं	**अंगुष्ठाभ्यां नमः।**	**हृदयाय नमः।**
ज्येष्ठालक्ष्मि	**तर्जनीभ्यां नमः।**	**शिरसे स्वाहा।**
स्वयंभुवे	**मध्यमाभ्यां नमः।**	**शिखायै वषट्।**
ह्रीं	**अनामिकाभ्यां नमः।**	**कवचाय हुँ।**
ज्येष्ठायै	**कनिष्ठिकाभ्यां नमः।**	**नेत्रत्रयाय वौषट्।**
नमः	**करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।**	**अस्त्राय फट्।**

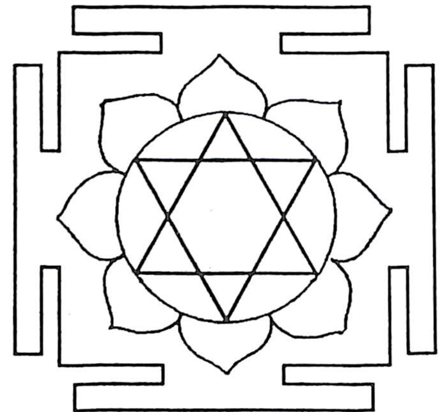
उद्यद्भास्करसन्निभा स्मितमुखी रक्ताम्बरालेपना
सत्कुंभं धनभाजनं सृणिमथो पाशं करैर्बिभ्रती :

पद्मस्था कमलेक्षणा दृढकुचा सौन्दर्य्य वारांनिधि-
र्ध्यातव्या सकलाभिलाष फलदा श्रीज्येष्ठालक्ष्मीरियम् ॥

॥ यंत्रार्चनम् ॥

यंत्रोद्धार – षट्कोण, अष्टदल एवं भूपूर युक्त यंत्र बनायें। सर्वतोभद्रमण्डल पर पीठ देवता व पीठ शक्तियों का पूजन करें। **ॐ मं मण्डूकादि परतत्वांत पीठदेवताभ्यो नमः।**

पीठ शक्तियों का पूर्वादि क्रम से पूजन करें- **ॐ लोहिताक्ष्यै नमः। ॐ विरूपायै नमः। ॐ कराल्यै नमः। ॐ नीललोहितायै नमः। ॐ समदायै नमः। ॐ वारुण्यै नमः। ॐ पुष्ट्यै नमः। ॐ अमोघायै नमः। मध्ये- ॐ विश्वमोहिन्यै नमः।**



॥ श्री ज्येष्ठालक्ष्मी यन्त्रम् ॥

प्रधान देवता का आवाहन करें। यंत्रावरण पूजा में चतुर्थी से आवाहन कर नामावली के बाद प्रथमा से गंधाक्षत पुष्प से पूजन करते हुए **पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः** कहते हुए तर्पण करें।

प्रथमावरणम् – (षट्कोणे)- **ऐं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः** आग्नेये। **ज्येष्ठालक्ष्मि शिरसे स्वाहा** नैर्ऋत्ये। **स्वयंभुवे शिखायै वषट्** वायवे। **ह्रीं कवचाय हुँ** ऐशान्ये। **ज्येष्ठायै नेत्रत्रयाय वौषट्** अग्रे। **नमः अस्त्राय फट्** देवी पश्चिमे।

पुष्पाञ्जलि अर्पण करें -

अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

पूजिताः तर्पिताः सन्तु कहकर जल छोड़े॥ इति सर्वत्र॥

द्वितीयावरणम् –(अष्टदले) पूर्वादिक्रमेण- **ॐ ब्राह्म्यै नमः। ॐ माहेश्वर्य्यै नमः। ॐ कौमार्य्यै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ इन्द्राण्यै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ महालक्ष्म्यै नमः।**

तृतीयावरणम् – भूपूर में इन्द्रादि लोकपालों का पूजन करें।

ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ नैऋतिये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ कुबेराय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अनन्ताय नमः।

चतुर्थावरणम् – भूपूर में इन्द्रादि लोकपालों के वज्रादि आयुधों का पूजन करें।

धूप, दीप नैवेद्यादि अर्पण कर नीराजन कर पुष्पांजलि देवें।

ज्येष्ठा गायत्री मंत्रः– ॐ रक्तज्येष्ठायै विद्महे नील ज्येष्ठायै धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।

॥ अथ श्रीसूक्त प्रयोग विधानम्॥

विनियोगः– ॐ हिरण्यवर्णामिति पंचदशर्चस्य श्री सूक्तस्य आनंद कर्दम चिक्लीत श्रीपुत्रेभ्यो ऋषयाः, श्रीविभावसुभ्यां-श्रीरग्निर्देवता, आद्यास्तिस्त्रोऽनुष्टुप्, चतुर्थी वृहती, पंचमी षष्ठ्यो त्रिष्टुभौ ततौष्टावनुष्टुभः अन्त्या प्रस्तार पंक्तिछन्दाः, हिरण्यवर्णामिति बीजम्, तामावह जातवेद इति शक्तिः, कीर्तिमृद्धिं ददातु मे कीलकम्, ममगृहे श्रीमहालक्ष्मी वरप्रसाद सिद्धयर्थे जपे च विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः– आनंद कर्दम चिक्लीत श्री पुत्रेभ्यः ऋषिभ्यो नमः शिरसि। श्रीविभावसुभ्यां देवताभ्यां नमः हृदि। अनुष्टुप्-वृहती त्रिष्टुप्-अनुष्टुप्-प्रस्तार पंक्तिभ्यश्छन्दोभ्यो नमः मुखे। हिरण्यवर्णामिति बीजाय नमो नाभौ। तां आवह जातवेदेति शक्तये नमः कट्यां। कीर्तिमृद्धिं ददातु मे इति कीलकाय नमः पादयोः। मम सकुटुम्बस्य क्षेमस्थैर्यायुरारोग्याभिवृद्धये श्री महालक्ष्मी वरप्रसाद सिद्धयर्थे च जपे विनियोगः सर्वाङ्गे।

मंत्र	करन्यासः	अङ्गन्यासः
ॐ हिरण्यायै नमः	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः।
ॐ चन्द्रायै नमः	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
ॐ रजतस्त्रजायै नमः	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
ॐ हिरण्यस्त्रजायै नमः	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुँ।
ॐ हिरण्यायै नमः	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ हिरण्यवर्णायै नमः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः। अस्त्राय फट्।

षडङ्गन्यासः- श्रां, श्रीं, श्रूं, श्रैं, श्रौं, श्रः से षडङ्गन्यास करें।

अंगन्यासः- ऋचा का प्रारंभिक संकेत दिया है पूरी ऋचा बोलकर न्यास करें। शिरसि- **हिरण्यवर्णां०**। नेत्रयोः-**तां मावह०**। कर्णयोः- **अश्वपूर्वां**। नासिकायां- **कांसोस्मितां०**। मुखे- **चन्द्रां प्रभा०**। गले- **आदित्यवर्णे०**। बाह्वोः- **उपैतु मां०**। हृदि-**क्षुत्पिपासा०**। नाभौ- **गंधद्वारां**। गुह्ये- **मनसः काम**। गुदे- **कर्दमेन०**। ऊर्वोः- **आपः सृजन्ति०**। जान्वोः -**आर्द्रां०**। जङ्घयोः- **आर्द्रां०**। पादयोः- **ताम्म आवह०**।

॥ ध्यानम् ॥

अरुणकमलसंस्था तद्रजः पुञ्जवर्णा,
करकमलधृतेष्टाभीति-युग्माम्बुजा च।
मणिमुकुट विचित्रालङ्कृता कल्पजातैः,
भवतु भुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रिये वः॥

॥ श्रीसूक्तम् ॥

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीसूक्तस्य आनन्द कर्दम चिक्लीथ ऋषिः, अग्निदेवताः आदौत्रयस्य अनुष्टुप् छंद शेषांसा प्रसार पंक्ति, त्रिष्टुप्, अनुष्टुप् पुनः प्रसार पंक्तिश्छंदः, हिरण्य वर्णां बीजं, तां आवह इति शक्तिः कीर्तिमृद्धिं ददातु इति कीलकं श्री महालक्ष्मी वर प्रसाद सिद्धर्थं पाठे जपे विनियोगः।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजातम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदोममावह ॥१॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषाहनम् ॥२॥
अश्वपूर्णां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥३॥
कांसोस्मितां हिण्रय प्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥४॥
चन्द्रां प्रभासां [illegible] ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।

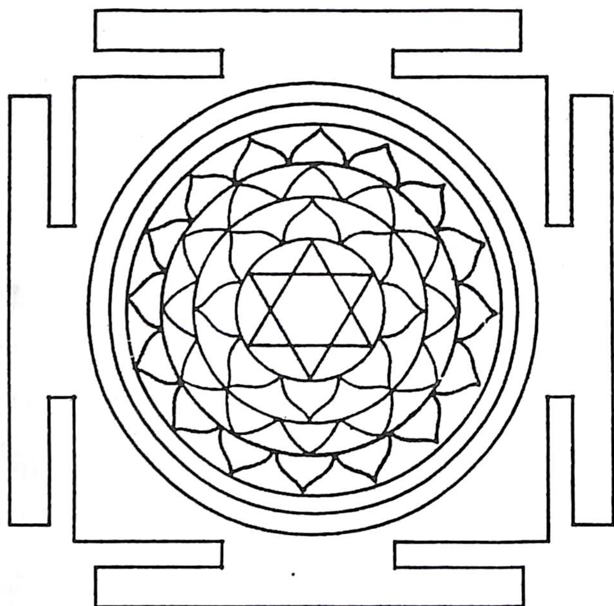
तां पद्मनेमीं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वांवृणे ॥५॥
आदित्यवर्णे तपसोधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मी ॥६॥
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतो ऽस्मिन्राष्ट्रे ऽस्मिन्कीर्तिमृद्धिं ददातुमे ॥७॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठा - मलक्ष्मीर्नाशयाम्यहम् ।
अभूतिं समृद्धिं च सर्वांनिर्णुद मे गृहात् ॥८॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥९॥
मनसः काम माकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥
कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिल्कीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदोममावह ॥१३॥
आर्द्रां यष्करणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥१४॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥

(कहीं कहीं पुष्टिं, सुवर्णां तथा यष्टिंपिंगलां पद्ममालिनीम् है)

॥श्रीरस्तु॥

॥ श्रीसूक्त यन्त्रार्चनम् ॥

यंत्रोद्धार- षट्कोण, अष्ट्दल बनायें उसके बाहर द्वादश दल बनायें एवं उसके बाहर षोडश दल बनायें पश्चात् तीन वृत्तबनाकर बाद में भूपूर बनायें।



॥ श्री सूक्त यन्त्रम् ॥

षट्कोण में षडङ्ग पूजा करें। अष्टदल में **हिरण्यवर्णा** से **तामिह्रोपह्वये** श्रियम् इन चार श्लोकों की आधी-आधी ऋचा लिखें। द्वादशदल में **चन्द्रां प्रभासा** से **श्रीः श्रयतां यशः** इन छः ऋचाओं की आधी-आधी ऋचा लिखें। इस तरह १० ऋचा का लेखन हुआ। शेष छः ऋचाओं की आधी-आधी ऋचा ६ करने पर १२ बार लेखन षोडशदल में होगा फिर भी ४ दल बाकी रहेगें। इसका उल्लेख श्री विद्यार्णव तंत्र द्वाविंशश्वास में नहीं है। यहाँ ३ संभावनायें है।

(१) किन्हीं दो ऋचा की आधी-आधी ऋचायें चार दलों में पुनरुक्त होगी।

(२) दुर्गेस्मृता मंत्र के १४-१४ वर्ण एक-एक दल में होगें।

(३) महालक्ष्मी मंत्र- श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः को चार पदों में चार दलों में लिखा जायें। यथा-**१. श्रीं ह्रीं श्रीं कमले। २.कमलालये प्रसीद। ३. प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं। ४. महालक्ष्म्यै नमः।** ऐसा क्रम होवें तभी षोडशदल पूर्ण होगा।

षोडश दल पश्चात् तीन वृतों के मध्य में दो मार्ग वीथिकायें बनेगीं। प्रथम वीथिका में "**यः शुचि प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् श्रियः पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्**" लिखें। द्वितीय मार्ग वीथिका में मातृका वर्ण **अं आं....हं लं क्षं** वेष्टित करते हुयें वृत्ताकार लिखें। उसके बाहर भूपूर के कोणों में **श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं** लिखें यंत्र मध्य में **श्रीं सहित साध्य नामः**। यथा- **श्रीं कमले, श्रीं लक्ष्मी**।

॥ आवरण पूजनम् ॥

सर्वतोभद्र मण्डल पर मंडूकादि पीठ देवता तथा पीठ शक्तियों का **एकाक्षरी मंत्रवत्** पूजन करें। यंत्र मध्य में प्रधानदेव का आवाहन करें। श्री सूक्त की एक-एक ऋचा से देवता की षोडशोपचार पूजन करें।

प्रथमावरणम् – (षट्कोणे) **ॐ हिरण्यायै हृदयाय नमः। हृदय श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।** इति सर्वत्र। **ॐ चन्द्राय शिरसे स्वाहा। रजतस्त्रजायै शिखायै वषट्। हिरण्यस्त्रजायै कवचाय हुं। हिरण्यायै नेत्रत्रयाय वौषट्। हिरण्यवर्णायै अस्त्राय फट्। अस्त्रश्री पा.पू.त.।**

पुष्पाञ्जलि अर्पण करें –

अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

पूजिताः तर्पिताः सन्तु कहकर जल छोड़ें। इति सर्वत्र।

द्वितीयावरणम् – (अष्टदले) पूर्वादिक्रमेण प्रत्येक अर्धऋचा के बाद **श्रीमहालक्ष्मी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः कहें।**

१. हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजस्त्रजाम् । श्रीमहालक्ष्मी श्री पा. पू. त.॥ २. चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह। श्रीमहालक्ष्मी श्री पा. पू. त.॥ ३. ताम्म आवहजातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। श्रीमहालक्ष्मी श्री पा. पू. त.॥ ४. यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्। श्रीमहालक्ष्मी श्री पा. पू. त.॥ ५. अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिमीम्। श्रीमहालक्ष्मी श्री पा. पू. त.॥ ६. श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवीजुषताम्। श्रीमहालक्ष्मी श्री पा. पू. त.॥ ७. कांसोस्मितां हिरण्यप्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। श्रीमहालक्ष्मी श्री पा. पू. त.॥ ८. पद्मेस्थितां स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्। श्रीमहालक्ष्मी श्री पा. पू. त.॥

पुष्पाञ्जलि अर्पण करें -

अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥

पूजिताः तर्पिताः सन्तु कहकर जल छोड़ें। इति सर्वत्र।

तृतीयावरणम् - (द्वादश दले) पूर्वादिक्रमेण- **१. चन्द्रा प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् । श्री महा० ॥ २. तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि । श्री महा० ॥ ३. आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्व। श्री महा० ॥ ४. तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तराश्च बाह्या अलक्ष्मीः। श्री महा० ॥ ५. उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह । श्री महा० ॥ ६. प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे। श्री महा० ॥ ७. क्षुत्पिपासामला ज्येष्ठा अलक्ष्मीर्नाशयाम्यहम् । श्री महा० ॥ ८. अभूतिमसमृद्धिं च सर्वा निर्णुद मे गृहात् । श्री महा० ॥ ९. गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । श्री महा० ॥ १०. ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् । श्री महा० ॥ ११. मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि । श्री महा० ॥ १२. पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः । श्री महा० ॥**

चतुर्थावरणम् - (षोडशदले) प्रारम्भ के चार दलों में दुर्गा मंत्र या लक्ष्मी मंत्र से पूजन करें। **१. दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः । श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥ २. स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि । श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥ ३. दारिद्र्य दुःख भय-हारिणी कात्वदन्या । श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥ ४. सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥**

अथवा चार दलों में लक्ष्मी मंत्र से पूजन करें।

१. श्रीं ह्रीं श्रीं कमले नमः । श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥ २. कमलालये प्रसीद नमः । श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥ ३. प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं नमः। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥ ४. महालक्ष्म्यै नमो नमः। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥

पश्चात्-

५. कर्दमेन प्रजाभूतामयि संभव कर्दम। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥ ६. श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥ ७. आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत (चिक्लीत) वस मे गृहे। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥ ८. नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त. ॥ ९.

आर्द्रां पुष्करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त.॥ १०. चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त.॥ ११. आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त.॥ १२. सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त.॥ १३. ताम्म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त.॥ १४. यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान विन्देयं पुरुषानहम्। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त.॥ १५. यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त.॥ १६. श्रियः पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त.॥

पंचमावरणम् – वृत्त की प्रथम वीथिका में– **"यः शुचिः ....श्रीकामः सततं जपेत्"** ऋचा से पूजन करें। **श्री महालक्ष्मी पा. पू. त.॥**

षष्ठमावरणम् – (द्वितीय वीथिका) – **अं आं.....हं लं क्षं मातृका रूपायै श्री महालक्ष्म्यै नमः। श्री महालक्ष्मी पा. पू. त.॥**

सप्तमावरणम् – (षोडशदल एवं भूपुर मध्ये) पूर्वादिक्रमेण–**ॐ पद्मायै नमः। ॐ पद्मवर्णायै नमः। ॐ पद्मस्थायै नमः। ॐ आर्द्रायै नमः। ॐ तर्पयन्त्यै नमः। ॐ तृप्तायै नमः। ॐ ज्वलन्त्यै नमः। ॐ स्वर्णप्राकारायै नमः।**

अष्टमावरणम् – (भूपुरे) पूर्वे **इन्द्राय नमः।** आग्नेयां– **आग्नेये नमः।** दक्षिणे– **यमाय नमः।** नैऋत्यां– **निर्ऋत्ये नमः।** पश्चिमे– **वरुणाय नमः।** वायव्यां– **वायवे नमः।** उत्तरे– **कुबेराय नमः।** ऐशान्यां– **ईशानाय नमः।** **ईशानपूर्वयोर्मध्ये– ब्रह्मणे नमः।** नैऋत्य– पश्चिमयोर्मध्ये– **अनन्ताय नमः।**

नवमावरणम् – (भूपुरे) लोकपाल समीपे– **वज्राय नमः। शक्तये नमः। दण्डाय नमः। खड्गाय नमः। पाशाय नमः। अङ्कुशाय नमः। गदायै नमः। त्रिशूलाय नमः। पद्माय नमः। चक्राय नमः।**

धूप दीप नैवेद्यादि का अर्पण कर नीराजन करें।

॥ काम्य प्रयोगः ॥

श्री सूक्त की १२ हजार आवृत्ति का एक पुरश्चरण कहा है। कमल, बिल्वफल, क्षीरान्न, वीरान्न से होम करें। ४० दिन अथवा ४० शुक्रवार नित्यहोम करें। तुरीयसंध्या (मध्यरात्रि) में ११ आहुति ६ मास तक श्रीसूक्त की देवें, अचल संपत्ति प्राप्त होवे। हवन पश्चात् ३२ योगिनियों को बलि प्रदान करें। यथा –

प्रणवाद्या हृदन्ताश्च (ॐ एवं स्वाहा युक्त नाम से बलि देवें) **श्रीर्लक्ष्मी वरदायिका। विष्णुपत्नी च वसुदा रूपाप्यन्या हिरण्यतः॥ स्वर्णमालिन्यपि परा ततः स्याद् रजतस्त्रजा। सुवर्णादिगृहा स्वर्णप्राकारा पद्मवासिनी॥ पद्महस्तप्रिया मुक्तालङ्कारा सूर्यकापरा। चन्द्राविश्व** (बिल्व) **प्रियेश्वर्यौ भुक्तिश्चापि प्रमुक्तियुक्॥ विभुर्वृद्धिः** (भूत्यृद्धी) **समृद्धिश्च तुष्टिः पुष्टिर्धनाद्यदा। भुवनेशी च शुद्धा स्याद्योगिनी भोगदामता॥ धात्री विधात्री द्वात्रिंच्छक्तयः समुदीरिताः। द्वात्रिंशाद्भिश्च पूजान्ते मन्त्रैर्बलिं हरेत्॥**

॥ संपुटित श्रीसूक्त प्रयोगः ॥

१. दुर्गा मंत्रेण संपुट प्रयोगः

दुर्गेस्मृता... मन्त्र से प्रत्येक ऋचा को पाद भेद क्रम से संपुटित करें। यथा –

हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्त्रजाम ।
दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः ,
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या ,
सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता ॥

२. श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः। मन्त्र प्रत्येक ऋचा के आगे-पीछे संपुटित करके पाठ करें।

३. दुर्गे स्मृता....। मन्त्र से पुटित ऊपर जो विधान बताया गया है, उसे भी पुनः लक्ष्मीं मन्त्र से पुटित करें।

श्रीं ह्रीं श्रीं कमले.....महालक्ष्म्यै नमः। हिरण्यवर्णां.....रजतस्त्रजात्, दुर्गेस्मृता....शुभां ददासि। चन्द्रां....ममावह, दारिद्र्य....सदार्द्रचित्या ॥ श्रीं ह्रीं कमले महालक्ष्म्यै नमः॥

४. बीजाक्षर पुष्टित सिद्धि लक्ष्मी ''श्रीसूक्त''

(क) सिद्धि लक्ष्मी के षोडशाक्षरी मन्त्र – **'ह्रीं हूं फ्रें ह्सौः ह्रीं क्रों फ्रें स्त्रीं श्रीं हों जूं ब्लौं व्रीं स्वाहा'** से क्रम २ या क्रम ३ के विधान की तरह प्रत्येक ऋचा को पुटित करके पाठ करें।

(ख) '**ॐ आं ह्रीं क्रों ऐं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं**' मन्त्र से पुटित करके पाठ करें।

(ग) '**ॐ आं ह्रीं क्रों ऐं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं**'

हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्त्रजाम ।
दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः ,
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या ,
सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता ॥

'ॐ आं ह्रीं क्रों ऐं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं'।

(घ) प्रत्येक ऋचा के ऋष्यादिन्यास व ध्यान पूर्वक जप विधान सहित।

श्रीसूक्त के संपुट के अलग-अलग प्रयोग आगे दिये गये है।

ऋष्यादिन्यास हेतु प्रत्येक ऋचा के पठन पूर्व ऋष्यादिन्यास एक बार अवश्य करें। अधिक आवृत्तियों के करने पर बार-बार न्यास करना जरुरी नहीं है।

जिसप्रकार **तन्त्रात्मक सप्तशती** में विनियोग ऋषि देवता, बीजं शक्ति, उत्कीलन के अलावा, तत्व, मुद्रा, ज्ञानेन्द्रिय, रस, स्वर कर्मेन्द्रिय सहित विनियोग है उसी प्रकार श्रीसूक्त के विनियोग हैं।

उपरोक्त प्रयोगों में से किसी एक विधि से संपुट लगाये।

॥ अथ स्वर्णाकर्षणभैरव प्रयोग:॥

लक्ष्मी चंचल है अत: इसके साथ पुरुष देवता की उपासना जरुरी है। इससे लक्ष्मी का निवास स्थिर होता है। वैष्णव संप्रदाय के अनुसार दधिवामन की उपासना तथा तन्त्र मन्त्र में गणेश व स्वर्णाकर्षण की उपासना करनी चाहिये।

इसकी उपासना से आय के साधन बढते हैं तथा लक्ष्मी स्थिर रहती है। स्वर्णाकर्षण भैरव स्वप्न में शास्त्रगुरु की तरह मार्गप्रदर्शन भी करता है ऐसा अनुभव है। द्ररिद्रता नाश एवं धन प्राप्ति हेतु व बगलामुखी साधना में स्वर्णाकर्षण भैरव का विशेष महत्व है एवं लाभप्रद साधना है।

विनियोग – **ॐ अस्य श्री स्वर्णाकर्षण भैरव मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः पंक्ति छन्दः हरिहरब्रह्मात्मक स्वर्णाकर्षण भैरवो देवता, ह्रीं बीजम्, सः शक्ति ओम् कीलकम् ममदारिद्र्यनाशार्थे, स्वर्ण राशि प्राप्त्यर्थे स्वर्णाकर्षण भैरव प्रसन्नार्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः – **ब्रह्मऋषये नमः शिरसि, पंक्ति छन्द से नमः मुखे। स्वर्णाकर्षण दैवताया नमः हृदि। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। सः शक्तिः नमः पादयोः ओम् कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

कराङ्गन्यास – **ओम् ऐं ह्रीं श्रीं आपदुद्धारणाय अंगुष्ठाभ्यां नमः। (हृदयाय नमः)। ॥१॥ ओम् ह्रां ह्रीं ह्रूं अजामिलबद्धाय तर्जनीभ्यां नमः। शिरसि स्वाहा। ॥२॥ ओम् लोकेश्वराय मध्यमाभ्यां नमः।(शिखायैवषट्)॥३॥ ओम् स्वर्णाकर्षण भैरवाय अनामिकाभ्यां नमः। (कवचाय हुम्)॥४॥ ओम् ममदारिद्र्य विद्वेषणाय कनिष्ठकाभ्यां नमः। (नेत्रत्र याय वौषट्)॥५॥ ओम् महाभैरवाय नमः श्रीं ह्रीं ऐं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। (अस्त्राय फट्)॥६॥**

॥ ध्यानम् ॥

पीतवर्णं चतुर्बाहुं त्रिनेत्रं पीतवाससम्।
अक्ष्यं स्वर्णमाणिक्यं-तडितपूरित पात्रकम्॥
अभिलषितं महाशूलं चामरं तोमरोद्वहम्।

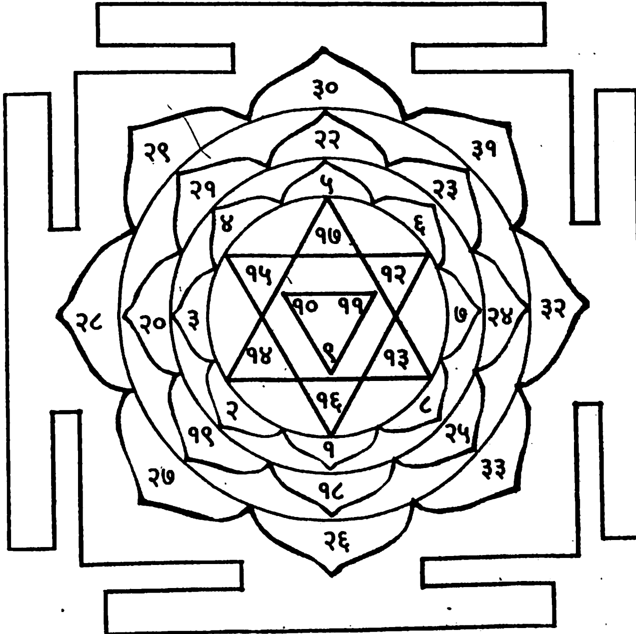
सर्वाभरणसम्पन्नं मुक्ताहारोपशोभितम् ॥१॥
मदोन्मत्तं सुखासीनं भक्तानां च वर प्रदम् ।
सततं चिन्तयेद्देवं भैरवं सर्वसिद्धिदम् ॥
पारिजात द्रुमुकान्तारस्थिते मणिमण्डपे ।
सिंहासनगतं ध्यायेद भैरवं स्वर्णदायकम् ॥२॥
गाङ्गेयपात्रं डमरुं त्रिशूलं वरं करैः संदधतं त्रिनेत्रं ।
देव्या युतं तप्तस्वर्णवर्ण स्वर्णाकृतिं भैरवमाश्रयामि ॥३॥

जप मन्त्र - "ओम् ऐं ह्रीं श्रीं आपदुद्धारणाय ह्रां ह्रीं ह्रूं अजामिलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय ममदारिद्र्य विद्वेषणाय महाभैरवाय नमः श्रीं ह्रीं ऐं।"

इस मन्त्र की तीन या पांच माला का नित्यजाप, हवन, तर्पण, मार्जन आदि करने से इक्तालीस दिन में वांछित लाभ मिलता है।

॥ यन्त्र पूजनम् ॥

बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टकोण, पुनः अष्टकोण उसके बाहर पुनः अष्टकोण बनायें। उसके चारों ओर चारद्वार युक्त चतुरस्र बनायें। उपर्युक्त यन्त्र ताम्रपात्र पर



स्वर्णाकर्षण भैरव यन्त्रम्

बनायें अथवा तंडुलादि से बनायें।

सर्वतोभद्र या लिङ्गतोभद्र मण्ड़ल बनायें। पीठ देवताओं का पूजन करें- **ॐ मं मण्डूकादि परतत्वांत पीठदेवताभ्यो नमः।** पीठ शक्तियों का पूजन करें - (पूर्वादिक्रमेण) **ॐ वामायै नमः। ॐ जैष्ठायै नमः। ॐ रौद्रयै नमः। ॐ काल्यै नमः। ॐ कलविकरण्यै नमः। ॐ बलविकरण्यै नमः। ॐ बलप्रमथिन्यै नमः। ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः।** मध्ये - **ॐ मनोन्मन्यै नमः।**

पीठशक्तियों का पूजन करें। स्वर्ण निर्मित यन्त्र-मूर्ति का घी से अभ्यञ्जन करें दुग्ध धारा व जलधारा देवें। स्वच्छ वस्त्र से पोंछ कर भद्रपीठ पर आसीन करें।

प्राणप्रतिष्ठा करें। उसके बाद पूजन करें तथा यन्त्रार्चन करें। पुष्पाक्षत लेकर ध्यान करें। गंधाक्षत व पुष्पों से अर्चन करें तथा तर्पण भी करते रहें।

ॐ गांगेयपात्रं डमरुं त्रिशूलं वरं करैः संदधतं त्रिनेत्रम् ।
देव्यायुति तप्तसुवर्णवर्णं स्वर्णाकृतिं भैरवमाश्रयामि ॥१॥

मन्दारद्रुममूलभाजि सुमहामाणिक्यसिंहासने
संविष्टोदरभिन्नपङ्कजरुचा देव्या कृतालिङ्गनः ।
भक्तेभ्यः कररत्नपात्रभरितं स्वर्ण ददानोऽनिशं
स्वर्णाकर्षणभैरवो विजयते स्वर्गापवर्गैकभूः ॥२॥

पञ्चोपचार पूजन करें, आवरण पूजा के लिये आज्ञा माँगें।

पुष्पाञ्जलि प्रदान करें -

ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः ।
अनुज्ञां देहि वटुक परिवारार्चनाय मे ॥

प्रथमावरणम् - (अङ्गपूजनम्) देव के साथ अष्टदलों में अष्टदिशा की कल्पना करते हुये अष्टदल में अङ्गपूजन करें।

पूर्वादिक्रमेण - **ॐ आकाशाय नमः। मूर्ध्नि पूजयामि ॥१॥ ॐ समीरणाय नमः। मुखे पूजयामि ॥२॥ ॐ दघ्नाय नमः। बाह्वोः पूजयामि ॥३॥ ॐ वैवर्ताय नमः। हृदि पूजयामि ॥४॥ ॐ विश्वंभराय नमः। उदरे पूजयामि ॥५॥ ॐ ब्रह्मणे नमः। कटौ पूजयामि ॥६॥ ॐ जनार्दनाय नमः। जानुनोः पूजयामि ॥७॥ ॐ इन्द्राय नमः। पादयोः पूजयामि ॥८॥**

प्रत्येक आवरण पूजन पश्चात् पुष्पाञ्जलि देवें।

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

विशेषार्घ से जल छोड़ें - **ॐ सर्वे देवा पूजितास्तर्पिताः सन्तु।**

द्वितीयावरणम् - (त्रिकोणे) - पूर्वकोणे - **ॐ वटुकभैरवाय नमः। वटुक श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि॥** ईशानकोणे - **ॐ कालभैवाय नमः। कालभैरव श्री पा. पू. त.॥** अग्निकोणे - **ॐ क्षेत्रपालभैरवाय नमः। क्षेत्रपाल श्री पा. पू. त.॥**

पुष्पाञ्जलि देवें - अभीष्टसिद्धिं........**द्वितीयावरणार्चनम्॥ ॐ पूजितास्तर्पिता सन्तु** से जल छोड़ें।

तृतीयावरणम् (षट्कोणे) - अग्निकोणे - **ॐ आपदुद्धारणाय नमः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि॥** नैर्ऋत्यकोणे - **ॐ अजामलबद्धाय नमः श्री पा.पू.त.। वायुकोणे - ॐ लोकेश्वराय नमः श्री पा.पू.त.। ऐशान्ये - ॐ स्वर्णाकर्षण भैरवाय नमः श्री पा.पू.त.। प्राच्याम् - ॐ ममदारिद्र्यविद्वेषणाय नमः श्री पा.पू.त.। पश्चिमे - श्री महाभैरवाय नमः श्री पा.पू.त.।**

पुष्पाञ्जलि देवें - अभीष्टसिद्धिं........ तृतीयावरणार्चनम्॥ ॐ पूजितास्तर्पिता सन्तु से जल छोड़ें।

चतुर्थावरणम् (अष्टदले) पूर्वादिक्रमेण - **ॐ असिताङ्ग भैरवाय ब्राह्मीशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.। ॐ रुरु भैरवाय माहेश्वरीशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.। ॐ चण्डभैरवाय कौमारीशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.। ॐ क्रोधभैरवाय वैष्णवीशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.। ॐ उन्मत्तभैरवाय वाराहीशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.। ॐ कपालभैरवाय नारसिंहीशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.। ॐ भीषणभैरवाय चामुण्डाशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.। ॐ संहारभैरवाय चण्डिकाशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.।**

पुष्पाञ्जलि देवे - **अभीष्टसिद्धिं........चतुर्थावरणार्चनम्॥ ॐ पूजितास्तर्पिता सन्तु** से जल छोड़ें।

पञ्चमावरणम् (अष्टदले) पूर्वे - **ॐ आदित्याय स्वशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.। ॐ सोमाय स्वशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.। ॐ भौमाय स्वशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.। ॐ बुधाय स्वशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.। ॐ जीवाय स्वशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.। ॐ शुक्राय स्व**

स्वशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.। ॐ शनैश्चराय स्वशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.। ॐ राहवे केतवे स्वशक्ति सहिताय नमः श्री पा.पू.त.।

पुष्पाञ्जलि देवें – **अभीष्टसिद्धिं........पञ्चमावरणाचर्नम्॥ ॐ पूजितास्तर्पिताः सन्तु** से जल छोड़ें।

षष्टमावरणम् – भूपूर के अन्दर देव के दक्षिण भाग में – **ॐ पूजाविधिसिद्ध्यै नमः श्री पा.पू.त.। ॐ रससिद्ध्यै नमः श्री पा.पू.त.। ॐ स्वर्णसिद्ध्यै नमः श्री पा.पू.त.।**

पुष्पाञ्जलि देवें – **ॐ अभीष्टसिद्धिं........षष्टमावरणार्चनम्॥ ॐ पूजितास्तर्पिताः सन्तु** से जल छोड़ें।

सप्तमावरणम् – भूपूर के बाहर देवता के वाम भाग में – **ॐ भूतप्रेतपिशाच वेतालासुरेभ्योनमः श्री पा.पू.त.।**

पुष्पाञ्जलि देवे – **ॐ अभीष्टसिद्धिं........सप्तमावरणार्चनम्॥ ॐ पूजितास्तर्पिताः सन्तु** से जल छोड़ें।

अष्टमावरणम् – भूपूर में पूर्वादिक्रम से। पूर्वे – **वज्रसहित इन्द्र श्री पा.पू.त.।** आग्नेये – **शक्ति सहित अग्नि श्री पा.पू.त.।** दक्षिणे – **दण्ड सहित यम श्री पा.पू.त.।** नैऋत्ये – **खड्ग सहित नैऋति श्री पा.पू.त.।** पश्चिमे – **पाश सहित वरुण श्री पा.पू.त.।** वायव्ये – **अङ्कुश सहित वायव्ये श्री पा.पू.त.।** उत्तरे – **गदा सहित कुबेर श्री पा.पू.त.।** ईशाने – **त्रिशूल सहित ईशान श्री पा.पू.त.।** ईशानपूर्वमध्ये – **पद्म सहित ब्रह्मा श्री पा.पू.त.।** निऋति पश्चिममध्ये – **चक्र सहित अनन्त श्री पा.पू.त.।**

पुष्पाञ्जलि देवे – **ॐ अभीष्टसिद्धिं........अष्टमावरणार्चनम्॥ ॐ पूजितास्तर्पिताः सन्तु** से जल छोड़ें।

धूप दीप नेवैद्यादि अर्पण कर नमस्कार करें। एक लक्ष जप कर पुरश्चरण करें। दशांश हवन करें। पायस होम करें।

ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चान्मन्त्र सिद्धिर्नसंशयः।
एवं सिद्धे कृते मन्त्रे अयुतं प्रजपेन्मनुम्॥
दारिद्र्यं दूरमुत्क्षिप्य जायते धनदोपमः।
करवीरैर्जाति पुष्पैर्जपादाद्रिम संभवैः॥

रक्तप्रसूनैर्जुहुयात्सौभाग्यं च समश्नुते ।
सिद्धद्रव्येण जुहुयाल्लभ्यते चाष्टसिद्धयः ॥
पायसेनापि जुहुयाल्लभ्यते सकलं फलम् ।
आज्यं च जुहुयाद्देवि ऐहिकामुष्मिकं फलम् ॥
मन्त्रसिद्धिं च लभते चन्दनादींधनैः क्रमात् ॥

॥ अथ स्वर्णाकर्षणभैरव स्तोत्रम् ॥

विनियोगः – ओम् अस्य श्री स्वर्णाकर्षण भैरव स्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, स्वर्णाकर्षण भैरवो देवता, ह्रीं बीजं, क्लीं शक्तिः, सः कीलकं ममदरिद्रयनाशार्थे सर्व कार्य सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः – ब्रह्मऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। स्वर्णाकर्षण भैरव देवताय नमः हृदि। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः पादयोः। सः कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः – ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः, ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः, ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः, ह्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः, ह्रः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः – ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट्।

॥ अथ स्तोत्रम् ॥

ओम् नमस्ते भैरवाय ब्रह्मविष्णु शिवात्मने ।
नमस्त्रैलोक्य वन्द्याय वरदाय वरात्मने ॥
रत्नसिंहासनस्थाय दिव्याभरण शोभिने ।
दिव्यमाल्य विभूषाय नमस्ते दिव्यमूर्तये ॥
नमस्तेऽनेकहस्ताय अनेक शिरसे नमः ।
नमस्तेऽनेकनेत्राय अनेक विभवे नमः ॥
नमस्तेऽनेक कण्ठाय अनेकांशाय ते नमः ।
नमस्तेऽनेक पार्श्वाय नमस्ते दिव्य तेजसे ॥

अनेकायुधयुक्ताय अनेक सुर सेविने ।
अनेकगुण युक्ताय महादेवाय ते नमः ॥
नमो दारिद्र्यकालाय महासम्पद् प्रदायिने ।
श्री भैरवी संयुक्ताय त्रिलोकेशाय ते नमः ॥
दिगम्बरं नमस्तुभ्यं दिव्याङ्गाय नमो नमः ।
नमोऽस्तु दैत्यकालाय पापकालाय ते नमः ॥
सर्वज्ञाय नमस्तुभ्यं नमस्ते दिव्य चक्षुषे ।
अजिताय नमस्तुभ्यं जितामित्राय ते नमः ॥
नमस्ते रुद्ररूपाय महावीराय ते नमः ।
नमोऽस्त्वनन्तवीर्याय महाघोराय ते नमः ॥
नमस्ते घोर-घोराय विश्वघोराय ते नमः ।
नमः उग्रायशान्ताय भक्तानांशान्तिदायिने ॥
गुरवे सर्वलोकानां नमः प्रणवरूपिणे ।
नमस्ते वाग्भवाख्याय दीर्घकामाय ते नमः ॥
नमस्ते कामराजाययोषित कामाय ते नमः ।
दीर्घमायास्वरूपाय महामाया ते नमः ॥
सृष्टिमाया स्वरूपाय विसर्गसमयाय ते ।
सुरलोक-सुपूज्याय आपदुद्धारणाय च ॥
नमो-नमो भैरवाय महादारिद्र्य नाशिने ।
उन्मूलने कर्मठाय-अलक्ष्म्याः सर्वदा नमः ॥
नमो अजामिलबद्धाय नमो लोकेश्वराय ते ।
स्वर्णाकर्षणशीलाय भैरवाय नमो नमः ॥
ममदारिद्र्य विद्वेषणाय लक्ष्याय ते नमः ।
नमो लोकत्रयेशाय स्वानन्द निहिताय ते ॥
नमः श्रीबीजरूपाय सर्वकाम प्रदायिने ।
नमो महाभैरवाय श्रीभैरव नमो नमः ॥
धनाध्यक्ष नमस्तुभ्यं शरण्याय नमो नमः ।

नमः प्रसन्नरूपाय सुवर्णाय नमो नमः ॥
नमस्ते मन्त्ररूपाय नमस्ते मन्त्ररूपिणे ।
नमस्ते स्वर्णरूपाय सुवर्णाय नमो नमः ॥
नमः सुवर्णवर्णाय महापुण्याय ते नमः ।
नमः शुद्धाय बुद्धाय नमः संसार तारिणे ॥
नमो देवाय गुह्याय प्रचलाय नमो नमः ।
नमस्ते बालरूपाय परेशां बलनाशिने ॥
नमस्ते स्वर्ण संस्थाय नमो भूतलवासिने ।
नमः पातालवासाय अनाधाराय ते नमः ॥
नमो नमस्ते शान्ताय अनन्ताय नमो नमः ।
द्विभुजाय नमस्तुभ्यं भुजत्रयसुशोभिने ॥
नमोऽनमादि-सिद्धाय स्वर्णहस्ताय ते नमः ।
पूर्णचन्द्र-प्रतीकाशवदनाम्भोज शोभिने ॥
नमस्तेऽस्तु स्वरूपाय स्वर्णालङ्कार शोभिने ।
नमः स्वर्णाकर्षणाय स्वर्णाभाय नमो नमः ॥
नमस्ते स्वर्णकण्ठाय स्वर्णाभाम्बर धारिणे ।
स्वर्णसिंहासनस्थाय स्वर्णपादाय ते नमः ॥
नमः स्वर्णाभपादय स्वर्णकाञ्ची सुशोभिने ।
नमस्ते स्वर्णजङ्घाय भक्तकामदुधात्मने ॥
नमस्ते स्वर्णभक्ताय कल्पवृक्ष स्वरूपिणे ।
चिन्तामणि स्वरूपाय नमो ब्रह्मादि सेविने ॥
कल्पद्रुमाद्यः संस्थाय बहुस्वर्ण-प्रदायिने ।
नमो हेमाकर्षणाय भैरवाय नमो नमः ॥
स्तवेनान सन्तुष्टो भव लोकेश भैरव ।
पश्यमाम् करुणादृष्ट्या शरणागतवत्सल ॥

॥ फलश्रुतिः ॥

श्री महाभैरवस्येदं स्तोत्रमुक्तं सुदुर्लभम् ।

मन्त्रात्मकं महापुण्यं सर्वैश्वर्यप्रदायकम् ॥
यः पठेन्नित्यमेकाग्रं पातकैः स प्रमुच्यते ।
लभते महतीं लक्ष्मीमष्टैश्वर्यमवाप्नुयात् ॥
चिन्तामणिमवाप्नोति धेनुं कल्पतरुं ध्रुवम् ।
स्वर्णराशिं वाप्नोति शीघ्रमेव स मानवः ॥
त्रिसन्ध्यं यः पठेत् स्तोत्रं दशावृत्या नरोत्तमः ।
स्वप्ने श्रीभैरवस्तस्य साक्षाद् भूत्वा जगद्गुरुः ॥
स्वर्णाराशिं ददात्यस्मै तत्क्षणं नास्ति संशयः ।
अष्टावृत्या पठेत् यस्तु सन्ध्यायां वा नरोत्तमः ॥
सर्वदा यः पठेत् स्तोत्रं भैरवस्य महात्मनः ॥
लोकत्रयं वशीकुर्यादचलां श्रियमाप्नुयात् ।
न भयं विद्यते नवापि विषभूतादि-सम्भवम् ॥
अष्ट पञ्चाशद् वर्णाढ्यो मन्त्रराजः प्रकीर्तितः ।
दारिद्रय दुःख शमनः स्वर्णाकर्षण कारकः ॥
य एन सञ्जपेद् धीमान स्तोत्रं वा प्रयठेत् सदा ।
महाभैरव सायुज्यं सो अन्तकाले लभेद् ध्रुवम् ॥

॥ इतिश्री रूद्रायमल तन्त्रे स्वर्णाकर्षण भैरव स्तोत्रं सम्पूर्ण ॥

॥ कालिय नाग मर्दन स्तोत्रम् ॥

श्रीमद्भागवत पुराण के दसवे स्कंध के सोलवे अध्याय में कालिय नाग मर्दन स्तोत्र के पाठ करने से सर्पदोष दूर होता एवं व्यक्ति पाप मुक्त होता है।

॥ श्री शुक उवाच ॥

कालिन्द्यां कालियस्यासीद्ध्रदः कश्चिद् विषाग्निना ।
श्रप्यमाणपया यस्मिन् पतन्त्युपरिगाः खगाः ॥१॥
विप्रुष्मता विषोदोर्मिमारुतेनाभिमर्शिताः ।
म्रियन्ते तीरगा यस्य प्राणिनः स्थिरजङ्गमाः ॥२॥
तं चण्डवेगविषवीर्यमवेक्ष्य तेन, दुष्टां नदीं च खलसंयमनावतारः ।
कृष्णः कदम्बमधिरुह्य ततोऽति तुङ्गमास्फोट्य गाढरशनो न्यपतद् विषोदे ॥३॥
तस्य ह्रदे विहरतो भुजदण्डघूर्णवार्घोषमङ्ग वरवारणविक्रमस्य ।
आश्रुत्य तत् स्वसदनाभिभवं निरीक्ष्य, चक्षुः श्रवाः समसरत्तदमृष्यमाणः ॥४॥
तं प्रेक्षणीय सुकुमार घनावदातं, श्रीवत्सपीतवसनं स्मितसुन्दरास्यम् ।
क्रीडन्तमप्रतिभयं क मलोदराङ्घ्रिं, सन्दश्य मर्मसु रुषा भुजया चछाद ॥५॥
तं नागभोग परिवीतमदृष्टचेष्टमालोक्य तत्प्रियसखाः पशुपा भृशार्ताः ।
कृष्णेऽर्पितात्म सुहृदर्थ कलत्रकामा, दुःखानुशोकभयमूढधियो निपेतुः ॥६॥
अथ व्रजे महोत्पातास्त्रिविधा ह्यतिदारुणाः ।
उत्पेतुर्भुवि दिव्यात्मन्यासन्न भयशंसिनः ॥७॥
तानालक्ष्य भयोद्विग्ना गोपा नन्दपुरोगमाः ।
विना रामेण गाः कृष्णं ज्ञात्वा चारयितुं गतम् ॥८॥
तेऽन्वेषमाणा दयितं कृष्णं सूचितया पदैः ।
भगवल्लक्षणैर्जग्मुः पदव्या यमुनातटम् ॥९॥
अन्तर्ह्रदे भुजगभोगपरीतमारात्, कृष्णं निरीहमुपलभ्य जलाशयान्ते ।
गोपांश्च मूढधिषणान् परितः पशूंश्च, संक्रन्दतः परमकश्मलमापुरार्ताः ॥१०॥
गोप्योऽनुरक्तमनसो भगवत्यनन्ते, तत्सौहृदस्मित विलोकगिरः स्मरन्त्यः ।

ग्रस्तेऽहिना प्रियतमे भृशदुःखतप्ताः, शून्यं प्रियव्यतिहृतं ददृशुस्त्रिलोकम् ॥११॥
ताः कृष्णमातरमपत्यमनुप्रविष्टां, तुल्यव्यथाः समनुगृह्य शुचः स्त्रवन्त्यः ।
तास्ता वज्रप्रियकथाः कथयन्त्य आसन्, कृष्णाननेऽर्पितदृशो मृतकप्रतीकाः ॥१२॥
कृष्णप्राणान्निर्विशतो नन्दादीन् वीक्ष्य तं हृदम् ।
प्रत्यषेधत् स भगवान् रामः कृष्णानुभाववित् ॥१३॥
इत्थं स्वगोकुलमनन्यगतिं निरीक्ष्य, सस्त्रीकुमारमति दुःखितमात्महेतोः ।
आज्ञाय मर्त्यपदवीमनुवर्तमानः, स्थित्वा मुहूर्तमुदतिष्ठदुरङ्ग बन्धात् ॥१४॥
तत्प्रथ्यमानवपुषा व्यथितात्मभोगस्त्यक्त्वोन्नमय्य कुपितः स्वफणान् भुजङ्गः ।
तस्थौ श्वसञ्छ्वसन रन्ध्र विषाम्बरीषस्तब्धेक्षणोल्मुकमुखो हरिमीक्षमाणः ॥१५॥
तं जिह्वया द्विशिखया परिलेलिहानं, द्वे सृक्किणी ह्यतिकरालविषाग्नि दृष्टिम् ।
क्रीडन्नमुं परिससार यथा खगेन्द्रो, बभ्राम सोऽप्यवसरं प्रसमीक्षमाणः ॥१६॥
एवं परिभ्रमहतौजसमुन्नतांस - मानम्य तत्पृथुशिरः स्वधिरूढ आद्यः ।
तन्मूर्धरत्ननिकर स्पर्शातिताम् - पादाम्बुजोऽखिल कलादिगुरुर्ननर्त ॥१७॥
तं नर्तुमुद्यतमवेक्ष्य तदा तदीय - गन्धर्वसिद्ध सुरचारण देववध्वः ।
प्रीत्या मृदङ्गपणवानक वाद्यगीत - पुष्पोपहारनुतिभिः सहसोपसेदुः ॥१८॥
यद् यच्छिरो न नमतेऽङ्ग शतैकशीर्ष्णस्तत्तन् ममर्द खरदण्डधरोऽङ्घ्रिपातैः ।
क्षीणायुषो भ्रमत उल्बणमास्यतोऽसृङ्नस्तो वमन् परमकश्मलमाप नागः ॥१९॥
तस्याक्षिभिर्गरलमुद्वमतः शिरस्सु, यद् यत् समुन्नमति निःश्वसतो रुषोच्चैः ।
नृत्यन् पदानुनमयन् दमयाम्बभूव, पुष्पैः प्रपूजित इवेह पुमान् पुराणः ॥२०॥
तच्चित्रताण्डव विरुग्ण फणातपत्रो, रक्तं मुखैरुरु वमन् नृप भग्नगात्रः ।
स्मृत्वा चराचरगुरुं पुरुषं पुराणं, नारायणं तमरणं मनसा जगाम ॥२१॥
कृष्णस्य गर्भजगतोऽतिभरावसन्नं, पार्ष्णिप्रहारपरिरुग्ण फणातपत्रम् ।
दृष्ट्वाहिमाद्यमुपसेदुरमुष्य पत्न्य, आर्ताः श्लथद्वसनभूषणकेशबन्धाः ॥२२॥
तास्तं सुविग्नमनसोऽथ पुरस्कृतार्भाः कायं निधाय भुवि भूतपतिं प्रणेमुः ।
साध्व्यः कृताञ्जलिपुटाः शमलस्य भर्तुर्मोक्षेप्सवः शरणदं शरणं प्रपन्नाः ॥२३॥

॥ नागपत्न्य ऊचुः ॥

न्याय्यो हि दण्डः कृतकिल्बिषेऽस्मिं-स्तवावतारः खलनिग्रहाय ।
रिपोः सुतानामपि तुल्यदृष्टेर्धत्से दमं फलमेवानुशंसन् ॥२४॥
अनुग्रहोऽयं भवतः कृतो हि नो, दण्डोऽसतां ते खलु कल्मषापहः ।
यद् दन्दशूकत्वममुष्य देहिनः, क्रोधोऽपि तेऽनुग्रह एव सम्मतः ॥२५॥

तपः सुतप्तं किमनेन पूर्वं, निरस्तमानेन च मानदेन।
धर्मोऽथ वा सर्वजनानुकम्पया, यतो भवांस्तुष्यति सर्वजीवः ॥२६॥
कस्यानुभावोऽस्य न देव विद्महे, तवाङ्घ्रिरेणुस्पर्शाधिकारः।
यद्वाञ्छया श्रीर्ललनाऽऽचरत्तपो, विहाय कामान् सुचिरं धृतव्रता ॥२७॥
न नाकपृष्ठं न च सार्वभौमं न पारमेष्ठ्यं न रसाधिपत्यम्।
न योगसिद्धीरपुनर्भवं वा, वाञ्छन्ति यत्पादरजः प्रपन्नाः ॥२८॥
तदेष नाथाप दुरापमन्यै - स्तमोजनिः क्रोधवशोऽप्यहीशः।
संसारचक्रे भ्रमतः शरीरिणो, यदिच्छतः स्याद् विभवः समक्षः ॥२९॥
नमस्तुभ्यं भगवते पुरुषाय महात्मने।
भूतावासाय भूताय पराय परमात्मने ॥३०॥
ज्ञानविज्ञाननिधये ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये।
अगुणायाविकाराय नमस्तेऽप्राकृताय च ॥३१॥
कालाय कालनाभाय कालावयवसाक्षिणे।
विश्वाय तदुपद्रष्ट्रे तत्कर्त्रे विश्वहेतवे ॥३२॥
भूतमात्रेन्द्रिय प्राणमनोबुद्ध्या शयात्मने।
त्रिगुणेनाभिमानेन गूढस्वात्मानुभूतये ॥३३॥
नमोऽनन्ताय सूक्ष्माय कूटस्थाय विपश्चिते।
नानावादानुरोधाय वाच्यवाचकशक्तये ॥३४॥
नमः प्रमाणमूलाय कवये शास्त्रयोनये।
प्रवृत्ताय निवृत्ताय निगमाय नमो नमः ॥३५॥
नमः कृष्णाय रामाय वसुदेवसुताय च।
प्रद्युम्नायानिरुद्धाय सात्वतां पतये नमः ॥३६॥
नमो गुणप्रदीपाय गुणात्मच्छादनाय च।
गुणवृत्त्युपलक्ष्याय गुणद्रष्ट्रे स्वसंविदे ॥३७॥
अव्याकृतविहाराय सर्वव्याकृतसिद्धये।
हृषीकेश नमस्तेऽस्तु मुनये मौलशीलिने ॥३८॥
परावरगतिज्ञाय सर्वाध्यक्षाय ते नमः।
अविश्वाय च विश्वाय तद्द्रष्ट्रे स्य च हेतवे ॥३९॥
त्वं ह्यस्य जन्मस्थिति संयमान् प्रभो, गुणैरनीहोऽकृत कालशक्तिधृक्।
तत्तत्स्वभावान् प्रतिबोधयन् सतः, समीक्षयामोघविहार ईहसे ॥४०॥
तस्यैव तेऽमूस्तनवस्त्रिलोक्यां, शान्ता अशान्ता उत मूढयोनयः।

शान्ताः प्रियास्ते ह्यधुनावितुं सतां, स्थातुश्च ते धर्मपरीप्सयेहतः ॥४१॥
अपराधः सकृदभर्त्रा सोढव्यः स्वप्रजाकृतः ।
क्षन्तुमर्हसि शान्तात्मन् मूढस्य त्वामजानतः ॥४२॥
अनुगह्णीष्व भगवन् प्राणांस्त्यजति पन्नगः ।
स्त्रीणां नः साधुशोच्यानां पतिः प्राणः प्रदीयताम् ॥४३॥
विधेहि ते किङ्करीणामनुष्ठेयं तवाज्ञया ।
यच्छ्रद्धयानुतिष्ठन् वै मुच्यते सर्वतोभयात् ॥४४॥

॥ श्रीशुक उवाच ॥

इत्थं स नागपत्नीभिर्भगवान् समभिष्टुतः ।
मूर्च्छितं भग्नशिरसं विससर्जाङ्घ्रिकुट्टनैः ॥४५॥
प्रतिलब्धेन्द्रियप्राणः कालियः शनकैर्हरिम् ।
कच्छ्रात् समुच्छ्वसन् दीनः कृष्णं प्राह कृताञ्जलिः ॥४६॥

॥ कालिय उवाच ॥

वयं खलाः सहोत्पत्त्या तामसा दीर्घमन्यवः ।
स्वभावो दुस्त्यजो नाथ लोकानां यदसद्ग्रहः ॥४७॥
त्वया सृष्टमिदं विश्वं धातर्गुणविसर्जनम् ।
नानास्वभाव वीर्यौजो योनिबीजाशयाकृति ॥४८॥
वयं च तत्र भगवन् सर्पा जात्युरुमन्यवः ।
कथं त्यजामस्त्वन्मायां दुस्त्यजां मोहिताः स्वयम् ॥४९॥
भवान् हि कारणं तत्र सर्वज्ञो जगदीश्वरः ।
अनुग्रहं निग्रहं वा मन्यसे मद् विधेहि नः ॥५०॥

॥ श्री शुक उवाच ॥

इत्याकर्ण्य वचः प्राह भगवान् कार्यमानुषः ।
नात्र स्थेयं त्वया सर्प समुद्रं याहि मा चिरम् ।
स्वज्ञात्यपत्यदाराढ्यो गोनृभिर्भुज्यतां नदी ॥५१॥
य एतत् संस्मरेन्मर्त्यस्तुभ्यं मदनुशासनम् ।
कीर्तयन्नुभयोः सन्ध्योर्न युष्मद् भयामाप्नुयात् ॥५२॥
योऽस्मिन् स्नात्वा मदाक्रीडे देवादींस्तर्पयेज्जलैः ।
उपोष्य मां स्मरन्नर्चेत् सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥५३॥

॥ इति ॥

श्रीदुर्गासप्तसती सर्वस्वम्

पुस्तक में सात तरह की दुर्गासप्तशती को सम्मिलित किया गया है -

१. सहस्राधिक श्लोकी दुर्गासप्तसती। २. प्रचलित दुर्गा सप्तशती ३. प्रतिमन्त्रविलोम दुर्गा सप्तशती। ४. उत्कीलित दुर्गा सप्तशती। ५. प्रतिमन्त्र लोमविलोम दुर्गा सप्तशती ६. बीजात्मक सप्तशती। ७. लघु सप्तशती। नवदुर्गा, ब्राह्मयादि के मन्त्र। हवन विधि। शतचण्डी, सहस्रचण्डी, लक्षचण्डी विधान। **मूल्य ४००/-**

बिना तोड फोड के वास्तुदोष का निवारण

"भवन वास्तुशास्त्र एवं भाग्यफल"

लाल किताब के सिद्धान्तों के आधार पर वास्तु दोष का शमन

(1) नूतन मकान कुण्डली सिद्धान्त। (2) वास्तु के समस्त नियमों की उत्पत्ति ज्योतिष से (3) **50 प्रतिशत भाग्य एवं 50 प्रतिशत वास्तुफल होता है।** (4) मकान के पर्दे, कांच का रंग व चित्र, खिलौनों से दोष का निवारण। (5) नींव रखने की पंचशिला व नवशिला स्थापन विधि (6) **पिरामिड़ के निर्माण, फेंगशुई सिद्धान्त की जानकारियाँ** मूल्य २२०/-

सांगोपांग वैवाहिक पद्धति मूल्य १००/-

गुण मेलापक एवं कुण्डली मिलान विधि. विभिन्न समाजों की प्रथायें, रीति रिवाज. विवाहकर्म पद्धति, सरल हस्त क्रियाविधि युक्त. वैधव्य योग परिहार हेतु – कुंभविवाह, विष्णुविवाह, पिप्पल विवाह. विदुर योग निवारण हेतु – अर्कविवाह. गृहप्रवेशनीय होम (चतुर्थी कर्म). तुलसीविवाह, पीपलविवाह पद्धति. अशौच निवारण व रजोदोष शान्ति. ★ शीघ्र विवाह के उपाय ★ पुनर्विवाह – वर का दूसरा, वर का प्रथम व वधू का पुनर्विवाह वर वधू दोनों का पुनर्विवाह.

शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्यायी मूल्य १२०/-

सचित्र सस्वर एवं सरल रुद्रपाठ (मृत्युञ्जय प्रयोग सहितम्)

रंगीन मुद्रण में तथा सचित्र सस्वर एवं सरल रुद्रपाठ की पुस्तक

(1) सस्वर पाठ के चित्र छापकर क्रिया को सरल किया गया है। (2) स्वर दीर्घ, ह्रस्व, दक्षिण वाम होगा, उच्चारण काल लघु या दीर्घ होगा इसे विभिन्न रंगों में छापा गया है। (3) रंग भेद से स्वर का विभाग समझाया गया है। (4) सभी मंत्रों के ऋषिछंद व देवता भी अलग से दिये गये है।

नवग्रह तंत्रम्

१. इस तंत्र में सभी नवग्रहों के यंत्रार्चन, कवच, स्तोत्र एवं शतनाम। २. सभी ग्रहों के वैदिक मंत्रों के प्रयोग। ३. ज्येष्ठा मूल अश्लेषा मघा रेवती अश्विनी शांति मंडल विधान। ४. गोमुखप्रसव, शांतिप्रयोग, पुंसवन, नामकरणादि संस्कार विधि पूर्ण है। ५. यमलशान्ति, त्रितरशांति, वैधृत्यादि योग शांति, कुहू सिनीवाली शान्ति, एक जनन नक्षत्र शांति, अशुभ दन्तोत्पत्ति शांति आदि कई शांति प्रयोग। मूल्य १२०/-

सर्वकर्म अनुष्ठानप्रकाशः भाग (१)

'पूजा-प्रतिष्ठा' मूल्य ३३०/-

(1) समस्त भद्रमंडल रंगीन, आवाहित स्थानसहित। (2) सर्वदेवपूजा एवं मूर्तिप्रतिष्ठा का स्पष्टीकरण। (3) दशविधस्नान, पापघटदान, हेमाद्रिस्नानादि संकल्प विधि।(4) नामावलि, तथा वेदोक्तमंत्रों से पूजाविधान (5) तीनवेदी स्नान की प्रतिष्ठाविधि। (6) मण्डपविधान, कुण्डनिर्माण विधि। सरल क्रिया में है। (7) पंचकुण्डी, नवकुण्डी संपूर्ण यज्ञविधि दी गई है। (9) चल, अचल मूर्ति प्रतिष्ठा एवं जीर्णोद्धार प्रतिष्ठाविधि पूर्ण रूपेण। (10) विभिन्नतरह के प्रासादों का वर्णन है। (11) वास्तु के 77 देवताओं के आवाहन व स्थापन के वैदिक, पुराणोक्त मंत्र एवं ध्यान दिये गये हैं।

सर्वकर्म अनुष्ठानप्रकाशः भाग (२) 'देवखण्ड'

'तन्त्रोक्त देव पूजा रहस्य'

देवखण्ड में गणेश, हनुमान, विष्णु, शिव, भैरव, रुद्रादि देवों के विविधप्रयोग दिये हैं। मृत्युञ्जय प्रयोग, शरभ शालुव पक्षिराज, आशुगरुड़ प्रयोग, गंधर्वराज, कार्त्तवीर्यअर्जुन, परशुरामादि के विविध प्रयोग है। वांछाकल्पलता प्रयोग एवं अन्य कई प्रयोगों का वर्णन किया गया है। मूल्य ३५०/-

सर्वकर्म-अनुष्ठानप्रकाशः भाग (३) 'देवीखण्ड पूर्वार्द्ध'

नवदुर्गा दशमहाविद्या रहस्य

उत्तर भारतीय व दक्षिण भारतीय पद्धति द्वारा नवरात्र विधान। नवदुर्गाओं के प्रयोग। गायत्री पुरश्चरण, काली, तारा, षोडशी, त्रिपुरभैरवी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, बगुलामुखी, मातंगी, धूमावती, एवं कमलादि देवियों के यंत्रार्चन का सरल विधान स्तोत्र, कवच, सहस्रनाम एवं विविध काम्य प्रयोगों का वर्णन। मूल्य ६५०/-

सर्वकर्म अनुष्ठानप्रकाशः भाग (४) 'देवीखण्ड उत्तरार्ध
'उपमहाविद्या रहस्य - प्रथम भाग''

सभी देवियों की मातृकायें, भगवती त्रिपुर सुन्दरी की १५ नित्याओं का अर्चन, नवदुर्गा, ब्राह्मयादि अष्टमातृकाओं का यंत्रार्चन, कौशिकी, अंबिका, शिवदूति गायत्रीब्रह्मास्त्र, श्यामा, बगला, प्रत्यङ्गिरा, गुह्यकाली प्रयोग, वाराही का यन्त्रार्चन आदि देवियों के प्रयोग दिये गये हैं। मूल्य ५५०/-

सर्वकर्म अनुष्ठानप्रकाशः भाग (४) 'देवीखण्ड उत्तरार्ध
'उपमहाविद्या रहस्य - द्वितीय भाग''

त्रिपुरसुन्दरी के मन्त्र से गर्भस्थ कई प्रयोग, कालिक्रम की १५ नित्याओं के प्रयोग, कामकला काली, महामाया वैष्णवी (पञ्चमुखी चण्डिका), भद्रा, स्वाहा, स्वधा, षष्ठीदेवी, मंगलचण्डी विधान, पार्श्वनाथ, पद्मावति, पञ्चांगुलि, ज्वाला मालिनि गंगादि देवियों प्रयोग, ज्वालादेवी, सारिका महाराज्ञि यन्त्रार्चन, कवच, सहस्रनाम, शब्दकोष, व अन्य कई दुर्लभ प्रयोग दिये गये हैं।

सर्वकर्म अनुष्ठानप्रकाशः भाग (५)
'तन्त्र सिद्धि रहस्य'

कर्णपिशाचिनि, यक्षिणि, किन्नरी, पञ्चांगुली, घण्टाकर्ण आदि के प्रयोग। सरल बांग्ला-हिन्दी भाषी उग्र शाबर मन्त्र प्रयोग। हिन्दी भाषी विविध शाबर मन्त्र प्रयोग। जैन धर्मोक्त विधान व वस्तु एवं वनस्पति तन्त्र विज्ञान युक्त। मूल्य ३७०/-

ब्रह्मकर्म सपर्या

नित्य संध्या प्रयोग, तर्पण प्रयोग, भूत शुद्धि मातृकादि प्रयोग, सरल रुद्राभिषेक प्रयोग। नवरात्र विधान व चण्डी प्रयोग। सर्वतोभद्र, लिङ्गतोभद्रादि पूजन। ग्रह शांति, गृह प्रवेश विधि, षोडश संस्कार, विवाह पद्धति, मूलादिगण्ड शांति एवं कुंभविवाह, अर्कविवाह पद्धति, एवं कुंभविवाह आवश्यक कर्म एवं महालय चटश्राद्धादि सभी कर्म सविधि बताये गये है।

डाक द्वारा पुस्तक मंगवाने हेतु लिखें –

मयूरेश प्रकाशन
छाबड़ा कॉलोनी, मदनगंज-किशनगढ़ जिला-अजमेर (राज.)
फोन - 01463 244198, 098291 44050, 09214512223

हमारे प्रकाशन



लेखक : पं. रमेश चन्द्र शर्मा (मिश्र)

विशेषज्ञ :

ज्योतिष, तंत्रशास्त्र, वास्तुशास्त्र एवं कर्मकाण्ड (डिप्लो. मैकेनिकल इंजि.)

यदि आपकी कुण्डली में काल सर्प योग है तो घबरायें नहीं। जिस तरह कुछ सर्प मणिधारी होते है, उसी तरह कुछ कालसर्प योग वाले प्रख्यात व्यक्ति होते है। अपनी कुण्डली में राजयोग कारक ग्रहों को बलवान करें। कुयोग कारक ग्रहों की जप शांति करायें। कुण्डली में स्थित शाप योगों का अनुसंधान कीजिये। शाप निवारण प्रयोग करायें। कालसर्प दोष का प्रभाव बचपन, विद्या समय, संबंध समय, संतान सुख, पत्नि पक्ष तथा दैनिक रोजगार प्राप्ति समय अलग-अलग ढंग से पडता है। अतः अलग-अलग समस्याओं के निवारण हेतु कुछ न कुछ शांति प्रयोग कराते रहें। कभी कभी शनिदशा में भी कालसर्प दोष के लक्षण दिखाई देते हैं। शनि न्यायाधीश व दण्डाधिकारी है। राहु मोह व अंधकार का कारक है तो केतु क्रोधी भी है तथा मोक्ष का दाता भी है। कई बार कालसर्प वाले व्यक्ति प्रारंभिक जीवन में दुःख पाते है तो 42-45 वर्ष बाद सुखी होते है। कुछ व्यक्ति 42-45 वर्ष तक सुखी रहते हैं तो बाद में दुःख पाते है, चाहे उस समय शुभ दशा चल रही हो। मारकेश दशा में मृत्युंज्य जप व तुलादान करायें। पितरादि दोष में श्राद्ध एवं तर्पण प्रयोग करें। अतः परिस्थिति देखकर उपाय करते रहें।